Khatri ॥ श्री ॥ 1171

चन्द्रकान्ता सन्तति

उपन्यास

लेखक—

बाबू— देवकीनन्दन खत्री

लहरी बुक डिपो

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता

वाराणसी

—*—

चन्द्रकान्ता सन्तति

पहिला हिस्सा

पहिला बयान

नौगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह के लड़के वीरेन्द्रसिंह की शादी विजयगढ़ के महाराज जयसिंह की लड़की चन्द्रकान्ता के साथ हो गई। बारात वाले दिन तेजसिंह की आखिरी दिल्लगी के सबब चुनार के महाराज शिवदत्त को मशालची बनना पड़ा। बहुतों की यह राय हुई कि महाराज शिवदत्त का दिल अभी तक साफ नहीं हुआ इसलिये अब इनको कैद ही मे रखना मुनासिब है, मगर महाराजा सुरेन्द्रसिंह ने इस बात को नापसन्द करके कहा कि 'महाराज शिवदत्त को हम छोड़ चुके हैं, इस वक्त जो तेजसिंह से उनकी लड़ाई हो गई यह हमारे साथ बैर रखने का सबूत नहीं हो सकता, आखिर महाराज शिवदत्त क्षत्री हैं, जब तेजसिंह उनकी सूरत बन बेइज्जती करने पर उतारू हो गये तो यह देख कर भी वे कैसे बरदाश्त कर सकते थे! मैं यह भी नही कह सकता कि महाराज शिवदत्त का दिल हम लोगों की तरफ से

बिल्कुल साफ हो गया क्योंकि अगर उनका दिल साफ ही हो जाता तो इस बात को छिप कर देखने के लिए आने की जरूरत क्या थी? तो भी यह समझ कर कि तेजसिंह के साथ की इनको यह लड़ाई हमारी दुश्मनी का सबब नहीं कहा जा सकता, हम फिर इनको छोड़ देते हैं। अगर अब भी ये हमारे साथ दुश्मनी करेंगे तो क्या हर्ज है, ये भी मर्द हैं और हम भी मर्द हैं, देखा जायगा।'

महाराज शिवदत्त फिर भी छूट कर न मालूम कहाँ चले गए। वीरेन्द्रसिंह की शादी होने के बाद महाराज सुरेन्द्रसिंह और जयसिंह की राय से चपला की शादी तेजसिंह के साथ और चम्पा की शादी देवीसिंह के साथ की गई। चम्पा दूर के नाते में चपला की बहिन होती थी।

बाकी सब ऐयारों की शादी भई हुई थी। उन लोगों की घर गृहस्थी चुनार ही में थी, अदल बदल करने की जरूरत न पड़ी, क्योंकि शादी होने के थोड़े ही दिन बाद बड़े धूमधाम के साथ कुंअर वीरेन्द्रसिंह चुनार की राजगद्दी पर बैठाए गए और कुंअर छोड़ राजा कहलाने लगे। तेजसिंह उनके राजदीवान मुकर्रर हुए और इसीलिए सब ऐयारों को भी चुनार ही में रहना पड़ा।

सुरेन्द्रसिंह अपने लड़के को आँखों के सामने से हटाना नहीं चाहते थे, लाचार नौगढ़ की गद्दी फतहसिंह के सुपुर्द करके वे भी चुनार ही में रहने लगे, मगर राज्य का काम बिल्कुल वीरेन्द्रसिंह के जिम्मे था, हाँ कभी कभी राय दे देते थे। तेजसिंह के बाप जीतसिंह भी बड़ी आजादी के साथ चुनार में रहने लगे। महाराज सुरेन्द्रसिंह और जीतसिंह में बहुत मुहब्बत थी और यह मुहब्बत दिन दिन बढ़ती ही गई। असल में जीतसिंह इसी लायक थे कि उनकी जितनी कदर की जाती थोड़ी थी।

शादी होने के दो बरस बाद चन्द्रकान्ता को लड़का पैदा हुआ। उसी साल चपला और चम्पा को भी लड़का पैदा हुआ। इसके तीन बरस बाद चन्द्रकान्ता ने दूसरे लड़के का मुँह देखा। चन्द्रकान्ता के बड़े लड़के

का नाम इन्द्रजीतसिंह, छोटे का नाम आनन्दसिंह, चपला के लड़के का नाम भैरोसिंह, और चम्पा के लड़के का नाम तारासिंह रक्खा गया।

जब ये चारो लड़के कुछ बड़े और बातचीत करने लायक हुए तब इनके लिखने पढ़ने और तालीम का इन्तजाम किया गया और राजा सुरेन्द्रसिंह ने इन चारो लड़को को जीतसिंह की शागिर्दी और हिफाजत में छोड़ दिया।

भैरोसिंह और तारासिंह ऐयारी के फन में बड़े ही तेज और चालाक निकले। उनकी ऐयारी का इम्तिहान बराबर लिया जाता था। जीतसिंह का हुक्म था कि भैरोसिंह और तारासिंह कुल ऐयारो को दकि अपने बाप तक को धोखा देने की कोशिश करें और इसी तरह पन्नालाल वगैरह ऐयार भी उन दोनों लड़कों को भुलावा दिया करें। धीरे धीरे ये दोनों लड़के इतने तेज और चालाक हो गए कि पन्नालाल वगैरह की ऐयारी इनके सामने दब गई।

भैरोसिंह और तारासिंह इन दोनों में चालाक ज्यादे कौन था इसके कहने का कोई जरूरत नहीं, आगे मौका पड़ने पर आपही मालूम हो जायगा, हाँ इतना कह देना जरूरी है कि भैरोसिंह को इन्द्रजीतसिंह के साथ और तारासिंह को आनन्दसिंह के साथ ज्यादे मुहब्बत थी।

चारो लड़के होशियार हुए अर्थात् इन्द्रजीतसिंह भैरोसिंह और तारासिंह की उम्र अट्ठारह अट्ठारह वर्ष की और आनन्दसिंह की उम्र पन्द्रह वर्ष की हुई। इतने दिनो तक चुनार राज्य में बराबर शान्ति रही बल्कि पिछली तकलीफें और महाराज शिवदत्त की शैतानी एक स्वप्न की तरह सभों के दिल में रह गई।

इन्द्रजीतसिंह को शिकार का शौक बहुत था, जहाँ तक बन पड़ता वे रोज शिकार खेला करते। एक दिन किसी बनरखे ने हाजिर हो कर बयान किया कि इन दिनो फलाने जंगल की शोभा खूब बढ़ी चढ़ी है और शिकारी जानवर भी इतने आए हुए हैं कि अगर वहाँ महीने भर टिक कर

शिकार खेला जाय तो भी जानवर न घटें और कोई दिन खाली भी न जाय। यह सुन दोनों भाई बड़े खुश हुए। अपने बाप राजा वीरेन्द्रसिंह से शिकार खेलने की इजाजत माँगी और कहा कि 'हम लोगों का इरादा आठ दस दिन तक जंगल में रह कर शिकार खेलने का है।' इसके जवाब में राजा वीरेन्द्रसिंह ने कहा कि 'इतने दिनों तक जंगल में रह कर शिकार खेलने का हुक्म मैं नहीं दे सकता, हाँ अपने दादा से पूछो, अगर वे हुक्म दें तो कोई हर्ज नहीं।'

यह सुन इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने अपने दादा महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास जाकर अपना मतलब अर्ज किया। उन्होंने खुशी से मन्जूर किया और हुक्म दिया कि शिकारगाह में इन दोनों के लिए खेमा खड़ा किया जाय और जब तक वे शिकारगाह में रहें पाँच सौ फौज बराबर इनके साथ रहे।

शिकार खेलने का हुक्म पा इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह बहुत खुश हुए और अपने दोनों ऐयार भैरोसिंह और तारासिंह को साथ ले मय पाँच सौ फौज के चुनार से रवाना हुए।

चुनार से पाँच कोस दक्खिन एक घने और भयानक जंगल में पहुँच कर इन्होंने डेरा डाला। दिन थोड़ा बाकी रह गया था इसलिए यह राय ठहरी कि आज आराम करें, कल सवेरे शिकार का बन्दोबस्त किया जायगा, मगर बनरखों * को शेर का पता लगाने के लिए आज ही कह दिया जाय।

---

* जंगलों की हिफाजत के लिए जो नौकर रहते हैं उनको बनरखे कहते हैं। शिकार खिलाने का काम बनरखों ही का है। ये लोग जंगल में घूम घूम कर और शिकारी जानवरों के पैर का निशान देख और उसी अन्दाज पर जा जा कर पता लगाते हैं कि शेर इत्यादि कोई शिकारी जानवर इस जंगल में है या नहीं, या अगर है तो कहाँ पर है। बनरखों का काम है कि [illegible] आवें तब खबर करें कि फलानी जगह पर [illegible] है।

भैंसा † बांधने की कोई जरूरत नहीं, शेर का शिकार पैदल ही किया जायगा।

दूसरे दिन सवेरे बनरखों ने हाजिर होकर अर्ज किया कि इस जंगल में शेर तो है मगर रात हो जाने के सबब हम लोग उन्हें अपनी आँखों से न देख सके, अगर आज का दिन शिकार न खेला जाय तो हम लोग देख कर उनका पता दे सकेंगे।

आज के दिन भी शिकार खेलना बन्द किया गया। पहर भर दिन बाकी रहे इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह घोड़ों पर सवार हो अपने दोनों

---

† खास शेर के शिकार में भैंसा बाँधा जाता है। भैंसा बाँधने के दो कारण हैं। एक तो शिकार को अटकाने के लिए अर्थात् जब बनरखे आकर खबर दें कि फलाने जंगल में शेर है, उस वक्त या कई दिनों तक अगर शिकार खेलने वाले को किसी कारण शिकार खेलने की फुरसत न हुई और शेर को अटकाना चाहा तो भैंसा बाँधने का हुक्म दिया जाता है। बनरखे भैंसा ले जाते हैं और जिस जगह शेर का पता लगता है उसके पास ही किसी भयानक और सायेदार जंगल या नाले में मजबूत खूंटा गाड़ कर भैंसे को बाँध देते हैं। जब शेर भैंसे की बू पाता है तो वहाँ आता है और भैंसे को खा कर उसी जंगल में कई दिनों तक मस्त और बेफिक्र पड़ा रहता है। इस तर्कीब से दो चार भैंसा देकर महीनों शेर को अटका लिया जाता है। शेर को जब तक खाने के लिए मिलता है वह दूसरे जंगल में नहीं जाता। शेर का पेट अगर एक दफे खूब भर जाय तो उसे सात आठ दिनों तक खाने की परवाह नहीं रहता। खुले भैंसे को शेर जल्दी नहीं मार सकता।

दूसरे जब मचान बाँध कर शेर का शिकार किया चाहते हैं या एक जंगल से दूसरे जंगल में अपने सुबीते के लिए उसे ले जाया चाहते हैं तब भी इसी तरह भैंसे बाँध बाँध कर हटाते ले जाते हैं। इसको शिकारी लोग 'मरी' भी कहते हैं।

ऐयारों को साथ ले घूमने और दिल बहलाने के लिए डेरे से बाहर निकले और टहलते हुए दूर तक चले गए।

ये लोग धीरे धीरे टहलते और बातें करते जा रहे थे कि बायें तरफ से शेर के गरजने की आवाज आई जिसे सुनते ही चारो अटक गए और घूम कर उस तरफ देखने लगे जिधर से वह आवाज आई थी।

लगभग दो सौ गज की दूरी पर एक साधू शेर पर सवार जाता दिखाई पड़ा जिसकी लम्बी लम्बी और घनी जटाये पीछे की तरफ लटक रही थीं एक हाथ में त्रिशूल दूसरे मे शंख लिए हुए था। इसकी सवारी का शेर बहुत बड़ा था और उसके गर्दन के बाल जमीन तक पहुंच रहे थे।

इसके आठ दस हाथ पीछे एक शेर और जा रहा था जिसकी पीठ पर आदमी के बदले बोझ लदा हुआ नजर आया। शायद यह असबाब उन्हीं शेर सवार महात्मा का हो।

शाम हो जाने के सबब साधू की सूरत साफ मालूम न पड़ी तो भी उसे देख इन चारो को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और कई तरह की बातें सोचने लगे।

इन्द्र०। इस तरह शेर पर सवार हो कर घूमना मुश्किल है।

आनन्द०। कोई अच्छे महात्मा मालूम होते हैं!

भैरो०। पीछे वाले शेर को देखिए जिस पर असबाब लदा हुआ है किस तरह भेंड की तरह सिर नीचा किए जा रहा है।

तारा०। शेरों को बस मे कर लिया है।

इन्द्र०। जी चाहता है उनके पास चल कर दर्शन करें।

आनन्द०। अच्छी बात है, चलिए पास से देखें कैसा शेर है।

तारा०। बिना पास गए महात्मा और पाखण्डी मे भेद भी न मालूम होगा।

भैरो०। शाम तो हो गई है, और चलिए आगे से बढ़ कर रोकें।

आनन्द०। आगे से चल कर रोकने से बुरा न मानें!

भैरो० । हम ऐयारों का तो पेशा ही ऐसा है कि पहले तो उनका साधू
ना ही विश्वास नहीं कर सकते !

इन्द्र० । आप लोगों की क्या बात है जिनकी मूछ हमेशे ही मुड़ी
रती है, खैर चलिए तो सही ।

भैरो० । चलिए ।

चारो आदमी आगे से घूम कर उन बाबाजी के सामने गए जो शेर
र सवार जा रहे थे । इन लोगों को अपने पास आते देख बाबाजी रुक
ए । पहिले तो इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का घोड़ा शेर को देख
र अड़ा मगर फिर ललकारने से आगे बढ़ा । थोड़ी दूर जाकर दोनों
ाई घोड़े के ऊपर से उतर पड़े, भैरोसिंह और तारासिंह ने दोनों घोड़ों
ो पेट से बाँध दिया, इसके बाद पैदल ही चारो आदमी महात्मा के
ास पहुँचे ।

बाबाजी० । (दूर ही से) आओ राजकुमार इन्द्रजीतसिंह और
ानन्दसिंह, कहो कुशल तो है ?

इन्द्र० । (प्रणाम करके) आपकी कृपा से सब मगल है ।

बाबा० । (भैरोसिंह और तारासिंह की तरफ देख कर) कहो भैरो
और तारा, अच्छे हो ?

दोनो० । (हाथ जोड़ कर) आपकी दया से ।

बाबा० । राजकुमार, मैं खुद तुम लोगों के पास जाने को था क्योंकि
मने शेर का शिकार करने के लिए इस जगल में डेरा डाला है । मैं
रनार जा रहा हूँ, घूमता फिरता इस जगल में भी आ पहुँचा । यह
गल अच्छा मालूम होता है इसलिए दो तीन दिन तक यहाँ रहने का
चार है, कोई अच्छी जगह देख कर धूनी लगाऊँगा । मेरे साथ सवारी
ौर असबाब लादने के कई शेर हैं, इसलिए कहता हूँ कि धोखे में मेरे
सी शेर को मत मारना नहीं तो मुश्किल होगी, सैकड़ों शेर पहुँच कर
हारे लश्कर में हलचल मचा डालेंगे और बहुतों की जान जायगी ।

तुम प्रतापी राजा सुरेन्द्रसिंह * के लडके हो इसलिए तुम्हें पहिले ही समझा देना मुनासिब है जिसमें किसी तरह का दुःख न हो।

इन्द्र०। महाराज मैं कैसे जानूँगा कि यह आपका शेर है। ऐसा ही है तो शिकार न खेलूगा।

बाबा०। नहीं नहीं, तुम शिकार खेलो, मगर मेरे शेरों को मत मारो।

इन्द्र०। मगर यह कैसे मालूम हो कि फलाना शेर आपका है।

बाबा०। देखो मैं अपने शेरों को बुलाता हूँ, पहिचान लो।

बाबाजी ने शंख बजाया। भारी शंख की आवाज चारो तरफ जंगल में गूंज गई और हर तरफ से गुर्राहट की आवाज आने लगी। थोडी ही देर में इधर उधर से दौडते हुए पाँच शेर और आ पहुचे। ये चारो दिलावर और बहादुर थे, अगर कोई दूसरा होता तो डर से उसकी जान निकल जाती। इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के घोड़े शेरों को देख उछलने कूदने लगे मगर रेशम की मजबूत बागडोर से बंधे हुए थे इससे भाग न सके। इन शेरों ने आकर बडी उधम मचाई, इन्द्रजीतसिंह वगैरह को देख गरजने कूदने और उछलने लगे, मगर बाबाजी के डॉटते ही सब ठण्डे हो सिर नीचा कर भेंड बकरी की तरह खडे हो गए।

बाबा०। देखो इन शेरों को पहिचान लो, अभी दो चार और हैं, मालूम होता है उन्होंने शंख की आवाज नहीं सुनी। खैर अभी तो मैं इसी जंगल में हूँ, उन बाकी शेरों को भी दिखला दूंगा, कल भर . . खेलना और बन्द रक्खो।

भैरो०। फिर आपसे मुलाकात कहाँ होगी? आपकी धूनी किस जगह लगेगी?

बाबा०। मुझे तो यही जगह आनन्द की मालूम होती है, फ इसी जगह आना मुलाकात होगी।

* साधू महाशय भूल गए, वीरेन्द्रसिंह की जगह सुरेन्द्रसिंह का ना ले बैठे।

बाबाजी शेर से ताने उत पड़े और जितने शेर उस जगह आए थे वे सब बाबाजी चारों तरफ घूमने तथा मुहब्बत से उनके बदन को चाटने और सूंघने लगे। ये चारों आदमी थोड़ी देर तक वहाँ और अटकने के बाद बाबाजी से बिदा हो खेमे में आये।

जब सन्नाटा हुआ भैरोसिंह ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "मेरे दिमाग में इस समय बहुत सी बातें घूम रही हैं। मैं चाहता हूँ कि हम लोग चारों आदमी एक जगह बैठ कुमेटी कर कुछ राय पक्की करें।"

इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "अच्छा आनन्द और तारा को भी इसी जगह बुला लो।"

भैरोसिंह गये और आनन्दसिंह तथा तारासिंह को उसी जगह बुला लाए। उस वक्त सिवाय इन चारों के उस खेमे में और कोई न रहा। भैरोसिंह ने अपने दिल का हाल कहा जिसे सभों ने बड़े गौर से सुना, इसके बाद पहर भर तक कुमेटी करके निश्चय कर लिया कि क्या करना चाहिए।

यह कुमेटी कैसी भई? भैरोसिंह का क्या इरादा हुआ और उन्होंने क्या निश्चय किया? तथा रात भर ये लोग क्या करते रहे? इसके कहने की कोई जरूरत नहीं, समय पर सब कुछ खुल जायगा।

सवेरा होते ही चारों आदमी खेमे के बाहर हुए और अपनी फौज के सर्दार कञ्चनसिंह को बुला कुछ समझा बुझा बाबाजी की तरफ रवाना हुए। जब लश्कर से दूर निकल गए, आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह तो तेजा के साथ चुनार की तरफ रवाना हुए, और अकेले इन्द्रजीतसिंह बाबाजी से मिलने के लिए गए।

बाबाजी शेरों के बीच में धूनी रमाए बैठे थे। दो शेर उनके चारों तरफ घूम घूम कर पहरा दे रहे थे। इन्द्रजीतसिंह ने पहुँच कर प्रणाम किया और बाबाजी ने आशीर्वाद देकर बैठने के लिए कहा।

इन्द्रजीतसिंह ने बनिस्बत कल के आज दो शेर और ज्यादे देखे। थोड़ी देर चुप रहने के बाद बातचीत होने लगी।

बाबा० । कहो इन्द्रजीतसिंह, तुम्हारे भाई और दोनों ऐयार कहाँ रह गए, वे नहीं आए ?

इन्द्र० । हमारे छोटे भाई आनन्द को बुखार आ गया इस सबब से वह न आ सका । उसी की हिफाजत में दोनों ऐयारों को छोड मैं अकेला आपके दर्शन को आया हू ।

बाबा० । अच्छा क्या हर्ज है, आज शाम तक वह अच्छे हो जायँगे, कहो आज कल तुम्हारे राज्य में कुशल तो है ?

इन्द्र० । आपकी कृपा से सब आनन्द है ।

बाबा० । बेचारे बीरेन्द्रसिंह ने भी बडा ही कष्ट पाया ! खैर जो हो दुनिया मे उनका नाम रह जायगा । इस हजार वर्ष के अन्दर कोई ऐसा राजा नहीं हुआ जिसने तिलिस्म तोड़ा हो । एक और तिलिस्म है, असल मे वही भारी और तारीफ के लायक है ।

इन्द्र० । पिताजी तो कहते है कि वह तिलिस्म तेरे हाथ से टूटेगा ।

बाबा० । हाँ ऐसा ही होगा, वह जरूर तुम्हारे हाथ से फतह होगा, इसमे कोई सन्देह नहीं ।

इन्द्र० । देखें कब तक ऐसा होता है, उसकी ताली का तो कहीं पता ही नहीं लगता ।

बाबा० । ईश्वर चाहेगा तो एक ही दो दिन तक तुम उस तिलिस्म के तोडने मे हाथ लगा दोगे । उस तिलिस्म की ताली मै हूँ । कई पुश्तों से हम लोग उस तिलिस्म के दारोगा होते चले आए हैं । मेरे परदादा दादा और बाप उसी तिलिस्म के दारोगा थे, जब मेरे पिता का देहान्त होने लगा तब उन्होंने उसकी ताली मेरे सुपुर्द कर मुझे उसका दारोगा मुकर्रर कर दिया । अब वह वक्त आ गया है कि मै उसकी ताली तुम्हारे हवाले करूँ, क्योंकि वह तिलिस्म तुम्हारे नाम पर बाँधा गया है और सिवाय तुम्हारे कोई उसका मालिक नहीं बन सकता ।

इन्द्र० । तो अब देर क्या है ?

बाबा० । कुछ नहीं, कल से तुम उसके तोड़ने में हाथ लगा दो, मगर एक बात तुम्हारे फायदे की हम कहते हैं ।

इन्द्र० । वह क्या ?

बाबा० । तुम उसके तोड़ने में अपने भाई आनन्द को भी शरीक कर लो, ऐसा करने से दौलत भी दूनी मिलेगी और नाम भी दोनों भाइयों का दुनिया में हमेशा के लिए बना रहेगा ।

इन्द्र० । उसकी तो तबीयत ही ठीक नहीं !

बाबा० । क्या हर्ज है, तुम अभी जाकर जिस तरह बने उसे मेरे पास ले आओ, मैं बात की बात में उसको चंगा कर दूंगा । आज ही तुम लोग मेरे साथ चलो, जिसमें कल तिलिस्म टूटने में हाथ लग जाय, नहीं तो साल भर फिर मौका न मिलेगा ।

इन्द्र० । बाबाजी, असल तो यह है कि मैं अपने भाई की बढ़ती नहीं चाहता, मुझे यह मंजूर नहीं कि मेरे साथ उसका भी नाम हो ।

बाबा० । नहीं नहीं, तुम्हें ऐसा न सोचना चाहिए, दुनिया में भाई से बढ़ के कोई रत्न नहीं है ।

इन्द्र० । जी हाँ, दुनिया में भाई से बढ़ के रत्न नहीं तो भाई से बढ़ के कोई दुश्मन भी नहीं, यह बात मेरे दिल में ऐसी बैठ गई है कि उसके हटाने के लिए ब्रह्मा भी आकर समझावें बुझावें तो भी कुछ नतीजा न निकलेगा ।

बाबा० । बिना उसको साथ लिए तुम तिलिस्म नहीं तोड़ सकते ।

इन्द्र० । (हाथ जोड़ कर) बस तो जाने दीजिए, माफ कीजिए, मुझे तिलिस्म तोड़ने की जरूरत नहीं !

बाबा० । क्या तुम्हें इतनी जिद्द है ?

इन्द्र० । मैं कह जो चुका कि ब्रह्मा भी मेरी राय पलट नहीं सकते ।

बाबा० । खैर तब तुम्हीं चलो, मगर इसी वक्त चलना होगा ।

इन्द्र० । हाँ हाँ, मैं तयार हूँ, अभी चलिए ।

बाबाजी उसी समय उठ खड़े हुए, अपनी गठड़ी मुठड़ी बाँध एक शेर पर लाद दिया तथा दूसरे पर आप सवार हो गए। इसके बाद एक शेर की तरफ देख कर कहा, "बच्चा गङ्गाराम, यहाँ तो आओ!" वह शेर तुरत इनके पास आया। बाबाजी ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "तुम इस पर सवार हो लो।" इन्द्रजीतसिंह भी कूद कर सवार हो गए और बाबाजी के साथ साथ दक्खिन का रास्ता लिया। बाबाजी के साथी शेर भी कोई आगे कोई पीछे कोई बायें कोई दाहिने हो बाबाजी के साथ साथ जाने लगे।

सब शेर तो पीछे रह गए मगर दो शेर जिन पर बाबाजी और इन्द्रजीतसिंह सवार थे आगे निकल गए। दो पहर तक ये दोनों चले गए। जब दिन ढलने लगा बाबाजी ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "यहाँ ठहर कर कुछ खा पी लेना चाहिए।" इसके जवाब में कुमार बोले, "बाबा, खाने पीने की कोई जरूरत नहीं। आप महात्मा ही ठहरे, मुझे भूख ही नहीं लगी, फिर अटकने की क्या जरूरत है? जिस काम के पीछे पड़े उसमें सुस्ती करना ठीक नहीं।"

बाबाजी ने कहा, "शाबाश, तुम बड़े बहादुर हो, अगर तुम्हारा दिल इतना मजबूत न होता तो तिलिस्म तुम्हारे ही हाथ से टूटेगा ऐसा बड़े लोग न कह जाते, खैर चलो।"

कुछ दिन बाकी रहा जब ये दोनों एक पहाड़ी के नीचे पहुँचे। बाबाजी ने शंख बजाया। थोड़ी ही देर में चारों तरफ से सैकड़ों पहाड़ी लुटेरे हाथ में बरछे लिए आते दिखाई पड़े और ऐसे ही बीस पचास आदमियों को साथ लिए पूरब तरफ से आता हुआ राजा शिवदत्त नजर पड़ा जिसे देखते ही इन्द्रजीतसिंह ने ऊँची आवाज में कहा, "इनको तो मैं पहिचान गया, यही महाराज शिवदत्त हैं। इनकी तस्वीर मेरे कमरे में लटकी हुई है। दादाजी ने इनकी तस्वीर मुझे दिखा कर कहा था कि हमारे सब से भारी दुश्मन यही महाराज शिवदत्त हैं। आफ आह, इतने में बाबाजी

ऐयार ही निकले, जो सोचा था वही हुआ। खैर क्या हर्ज है, इन्द्रजीतसिंह को गिरफ्तार कर लेना जरा टेढ़ी खीर है !!"

शिवदत्त०। (पास पहुँच कर) मेरा आधा कलेजा तो ठण्ढा हुआ, मगर अफसोस तुम दोनों भाई हाथ न आए।

इन्द्रजीत०। जी इस भरोसे न रहिएगा कि इन्द्रजीतसिंह को फँसा लिया, उनकी तरफ बुरी निगाह से देखना भी काम रखता है !

ग्रन्थकर्ता०। भला इसमें भी कोई शक है !!

दूसरा बयान

इस जगह पर थोड़ा सा हाल महाराज शिवदत्त का भी बयान करना मुनासिब मालूम होता है। महाराज शिवदत्त को हर तरह से कुँअर वीरेन्द्रसिंह के मुकाबले में हार माननी पड़ी। लाचार उसने शहर छोड़ दिया और अपने कई पुराने खैरखाहों को साथ ले चुनार के दक्खिन की तरफ रवाना हुआ।

चुनार से थोड़े ही दूर दक्खिन लम्बा चौड़ा घना जंगल है। यह विन्ध्य के पहाड़ी जंगल का सिलसिला रावर्ट्सगंज सर्गुजा और सिंगरौली होता हुआ सैकड़ों कोस तक चला गया है जिसमें बड़े बड़े पहाड़ घाटियाँ दर्रे और खोह पड़ते हैं। बीच बीच में दो दो चार चार कोस के फासले पर गाँव भी आबाद हैं। कहीं कहीं पहाड़ों पर पुराने जमाने के टूटे फूटे आलीशान किले अभी तक दिखाई पड़ते हैं। चुनार से आठ कोस दक्खिन अहरौरा के पास पहाड़ पर पुराने जमाने के एक बर्बाद किले का निशान आज भी देखने से चित्त का भाव बदल जाता है। गौर करने से मालूम होता है कि जब यह किला दुरुस्त होगा तो तीन कोस से ज्यादे लम्बी चौड़ी जमीन इसने घेरी होगी, आखीर में यह किला काशी के मशहूर राजा चेतसिंह के अधिकार में था। इन्हीं जंगलों में अपनी रानी और कई खैरखाहों को मय उनकी औरतों और बाल बच्चों के साथ लिए

घूमते फिरते महाराज शिवदत्त ने चुनार से लगभग पचास कोस दूर जाकर एक हरी भरी सुहावनी पहाड़ी के ऊपर के एक पुराने टूटे हुए मजबूत किले में डेरा डाला और उसका नाम शिवदत्तगढ़ रक्खा जिसमें उस वक्त भी कई कमरे और दालान रहने लायक थे। यह छोटी पहाड़ी अपने चारों तरफ के ऊँचे ऊँचे पहाड़ों के बीच में इस तरह छिपी और दबी हुई थी कि यकायक किसी का यहाँ पहुँचना और कुछ पता लगाना मुश्किल था।

इस वक्त महाराज शिवदत्त के साथ सिर्फ बारह आदमी थे जिनमें तीन मुसलमान ऐयार भी थे जो शायद नाजिम और अहमद के रिश्तेदारों में से थे और यह समझ कर महाराज शिवदत्त के साथ हो गए थे कि इनके शामिल रहने से कभी न कभी राजा वीरेन्द्रसिंह से बदला लेने का मौका मिल ही जायगा, दूसरे सिवाय शिवदत्त के और कोई इस लायक नजर भी न आता था जो इन बेईमानों को ऐयारी के लिए अपने साथ रखता। नीचे लिखे नामों से ये तीनों ऐयार पुकारे जाते थे—बाकर अली, खुदाबक्श और यारअली। इन सब ऐयारों और साथियों ने रुपए पैसे से भी जहाँ तक बन पड़ा महाराज शिवदत्त की मदद की।

राजा वीरेन्द्रसिंह की तरफ से शिवदत्त का दिल साफ न हुआ मगर मौका न मिलने के सबब मुद्दत तक उसे चुपचाप बैठे रहना पड़ा। अपनी चालाकी और होशियारी से वह पहाड़ी भिल्ल कोल और खरवार इत्यादि जाति के आदमियों का राजा बन बैठा और उनसे मालगुजारी में गल्ला घी शहद और बहुत सी जंगली चीजें वसूल करने और उन्हीं लोगों के मारफत शहर में भेजवा और बिकवा कर रुपए बटोरने लगा। उन्हीं लोगों को होशियार करके थोड़ी बहुत फौज भी उसने बना ली। धीरे धीरे वे पहाड़ी जाति के लोग भी होशियार हो गए और खुद शहर में जाकर गल्ला वगैरह बेच रुपए इकट्ठा करने लगे। शिवदत्तगढ़ भी अच्छी तरह आबाद हो गया।

इधर बाकरअली वगैरह ऐयारों ने भी अपने कुल साथियों को जो

चुनार से इनके साथ आए थे ऐयारी के फन में खूब होशियार किया। इस बीच में एक लड़का और उसके बाद एक लड़की भी महाराज शिवदत्त के घर पैदा हुई। मौका पाकर अपने बहुत से आदमियों और ऐयारों को साथ ले वह शिवदत्तगढ़ के बाहर निकला और राजा बीरेन्द्रसिंह से बदला लेने की फिक्र में कई महीने तक घूमता रहा। बस महाराज शिवदत्त का इतना ही मुख्तसर हाल लिख कर हम इस बयान को समाप्त करते हैं और फिर इन्द्रजीतसिंह के किस्से को छेड़ते हैं।

इन्द्रजीतसिंह के गिरफ्तार होने के बाद उन बनावटी शेरों ने भी अपनी हालत बदली और असली सूरत के ऐयार बन बैठे जिनमें यारअली बाकरअली और खुदाबख्श मुखिया थे। महाराज शिवदत्त बहुत ही खुश हुआ और समझा कि अब मेरा जमाना फिरा, ईश्वर चाहे तो फिर चुनार की गद्दी पाऊँगा और अपने दुश्मनों से पूरा बदला लूँगा।

इन्द्रजीतसिंह को कैद कर वह शिवदत्तगढ़ ले गया। सभों को ताज्जुब हुआ कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने गिरफ्तार होते समय कुछ उत्पात न मचाया, किसी पर गुस्सा न निकाला किसी पर हर्बा न उठाया, यहा तक कि आँखों से उन्होंने रञ्ज अफसोस या क्रोध भी जाहिर न होने दिया। हकीकत में यह ताज्जुब की बात थी भी कि बहादुर बीरेन्द्रसिंह का शेरदिल लड़का ऐसी हालत में चुप रह जाय और बिना हुज्जत किए बेड़ी पहिर ले, मगर नहीं इसका कोई सबब जरूर है जो आगे चल कर मालूम होगा।

तीसरा बयान

चुनारगढ़ किले के अन्दर एक कमरे में महाराज सुरेन्द्रसिंह, बीरेन्द्रसिंह, जीतसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह बैठे हुए धीरे धीरे कुछ बातें कर रहे हैं।

जीत०। भैरो ने बड़ी होशियारी का काम किया कि अपने को इन्द्रजीतसिंह की सूरत बना शिवदत्त के ऐयारों के हाथ फँसाया।

सुरेन्द्र०। शिवदत्त के ऐयारों ने चालाकी तो खूब की थी मगर···

वीरेन्द्र०। आपका इकबाल जोर पर सवार है सिद्ध तो बन लेकिन अपना काम कुछ न कर सके।

सुरेन्द्र०। मगर जैसे हो भैरोसिंह को अब बहुत जल्द छुड़ाना चाहिए।

जीत०। कुमार घबराओ मत, तुम्हारे दोस्त को किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती, लेकिन अभी उसका शिवदत्त के यहाँ फँसे ही रहना मुनासिब है। वह बेवकूफ नहीं है, बिना मदद के आप ही छूट कर आ सकता है, तिस पर पन्नालाल रामनारायण चुन्नीलाल बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी उसकी मदद को भेजे ही गए हैं, देखो तो क्या होता है। इतने दिनों तक चुपचाप बैठे रह कर शिवदत्त ने फिर अपना खराबी करने पर कमर बाँधी है।

वीर०। कुमारों के साथ जो फौज शिकारगाह में गई है उसके लिए अब क्या हुक्म होता है?

जीत०। अभी शिकारगाह से डेरा उठाना मुनासिब नहीं। (तेजसिंह की तरफ देख कर) क्यों तेज?

तेज०। (हाथ जोड़ कर) जी हाँ, शिकारगाह में डेरा कायम रहने से हम लोग बड़ी खूबसूरती और दिल्लगी से अपना काम निकाल सकेंगे।

सुरेन्द्र०। कोई ऐयार शिवदत्तगढ़ से लौटे तो कुछ हालचाल मालूम हो।

तेज०। कल तो नहीं मगर परसों तक कोई न कोई जरूर आयेगा।

पहर भर से ज्यादे देर तक बातचीत होती रही। कुल बातों को खोलना हम मुनासिब नहीं समझते बल्कि आखिरी बात का पता तो हमें भी न लगा जो मजलिस उठने के बाद जीतसिंह ने अकेले में तेजसिंह को समझाई थी। खैर जाने दीजिए, जो होगा देखा जायगा, जल्दी क्या है।

गंगा किनारे ऊँची बारहदरी में इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह दोनों भाई बैठे गंगा की कैफियत देख रहे हैं। बरसात का मौसिम है, गंगा खूब बढ़ी हुई है, किले के नीचे जल पहुँचा हुआ है, छोटी छोटी लहरें

दीवारों में टक्कर मार रही है, अस्त होते हुए सूर्य की लालिमा जल में पड़ कर लहरों की शोभा दूनी बढा रही है, सन्नाटे का आलम है, इस बारहदरी में सिवाय इन दोनों भाइयों के और कोई तीसरा दिखाई नहीं देता।

इन्द्र०। अभी जल कुछ और बढ़ेगा।

आनन्द०। जी हाँ, पारसाल तो गंगा आज से कहीं ज्यादे बढी हुई थी जब दादाजी ने हम लोगों को तैर कर पार जाने के लिए कहा था।

इन्द्र०। उस दिन भी खूब ही दिल्लगी हुई, भैरोसिंह सभों में तेज रहा, बद्रीनाथ ने कितना ही चाहा कि उसके आगे निकल जायँ मगर न हो सका।

आनन्द०। हम दोनों भी कोस भर तक उस किश्ती के साथ ही साथ गए जो हम लोगों की हिफाजत के लिए लग गई थी।

इन्द्र०। बस वहीं तो हम लोगों का आखिरी इम्तिहान रहा, फिर तब से जल में तैरने की नौबत ही कहाँ आई!

आनन्द०। कल तो मैंने दादाजी से कहा था कि आज कल गंगाजी खूब बढी हुई है तैरने को जी चाहता है।

इन्द्र०। तब क्या बोले?

आनन्द०। कहने लगे कि बस अब तुम लोगों का तैरना मुनासिब नहीं है, हँसी होगी। तैरना भी एक इल्म है जिसमें तुम लोग होशियार हो चुके, अब क्या जरूरत है! ऐसा ही जी चाहे तो किश्ती पर सवार हो कर जाओ सैर करो।

इन्द्र०। उन्होंने बहुत ठीक कहा, चलो किश्ती पर थोडी दूर घूम आयें, इसके लिए इजाजत लेने की भी कोई जरूरत नहीं।

बातचीत हो ही रही थी कि चोबदार ने आकर अर्ज किया, "एक बहुत बूढ़ा जवहरी हाजिर है, दर्शन किया चाहता है।"

आनन्द०। यह कौन सा वक्त है?

चोबदार०। (हाथ जोड कर) ताबेदार ने तो चाहा था कि इस

समय उसे विदा करें मगर यह ख्याल करके ऐसा करने का हौसला न पड़ा कि एक तो लड़कपन ही से वह इस दर्बार का नमकख्वार है और महाराज की भी उस पर निगाह रहती है, दूसरे अस्सी वर्ष का बुड्ढा है, तीसरे कहता है कि अभी इस शहर में पहुंचा हूँ, महाराज का दर्शन कर चुका हूँ, सरकार के भी दर्शन हो जायँ तब आराम से सराय में डेरा डालूँ, और हमेशे से उसका यही दस्तूर भी है।

इन्द्र०। अगर ऐसा है तो उसे आने ही देना मुनासिब है।

आनन्द०। तब आज किश्ती पर सैर करने का रंग नजर नहीं आता।

इन्द्र०। क्या हर्ज है, कल सही।

चोबदार सलाम करके चला गया और थोड़ी ही देर में सौदागर को ले कर हाजिर हुआ। हकीकत में वह सौदागर बहुत ही बुड्ढा था, रैयासत और शराफत उसके चेहरे से बरसती थी। आते ही सलाम करके उसने दोनों भाइयों को दो अँगूठियाँ नजर दीं और कबूल होने के बाद इजाजत पा कर जमीन पर बैठ गया।

इस बुड्ढे जवहरी की इज्जत की गई, मिजाज का हाल सफर की कैफियत पूछने बाद डेरे पर जाकर आराम करने और कल फिर हाजिर होने का हुक्म हुआ, सौदागर सलाम करके चला गया।

सौदागर ने जो दो अँगूठियाँ दोनों भाइयों को नजर दी थीं उनमें आनन्दसिंह की अँगूठी पर निहायत खुशरंग मानिक जड़ा हुआ था और इन्द्रजीतसिंह की अँगूठी पर सिर्फ एक छोटी सी तस्वीर थी जिसे दो एक दफे निगाह भर कर इन्द्रजीतसिंह ने देखा और कुछ सोच कर चुप हो रहे।

एकान्त होने पर रात को शमादान की रोशनी में फिर उस अँगूठी को देखा जिसमें नगीने की जगह एक कमसिन हसीन औरत की तस्वीर जड़ी हुई थी। चाहे यह तस्वीर कितनी ही छोटी क्यों न हो मगर मुसौवर ने गजब की सफाई उसमें खर्च की थी। इसे देखते देखते एक मरतबे तो इन्द्रजीतसिंह की यह हालत हो गई कि अपने को और उस औरत की

बैठ कर भोजन भी करना ही पड़ा, हाँ शाम को इनकी बेचैनी बहुत बढ़ गई जब सुना कि तमाम शहर छान डालने पर भी उस जवहरी का कहीं पता न लगा और यह भी मालूम हुआ कि उस जवहरी ने यह बिल्कुल झूठ कहा था कि 'महाराज का दर्शन कर आया हूँ, अब कुमार के दर्शन हो जायँ तब आराम से सराय मे डेरा डालू।' वह वास्तव मे महाराजा सुरेन्द्र-सिंह और वीरेन्द्रसिंह से नहीं मिला था।

तीसरे दिन इनको बहुत ही उदास देख आनन्दसिंह ने किश्ती पर सवार होकर गङ्गाजी की सैर करने और दिल बहलाने के लिए जिद की, लाचार उनकी बात माननी ही पड़ी।

एक छोटी सी खूबसूरत और तेज जाने वाली किश्ती पर सवार हो इन्द्रजीतसिंह ने चाहा कि किसी को साथ न ले जायँ सिर्फ दोनों भाई ही सवार हो और खे कर दरिया की सैर करें। किसी की मजाल थी जो इनकी बात काटता, मगर एक पुराने खिदमतगार ने जिसने कि वीरेन्द्रसिंह को गोद मे खिलाया था और अब इन दोनो के साथ रहता था ऐसा करने से रोका और जब दोनो भाइयो ने न माना तो वह खुद किश्ती पर सवार हो गया। पुराना नौकर होने के खयाल से दोनो भाई कुछ न बोले, लाचार साथ ले जाना ही पड़ा।

आनन्द०। किश्ती को धारा मे ले जाकर बहाव पर छोड़ दीजिए फिर खे कर ले आवेगे।

इन्द्र०। अच्छी बात है।

सिर्फ दो घण्टे दिन बाकी था जब दोनों भाई किश्ती पर सवार हो दरिया की सैर करने को गए क्योंकि लौटती समय चॉदनी रात का भी आनद लेना मंजूर था।

चुनार से दो कोस पश्चिम गंगा के किनारे ही पर एक छोटा सा जंगल था। जब किश्ती उसके पास पहुंची, बंसी की और साथ ही गाने की बारीक सुरीली आवाज इन लोगों के कानो मे पड़ी। संगीत एक ऐसी

चीज है कि हर एक के दिल को चाहे वह कैसा ही नासमझ क्यों न हो अपनी तरफ खैंच लेती है यहाँ तक कि जानवर भी इसके वश में हो कर अपने को भूल जाता है। दो तीन दिन से कुँअर इन्द्रजीतसिंह का दिल चुटीला हो रहा था, दरिया की बहार देखना तो दूर रहे इन्हें अपने तनो-बदन की भी सुध न थी, ये तो अपनी प्यारी तस्वीर की धुन में सर झुकाए बैठे कुछ सोच रहे थे, इनके हिसाब चारो तरफ सन्नाटा था, मगर इस सुरीली आवाज ने इनकी गर्दन घुमा दी और उस तरफ देखने को मजबूर किया जिधर से वह आवाज आ रही थी।

किनारे की तरफ देखने से यह तो मालूम न हुआ कि बसी बजाने या गाने वाला कौन है मगर इस बात का अन्दाजा जरूर मिल गया कि वे लोग बहुत दूर नहीं हैं जिनके गाने की आवाज सुनने वालों पर जादू का सा असर कर रही है।

इन्द्र०। आहा, क्या सुरीली आवाज है!!

आनन्द०। दूसरी आवाज भी आई। बेशक कई औरतें मिल कर गा बजा रही हैं।

इन्द्रजीत०। (किश्ती का मुह किनारे की तरफ फेर कर) ताज्जुब है कि इन लोगों ने गाने बजाने और दिल बहलाने के लिए ऐसी जगह पसन्द की! जरा देखना चाहिए।

आनन्द०। क्या हर्ज है, चलिए।

बूढ़े खिदमतगार ने किनारे किश्ती लगाने और उतरने के लिए मना किया और बहुत समझाया मगर इन दोनों ने न माना, किश्ती किनारे लगाई और उतर कर उस तरफ चले जिधर से आवाज आ रही थी। जगल मे थोडी ही दूर जा कर दस पन्द्रह नौजवान औरतो का झुण्ड नजर पडा जो रग बिरगा पोशाक और कीमती जेवरों से अपने हुस्न को दूना किए ऊँचे पेड से लटकते हुए एक झूले को झुला रही थीं। कोई बंसी कोई मृदग बजाती, कोई हाथ से ताल दे दे कर गा रही थी। उस हिंडोले

पर सिर्फ एक ही औरत गंगा की तरफ रुख किए बैठी थी। ऐसा मालूम होता था मानों परियाँ साक्षात् किसी देवकन्या को झुला और गा बजा कर इसलिए प्रसन्न कर रही हैं कि खूबसूरती बढ़ने और नौजवानी के स्थिर रहने का वरदान पावें। मगर नहीं, उनके भी दिल की दिल ही में रही और कुँअर इन्द्रजीतसिंह तथा आनन्दसिंह को आते देख हिंडोले पर बैठी हुई नाजनीन को अकेली छोड़ न जाने क्यों भाग जाना ही पड़ा।

आनन्द०। भैया, वह सब तो भाग गईं!

इन्द्र०। हाँ, मैं इस हिंडोले के पास जाता हूँ, तुम देखो वे औरतें किधर गईं?

आनन्द०। बहुत अच्छा।

चाहे जो हो मगर कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने उसे पहिचान ही लिया जो हिंडोले पर अकेली रह गई थी। भला यह क्यों न पहिचानते? जवहरी की नजर दी हुई अँगूठी पर उसकी तस्वीर देख चुके थे, उनके दिल में उसकी तस्वीर खुद गई थी, अब तो मुँहमांगी मुराद पाई, जिसके लिए अपने को मिटाना मंजूर था उसे बिना परिश्रम पाया, फिर क्या चाहिए!

आनन्दसिंह पता लगाने के लिए उन औरतों के पीछे गए मगर वे ऐसा भागीं कि झलक तक दिखाई न दी, लाचार आधे घंटे तक हैरान होकर फिर उस हिंडोले के पास पहुंचे। हिंडोले पर बैठी हुई औरत की कौन कहे अपने भाई को भी वहां न पाया। घबड़ा कर इधर उधर ढूंढने और पुकारने लगे, यहां तक कि रात हो गई और यह सोच कर किश्ती के पास पहुंचे कि शायद वहां चले गए हों, लेकिन वहां भी सिवाय उस बूढ़े खिदमतगार के किसी दूसरे को न देखा। जी बेचैन हो गया, खिदमतगार को सब हाल कह कर बोले, "जब तक अपने प्यारे भाई का पता न लगा लूंगा घर न जाऊंगा, तू जाकर यहां के हाल की सभों को खबर कर दे।"

खिदमतगार ने हर तरह से आनन्दसिंह को समझाया बुझाया और घर चलने के लिए कहा मगर कुछ फायदा न निकला। लाचार उसने

किश्ती उसी जगह छोडी और पैदल रोता कलपता किले की तरफ रवाना हुआ क्योंकि यहा जो कुछ हो चुका था उसका हाल राजा बीरेन्द्रसिंह से कहना भी उसने आवश्यक समझा।

चौथा बयान

खिदमतगार ने किले में पहुच कर और यह सुन कर कि इस समय दोनों एक ही जगह बैठे हैं कुँअर इन्द्रजीतसिंह के गायब होने का हाल और सबब जो कुअर आनन्दसिंह की जुबानी सुना था महाराज सुरेन्द्र-सिंह और बीरेन्द्रसिंह के पास हाजिर होकर अर्ज किया। इस खबर के सुनते ही उन दोनों के कलेजे मे चोट सी लगी। थोडी देर तक घबराहट के सबब कुछ सोच न सके कि क्या करना चाहिये। रात भी एक पहर से ज्यादे जा चुकी थी। आखिर जीतसिंह तेजसिंह और देवीसिंह को बुला कर खिदमतगार की जुबानी जो कुछ सुना था कहा और पूछा कि अब क्या करना चाहिये?

तेजसिंह०। उस जगल मे इतनी औरतों का इकट्ठे हो कर गाना बजाना और इस तरह धोखा देना बेसबब नहीं है।

सुरेन्द्र०। जब से शिवदत्त के उभरने की खबर सुनी है एक खुटका सा बना रहता है, मे समझता हूँ यह भी उसी की शैतानी है।

बीरेन्द्र०। दोनों लडके ऐसे कमजोर तो नहीं हैं कि जिसका जी चाहे पकड ले।

सुरेन्द्र०। ठीक है, मगर आनन्द का भी वहा रह जाना बुरा ही हुआ।

तेज०। बेचारा खिदमतगार जबर्दस्ती साथ हो गया था नहीं तो पता भी न लगता कि दोनों कहा चले गये। खैर उनके बारे मे जो कुछ सोचना है सोचिये मगर मुझे जल्द इजाजत दीजिए कि हजार सिपाहियो को साथ लेकर वहा जाऊँ और इसी वक्त उस छोटे से जङ्गल को चारो तरफ से घेर लू, फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

सुरेन्द्र० । (जीतसिंह से) क्या राय है ?

जीत० । तेज ठीक कहता है, इसे अभी जाना चाहिए ।

हुक्म पाते ही तेजसिंह दीवानखाने के ऊपर एक बुर्ज पर चढ़ गए जहाँ बड़ा सा नक्कारा और उसके पास ही एक भारी चोब इसलिए रक्खा हुआ था कि वक्त बेवक्त जब कोई जरूरत आ पड़े और फौज को तुरत तैयार कराना हो तो इस नक्कारे पर चोब मारी जाय । इसकी आवाज भी निराले ही ढंग की थी जो किसी नक्कारे की आवाज से मिलती न थी और इसके बजाने के लिए तेजसिंह ने कई इशारे भी मुकर्रर किए हुए थे।

तेजसिंह ने चोब उठा कर जोर से एक दफे नक्कारे पर मारा जिसकी आवाज तमाम शहर में बल्कि दूर दूर तक गूंज गई । चाहे इसका सबब किसी शहर वाले की समझ में न आया हो मगर सेनापति समझ गया कि इसी वक्त हजार फौजी सिपाहियों की जरूरत है जिसका इन्तजाम उसने बहुत जल्द किया ।

तेजसिंह अपने सामान से तैयार हो किले के बाहर निकले और हजार फौजी सिपाही तथा बहुत से मशालचियों को साथ ले उस छोटे से जंगल की तरफ रवाना होकर बहुत जल्दी ही वहाँ जा पहुंचे ।

थोड़ी थोड़ी दूर पर पहरा मुकर्रर कर के चारो तरफ से उस जंगल को घेर लिया । इन्द्रजीतसिंह तो गायब हो ही चुके थे, आनन्दसिंह से भी मिलने की बहुत तर्कीब की गई मगर उनका भी पता न लगा । तरद्दुद में रात बिताई सवेरा होते ही तेजसिंह ने हुक्म दिया कि एक तरफ से इस जंगल को तेजी के साथ काटना शुरू करो जिसमें दिन भर में तमाम जंगल साफ हो जाय ।

उसी समय महाराजा सुरेन्द्रसिंह और जीतसिंह भी वहाँ आ पहुँचे । जंगल का काटना इन्होंने भी पसन्द किया और बोले कि 'बहुत अच्छा होगा अगर हम लोग इस जंगल से एक दम ही निश्चिन्त हो जाँय ।'

इस छोटे से जंगल को काटते देर ही कितनी लगनी थी, तिस पर महा-

राज की मुस्तैदी के सबब यहाँ कोई भी ऐसा नजर नहीं आता था जो पेड़ों की कटाई में न लगा हो। दोपहर होते होते जगल कट के साफ हो गया मगर किसी का कुछ पता न लगा यहाँ तक कि इन्द्रजीतसिंह को तरह आनन्दसिंह के भी गायब हो जाने का निश्चय करना पड़ा हाँ इस जगल के अन्त मे एक कमसिन नौजवान हसीन और बेशकीमती गहने कपड़े से सजी हुई औरत की लाश जरूर पाई गई जिसके सिर का पता न था।

यह लाश महाराज सुरेन्द्रसिंह के सामने लाई गई। अब सभो की परेशानी और भी बढ गई और तरह तरह के ख्याल पैदा होने लगे। लाचार उस लाश को साथ ले शहर की तरफ लौटे। जीतसिंह ने तेजसिंह से कहा, "हम लोग जाते हैं, तारासिंह को भेज के सब ऐयारी को जो शिवदत्त की फिक्र में गए हुए हैं बुलवा कर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की तलाश में भेजेंगे, मगर तुम इसी वक्त उनकी खोज में जहाँ तुम्हारा दिल गवाही दे जाओ"

तेजसिंह अपने सामान से तैयार ही थे, उसी वक्त सलाम कर एक तरफ को रवाना हो गए, और महाराज रूमाल से आखों को पोंछते हुए चुनार कीतरफ बिदा हुए।

उदास और पोतों की जुदाई से दु.खी महाराज सुरेन्द्रसिंह घर पहुँचे। दोनों लड़कों के गायब होने का हाल चन्द्रकान्ता ने भी सुना। वह बेचारी दुनिया के दु.ख सुख को अच्छी तरह समझ चुकी थी इसलिए कलेजा मसोस कर रह गई, जाहिर मे रोकना चिल्लाना उसने पसन्द न किया, मगर ऐसा करने से उसके नाजुक दिल पर और भी सदमा पहुचा, घड़ी भर मे ही उसकी सूरत बदल गई। चपला और चम्पा को चन्द्रकान्ता से कितनी मुहब्बत थी इसको आप लोग खूब जानते है लिखने की कोई जरूरत नहीं, दोनों लड़कों के गायब होने का गम इन दोनों को चन्द्रकान्ता से ज्यादे हुआ और दोनों ने निश्चय कर लिया कि मौका पा कर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का पता लगाने की कोशिश करेंगी।

महाराज सुरेन्द्रसिंह के आने की खबर पाकर वीरेन्द्रसिंह मिलने के लिये उनके पास गए। देवीसिंह भी वहाँ मौजूद थे। वीरेन्द्रसिंह के सामने ही महाराज ने सब हाल देवीसिंह से कह कर पूछा कि 'अब क्या करना चाहिये ?'

देवी०। मै पहिले उस लाश को देखा चाहता हूं जो उस जगल मे पाई गई थी।

सुरेन्द्र०। हाँ तुम उसे जरूर देखो।

जीत०। (चोबदार से) उस लाश को जो जगल मे पाई गई थी इसी जगह लाने के लिये कहो।

"बहुत अच्छा" कह कर चोबदार बाहर चला गया मगर थोडी ही देर मे वापस आकर बोला, "महाराज के साथ आते आते न मालूम वह लाश कहा गुम हो गई ! कई आदमी उसकी खोज मे परेशान है मगर पता नहीं लगता !!"

वीरेन्द्र०। अब फिर हम लोगों को होशियारी से रहने का जमाना आ गया। जब हजारों आदमियो के बीच से लाश गुम हो गई तो मालूम होता है अभी बहुत कुछ उपद्रव होने वाला है।

जीत०। मैने तो समझा था कि अब जो कुछ थोडी सी उम्र रह गई है आराम से कटेगी, मगर नहीं, ऐसी उम्मीद किसी को कुछ भी न रखनी चाहिए।

सुरेन्द्र०। खैर जो होगा देखा जायगा, इस समय क्या करना मुनासिब है उसे सोचो।

जीत०। मेरा विचार था कि तारासिंह को बद्रीनाथ वगैरह के पास भेजते जिसमे वे लोग भैरोसिंह को छुड़ा कर और किसी कार्रवाई मे न फँसें और सीधे यहाँ चले आवे, मगर अब ऐसा करने का भी जी नहीं चाहता। आज भर आप और सब्र करें, अच्छी तरह सोच विचार कर कल मैं अपनी राय दूगा।

पांचवां बयान

पण्डित बद्रीनाथ पन्नालाल रामनारायण और जगन्नाथ ज्योतिषी भैरोसिंह ऐयार को छुडाने के लिए शिवदत्तगढ़ की तरफ गए। हुक्म के मुताबिक कञ्चनसिंह सेनापति ने शेर वाले बाबाजी के पीछे जासूस भेज कर पता लगा लिया था कि भैरोसिंह ऐयार शिवदत्तगढ किले के अन्दर पहुँचाए गए, इसीलिए इन ऐयारों को पता लगाने की जरूरत न पडी, सीधे शिवदत्तगढ पहुँचे और अपनी अपनी सूरत बदल शहर मे घूमने लगे, पाँचो ने एक दूसरे का साथ छोड दिया मगर यह ठीक कर लिया था कि सब लोग घूम फिर कर फलानी जगह इकट्ठे हो जायँगे।

दिन भर घूम फिर कर भैरोसिंह का पता लगाने के बाद कुल ऐयार शहर के बाहर एक पहाडी पर इकट्ठे हुए और रात भर सलाह करके राय कायम करने मे काटी, दूसरे दिन ये लोग फिर सूरत बदल बदल कर शिवदत्तगढ मे पहुँचे। रामनारायण और चुन्नीलाल ने अपनी सूरत उसी जगह के चोबदारों की सी बनाई और वहा पहुँचे जहाँ भैरोसिंह कैद थे। कई दिनो तक कैद रहने के सबब उन्होने अपने को जाहिर कर दिया था और अपनी असली सूरत मे एक कोठडी के अन्दर जिसके तीन तरफ दीवार और एक तरफ लोहे का जँगला लगा हुआ था बन्द थे। उस कोठडी के बगल मे उसी तरह की एक कोठडी और थी जिसमे गद्दी लगाए एक बूढा दारोगा बैठा था और बाहर कई सिपाही नंगी तलवार लिए घूम घूम कर पहरा दे रहे थे। रामनारायण और चुन्नीलाल उस कोठडी के दर्वाजे पर जाकर खडे हुए और बूढे दारोगा से बातचीत करने लगे।

राम०। आपको महाराज ने याद किया है।

बुढा०। क्यों क्या काम है? भीतर आओ, बैठो, चलते है।

रामनारायण और चुन्नीलाल कोठडी के अन्दर गए और बोले—

राम० । न मालूम क्यों बुलाया है मगर ताकीद की है कि जल्द बुला लाओ ।

वृद्धा० । अभी घण्टे भर भी नहीं हुए जब किसी ने आ के कहा था कि महाराज खुद आने वाले हैं, क्या वह बात झूठ थी ?

राम० । हां महाराज आने वाले थे मगर अब न आवेंगे ।

बूढा० । अच्छा आप दोनों आदमी इसी जगह बैठें और कैदी की हिफाजत करें मैं जाता हूं ।

राम० । बहुत अच्छा ।

रामनारायण और चुन्नीलाल को कोठडी के अन्दर बैठा कर बूढा दारोगा बाहर आया और चालाकी से झट उस कोठडी का दर्वाजा बन्द कर के बाहर से बोला, "बन्दगी ! मैं दोनों को पहिचान गया कि ऐयार हो ! कहिये अब हमारे कैद में आप लोग फंसे या नहीं ? मैंने भी क्या मजे में पता लगा लिया ! पूछा कि अभी तो मालूम हुआ था कि महाराज खुद आने वाले हैं, आपने भी झट कबूल कर लिया और कहा कि 'हां आने वाले थे मगर अब न आवेंगे।' यह न समझे कि मैं धोखा देता हूं । इसी अक्ल पर ऐयारी करते हो ? खैर आप लोग भी अब इसी कैदखाने की हवा खाइये और जान लीजिये कि मैं बाकरअली ऐयार आप लोगों को मजा चखाने के लिए इस जगह बैठाया गया हूं ।"

बूढे की बातचीत सुन रामनारायण और चुन्नीलाल चुप हो गये बल्कि शर्मा कर सिर नीचा कर लिया । बूढा दारोगा वहां से रवाना हुआ और शिवदत्त के पास पहुंच उन दोनों ऐयारों के गिरफ्तार करने का हाल कहा। महाराज ने खुश होकर बाकरअली को इनाम दिया और खुशी खुशी खुद रामनारायण और चुन्नीलाल को देखने आये ।

बद्रीनाथ पन्नालाल और ज्योतिषीजी को भी मालूम हो गया कि हमारे साथियों में से दो ऐयार पकड़े गये । अब तो एक की जगह तीन आदमियों के छुडाने की फिक्र करनी पडी ।

कुछ रात गये ये तीनों ऐयार घूम फिर कर शहर के बाहर की तरफ जा रहे थे कि पीछे से एक आदमी काले कपड़े से अपना तमाम बदन छिपाये लपकता हुआ उनके पास आया और लपेटा हुआ छोटा सा एक कागज उनके सामने फेंक और अपने साथ आने के लिये हाथ से इशारा कर के तेजी से आगे बढ़ा।

बद्रीनाथ ने उस पुर्जे को उठा कर सड़क के किनारे एक बनिये की दूकान पर जलते हुए चिराग की रोशनी में पढ़ा, सिर्फ इतना ही लिखा था—"भैरोसिंह।" बद्रीनाथ समझ गए कि भैरोसिंह किसी तरकीब से निकल भागा है और यही जा रहा है। बद्रीनाथ ने भैरोसिंह के हाथ का लिखा भी पहिचाना।

भैरोसिंह पुर्जा फेंक कर इन तीनों को हाथ के इशारे से बुला गया था और दस बारह कदम आगे बढ़ अब इन लोगों के आने की राह देख रहा था।

बद्रीनाथ वगैरह खुश हो कर आगे बढ़े और उस जगह पहुंचे जहां भैरोसिंह काले कपड़े से बदन को छिपाये सड़क के किनारे आड़ देख कर खड़ा था। बातचीत करने का मौका न था, आगे आगे भैरोसिंह और पीछे पीछे बद्रीनाथ पन्नालाल और ज्योतिषीजी तेजी से कदम बढ़ाते शहर के बाहर हो गये।

रात अन्धेरी थी। मैदान में जाकर भैरोसिंह ने काला कपड़ा उतार दिया। इन तीनों ने चन्द्रमा की रोशनी में भैरोसिंह को पहिचाना, खुश होकर बारी बारी तीनों ने उसे गले लगाया और तब एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर बातचीत करने लगे।

बद्री०। भैरोसिंह, इस वक्त तुम्हें देख कर तबीयत बहुत ही खुश हुई।

भैरो०। मैं तो किसी तरह छूट आया मगर रामनारायण और चुन्नीलाल बेढब जा फंसे हैं।

ज्योतिषी०। उन दोनों ने भी क्या ही धोखा खाया है।

भैरो० । मैं उनके छुड़ाने की भी फिक्र कर रहा हूँ ।

पन्ना० । वह क्या ?

भैरो० । सो सब कहने सुनने का मौका तो रात भर है मगर इस समय मुझे भूख बड़ी जोर से लगी है कुछ हो तो खिलाओ ।

बद्री० । दो चार पेड़े हैं, जी चाहे तो खा लो ।

भैरो० । इन दो चार पेड़ों से क्या होगा ? खैर कम से कम पानी का तो बन्दोबस्त होना चाहिये ।

बद्री० । फिर क्या करना चाहिये ?

भैरो० । (हाथ से इशारा कर के) वह देखो शहर के किनारे जो चिराग जल रहा है अभी देखते आये हैं कि वह हलवाई की दूकान है और वह ताजी पूरियाँ बना रहा है, बल्कि पानी भी उसी हलवाई से मिल जायगा ।

पन्ना० । अच्छा मैं जाता हूँ ।

भैरो० । हम लोग भी साथ ही चलते हैं, सभों का इकट्ठे ही रहना ठीक है, कहीं ऐसा न हो कि आप फँस जायँ और हम लोग राह ही देखते रहें ।

पन्ना० । फँसना क्या खिलवाड़ हो गया ?

भैरो० । खैर हर्ज ही क्या है अगर हमलोग साथ ही चले चलें ? तीन आदमी किनारे खड़े हो जायंगे एक आदमी आगे बढ़ कर सौदा ले लेगा ।

बद्री० । हाँ हाँ यही ठीक होगा, चलो हम लोग एक साथ चलें ।

चारो ऐयार एक साथ वहाँ से रवाने हुए और उस हलवाई के पास पहुंचे जिसकी अकेली दूकान शहर के किनारे पर थी । बद्रीनाथ ज्योतिषीजी और भैरोसिंह कुछ दूर इधर ही खड़े रहे और पन्नालाल सौदा खरीदने के लिए दूकान पर गये । जाने के पहिले ही भैरोसिंह ने कहा, "मिट्टी के बर्तन में पानी भी देने का एकरार हलवाई से पहिले कर लेना नहीं तो पीछे हुज्जत करेगा ।"

पन्नालाल हलवाई की दूकान पर गये और दो सेर पूरी सेर भर मिठाई माँगी। हलवाई ने खुद पूछा कि 'पानी भी चाहिये या नहीं?'

पन्ना०। हा हा पानी जरूर देना होगा।

हल०। कोई बर्तन है?

पन्ना०। बर्तन तो है मगर छोटा है, तुम्हीं किसी मिट्टी के ठिलिये में जल दे दो।

हल०। एक घड़ा जल के लिये आठ आने और देने पड़ेंगे।

पन्ना०। इतना अंधेर! खैर हम देंगे।

पूरी मिठाई और एक घड़ा जल लेकर चारो ऐयार वहा से चले मगर यह खबर किसी को भी न थी कि कुछ दूर पीछे दो आदमी साथ लिए छिपता हुआ हलवाई भी आ रहा है। मैदान म एक बड़े पत्थर की चट्टान पर बैठ चारो ने भोजन किया जल पिया और हाथ मुँह धो निश्चिन्त हो धीरे धीरे आपुस मे बातचीत करने लगे। आधा घण्टा भी न बीता होगा कि चारो बेहोश होकर चट्टान पर लेट गए और दोनो आदमियों को साथ लिए हलवाई इनकी खोपड़ी पर आ मौजूद हुआ।

हलवाई के साथ आए हुए दोनों आदमियो ने बद्रीनाथ ज्योतिषीजी और पन्नालाल की मुश्कें कस डालीं और कुछ सुंघा भैरोसिंह को होश मे लाकर बोले, "वाह जी अजायबसिंह, आपकी चालाकी तो खूब काम कर गई। अब तो शिवदत्तगढ़ म आये हुए पाचो नालायक हमारे हाथ फंसे। महाराज से सब से ज्यादे इनाम पाने का काम तो आप ही ने किया!!"

छठवां बयान

बहुत सी तकलीफें उठा कर महाराज सुरेन्द्रसिंह और वीरेन्द्रसिंह तथा इन्हीं की बदौलत चन्द्रकान्ता चपला चम्पा तेजसिंह और देवीसिंह वगैरह ने थोड़े दिन खूब सुख लूटा मगर अब वह जमाना न रहा। सच है सुख और दुःख का पहरा बराबर बदलता रहता है। खुशी के दिन बात

की बात में निकल गए कुछ मालूम न पड़ा यहाँ तक कि मुझे भी कोई बात उन लोगों की लिखने लायक न मिली लेकिन अब उन लोगों की मुसीबत की घड़ी काटे नहीं कटती। कौन जानता था कि गया गुजरा शिवदत्त फिर बला की तरह निकल आवेगा? किसे खबर थी कि बेचारी चन्द्रकान्ता की गोद से पले पलाए दोनों होनहार लड़के यों अलग कर दिये जाएंगे? कौन साफ कह सकता था कि इन लोगों की वंशावली और राज्य में जितनी तरक्की होगी यकायक उतनी ही ज्यादे आफत भी आ पड़ेगी? खैर खुशी के दिन तो उन्होंने काटे, अब मुसीबत की घड़ी कौन झेले? हाँ बेचारे जगन्नाथ ज्योतिषी ने इतना जरूर कह दिया था कि वीरेन्द्रसिंह के राज्य और वंश की बहुत कुछ तरक्की होगी, मगर मुसीबत को लिए हुए। खैर आगे जो कुछ होगा देखा जायगा पर इस समय तो सब के सब तरद्दुद में पड़े हैं। देखिए अपने एकान्त के कमरे में महाराजा सुरेन्द्रसिंह कैसी चिन्ता में बैठे हैं और बाईं तरफ गद्दी का कोना दबाए राजा वीरेन्द्रसिंह अपने सामने बैठे हुए जीतसिंह की सूरत किस बेचैनी से देख रहे हैं। दोनों बाप बेटा अर्थात् देवीसिंह और तारासिंह अपने पास ऊपर के दर्जे पर बैठे हुए बुजुर्ग और गुरू के समान जीतसिंह की तरफ झुके हुए इस उम्मीद में बैठे हैं कि देखें अब आखिरी हुक्म क्या होता है। सिवाय इन लोगों के इस कमरे में और कोई भी नहीं है, एक दम सन्नाटा छाया हुआ है। न मालूम इसके पहिले क्या क्या बातें हो चुकी हैं मगर इस वक्त तो महाराजा सुरेन्द्रसिंह ने इस सन्नाटे को सिर्फ इतना ही कह के तोड़ा, "खैर चम्पा और चपला की भी बात मान लेनी चाहिए।"

जीत०। जो मर्जी, मगर देवीसिंह के लिए क्या हुक्म होता है?

सुरेन्द्र०। और तो कुछ नहीं सिर्फ इतना ही खयाल है कि चुनार की हिफाजत ऐसे वक्त में क्यों कर होगी?

जीत०। मैं समझता हूं कि यहां की हिफाजत के लिए तारा बहुत है और फिर वक्त पड़ने पर इस बुढ़ौती में भी मैं कुछ कर गुजरूंगा।

सुरेन्द्र० । (कुछ मुस्कुरा कर और उम्मीद भरी निगाहों से जीतसिंह की तरफ देख कर) खैर, जो मुनासिब समझो ।

जीत० । (देवीसिंह से) लीजिए साहब, अब आपको भी पुरानी कसर निकालने का मौका दिया जाता है, देखें आप क्या करते हैं ! ईश्वर इस मुस्तैदी को पूरा करें ।

इतना सुनते ही देवीसिंह उठ खड़े हुए और सलाम कर कमरे के बाहर चले गए ।

सातवां बयान

अपने भाई इन्द्रजीतसिंह की जुदाई से व्याकुल हो उसी समय आनन्दसिंह उस जंगल के बाहर हुए और मैदान में खड़े हो इधर उधर निगाह दौड़ाने लगे । पश्चिम तरफ दो औरतें घोड़ों पर सवार धीरे धीरे जाती हुई दिखाई पड़ी । ये तेजी के साथ उस तरफ बढ़े और उन दोनों के पास पहुँचने की उम्मीद में दो कोस तक पीछा किए चले गए मगर उम्मीद पूरी न हुई क्योंकि एक पहाड़ी के नीचे पहुंच कर वे दोनों रुकीं और अपने पीछे आते हुए आनन्दसिंह की तरफ देख घोड़े को एक दम तेज कर पहाड़ी के बगल से घूमती हुई गायब हो गईं ।

खूब खिली हुई चाँदनी रात होने के सबब से आनन्दसिंह को ये दोनों औरतें दिखाई पड़ीं और उन्होंने इतनी हिम्मत भी की, पर पहाड़ी के पास पहुंचते ही उन दोनों के भाग जाने से इनको बड़ा ही रञ्ज हुआ । खड़े हो कर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए । इनको हैरान और सोचते हुए छोड़ कर निर्दयी चन्द्रमा ने भी धीरे धीरे अपने घर का रास्ता लिया और अपने दुश्मन को जाते देख मौका पाकर अन्धेरे ने चारो तरफ हुकूमत जमाई । आनन्दसिंह और भी दुःखी हुए । क्या करें ? कहाँ जाय ? किससे पूछें कि इन्द्रजीतसिंह को कौन ले गया ?

दूर से एक रोशनी दिखाई पड़ी । गौर करने से मालूम हुआ कि किसी

झ! के आगे आग जल रही है। आनन्दसिंह उसी तरफ चले और थोड़ी ही देर में कुटी के पास पहुँच कर देखा कि पत्ते की बनाई हुई हरी झोपड़ी के आगे आठ दस आदमी जमीन पर फर्श बिछाये बैठे हैं जो कि दाढ़ी और पहिरावे से साफ मुसलमान मालूम पड़ते हैं। बीच में दो मोमी शमादान जल रहे हैं। एक आदमी फारसी के शेर पढ़ पढ़ कर सुना रहा है और बाकी सब 'वाह वाह' की धुन लगा रहे हैं। एक तरफ आग जल रही और दो तीन आदमी कुछ खाने की चीजें पका रहे हैं। आनन्दसिंह फर्श के पास जाकर खड़े हो गए।

आनन्दसिंह को देखते ही सब के सब उठ खड़े हुए और बड़ी इज्जत से उनको फर्श पर बैठाया। उस आदमी ने जो फारसी की शेरें पढ़ पढ़ कर सुना रह था खड़े हो कर अपनी रंगीली भाषा में कहा, "खुदा का शुक्र है कि शाहजादये चुनार ने इस मजलिस में पहुँच कर हम लोगों की इज्जत को फल्केहफ्तुम * तक पहुँचाया। इस जंगल बयाबान में हम लोग क्या खातिर कर सकते हैं सिवाय इसके कि इनके कदमों को अपनी आँखों पर जगह दें और इत्र व इलायची पेशकश करें!"

केवल इतना ही कह कर इत्रदान और इलायची की डिब्बी उनके आगे ले गया। पढ़े लिखे भले आदमियों की खातिर जरूरी समझ कर आनन्दसिंह ने इत्र सूँघा और दो इलायची ले लिया, इसके बाद इनसे इजाजत ले कर वह फिर फारसी कविता पढ़ने लगा। दूसरे आदमियों ने दो एक तकिए इनके अलग बगल में रख दिए।

इत्र की विचित्र खुशबू ने इनको मस्त कर दिया, इनकी पलकें भारी हो गईं और बेहोशी ने धीरे धीरे अपना असर जमा कर इनको फर्श पर सुला दिया। दूसरे दिन दोपहर को आँख खुलने पर इन्होंने अपने को

* मुसलमानों की किताबों में सात दर्जे आसमान के लिखे हैं, सब के ऊपर वाले दर्जे का नाम फल्केहफ्तुम है।

एक दूसरे ही मकान में मसहरी पर पड़े हुए पाया। घबड़ा कर उठ बैठे और इधर उधर देखने लगे।

पांच कमसिन और खूबसूरत औरतें सामने खड़ी हुई दिखाई दीं जिनमे से एक सर्दारी की तरह पर कुछ आगे बढ़ी हुई थी। उसके हुस्न और अदा को देख आनन्दसिंह दंग हो गये। उसकी बड़ी बड़ी आंखों और बांकी चितवन ने इन्हें आपे से बाहर कर दिया, उसकी जरा सी हंसी ने इनके दिल पर बिजली गिराई, और आगे बढ़ हाथ जोड़ इस कहने ने तो और भी सितम ढाया कि—"क्या आप मुझसे खफा हैं?"

आनन्दसिंह भाई की जुदाई, रात की बात, ऐयारों के धोखे मे पड़ना, सब कुछ बिल्कुल भूल गए और उसकी मुहब्बत में चूर हो बोले—"तुम्हारा सी परीजमाल से और रंज!!"

वह औरत पलंग पर बैठ गई और आनन्दसिंह के गले मे हाथ डाल के बोली, "खुदा की कसम खा कर कहती हूँ कि साल भर से आपके इश्क ने मुझे बेकार कर दिया! सिवाय आपके ध्यान के खाने पीने की बिल्कुल सुध न रही, मगर मौका न मिलने से लाचार था।"

आनन्द०। (चौंक कर) हैं! क्या तुम मुसलमान हो जो खुदा की कसम खाती हो?

औरत०। (हंस कर) हां, क्या मुसलमान बुरे होते हैं?

आनन्दसिंह यह कह कर उठ खड़े हुए—"अफसोस! अगर तुम मुसलमान न होती तो मैं तुम्हें जी जान से प्यार करता, मगर एक औरत के लिए अपना मजहब नहीं बिगाड़ सकता!"

औरत०। (हाथ थाम कर) देखो बेमुरौवती मत करो! मैं सच कहती हूँ कि अब तुम्हारी जुदाई मुझसे न सही जायगी!!

आनन्द०। मैं भी सच कहता हूँ कि मुझसे किसी तरह की उम्मीद मत रक्खो।

औरत०। (भौं सिकोड़ कर) क्या यह बात दिल से कहते हो?

आनन्द० । हाँ, बल्कि कसम खा कर !

औरत० । देखो पछताओगे और मुझ सी चाहने वाली कभी न पाओगे !

आनन्द० । (अपना हाथ छुडा कर) लानत है ऐसी चाह पर !

औरत० । तो क्या तुम यहाँ से चले जाओगे ?

आनन्द० । जरूर !

औरत० । मुमकिन नहीं ।

आनन्द० । क्या मजाल कि तुम मुझे रोको !

औरत० । ऐसा खयाल भी न करना ।

"देखें मुझे कौन रोकता है !" कह कर आनन्दसिंह उस कमरे के बाहर हुए और उसी कमरे की एक खिडकी जो दीवार में लगी हुई थी खोल वे औरतें वहाँ से निकल गईं ।

आनन्दसिंह इस उम्मीद में चारो तरफ घूमने लगे कि कहीं रास्ता मिले तो बाहर हो जायं मगर उनकी उम्मीद किसी तरह पूरी नहीं हुई ।

यह मकान बहुत लम्बा चौडा न था । सिवाय इस कमरे और एक सहन के और कोई जगह इसमें न थी । चारो तरफ ऊँची ऊँची दीवारों के सिवाय बाहर जाने के लिए कहीं कोई दर्वाजा न था । हर तरह से लाचार और दुःखी हो फिर उसी पलंग पर आ लेटे और सोचने लगे—

"अब क्या करना चाहिए ? इस कम्बख्त से किस तरह जान बचे ? यह तो हो ही नहीं सकता कि मैं इसे चाहूँ या प्यार करूँ । राम राम, मुसलमानिन से और इश्क ! यह तो सपने में भी नहीं होने का । तब फिर क्या करूँ ? लाचारी है, जब किसी तरह छुट्टी न देखूँगा तो इसी खञ्जर से जो मेरी कमर में है अपनी जान दे दूँगा ।"

कमर से खञ्जर निकालना चाहा, देखा तो कमर खाली है । फिर सोचने लगे—

"गजब हो गया ! इस हरामजादी ने तो मुझे किसी लायक न रक्खा । अगर कोई दुश्मन आ जाय तो मैं क्या कर सकूंगा ? वेहया अगर मेरे

पास आवे तो गला दबा कर मार डालूं। नहीं नहीं, वीर-पुत्र होकर स्त्री पर हाथ उठाना! यह मुझसे न होगा, तब क्या भूखे प्यासे जान दे देना पड़ेगा? मुसलमानिन के घर मे अन्न जल कैसे ग्रहण करूँगा! हाँ ठीक है, एक सूरत निकल सकती है। (दीवार को तरफ देख कर) इसी खिड़की से वे लोग बाहर निकल गई हैं। अबकी अगर यह खिड़की खुले और वह इस कमरे मे आवे तो मै जबर्दस्ती इसी राह से बाहर हो जाऊँगा।"

भूखे प्यासे दिन बीत गया, अन्धेरा हुआ चाहता था कि वही छोटी सी खिड़की खुली और चारो औरतों को साथ लिए वह पिशाची आ मौजूद हुई। एक औरत हाथ में रोशनी दूसरी पानी तीसरी तरह तरह की मिठाइयों से भरा चाँदी का थाल उठाए हुए और चौथी पान का जड़ाऊ डब्बा लिए साथ मौजूद थी।

आनन्दसिंह पलंग से उठ खड़े हुए और बाहर निकल जाने की उम्मीद मे उस खिड़की के अन्दर घुसे। उन औरतों ने इन्हें बिलकुल न रोका क्योंकि वे जानती थीं कि सिर्फ इस खिड़की ही के पार चले जाने से उनका काम न चलेगा।

खिड़की के पार तो हो गए मगर आगे अन्धेरा था। इस छोटी सी कोठड़ी मे चारो तरफ घूमे मगर रास्ता न मिला, हाँ एक तरफ बन्द दर्वाजा मालूम हुआ जो किसी तरह खुल न सकता था, लाचार फिर उसी कमरे म लौट आए।

उस औरत ने हँस कर कहा, "मै पहिले ही कह चुकी हूँ कि आप मुझसे अलग नहीं हो सकते। खुदा ने मेरे ही लिए आपको पैदा किया है। अफसोस कि आप मेरी तरफ खयाल नहीं करते और मुफ्त मे अपनी जान गंवाते है। बैठिए, खाइए पीजिए, आनन्द कीजिए, किस सोच मे पड़े है!"

आनन्द०। मै तेरा छुआ खाऊँ?

औरत०। क्यों हर्ज क्या है? खुदा सब का एक है! उसी ने हमको

भी पैदा किया आपको भी पैदा किया, जब एक ही बाप के सब लड़के हैं तो आपुस में छूत कैसी !

आनन्द०। (चिढ़ कर) खुदा ने हाथी भी पैदा किया, गदहा भी पैदा किया, कुत्ता भी पैदा किया, सूअर भी पैदा किया, मुर्गा भी पैदा किया, जब एक ही बाप के सब लड़के हैं तो परहेज काहे का !

औरत०। खैर खुशी आपकी, न मानियेगा पछिताइयेगा, अफसोस कीजियेगा, और आखिर झख मार कर फिर वही कीजियेगा जो मैं कहती हूँ। भूखे प्यासे जान देना जरा मुश्किल बात है— लो मैं जाती हूं।

खाने पीने का सामान और रोशनी वहीं छोड़ चारो लौंडियें उस खिड़की के अन्दर घुस गईं। आनन्दसिंह ने चाहा कि जब यह शैतान खिड़की के अन्दर जाय तो मैं भी जबर्दस्ती साथ हो लूं, या तो पार ही हो जाऊंगा या इसे भी न जाने दूंगा, मगर उनका यह ढङ्ग भी न लगा।

वह मदमाती औरत खिड़की में अन्दर की तरफ पैर लटका कर बैठ गई और इनसे बात करने लगी।

औरत०। अच्छा आप मुझसे शादी न करें इसी तरह मुहब्बत रक्खें।

आनन्द०। कभी नहीं, चाहे जो हो।

औरत०। (हाथ का इशारा करके) अच्छा उस औरत से शादी करेंगे जो आपके पीछे खड़ी है? वह तो हिन्दुआनी है।

"मेरे पीछे दूसरी औरत कहां से आई?" ताज्जुब से पीछे फिर कर आनन्दसिंह ने देखा। उस नालायक को मौका मिला, खिड़की के अन्दर हो झट किवाड़ बन्द कर लिया।

आनन्दसिंह पूरा धोखा खा गये, हर तरह से हिम्मत टूट गई, लाचार फिर उस पलङ्ग पर लेट गये। भूख से आंखें निकली आती थीं, खाने पीने का सामान मौजूद था मगर वह जहर से भी कई दर्जे बढ़ के था, दिल में समझ लिया कि अब जान गई। कभी उठते, कभी बैठते, कभी दालान के बाहर निकल कर टहलते। आधी रात जाते जाते भूख की

कमजोरी ने उन्हें चलने फिरने लायक न रक्खा, फिर पलंग पर आकर लेट गये और ईश्वर को याद करने लगे।

यकायक बाहर धम्माके की आवाज आई जैसे कोई कमरे की छत पर से कूदा हो, आनन्दसिंह उठ बैठे और दर्वाजे की तरफ देखने लगे।

सामने से एक आदमी आता हुआ दिखाई पड़ा जिसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष के होगी। सिपाहियाना पौशाक पहिरे, ललाट में त्रिपुण्ड लगाये, कमर में नीमचा खञ्जर और ऊपर से कमन्द लपेटे, बगल में मुसाफिरी का झोला, हाथ में दूध से भरा हुआ लोटा लिए आनन्दसिंह के सामने आ खड़ा हुआ और बोला :—

"अफसोस! आप राजकुमार होकर वह काम करना चाहते हैं जो ऐयारों जासूसों या अदने सिपाहियों के करने लायक हो। नतीजा यह निकला कि इस चाण्डालिन के यहां फसना पड़ा। इस मकान में आये आपको कै दिन हुए? घबराइये मत, मैं आपका दोस्त हूं दुश्मन नहीं!"

इस सिपाही को देख कर आनन्दसिंह ताज्जुब में आ गये और सोचने लगे कि यह कौन है जो ऐसे वक्त में मेरी मदद को पहुंचा! खैर जो भी हो, बेशक हमारा खैरखाह है बदख्वाह नहीं।

आनन्द०। जहां तक ख्याल करता हूं यहां आये दूसरा दिन है।

सिपाही०। कुछ अन्न जल तो न किया होगा!

आनन्द०। कुछ नहीं।

सिपाही०। हाय! वीरेन्द्रसिंह के प्यारे लड़के की यह दशा!! लीजिये मैं आपको खाने पीने के लिये देता हूं।

आनन्द०। पहिले मुझे मालूम होना चाहिये कि आपकी जात उत्तम है और मुझे धोखा देकर अधर्मी करने की नीयत नहीं है।

सिपाही०। (दांत के नीचे जुबान दाब कर) राम राम, ऐसा स्वप्न में भी ख्याल न कीजियेगा कि मैं धोखा देकर आपको अजाती करूंगा। मैंने पहिले ही सोचा था कि आप शक करेंगे इसलिये ऐसी चीज लाया

हू जिसके खाने पीने से आप उज्र न करें। पलंग पर से उठिये, बाहर आइये।

आनन्दसिंह उसके साथ बाहर गये। सिपाही ने लोटा जमीन पर रख दिया और झोले में से कुछ मेवा निकाल उनके हाथ मे दे बोला, "लीजिये इसे खाइये और (लोटे को तरफ इशारा करके) यह दूध है पीजिये।"

आनन्दसिंह की जान मे जान आ गई, प्यास और भूख से दम निकला जाता था, ऐसे समय मे थोड़े मेवे और दूध का मिल जाना क्या थोड़ी खुशी की बात है। मेवा खाया, दूध पीया, जी ठिकाने हुआ, इसके बाद उस सिपाही को धन्यवाद देकर बोले, "अब मुझे किसी तरह इस मकान के बाहर कीजिये।"

सिपाही०। मै आपको इस मकान के बाहर ले चलूंगा मगर इसकी मजदूरी भी तो मुझे कुछ मिलनी चाहिये।

आनन्द। जो कहिए दूगा।

सिपाही०। आपके पास क्या है जो मुझे देंगे?

आनन्द०। इस वक्त भी हजारों रुपये का माल मेरे बदन पर है।

सिपाही०। मैं यह सब कुछ नहीं चाहता।

आनन्द०। फिर?

सिपाही०। उसी कम्बख्त के बदन पर जो कुछ जेवर है मुझे दीजिये और एक हजार अशर्फी।

आनन्द०। यह कैसे हो सकेगा? वह तो यहा मौजूद नहा है, और हजार अशर्फी भी कहा से आवे।

सिपाही०। उसी से लेकर दीजिये।

आनन्द०। क्या वह मेरे कहने से देगी?

सिपाही०। (हस कर) वह तो आपके लिये जान देने को तैयार है इतनी रकम की क्या बिसात है!

सोच और फिक्र मे तमाम दिन विताया, पहर रात जाते जाते कल की तरह वही सिपाही फिर पहुचा और मेवा दूध आनन्दसिंह को दिया।

आनन्द०। लीजिये आपकी फर्मायश तैयार है।

सिपाही०। तो बस आप इस मकान के बाहर चलिये। एक रोज के कष्ट में इतनी रकम हाथ आई क्या बुरा हुआ!

सब कुछ सामान अपने कब्जे मे करने बाद सिपाही कमरे के बाहर निकला और सहन मे पहुंच कमन्द के जरिये से आनन्दसिंह को मकान के बाहर निकालने बाद आप भी बाहर हो गया। मैदान की हवा लगने से आनन्दसिंह का जी ठिकाने हुआ और समझे कि अब जान बची। बाहर से देखने पर मालूम हुआ कि यह मकान एक पहाडी के अन्दर है और कारीगरों ने पत्थर तोड कर इसे तैयार किया है। इस मकान के अगल बगल मे कई सुरंगें भी दिखाई पडीं।

आनन्दसिंह को लिये हुये वह सिपाही कुछ दूर चला गया जहा कसे कसाये दो घोड़े पेड से बधे थे। बोला, "लीजिये एक पर आप सवार होइये दूसरे पर मै चढता हूँ चलिये आपको घर तक पहुँचा आऊँ।"

आनन्द०। चुनार यहाँ से कितना दूर और किस तरफ है?

सिपाही०। चुनार यहाँ से बीस कोस है। चलिये मैं आप के साथ चलता हू, इन घोडों मे इतनी ताकत है कि सवेरा होते होते हम लोगों को चुनार पहुचा दें। आप घर चलिये, इन्द्रजीतसिंह के लिये कुछ फिक्र न कीजिये, उनका पता भी बहुत जल्द लग जायगा, आपके ऐयार लोग उनकी खोज मे निकले हुये हैं।

आनन्द०। ये घोडे कहाँ से लाये?

सिपाही०। कहीं से चुरा लाये, इसका कौन ठिकाना है!

आनन्द०। खैर यह बतलाओ तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है?

सिपाही०। यह मै नहीं बता सकता और न आपको इसके बारे में कुछ पूछना मुनासिब ही है!

पड़ने पर क्या कर सकेंगे ? मेरे पास एक खञ्जर और एक नीमचा है, दोनों मे से जो चाहें एक आप ले लें।

आनन्द०। बस नीमचा मेरे हवाले कीजिये और चलिए!

आनन्दसिंह ने नीमचा अपनी कमर मे लगाया और सिपाही के साथ पैदल ही उस तरफ को कदम बढ़ाते चले जिधर वह खूनी औरत बकती हुई चली गई थी।

ये दोनों ठीक उसी पगडंडी रास्ते को पकड़े हुए थे जिस पर वह औरत गई थी। थोड़ी थोड़ी दूर पर रुकते और सांस रोक कर इधर उधर की आहट लेते, जब कुछ मालूम न होता तो फिर तेजी के साथ बढ़ते चले जाते थे।

कोस भर के बाद पहाड़ी उतरने की नौबत पहुची, वहा ये दोनो फिर रुके और चारो तरफ देखने लगे। छोटी सी घंटी बजने की आवाज आई। घंटी किसी खोह या गड्हे के अन्दर बजाई गई थी जो वहा से बहुत करीब था जहा ये दोनो बहादुर खड़े हो इधर उधर देख रहे थे।

ये दोनों उसी तरफ मुड़े जिधर से घंटी की आवाज आई थी। फिर आवाज आई। अब तो ये दोनों उस खोह के मुह पर पहुंच गये जो पहाड़ी की कुछ ढाल उतर कर पगडण्डी रास्ते से बाई तरफ हट कर थी और जिसके अन्दर से घंटी की आवाज आई थी। बेधड़क दोनो आदमी खोह के अन्दर घुस गये। अब फिर एक बार घण्टी बजने की आवाज आई और साथ ही एक रोशनी भी चमकती हुई दिखाई दी जिसकी वजह से उस खोह का रास्ता साफ मालूम होने लगा, बल्कि उन दोनों ने देखा कि कुछ दूर आगे एक औरत खड़ी है जो रोशनी होते ही बाई तरफ हट कर किसी दूसरे गड्हे मे उतर गई जिसका रास्ता बहुत छोटा बल्कि एक ही आदमी के जाने लायक था। इन दोनो को विश्वास हो गया कि यह वही औरत है जिसकी खोज मे हम लोग इधर आये है।

रोशनी गायब हो गई मगर अन्दाज से टटोलते हुए ये दोनो भी

आनन्द०। (कमर से नीमचा निकाल कर) वाह, क्या चलना है! मैं विना इस आदमी को छुड़ाए कब टलने वाला हूँ!!

औरत०। (हंस कर) मुंह धो रखिए!

बहादुर वीरेन्द्रसिंह के बहादुर लड़के आनन्दसिंह को ऐसी बातों के सुनने की ताकत कहां? वह दो चार आदमियों को समझते ही क्या थे! 'मुँह धो रखिए!' इतना सुनते ही जोश चढ आया। उछल कर एक हाथ नीमचे का लगाया जिससे वह रस्सी कट गई जो उस आदमी के पैर से बंधी हुई थी और जिसके सहारे वह लटक रहा था, साथ ही फुर्ती से उस आदमी को सम्हाला और जोर से जमीन पर गिरने न दिया।

अब तो वह सिपाही भी आनन्दसिंह का दुश्मन बन बैठा और ललकार कर बोला, "यह क्या लड़कपन है!"

हम ऊपर लिख चुके हैं कि इस सुरंग में दो औरतें और एक हबशी गुलाम है। अब वह सिपाही भी उनके साथ मिल गया और चारो ने आनन्दसिंह को पकड़ लिया, मगर वाह रे आनन्दसिंह! एक झटका दिया कि चारो दूर जा गिरे। इतने ही में बाहर से आवाज आई :—

"आनन्दसिंह, खबरदार! जो किया सो किया, अब आगे कुछ हौसला न करना नहीं तो सजा पाओगे!!"

आनन्दसिंह ने घबडा कर बाहर की तरफ देखा तो एक योगिनी नजर पड़ी जो जटा बढ़ाए भस्म लगाये गेरुआ वस्त्र पहिरे दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएँ हाथ में आग से भरा धधकता हुआ खप्पर जिसमें कोई खुशबूदार चीज जल रही थी और बहुत धूँआँ निकल रहा था लिए हुए आ मौजूद हुई थी।

ताज्जुब में आकर सभी उसकी सूरत देखने लगे। थोड़ी ही देर में उस खप्पर से निकला हुआ धूँआ सुरङ्ग की कोठड़ी में भर गया और उसके असर से जितने वहाँ थे सभी बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े।

आँखों के आगे अन्धेरा छा गया, बिना कुछ सोचे विचारे उस औरत पर बरछी का वार किया। औरत ने बडी फुर्ती से ढाल पर रोका और हस कर कहा, "और जो कुछ हौसला रखता हो ला !"

घण्टे भर तक दोनो मे बरछी की लडाई हुई। इस समय अगर कोई इस फन का उस्ताद होता तो उस औरत की फुर्ती देख बेशक खुश हो जाता और 'वाह वाह' या 'शाबाश' कहे बिना न रहता। आखिर उस औरत की बरछी जिसका फल जहर से बुझाया हुआ था भीमसेन को जाघ मे लगी जिसके लगते ही तमाम बदन मे जहर फैल गया और वह बदहवास होकर जमीन पर गिर पडा।

नौवां बयान

भीमसेन के साथियों ने बहुत खोजा मगर भीमसेन का पता न लगा, लाचार कुछ रात जाते जाते लौट आये और उसी समय महाराज शिवदत्त के पास जाकर अर्ज किया कि आज शिकार खेलने के लिये कुमार जङ्गल मे गये थे, एक बनैले सूअर के पीछे घोडा फेकते हुये न मालूम कहा चले गये, बहुत तलाश किया मगर पता न लगा।

अपने लडके के गायब होने का हाल सुन महाराज शिवदत्त बहुत घबडा गये। थोडी देर तक तो उन लोगों पर खफा होते रहे जो भीमसेन के साथ थे, आखिर कई जासूसों को बुला कर भीमसेन का पता लगाने के लिए चारो तरफ रवाना किया और ऐयारों को भी हर तरह का ताकीद की मगर तीन दिन बीत जाने पर भी भीमसेन का पता न लगा।

एक दिन लडके की जुदाई से व्याकुल हो अपने कमरे मे अकेले बैठे तरह तरह की बाते सोच रहे थे कि एक खास खिदमतगार ने वहा पहुच अपने पैर की धमक से उन्हें चौंका दिया। जब वे उस खिदमतगार की तरफ देखने लगे उसने एक लिफाफा दिखा कर कहा, "चोबदार ने यह लिफाफा हुजूर मे देने के लिये मुझे सौंपा है। उसी चोबदार की जुबानी

मालूम हुआ कि कोई ऊपरी आदमी यह लिफाफा देकर चला गया, चोबदारों ने उसे रोकना चाहा था मगर वह फुर्ती से निकल गया।"

महाराज शिवदत्त ने वह लिफाफा लेकर खोला। अपने लड़के भीमसेन के हाथ का लेख पहिचान बहुत खुश हुए मगर चीठी पढ़ने से तरद्दुद की निशानी उनके चेहरे पर झलकने लगी। चीठी का मतलब यह था :—

"यह जान कर आपको बहुत रञ्ज होगा कि मुझे एक औरत ने बहादुरी से गिरफ्तार कर लिया, मगर क्या करूं लाचार हू, इसका हाल हाजिर होने पर अर्ज करूगा। इस समय मेरी छुट्टी तभी होती है जब आप वीरेन्द्रसिंह के कुल ऐयारों को जो आपके यहा कैद है छोड़ दें और वे खुशी राजी से अपने घर पहुच जाँय। मेरा पता लगाना व्यर्थ है, मैं बहुत ही बेढब जगह कैद किया गया हू।

आपका आज्ञाकारी पुत्र—

भीम।"

चीठी पढ़ कर महाराज शिवदत्त की अजब हालत हो गई। सोचने लगे, "क्या भीम को एक औरत ने पकड़ लिया! वह बड़ा होशियार ताकतवर और शस्त्र चलाने में निपुण था! नहीं नहीं, उस औरत ने जरूर कोई धोखा दिया होगा। पर अब तो उन ऐयारों को छोड़ना ही पड़ा जो मेरी कैद म दे! हाय, किस मुश्किल से ये ऐयार गिरफ्तार हुए थे और अब क्या सहज ही में छोड़े जाते है। खैर लाचारी है, क्या करें!!"

बहुत देर तक सोच विचार कर महाराज शिवदत्त ने फरअला ऐयार को बुला कर कहा, "वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को छोड दो। जब तक वे अपने घर नहा पहुचते हमारा लड़का एक औरत की कैद से नहीं छूटता।"

बाकर०। (ताज्जुब मे) यह क्या बात हुजूर ने कहा मेरा समझ मे कुछ न आया!!

शिव०। भीमसेन को एक औरत ने गिरफ्तार कर लिया है वह

कहती है कि जब तक वीरेन्द्रसिंह के ऐयार न छोड़ दिये जायँगे तुम भी घर जाने न पाओगे।

बाकर०। यह कैसे मालूम हुआ?

शिवदत्त०। (चीठी दे कर) यह देखो खास भीमसेन के हाथ का लिखा हुआ है, इस चीठी पर किसी तरह का शक नहीं हो सकता।

बाकर०। (पढ़ कर) ठीक है, इतने दिनों तक कुमार का पता न लगना ही कहे देता था कि उन्हें किसी ने धोखा दे कर फँसा लिया, अब यह भी मालूम हो गया कि किसी औरत ने मर्दों के कान काटे हैं।

शिवदत्त०। ताज्जुब है, एक औरत ने बहादुरी से भीम को कैसे गिरफ्तार कर लिया! खैर इसका खुलासा हाल तभी मालूम होगा जब भीम से मुलाकात होगी और जब तक वीरेन्द्रसिंह के ऐयार चुनार नहीं पहुँच जाते भीम की सूरत देखने को तरसते रहेंगे। तुम जा के उन ऐयारों को अभी छोड दो, मगर यह मत कहना कि तुम लोग फलानी वजह से छोड़े जाते हो बल्कि यह कहना कि हमसे और वीरेन्द्रसिंह से सुलह हो गई, तुम जल्द चुनार जाओ। ऐसा कहने से वे कहीं न रुक कर सीधे चुनार चले जायेंगे।

बाकरअली महाराज शिवदत्त के पास से उठा और वहा पहुँचा जहां बद्रीनाथ वगैरह ऐयार कैद थे। सभों को कैदखाने से बाहर किया और कहा "अब आप लोगों से हमसे कोई दुश्मनी नहीं, आप लोग अपने घर जाइ॰ क्योंकि हमारे महाराज से और राजा वीरेन्द्रसिंह से सुलह हो गई।"

बद्रीनाथ०। बहुत अच्छी बात है, बडी खुशी का मौका है, पर अगर आपका कहना ठीक है तो हमारे ऐयारी के बटुये और खञ्जर भी दे दीजिये।

बाकर०। हाँ हाँ लीजिए, इसमें क्या उज्र है, अभी मंगाये देता हूँ बल्कि मैं खुद जाकर ले आता हूँ।

दो तीन ऐयारों को साथ ले इन ऐयारो के बटुए वगैरह लेने के लिये

मालूम हुआ कि कोई ऊपरी आदमी यह लिफाफा देकर चला गया, चोबदारों ने उसे रोकना चाहा था मगर वह फुर्ती से निकल गया।"

महाराज शिवदत्त ने वह लिफाफा लेकर खोला। अपने लड़के भीमसेन के हाथ का लेख पहिचान बहुत खुश हुए मगर चीठी पढ़ने से तरद्दुद की निशानी उनके चेहरे पर झलकने लगी। चीठी का मतलब यह था :—

"यह जान कर आपको बहुत रञ्ज होगा कि मुझे एक औरत ने बहादुरी से गिरफ्तार कर लिया, मगर क्या करूं लाचार हूं, इसका हाल हाजिर होने पर अर्ज करूंगा। इस समय मेरी छुट्टी तभी होती है जब आप वीरेन्द्रसिंह के कुल ऐयारों को जो आपके यहां कैद हैं छोड़ दें और वे खुशी राजी से अपने घर पहुंच जांय। मेरा पता लगाना व्यर्थ है, मैं बहुत ही बेढब जगह कैद किया गया हूं।

आपका आज्ञाकारी पुत्र—

भीम।"

चीठी पढ़ कर महाराज शिवदत्त की अजब हालत हो गई। सोचने लगे, "क्या भीम को एक औरत ने पकड़ लिया! वह बड़ा होशियार ताकतवर और शस्त्र चलाने में निपुण था! नहीं नहीं, उस औरत ने जरूर कोई धोखा दिया होगा। पर अब तो उन ऐयारों को छोड़ना ही पड़ा जो मेरी कैद में हैं! हाय, किस मुश्किल से ये ऐयार गिरफ्तार हुए थे और अब क्या सहज ही में छोड़े जाते हैं। खैर लाचारी है, क्या करें!!"

बहुत देर तक सोच विचार कर महाराज शिवदत्त ने करअली ऐयार को बुला कर कहा, "वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को छोड़ दो। जब तक वे अपने घर नहीं पहुंचेंगे हमारा लड़का एक औरत की कैद में नहीं छूटता।"

कर०। (ताज्जुब से) यह क्या बात हुजूर ने कही मेरी समझ में कुछ न आया!!

शिव०। भीमसेन को एक औरत ने गिरफ्तार कर लिया है वह

कहती है कि जब तक वीरेन्द्रसिंह के ऐयार न छोड़ दिये जायँगे तुम घर जाने न पाओगे।

बाकर०। यह कैसे मालूम हुआ?

शिवदत्त०। (चीठी दे कर) यह देखो खास भीमसेन के हाथ लिखा हुआ है, इस चीठो पर किसी तरह का शक नहीं हो सकता।

बाकर०। (पढ कर) ठीक है, इतने दिनों तक कुमार का पता लगना ही कहे देता था कि उन्हें किसी ने धोखा दे कर फँसा लिया, ३ यह भी मालूम हो गया कि किसी औरत ने मर्दों के कान काटे हैं।

शिवदत्त०। ताज्जुब है, एक औरत ने बहादुरी से भीम को ं गिरफ़ार कर लिया! खैर इसका खुलासा हाल तभी मालूम होगा ३ भीम से मुलाकात होगी और जब तक वीरेन्द्रसिंह के ऐयार चुनार न पहुँच जाते भीम की सूरत देखने को तरसते रहेंगे। तुम जा के उन ऐय को अभी छोड दो, मगर यह मत कहना कि तुम लोग फलानी वजह छोड़े जाते हो बल्कि यह कहना कि हमसे और वीरेन्द्रसिंह से सुलह गई, तुम जल्द चुनार जाओ। ऐसा कहने से वे कहीं न रुक कर सं चुनार चले जायँगे।

बाकरअली महाराज शिवदत्त के पास से उठा और वहां पहुँचा ज बद्रीनाथ वगैरह ऐयार कैद थे। सभों को कैदखाने से बाहर किया अ कहा "अब आप लोगों से हमसे कोई दुश्मनी नहीं, आप लोग अ घर जाइ॰ क्योंकि हमारे महाराज से और राजा वीरेन्द्रसिंह से सुर हो गई।"

बद्रीनाथ०। बहुत अच्छी बात है, बडी खुशी का मौका है, पर अ आपका कहना ठीक है तो हमारे ऐयारी के बटुये और खञ्जर भी दे दीजि

बाकर०। हाँ हाँ लीजिए, इसमें क्या उज्र है, अभी मंगाये देता बल्कि मैं खुद जाकर ले आता हूँ।

दो तीन ऐयारों को साथ ले इन ऐयारों के बटुए वगैरह लेने के लि

बाकरअली अपने मकान की तरफ गया, इधर पंडित बद्रीनाथ और पन्नालाल वगैरह निराला पा कर आपुस में बातें करने लगे :—

पन्ना० । क्यों यारो, यह क्या मामला है जो आज हम लोग छोड़े जाते हैं ?

राम० । सुलह वाली बात तो हमारी तबीयत में नहीं बैठती ।

चुन्नी० । अजी कैसी सुलह और कहाँ का मेल ! जरूर कोई दूसरा ही मामला है ।

ज्योतिषी० । बेशक शिवदत्त लाचार होकर हम लोगों को छोड़ रहा है ।

बद्री० । क्यों साहब भैरोसिंह, आप इस बारे में क्या सोचते हैं ?

भैरो० । सोचेंगे क्या ? असल जो बात है मैं समझ गया ।

बद्री० । भला कहिए तो सही क्या समझे ?

भैरो० । इसमें कोई शक नहीं कि हमारे साथियों में से किसी ने यहां के किसी मुड्ढ को पकड़ पाया है, इनको कहला भेजा होगा कि जब तक हमारे ऐयार चुनार न पहुँच जायंगे उनको न छोड़ेंगे, बस इसी से ये बातें बनाई जा रही हैं जिसमें हम लोग जल्दी चुनार पहुँचें ।

बद्री० । शाबाश, बहुत ठीक सोचा, इसमें कोई शक नहीं, मैं समझता हूँ शिवदत्त की जोरू लड़का या लड़की पकड़ी गई है तभी वह इतना कर रहा है नहीं तो दूसरे की वह कब परवाह करने वाला है, तिस पर हम लोगों के मुकाबिले में !

भैरो० । बस बस यही बात है, और अब हम लोग सीधे चुनार क्यों जाने लगे जब तक कुछ दक्षिणा न ले लें !

बद्री० । देखो तो क्या दिल्लगी मचाता हूँ ।

भैरो० । (हँस कर) मैं तो शिवदत्त से साफ कहूँगा कि मेरे पैरों में दर्द है, तीन महीने में भी चुनार नहीं पहुँच सकता, घोड़े पर सवार होने

दिक्कत है, बैल की सवारी से कसम खा चुका हूँ, पालकी पर घायला

या बीमार अमीर लोग चढते हैं, बस बिना हाथी के मेरा काम नहीं चलता, सो भी बिना हौदे के चढने की आदत नहीं, तेजसिंह दीवान का लडका बिना चाँदी सोने के दूसरे हौदे पर बैठ नहीं सकता।

चुन्नी०। भाई बाकरने मुझे बेढब छकाया है, मै तो जब तक बाकर की आठ माशे नाक न ले लूंगा यहाँ से टलने वाला नहीं चाहे जान रहे या जाय!

चुन्नीलाल की बात सुन कर सभी हँस पड़े और देर तक इसी तरह की बातचीत करते रहे, तब तक बाकरअली भी इन सभों के बटुए और खञ्जर लिए हुए आ पहुँचा।

बाकर०। लो साहबों ये आपके बटुये और खञ्जर हाजिर है।

बद्री०। क्यों यार कुछ चुराया तो नहीं! और तो खैर, बस मुझे अपनी अशर्फियों का धोखा है, हम लोगों के बटुये मे खूब मजेदार चमकती हुई अशर्फिया थीं!

बाकर०। अब लगे न झूठ मूठ का बखेडा मचाने!

राम०। (मुह बना कर) हैं, सच कहना! इन बातों से तो मालूम होता है अशर्फियाँ डकार गए। (पन्नालाल वगैरह की तरफ देख कर) लो भाइयों अपनी अपनी चीजे देख लो!

पन्ना०। देखें क्या? हम लोग जब चुनार से चले थे तो सो सो अशर्फियाँ सभों को खर्च के लिये मिली थीं। वे सब ज्यों की त्यो बटुवे के मौजूद था।

भैरो०। भाई मेरे पास तो अशर्फियाँ नहीं थीं, हाँ एक छोटी सी पुटरी जवाहिरात की जरूर थी सो गायब है, अब कहिये इतनी बडी रकम छोड कर कैसे चुनार जाए!!

बद्री०। अच्छी दिल्लगी है! दोनों राजो मे सुलह हो गई और इस खुशी मे लुट गए हम लोग! चलो एक दफे महाराज शिवदत्त से अर्ज करें, अगर सुनेंगे तो बेहतर है नहीं तो इसी जगह अपना अपना गला

काट के रह जायेंगे, धन दौलत लुटा के चुनार जाना हमें मंजूर नहीं!

बाकरअली हैरान कि इन लोगों ने अजब ऊधम मचा रक्खा है, कोई कहता है मेरी अशर्फियाँ गायब हैं, कोई कहता है मेरी जवाहिरात की गठरी गुम हो गई, कोई कहता है हम लुट गये, अब क्या किया जाय? हम तो इस फिक्र में हैं कि जिस तरह हो ये लोग जल्द चुनार पहुँचे जिसमें भीमसेन की जान बचे, मगर ये लोग तो खमीरी आँटे की तरह फैले ही जाते हैं, खैर एक दफे इनको धमकी देनी चाहिये।

बाकर०। देखो, तुम लोग बदमाशी करोगे तो फिर कैद कर लिये जाओगे!

बद्री०। जी हाँ, मैं भी यही सोच रहा हूँ।

पन्ना०। ठीक है, जरूर कैद कर लिए जायँगे, क्योंकि अपनी जमा माँग रहे हैं, चुपचाप चले जायँ तो बेहतर है जिसमें तुम बखूबी रकम पचा जाओ और कोई सुनने न पावे!

भैरो०। यह धमकी तो आप अपने घर में खर्च कीजियेगा, भलमनसी इसी में है कि हम लोगों की जमा बाये हाथ से रख दीजिये, और नहीं तो चलिये राजा साहब के पास, जो कुछ होगा उन्हीं के सामने निपट लेंगे।

बाकर०। अच्छी बात है, चलिये।

सब कोई०। चलिए, चलिए।

यह मसखरों का झुण्ड बाकरअली के साथ साथ महाराजा शिवदत्त के पास पहुँचा।

बाकर०। महाराज देखिये ये लोग झगड़ा मचाते हैं।

भैरो०। जी हाँ, कोई अपनी जमा माँगे तो कहिये झगड़ा मचाते हैं!

शिव०। क्या मामला है?

भैरो०। महाराज मुझसे सुनिये, जब हमारे सरकार से और आपसे सुलह हो गई और हम लोग छोड़ दिये गये तो हम लोगों की वे चीजें भी मिल जानी चाहिये जो कैद होते समय जप्त कर ली गई थीं।

शिव० । क्यों नहीं मिलेंगी।

भैरो० । ईश्वर आपको सलामत रक्खे, क्या इन्साफ किया है। आगे सुनिये, जब हम लोगों ने अपनी चीजें मिया बाकर से मांगीं तो बस बटुआ और खञ्जर तो दे दिया मगर बटुये मे जो कुछ रकम थी गायब कर गये। दो दो चार चार अशर्फिया और दस दस बीस बीस रुपये तो छोड दिए बाकी अपनी कब्र में गाड आये। अब इन्साफ आपके हाथ है।

शिव० । (बाकर से) क्यों जी, यह क्या मामला है?

बाकर० । महाराज ये सब झूठे हैं।

भैरो० । जी हा हम सब के सब झूठे हैं और आप अकेले सच्चे हैं।

शिव० । (भैरो से) खैर जाने दो, तुम लोगों का जो कुछ गया है हमसे लेकर अपने घर जाओ, हम बाकर से समझ लेंगे।

भैरो० । महाराज सौ सौ अशर्फिया तो इन लोगों की गई है और एक गठरी जवाहिरात की मेरी गई। अब बहुत बखेडा कौन करे, बस एक हजार अशर्फिया मगवा दीजिये हम लोग घर का रास्ता लें, रकम तो ज्यादे गई है मगर खैर आपका क्या कसूर।

बाकर० । यारो गजब मत करो !!

भैरो० । हा साहब हम लोग गजब करते है, खैर लीजिये अब एक पैसा न मागेंगे, जी में समझ लेंगे खैरात किया, अब चुनार भी न जायंगे। (उठना चाहता है)।

शिव० । अजी घबराते क्यों हो, जो कुछ तुमने कहा है हम देते हैं न। (बाकर से) क्या तुम्हारी शामत आई है !!

महाराज शिवदत्त ने बाकरअली को ऐसी डाट बताई कि वह बेचारा चुपके से दूर जा खडा हुआ। हजार अशर्फिया मगवा कर भैरोसिंह के आगे रख दी गई, ये लोग अपने अपने बटुये में रख उठ खड़े हुये, यह भी न पूछा कि तुम्हारा कौन कैद हो गया जिसके लिये इतना सह रहे हो,

हा शिवदत्तगढ के बाहर होते होते इन लोगों ने पता लगा ही लिया कि भीमसेन किसी ऐयार के पंजे में पड गया है।

शिवदत्तगढ के बाहर हो सीधे चुनार का रास्ता लिया। दूसरे दिन शाम को जब चुनार पन्द्रह कोस बाकी रह गया सामने से एक सवार घोड़ा फेंकता हुआ इसी तरफ आता दिखाई पडा। पास आने पर भैरोसिंह ने पहिचाना कि शिवदत्त का लड़का भीमसेन है।

भीमसेन ने इन ऐयारों के पास पहुंच कर घोडा रोका और हंस कर भैरोसिंह को तरफ देखा जिसे वह बखूबी पहिचानता था।

भैरो०। क्यों साहब आपको छुट्टी मिली? (अपने साथियों की तरफ देख कर) महाराज शिवदत्त के पुत्र कुमार भीमसेन यही हैं।

भीम०। आप ही लोगों की रिहाई पर मेरी छुट्टी बदी थी, आप लोग चले आये तो मैं क्यों रोका जाता?

भैरो०। हमारे किस साथी ने आपको गिरफ्तार किया?

भीम०। सो मुझे मालूम, नहीं शिकार खेलते समय घोड़े पर सवार एक औरत ने पहुंच कर नेजेबाजी में जहराले नेजे से मुझे जखमी किया, जब मैं बेहोश हो गया मुश्कें बांध एक खोह में ले गई और इलाज करके आराम किया, आगे का हाल आप जानते ही हैं, मुझे यह न मालूम हुआ कि वह औरत कौन थी मगर इसमें शक नहीं कि वह थी औरत ही।

भैरो०। खैर अब आप अपने घर जाइये मगर देखिये आपके पिता ने व्यर्थ ही हम लोगों से वैर बांध रक्खा है। जब वे राजकुमार वीरेन्द्रसिंह के कैदी हो गये थे उस वक्त हमारे महाराज सुरेन्द्रसिंह ने उन्हें बहुत तरह से समझा कर कहा कि आप हम लोगों से वैर छोड़ चुनार में रहें, हम चुनार की गद्दी आपको फेर देते हैं। उस समय तो हजरत को फकीरी सूझी थी, योगाभ्यास की धुन में प्राण की जगह बुद्धि को ब्रह्माण्ड में चढ़ा ले गये थे, लेकिन अब फिर गुदगुदी मालूम होने लगी। खैर हमें क्या, उनकी किस्मत में जन्म भर दुःख ही बदा है तो कोई क्या करे, इतना नहीं

सोचते कि जब चुनार के मालिक थे तब तो कुँअर वीरेन्द्रसिंह से जीते नहीं अब न मालूम क्या कर लेंगे।

भीम०। मैं सच कहता हूँ कि उनकी बातें मुझे पसन्द नहीं मगर क्या करूँ पिता के विरुद्ध होना धर्म नहीं।

भैरो०। ईश्वर करे इसी तरह आपकी धर्म मे बुद्धि बनी रहे, अच्छा अब जाइए।

भीमसेन ने अपने घर का रास्ता लिया और हमारे चोखे ऐयारों ने चुनार की सड़क नापी।

दसवाँ बयान

अब हम अपने पाठकों को फिर उसी खोह में ले चलते हैं जिसमें कुँअर आनन्दसिंह को बेहोश छोड़ आए हैं अथवा जिस खोह मे जान बचाने वाले सिपाही के साथ पहुँच कर उन्होंने एक औरत को छुरे से लाश काटते देखा था और योगिनी ने पहुँच कर सभों को बेहोश कर दिया था।

थोड़ी देर के बाद आनन्दसिंह को छोड़ योगिनी सभों को कुछ सुंघा कर होश में लाई। बेहोश आनन्दसिंह उठा कर एक किनारे रख दिए गए और फिर वही काम अर्थात् लटकते हुए आदमी को छुरे से काट काट कर पूछना कि 'इन्द्रजीतसिंह के बारे मे जो कुछ जानता है बता' जारी हुआ। सिपाही ने भी उन लोगों का साथ दिया। मगर वह आदमी भी कितना जिद्दी था! बदन के टुकड़े टुकड़े हो गये मगर जब तक होश में रहा यही कहता गया कि हम कुछ नहीं जानते। हब्शी ने पहले ही से कब्र खोद रखी थी, दम निकल जाने पर वह आदमी उसी मे गाड़ दिया गया।

इस काम से छुट्टी पा योगिनी ने सिपाही की तरफ देख कर कहा "बाहर जङ्गल से लकड़ी काट काम चलाने लायक एक छोटी सी डोली बनाओ, उसी पर आनन्दसिंह को रख तुम और हब्शी मिल कर

उठा ले जाओ, चुनार के किले के पास इनको रख देना जिसमें होश आने पर अपने घर पहुँच जाय, देखो तकलीफ न हो बल्कि होश में लाने की तर्कीब कर के तब तुम इनसे अलग होना और जहाँ जी चाहे चले जाना, हम लोगों से अगर मिलने की जरूरत हो तो इसी जगह आना।"

सिपाही०। मेरी भी यही राय थी, आनन्दसिंह को तकलीफ क्यों होने लगी, क्या मुझको इसका खयाल नहीं है।

योगिनी०। क्यों नहीं बल्कि मुझसे ज्यादे होगा। अच्छा तुम जाओ जिस तरह बने इस काम को कर लो, हम लोग अब अपने काम पर जाती हैं। (दूसरी औरत की तरफ देख कर जिसने छुरी से उस लाश को काटा था) चलो बहन चलें, इस छोकड़ी को इसी जगह छोड़ दो मजे में रहेगी, फिर बूझा जायगा।

इन दोनों औरतों का अभी बहुत कुछ हाल हमें लिखना है इसलिये जब तक इन दोनों का असल भेद और नाम न मालूम हो जाय तब तक पाठकों के समझने के लिये कोई फर्जी नाम जरूर रख देना चाहिये। एक का नाम तो योगिनी रख ही दिया गया दूसरी का बनचरी समझ लीजिए। योगिनी और बनचरी दोनों खोह के बाहर निकलीं और कुछ दक्खिन झुकते हुए पूरब का रास्ता लिया। इस समय रात बीत चुकी थी और सुबह की सुफेदी के साथ लुपलुपाते हुए दो चार तारे आसमान पर दिखाई दे रहे थे।

पहर दिन चढ़े तक ये दोनों बराबर चली गईं, जब धूप कुछ कड़ी हुई जंगल में एक जगह बेल के पेड़ों की घनी छाँह देख कर टिक गईं जिसके पास ही पानी का झरना भी बह रहा था। दोनों ने कमर से बटुआ खोला और कुछ मेवा निकाल कर खाने तथा पानी पीने के बाद जमीन पर नरम नरम पत्ते बिछा कर सो रहीं।

ये दोनों तमाम रात की जागी हुई थीं, लेटते ही नींद आ गई। दोपहर तक खूब सोईं। जब पहर दिन बाकी रहा उठ बैठीं और चश्मे

के पानी से हाथ मुह धो फिर चल पड़ीं । इसी तरह मोके मौके पर टिकती हुई ये दोनों कई दिन तक बराबर चली गईं । एक दिन आधी रात तक बराबर चले जाने बाद एक तालाब के किनारे पहुँचीं जो बगल वाली पहाड़ी के नीचे साथ सटा हुआ था ।

इस लम्बे चौड़े संगीन और निहायत खूबसूरत तालाब के चारो तरफ पत्थर की सीढ़ियाँ और छोटी छोटी बारहदरियाँ इस तौर पर बनी हुई थीं जो बिल्कुल जल के किनारे ही पड़ती थीं । तालाब के ऊपर भी चारो तरफ पत्थर का फर्श और बैठने के लिए हर एक तरफ सिंहासन की तरह चार चार चबूतरे निहायत खूबसूरत मौजूद थे । ताज्जुब की बात यह थी कि इस तालाब के बीच का जाट लकड़ी की जगह पीतल का इतना मोटा बना हुआ था कि दोनों तरफ दो आदमी खड़े होकर हाथ नहीं मिला सकते थे । जाट के ऊपर लोहे का एक बदसूरत आदमी का चेहरा बैठाया हुआ था ।

तालाब के ऊपर चारो तरफ बड़े बड़े सायेदार दरख्त ऐसे घने लगे हुये थे कि सभो की डालियाँ आपुस मे गुथ रही थीं । ये दोनों उस तालाब पर खड़ी होकर उसकी शोभा देखने लगीं । थोड़ी देर बाद एक चबूतरे पर बैठ गईं मगर मुंह तालाब ही की तरफ किए हुए थीं ।

यकायक जाट के पास का पानी खलबलाया और एक आदमी तैरता हुआ जल के ऊपर दिखाई दिया । इन दोनों की टकटकी उसी तरफ बंध गई, वह आदमी किनारे आया और ऊपर की सीढ़ी पर खड़ा हो चारो तरफ देखने लगा । अब मालूम हो गया कि वह औरत है । योगिनी और बनचरी ने चबूतरे के नीचे हो कर अपने को छिपा लिया मगर उस औरत की तरफ बराबर देखती रहीं ।

उस औरत की उम्र बहुत कम मालूम होती थी जो अभी अभी तालाब से बाहर हो इधर उधर सन्नाटा देख हवा में अपनी धोती सुखा रही थी । थोड़ी ही देर में साड़ी सूख गई जिसे पहिन कर उसने एक तरफ का रास्ता लिया ।

मालूम होता है योगिनी और बनचरी इसी की ताक मे बैठी थीं, क्योंकि जैसे ही वह औरत वहा से चल खडी हुई वैसे ही ये दोनो उस पर लपकीं और जबर्दस्ती गिरफ्तार कर लेना चाहा मगर वह कमसिन औरत इन दोनों को अपनी तरफ आते देख और इन दोनों के मुकाबिले मे अपनी जीत न समझ कर लौट पडी और फुर्ती के साथ उस दरख्त मे से एक पर चढ़ गई जो उस तालाब के चारो तरफ लगे हुये थे। योगिनी और बनचरी दोनो उस दरख्त के नीचे पहुँचीं, योगिनी खडी रही और बनचरी उसे पकड़ने के लिये ऊपर चढ़ी।

हम ऊपर लिख आये है कि यह दरख्त इतने पास पास लगे हुए थे कि सभों की डालिया आपुस मे गुथ गई थीं। बनचरी को पेड पर चढ़ते देख वह जलचरी ऊपर ही ऊपर दूसरे पेड पर कूद गई। यह देख योगिनी ने उसके आगे वाले तीसरे पेड को जा घेरा जिसमे वह बीच ही मे फसी रह जाय और आगे न जाने पावे, मगर यह चालाकी भी न लगी। जब उस औरत ने अपने दोनों बगल वाले पेडों को दुश्मनों से घिरा हुआ पाया, पेड के नीचे उतर आई और तालाब की सीढ़ियों को ते करके धम्म से जल में कूद पडी। योगिनी और बनचरी भी साथ ही पेड से उतरीं और उसके पीछे जाकर इन दोनों ने भी अपने को जल मे डाल दिया।

ग्यारहवां बयान

सूर्य भगवान अस्त होने के लिये जल्दी कर रहे हैं। शाम की ठढी हवा अपनी मस्तानी चाल दिखा रही है। आसमान साफ है क्योंकि अभी अभी पानी बरस चुका है और पच्छा हवा ने रूई के पहल की तरह जमे हुये बादलों को तूम तूम कर उड़ा दिया है। अस्त होते हुये सूर्य की लालिमा ने आसमान पर अपना दखल जमा लिया है और निकले हुये इन्द्रधनुष पर जिन. है उसके रंगदार जौहर को अच्छी तरह उभाड रक्खा है। बाग की रविशों पर जिन पर कुदरती भिश्ती अभी घटे भर हुआ

छिड़काव कर गया है, घूम घूम कर देखने से धुले धुलाये रंग बिरंगी पत्तों की कैफियत और उन सफेद कलियों की बहार दिल और जिगर को क्या ही ताकत दे रही है, जिनके एक तरफ का रंग तो असली मगर दूसरा हिस्सा अस्त होते हुए सूर्य की लालिमा पड़ने से ठीक सुनहला हो रहा है। उस तरफ से आये हुए खुशबू के झपेटे कहे देते हैं कि अभी तक तो आप दृष्टान्त ही में अनहोनी समझ कर कहा सुना करते थे मगर आज 'सोने और सुगन्ध' वाली कहावत देखिये आपकी आँखों के सामने मौजूद ये अधखिली कलियाँ सच किये देती हैं। चमेली की टट्टियों में नाजुक नाजुक सफेद फूल तो खिले हुए हई हैं मगर कहीं कहीं पत्तियों में से छन कर आई हुई सूर्य की आखिरी किरणें धोखे में डालती हैं। यह समझ कर कि आज इन्हीं सुफेद चमेलियों में जर्द चमेली भी खिली हुई है शौक भरा हाथ बिना बढे नहीं रहता। सामने की बनाई हुई सब्जी जिसकी दूब बड़ी सावधानी से काट कर मालियों ने सब्ज मखमली फर्श का नमूना दिखला दिया है, आँखों को क्या ही तरावट दे रही है। देखिये उसी के चारो तरफ सजे हुए गमलों मे खुशरंग पत्तों वाले छोटे छोटे जंगली पौधे अपने हुस्न और जमाल के घमण्ड मे कैसे ऐंठे जाते हैं। हर एक रविशों और क्यारियों के किनारे किनारे गुलमेंहदी के पेड़ ठीक पल्टनों की कतार की तरह खड़े दिखाई देते हैं, क्योंकि छुटपने ही से उनकी फैली हुई डालियाँ काट काट कर मालियों ने मनमानती सूरतें बना डाली हैं। कहने ही को सूरजमुखी (सूर्यमुखी) का फूल सूर्य की तरफ घूमा रहता है मगर नहीं, यहाँ तो देखिये सामने सूर्यमुखी के कितने ही पेड़ लगे हैं जिनके बड़े बड़े फूल अस्त होते हुए दिवाकर की तरफ पीठ किये हसरत भरी निगाहों से देखती हुई उस हसीन नाजनीन के अलौकिक रूप की छटा देख रहे हैं जो इस बाग के बीचोबीच बने हुए कमरे की छत पर खड़ी उसी तरफ देख रही है जिधर सूर्य भगवान अस्त हो रहे हैं उधर ही से बाग मे आने का रास्ता है, मालूम होता है किसी आने वाले की राह

देख रही है, तभी तो सूर्य की हलकी किरणों को सह कर भी एक टक उधर ही ध्यान लगाये है।

इस कमसिन परीजमाले का चेहरा पसीने से भर गया मगर किसी आने वाले की सूरत न देख पड़ी। घबड़ा कर बायें अर्थात् दक्खिन तरफ मुड़ी और उस बनावटी छोटे से पहाड़ को देख कर दिल बहलाना चाहा जिसमे रंग बिरंग के खुशनुमा पत्तों वाले करोटन कौलियस बरबिना बिगूनिया मौस इत्यादि पहाड़ी छोटे छोटे पेड़ बहुत ही कारीगरी से लगाये हुए थे, और बीच मे मौके मोके से घुमा फिरा कर पेड़ों को तरी पहुँचाने और पहाड़ी खूबसूरती को बढाने के लिये नहर काटी हुई थी, ऊपर ढाँचा खड़ा करके निहायत खूबसूरत रेशमी जाल इस लिये डाला हुआ था कि हर तरह की बोलियों से दिल खुश करने वाली उन रंग बिरंगी नाजुक चिड़ियों के उड़ जाने का खौफ न रहे जो उसके अन्दर छोड़ी हुई हैं और इस समय शाम होते देख अपने अपने घोसलों में जो पत्तों के गुच्छों में बनाये हुए है जा बैठने के लिये उतावली हो रही हैं।

हाय, इस पहाड़ी की खूबसूरती से भी उसका परेशान और किसी की जुदाई में व्याकुल दिल न बहला, लाचार छत के उत्तर तरफ खड़ी हो उन तरह तरह के नकशों वाली क्यारियों को देख अपने घबड़ाये हुए दिल को फुसलाना चाहा जिनमें नाले पीले हरे लाल चौरंगे पचरंगे नाजुक मौसिमी फूलों के छोटे छोटे तख्ते सजाये हुए थे, जिनके देखने से बेशकीमती काश्मीरी गालीचे का गुमान हो रहा था और उसी के बीच मे एक चक्करदार फौवारा छूट रहा था जिसकी बारीक धारों का जाल दूर-दूर तक फैल रहा था। रंग बिरंग की तितलियाँ उड़ उड़ कर उन रंगीन फूलों पर इस तरह बैठती थीं कि फूलों मे और उनमे बिलकुल फर्क नहीं मालूम पड़ता था जब तक कि वे फिर से उड़कर किसी दूसरे फूलों के गुच्छों पर न जा बैठतीं।

इन फूलों और फौवारों के छींटों ने भी उसके दिल की कली न खिलाई,

लाचार वह पूरब तरफ आई और अपनी उन सखियों की कार्वाई देखने लगी जो चुन-चुन कर खुशबूदार फूलों के गजरों और गुच्छों के बनाने मे अपने नाजुक हाथों को तकलीफ दे रही थीं। कोई अंगूर की टट्टियो में घुस कर लाल पके हुए अंगूरों की ताक मे थी, कोई पके हुए आम तोडने की धुन मे उन पेड़ों की डालियों तक लग्गे पहुंचा रही थी जिनके नीचे चारो तरफ गड्ढे खुदवा कर इस लिए जल से भरवा दिये गये थे कि पेड़ से गिरे हुए आम चुटीले न होने पावें।

अब सूर्य की लालिमा बिल्कुल जाती रही और धीरे-धीरे अन्धेरा होने लगा। वह बेचारी किसी तरह अपने दिल को न बहला सकी बल्कि अन्धेरे मे बाग के चारो तरफ के बड़े बड़े पेडों की सूरत डरावनी मालूम होने लगी, दिल की धडकन बढती ही गई, लाचार वह छत के नीचे उतर आई और एक सजे सजाये कमरे मे चली गई।

इस कमरे की सजावट मुख्तसर ही थी, एक झाड़ और दस बारह हाँडियाँ छत से लटक रही थीं, चारो तरफ दुशाखी दीवारगीरों में मोम-बत्तियाँ जल रही थीं, जमीन पर फर्श बिछा हुआ और एक तरफ गद्दी लगी हुई थी जिसके आगे दो फर्शी झाड़ अपनी चमक दमक दिखा रहे थे, उसके बगल ही मे एक मसहरी थी जिस पर थोड़े से खुशबूदार फूल और दो तीन गजरे दिखाई दे रहे थे। अच्छे-अच्छे कपड़ों और गहनों से दिमागदार बनी हुई दस बारह कमसिन छोकरियाँ भी इधर-उधर घूम घूम कर ताकों (आलों) पर रक्खे हुए गुलदस्तों मे फूलों के गुच्छे सजा रही थीं।

वह नाजनीन जिसका नाम किशोरी था कमरे में आई मगर गद्दी पर न बैठ कर मसहरी पर जा लेटी और आँचल से मुंह ढाँप न मालूम क्या सोचने लगी। उन्हीं छोकरियों में से एक पंखा झलने लगी, बाकी अपने मालिक को उदास देख सुस्त खड़ी हो गईं मगर निगाहें सभो की मसहरी की तरफ ही थीं।

थोड़ी देर तक इस कमरे में सन्नाटा रहा, इसके बाद किसी आने वाले की आहट मालूम हुई। सभों की निगाह सदर दरवाजे की तरफ घूम गई, किशोरी ने भी मुँह फेरा और उसी तरफ देखने लगी। एक नौजवान लड़का सिपाहियाना ठाठ से कमरे में आ पहुचा जिसे देखते ही किशोरी घबड़ा कर उठ बैठी और बोली :—

"कमला, मैं कब से राह देख रही हू। तैने इतने दिन क्यों लगाये?"

पाठक समझ गये होंगे कि यह सिपाहियाना ठाठ से आने वाला नौजवान लड़का असल में मर्द नहीं है बल्कि कमला के नाम से पुकारे जाने वाली कोई ऐयारा है।

कमला०। यही सोच के तो मैं चली आई कि तुम घबड़ा रही होगी नहीं तो दो दिन का काम और था।

किशोरी०। क्या अभी पूरा हाल मालूम नहीं हुआ?

कमला०। नहीं।

किशोरी०। चुनार में तो हलचल खूब मची होगी।

कमला०। इसका क्या पूछना है! मुझे भी जो कुछ थोड़ा बहुत हाल मिला वह चुनार ही में।

किशोरी०। अच्छा क्या मालूम हुआ?

कमला०। बूढ़े सौदागर की सूरत बन जब मैं तुम्हारी तस्वीर वही अगूठी दे आई उसी समय से उनकी सूरत शक्ल, बातचीत, और चालढाल में फर्क पड़ गया, दूसरे दिन मेरी (सौदागर की) बहुत खोज की गई।

किशोरी०। इसमे कोई शक नहीं कि मेरी आह ने अपना असर किया। हा फिर क्या हुआ?

कमला०। उसके दूसरे या तीसरे दिन उन्हें उदास देख आनन्दसिंह किश्ती पर हवा खिलाने लेगये, साथ में एक बूढ़ा नौकर भी था। बहाव की तरफ कोस डेढ़ कोस जाने के बाद किनारे के जङ्गल से गाने बजाने की आवाज आई, उन्होंने किश्ती किनारे लगाई और उतर कर देखने गये।

वहाँ तुम्हारी सूरत बन माधवी ने पहिले ही से जाल फैला रक्खा था, यहाँ तक कि उसने अपना मतलब साध लिया और न मालूम किस ढंग से उन्हें लेकर गायब हो गई। उस बूढ़े नौकर की जुबानी जो उनके साथ गया था मालूम हुआ कि माधवी के साथ कई औरतें भी थीं जो इन दोनों भाइयों को देखते ही भागीं। आनन्दसिंह उन औरतों के पीछे लपके लेकिन वे भुलावा देकर निकल गईं और आनन्दसिंह ने लौट कर आने पर अपने भाई को भी न पाया, तब गंगा किनारे पहुच डोंगी पर बैठे हुए खिदमतगार से सब हाल कहा।

किशोरी०। यह कैसे मालूम हुआ कि माधवी ने मेरी सूरत बन कर धोखा दिया ?

कमला०। लौटती समय जब मैं उस जंगल के कुछ इधर निकल आई जो अब बिलकुल साफ हो गया है, तो जमीन पर पड़ी हुई एक जडाऊ 'ककनी' नजर आई। उठाकर देखा, मैं उस ककनी को खूब पहिचानती थी, कई दफे माधवी के हाथ मे देख चुकी थी, बस मुझे पूरा यकीन हो गया कि यह काम इसी का है, आखिर उसके घर पहुँची और उसकी हमजोलियों की बातचीत से निश्चय कर लिया।

किशोरी०। देखो रॉड ने मेरे ही साथ दगाबाजी की !

कमला०। कैसी कुछ !

किशोरी०। तो इन्द्रजीतसिंह अब उसी के घर मे होंगे ?

कमला०। नहीं, अगर वहाँ होते तो क्या मैं इस तरह खाली लौट आती ?

किशोरी०। फिर उन्हें कहाँ रक्खा है ?

कमला०। इसका पता नहीं लगा, मैंने चाहा था कि खोज लगाऊ मगर तुम्हारी तरफ खयाल करके दौड़ी आई।

किशोरी०। (ऊँची साँस लेकर) हाय, उस शैतान की बच्ची ने मेरा ध्यान उनके दिल से निकाल दिया होगा !!

इतना कह किशोरी रोने लगी यहाँ तक कि हिचकी बंध गई। कमला ने उसे बहुत समझाया और कसम खाकर कहा कि मैं अन्न उसी दिन खाऊँगी जिस दिन इन्द्रजीतसिंह को तुम्हारे पास ला बैठाऊँगी।

पाठक इस बात के जानने की इच्छा रखते होंगे कि यह किशोरी कौन है? इसका नाम हम पहिले लिख आये हैं और अब फिर कहे देते हैं कि यह महाराज शिवदत्त की लड़की है, मगर यह किसी दूसरे मौके से मालूम होगा कि किशोरी शिवदत्तगढ के बाहर क्यों कर दी गई या बाप का घर छोड़ कर अपने नानिहाल मे क्यों दिखाई देती है।

थोड़ी देर सन्नाटा रहने बाद फिर किशोरी और कमला मे बातचीत होने लगी :—

किशोरी०। कमला, तू अकेली क्या कर सकेगी?

कमला०। मैं तो वह कर सकूँगी जो चपला और चम्पा के किये भी न हो सकेगा।

किशोरी०। तो क्या आज तू फिर जायगी?

कमला०। हॉ जरूर जाऊँगी मगर दो एक बातों का फैसला आज ही तुमसे कर लूगी नहीं तो पीछे बदनामी देने को तैयार हो जाओगी।

किशोरी०। बहिन, ऐसी क्या बात है जो मै तुझी को बदनामी देने पर उतारू हो जाऊंगी? एक तू ही तो मेरे दुःख सुख की साथी है।

कमला०। यह सब सच है मगर आपुस का मामला बहुत टेढ़ा होता है।

किशोरी०। खैर कुछ कह तो सही।

कमला०। कुमार इन्द्रजीतसिंह को तुम चाहती हो, इसी सबब से उनके कुटुम्ब भर की भलाई तुम अपना धर्म समझती हो, मगर तुम्हारे पिता से और उस घराने से पूरा बैर बंध रहा है, ताज्जुब नहीं कि तुम्हारी और इन्द्रजीतसिंह की भलाई करते करते मेरे सबब से तुम्हारे पिता को तकलीफ पहुँचे, अगर ऐसा हुआ तो बेशक तुम्हें रञ्ज होगा।

किशोरी०। इन बातों को न सोच, मैंने तो उसी दिन अपने घर

को इस्तीफा दे दिया जिस दिन पिता ने मुझे निकाल बाहर किया, अगर नानिहाल मे मेरा ठिकाना न होता या मेरे नाना का उनको खौफ न होता तो शायद वे उसी दिन मुझे वैकुण्ठ पहुचा देते। अब मुझे उस घर से रत्ती भर मुहब्बत नहीं है। पर बहिन, तूने यह बड़ा काम किया कि उस दुष्टा को वहाँ से निकाल लाई और मेरे हवाले किया। जब मैं गम की मारी घबड़ा जाती हूँ तभी उस पर दिल का बुखार निकालती हूँ जिससे कुछ ढाढस हो जाती है।

कमला०। मुझे तो अभी तक उसके ऊपर गुस्सा निकालने का मौका ही न मिला, कहो तो आज चलते चलाते मैं भी कुछ बुखार निकाल लूँ ?

किशोरी०। क्या हर्ज है, ला ले आ।

कमला कमरे के बाहर चली गई। उसके पीछे आधे घन्टे तक किशोरी को चुपचाप कुछ सोचने का मौका मिला। उसकी सहेलियाँ वहाँ मौजूद थीं मगर किसी को बोलने का हौसला नहीं पड़ा।

आधे घन्टे बाद कमला एक कैदी औरत को लिये हुए फिर उस कमरे मे दाखिल हुई।

इस औरत की उम्र तीस वर्ष से कम न होगी, चेहरे मोहरे और रंगत से तन्दुरुस्त थी, कह सकते हैं कि अगर इसे अच्छे कपड़े और गहने पहराये जावें तो बेशक हसीनों की पक्ति मे बैठाने लायक हो, पर न मालूम इसकी दुर्दशा क्यों कर रक्खी है और किस कसूर पर कैदी बना डाला है।

इस औरत को देखते ही किशोरी का चेहरा लाल हो गया और मारे गुस्से के तमाम बदन थर थर काँपने लगा। कमला ने उसकी यह दशा देख अपने काम मे जल्दी की और उन सहेलियों मे जो उस कमरे मे खड़ी सब कुछ देख रही थीं एक की तरफ कुछ इशारा करके हाथ बढाया। वह दूसरे कमरे मे चली गई और एक बेंत लाकर उसने कमला के हाथ मे दे दिया।

कई औरतों ने मिल कर उस कैदी औरत के हाथ पैर एक साथ ही मजबूत बाँधे और उसे गेंद की तरह ढुदका दिया।

यहाँ तक तो किशोरी चुपचाप देखती रही मगर जब कमला कमर कस कर खड़ी हो गई तो किशोरी का कोमल कलेजा दहल गया और इसके आगे जो कुछ होने वाला था देखने की ताव न लाकर वह दो सहेलियों को साथ ले कमरे के बाहर निकल बाग की रविशों पर टहलने लगी।

किशोरी चाहे बाहर चली गई मगर कमरे के अन्दर से आती हुई चिल्लाने की आवाज बराबर उसके कानों मे पडती रही। थोड़ी देर बाद कमला किशोरी के पास पहुँची जो अभी तक बाग में टहल रही थी।

किशोरी०। कहो उसने कुछ बताया या नहीं?

कमला०। कुछ नहीं, खैर कहाँ जाती है आज, नही कल, कल नहीं परसों, आखिर बतावेगी। अब मुझे रुखसत करो क्योंकि बहुत कुछ काम करना है।

किशोरी०। अच्छा जा, मैं भी अब घर जाती हूँ नहीं तो नानी इसी जगह पहुँच कर रंज होने लगेंगी। (कमला के गले मिल कर) देख अब मै तेरे ही भरोसे पर जी रही हूँ!

कमला०। जब तक दम मे दम है तब तक तेरे काम से बाहर नहीं हूँ।

कमला वहाँ से रवाना हुई। उसके जाने के बाद किशोरी भी अपनी सखियों का साथ ले वहाँ से चली और थोटी ही दूर पर की एक बड़ी हवेली के अन्दर जा पहुँची।

बारहवाँ बयान

अब हम आपको एक दूसरी ही सरजमीन मे लेचल कर एक दूसरे ही रमणीक स्थान की सैर करा कर तथा इसके साथ ही साथ बड़े-बड़े ताज्जुब

माधवी० । (शर्मा कर और सिर नीचा करके) बस रहने दीजिये, ज्यादे सफाई न दीजिए।

इन्द्र० । अच्छा इन बातों को छोड़ो और अपने वादे को याद करो। आज कौन दिन है? बस आज तुम्हारा पूरा हाल सुने बिना न मानूँगा चाहे जो हो, मगर देखो फिर उन भारी कसमों की याद दिलाता हूँ जो मैं कई दफे तुम्हे दे चुका हूँ, मुझसे झूठ कभी न बोलना नहीं तो अफसोस करोगी!

माधवी० । (कुछ देर तक सोच कर) अच्छा आज भर मुझे और माफ कीजिए, आपसे बढ कर मैं दुनिया में किसी को नहीं समझती और आप ही की शपथ खाकर कहती हूँ कि कल जो कुछ पूछेंगे सब ठीक ठीक कह दूंगी, कुछ न छिपाऊंगी। (आसमान की तरफ देख कर) अब समय हो गया. मुझे दो घण्टे की फुरसत दीजिये।

इन्द्र० । (लम्बी सास लेकर) खैर कल ही सही, जाओ मगर दो घण्टे से ज्यादे न लगाना।

माधवी उठी और मकान के अन्दर चली गई। उसके जाने के बाद इन्द्रजीतसिंह अकेले रह गए और सोचने लगे कि यह माधवी कौन है? इसका कोई बड़ा बुजुर्ग भी है या नहीं? यह अपना हाल क्यों छिपाती है? सुबह शाम दो दो तीन तीन घन्टे के लिए कहाँ और किस से मिलने जाती है? इसमें तो कोई शक नहीं कि यह मुझसे मुहब्बत करती है मगर ताज्जुब है कि मुझे यहा क्यों कैद कर रक्खा है! चाहे यह सरजमीन कैसी ही सुन्दर और दिल लुभाने वाली क्यों न हो फिर भी मेरी तबीयत यहा से उचाट हो रही है। क्या करें कोई तर्कीब नहीं सूझती, बाहर जाने का कोई रास्ता नहीं दिखाई देता, यह तो मुमकिन ही नहीं कि पहाड़ी चढ़ कर कोई पार हो जाय, और यह भी दिल नहीं कबूल करता कि इसे किसी तरह रंज करूँ और अपना मतलब निकालूं क्योंकि मैं अपनी जान इस पर न्योछावर कर चुका हूँ।

ऐसी ऐसी बहुत सी बातों को सोचते सोचते इनका जी बेचैन हो गया, घबड़ा कर उठ खड़े हुए और इधर उधर टहल कर दिल बहलाने लगे। चश्मे का जल निहायत साफ था, बीच की छोटी छोटी खुशरंग ककड़ियाँ और तेजी के साथ दौड़ती हुई मछलियाँ साफ दिखाई पड़ती थीं, इसी की कैफियत देखते देखते किनारे किनारे जाकर दूर निकल गये और वहाँ पहुँचे जहाँ तीनों चश्मो का संगम हो गया था और अन्दाज से ज्यादे आया हुआ जल पहाड़ी के नीचे एक गढ़हे में गिर रहा था।

एक बारीक आवाज इनके कान में आई। सर उठा कर पहाड की तरफ देखने लगे। ऊपर पन्द्रह बीस गज की दूरी पर एक औरत दिखाई पडी जिसे अब तक इन्होंने इस हाते के अन्दर कभी नहीं देखा था। उस औरत ने हाथ के इशारे से ठहरने के लिए कहा तथा ढोकों की आड़ में जहाँ तक बन पड़ा अपने को छिपाती हुई नीचे उतर आई और आड़ देकर इन्द्रजीतसिंह के पास इस तरह खडी हो गई जिसमें उन नौजवान छोकड़ियो मे से कोई इसे देखने न पावे जो यहाँ की रहने वालियाँ चारों तरफ घूम कर चुहलबाजी में दिल बहला रही हैं और जिनका कुछ हाल हम ऊपर लिख आये हैं।

उस औरत ने एक लपेटा हुआ कागज इन्द्रजीतसिंह के हाथ में दिया। इन्होंने कुछ पूछना चाहा मगर उसने यह कह कर कुमार का मुह बन्द कर दिया कि 'बस जो कुछ है इसी चीठी से आपको मालूम हो जायगा, मैं जुबानी कुछ कहना नहीं चाहती और न यहाँ ठहरने का मौका है क्योंकि अगर कोई देख लेगा तो हम आप दोनों ऐसी आफत मे फस जायगे कि जिससे छुटकारा मुश्किल होगा। मैं उसी की लौंडी हूँ जिसने यह चीठी आपके पास भेजी है।'

उसकी बात का इन्द्रजीतसिंह क्या जवाब देंगे इसका इन्तजार न करके वह औरत पहाडी पर चढ़ गई और चालीस पचास हाथ जा एक गड्ढे में घुस कर न मालूम कहाँ लोप हो गई। इन्द्रजीतसिंह ताज्जुब में

आकर खड़े आधी घड़ी तक उस तरफ देखते रहे मगर फिर वह नजर न आई। लाचार इन्होंने कागज खोला और बड़े गौर से पढ़ने लगे, यह लिखा था—

"हाय! मैंने तस्वीर बन कर अपने को आपके हाथ मे सौंपा, मगर आपने मेरी कुछ भी खबर न ली बल्कि एक दूसरी ही औरत के फंदे में फँस गये जिसने मेरी सूरत बन आपको पूरा धोखा दिया। सच है, वह परीजमाल जब आपके बगल में बैठी है तो मेरी सुध क्यों आने लगी!

"आपको मेरी ही कसम है, पढ़ने के बाद इस चीठी के इतने टुकड़े कर डालिये कि एक अक्षर भी दुरुस्त न बचने पावे।

आपकी दासी—किशोरी।"

इस चीठी के पढ़ते ही कुमार के कलेजे मे एक अजीब धड़कन सी पैदा हुई। घबड़ा कर एक चट्टान पर बैठ गये और सोचने लगे—मैं पहिले ही कहता था कि इस तस्वीर से उसकी सूरत नहीं मिलती। चाहे वह कितनी ही हसीन और खूबसूरत क्यों न हो मगर मैंने तो अपने को उसी के हाथ बेच डाला है जिसकी तस्वीर खुशकिस्मती से अब तक मेरे हाथ में मौजूद है। तब क्या करना चाहिये? यकायक इससे तकरार करना भी मुनासिब नहीं,अगर यह इसी जगह मुझे छोड़ कर चली जाय और अपनी सहेलियों को भी ले जाय तो मैं क्या करूँगा? अकेले घबड़ाकर सिवाय प्राण दे देने के और क्या कर सकता हूँ,क्योंकि यहाँ से निकलने का रास्ता मालूम नहीं। यह भी नहीं हो सकता कि इन पहाड़ियों पर चढ़ कर पार हो जाऊँ क्योंकि सिवाय ऊँची ऊँची सीधी चट्टानों के चढ़ने लायक रास्ता कहीं भी नहीं मालूम पड़ता। खैर जो हो,आज मैं जरूर उसके दिल मे कुछ खुटका पैदा करूँगा। नहीं नहीं आज भर और चुप रहना चाहिये, कल उसने अपना हाल कहने का वादा किया ही है, आखिर कुछ न कुछ झूठ जरूर कहेगी,बस उसी समय टोकूंगा। हां एक बात और है। (कुछ रुक कर)

अच्छा देखा जायगा, यह औरत जो मुझे चीठी दे गई है यहा किस तरह पहुँची ? (पहाड़ी की तरफ देख कर) जितनी दूर ऊँचे उसे मैंने देखा था वहाँ तक तो चढ़ जाने का रास्ता मालूम होता है, शायद इतनी दूर तक लोगों की आमदरफ्त होती होगी। खैर ऊपर चल कर देखो तो सही कि बाहर निकल जाने के लिये कोई सुरंग तो नहीं है।"

इन्द्रजीतसिंह उस पहाड़ी पर वहाँ तक चढ गये जहाँ वह औरत नजर पड़ी थी। ढूढने से एक सुरङ्ग ऐसी नजर आई जिसमें आदमी बखूबी घुस सकता था। इन्हें विश्वास हो गया कि इसी राह से वह आई थी और बेशक हम भी इसी राह से बाहर हो जायगे। खुशी खुशी उस सुरग मे घुसे। दस बारह कदम अँधेरे में गये होंगे कि पैर के नीचे जल मालूम पडा। ज्यों ज्यों आगे जाते थे जल ज्यादे जान पड़ता था, मगर यह भी हौसला किये बराबर चले ही गये। जब गले बराबर जल में जा पहुँचे और मालूम हुआ कि आगे ऊपर की चट्टान जल के साथ मिली हुई है तैरकर के भी कोई नही जा सकता और रास्ता बिलकुल नीचे की तरफ झुकता अर्थात् ढालवाँ ही मिलता जाता है तो लाचार होकर लौटे, मगर उन्हें विश्वास हो गया कि वह औरत जरूर इसी राह से आयी थी क्योंकि उसे गीले कपड़े पहिने इन्होंने देखा भी था।

वे औरतें जो पहाड़ी के बीच वाले दिलचस्प मैदान मे घूम रही थी इन्द्रजीतसिंह को कहीं न देखकर घबडा गयीं और दौडती हुई उस हवेली के अन्दर पहुँची जिसका जिक्र हम ऊपर कर आये हैं। तमाम मकान छान डाला, जब पता न लगा तो उन्हीं मे से एक बोली, "हम अब सुरग के पास चलना चाहिये, जरूर उसी जगह होंगे।" आखिर वे सब औरतें वहाँ पहुँची जहाँ सुरग के बाहर निकल कर गीले कपड़े पहिरे इन्द्रजीतसिंह खड़े कुछ सोच रहे थे।

इन्द्रजीतसिंह को सोच विचार करते और सुरग मे आने जाने दो घटे लग गये। रात हो गई थी, चंद्रमा पहिले ही से निकल हुए थे जिसकी

चाँदनी ने दिलचस्प जमीन मे फैल कर अजीब समा जमा रक्खा था। दो घंटे बीत जाने पर माधवी भी लौट आयी थी मगर उस मकान मे या उसके चारो तरफ अपनी किसी लौंडी या सहेली को न देख घबरा गई और उस समय तो उसका कलेजा और भी दहलने लगा जब उसने देखा कि अभी तक घर मे चिराग तक नहीं जला। उसने भी इधर उधर ढूँढ़ना नापसन्द किया और सीधे उसी सुरंग के पास पहुँची, अपनी सब सखियो और लौंडियों को भी वहाँ पाया और यह भी देखा कि इन्द्रजीत-सिंह गीले कपड़े पहने सुरंग के मुहाने से नीचे की तरफ उतर रहे हैं।

क्रोध मे भरी माधवी ने अपनी सखियो की तरफ देख कर धीरे से कहा, "लानत है तुम लोगों की गफलत पर ? इसी लिये तुम हरामखोरियों को मैंने यहाँ रक्खा था !!" गुस्सा ज्यादा चढ़ आया था और होंठ काँप रहे थे इससे कुछ और ज्यादे न कह सकी, फिर भी इन्द्रजीतसिंह के नीचे आते आते तक बड़ी कोशिश से माधवी ने अपने गुस्से को पचाया और बनावटी तौर पर हँस कर इन्द्रजीतसिंह से पूछा, "क्या आप उस नहर के अन्दर गये थे ?"

इन्द्र०। हाँ।

माधवी०। भला यह कौन सी नादानी थी ! न मालूम इसके अन्दर कितने कीड़े मकोड़े सांप बिच्छू होंगे। हम लोगों का तो डर के मारे कभी यहाँ खड़े होने का भी हौसला नहीं पड़ता।

इन्द्र०। घूमते फिरते चश्मे का तमाशा देखते यहाँ तक आ पहुँचे, जी मे आया देखें यह गुफा कितनी दूर तक चली गई है। जब अन्दर गये तो पानी मे भींग कर लौटना पड़ा।

माधवी०। खैर चलिये कपड़े बदलिए।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह का खयाल और भी मजबूत हो गया। वह सोचने लगे कि इस सुरंग मे जरूर कोई भेद है, तभी तो ये सब घबड़ाई हुई यहाँ आ जमा हुईं।

इन्द्रजीतसिंह आज तमाम रात सोच विचार मे पड़े रहे। इनके रंग ढंग से माधवी का भी माथा ठनका और वह भी रात भर चारो तरफ खयाल दौडाती रही।

तेरहवाँ बयान

दूसरे दिन खा पी कर निश्चिन्त होने बाद दोपहर को जब दोनों एकान्त में बैठे तो इन्द्रजीतसिंह ने माधवी से कहा :—

" अब मुझसे सब्र नहीं हो सकता, आज तुम्हारा ठीक ठीक हाल सुने बिना कभी न मानूँगा। और इससे बढ कर निश्चिन्ती का समय भी दूसरा न मिलेगा।"

माधवी०। जी हाँ, आज मै जरूर अपना हाल कहूँगी।

इन्द्रजीत०। तो बस कह चलो, अब देर काहे की है? पहिले यह बताओ कि तुम्हारे माँ बाप कहाँ हैं और यह सरजमीन किस इलाके में है जिसके अन्दर मैं बेहोश करके लाया गया?

माधवी०। यह इलाका गयाजी का है, यहाँ के राजा की मैं लडकी हूँ, इस समय मैं खुद मालिक हूँ, माँ बाप को मरे पाच वर्ष हो गये।

इन्द्र०। ओफ ओह, तो मै गयाजी के इलाके में आ पहुचा! (कुछ सोच कर) तो तुम मेरे लिये चुनार गई थीं!!

माधवी०। जी हाँ मै चुनार गयी थी, और यह अगूठी जो आपके हाथ में है सौदागर की मार्फत मैने ही आपके पास भेजी थी।

इन्द्र०। हाँ ठीक है, तो मालूम पड़ता है किशोरी भी तुम्हारा ही नाम है!

किशोरी के नाम ने माधवी को चौंका दिया और घबराहट में डाल दिया। मालूम हुआ जैसे उसकी छाती मे किसी ने बड़े जोर से मुक्का मारा हो। फौरन उसका खयाल उस सुरंग पर गया जिसके अन्दर से गीले कपड़े पहिरे हुए इन्द्रजीतसिंह निकले थे। वह सोचने लगी, "इनका उस

सुरंग के अन्दर जाना बेसबब नहीं था, या तो कोई मेरा दुश्मन आ पहुँचा या फिर मेरी सखियों में से किसी ने भण्डा फोड़ा!" इसी वक्त से इन्द्रजीतसिंह का खौफ भी उसके कलेजे में बैठ गया और वह इतना घबराई कि किसी तरह अपने को सम्हाल न सकी, बहाना करके उनके पास से उठ खड़ी हुई और बाहर दालान में जाकर टहलने लगी।

इन्द्रजीतसिंह भी उसके चेहरे के चढ़ाव उतार से उसके चित्त का भाव समझ गये और बहाना करके बाहर जाती समय रोकना मुनासिब न समझ कर चुप रहे।

आध घण्टे तक माधवी उस दालान में टहलती रही, जब इसका जी कुछ ठिकाने हुआ तब उसने टहलना बन्द किया और एक दूसरे कमरे में चली गई जिसमें उसकी दो सखियों का डेरा था जिन्हें वह जी जान से मानती थी और जिनका बहुत कुछ भरोसा भी रखती थी। ये दोनों सखियाँ भी जिनका नाम ललिता और तिलोत्तमा था इसे बहुत चाहती थीं और ऐयारी विद्या को भी अच्छी तरह जानती थीं।

माधवी को कुसमय आते देख उसकी दोनों सखियाँ जो इस वक्त पलंग पर लेटी हुई कुछ बातें कर रही थीं घबड़ा कर उठ बैठीं और तिलोत्तमा ने आगे बढ़ कर पूछा, "बहिन क्या है जो इस वक्त यहाँ आई हो? तुम्हारे चेहरे से भी तरद्दुद की निशानी पाई जाती है!"

माधवी०। क्या कहूँ बहिन, इस समय वह बात हुई जिसकी कभी उम्मीद न थी!

ललित०। सो क्या, कुछ कहो तो!

माधवी०। चलो बैठो कहती हूँ, इसी लिये तो आई हूं।

बैठने के बाद कुछ देर तक तो माधवी चुप रही, इसके बाद इन्द्रजीतसिंह से जो कुछ बातचीत हुई थी कह कर बोली, "इसमें कोई शक नहीं कि किशोरी का कोई दूत यहां आ पहुँचा और उसी ने यह सब भेद खोला है। मैं तो उसी समय लटकी थी जब उनको गीले कपड़े पहिरे सुरंग के

मुह पर देखा था। अब बड़ी ही मुश्किल हुई, मैं इनको यहां से बाहर अपने महल मे भी नहीं ले जा सकती क्योंकि वह चाण्डाल सुनेगा तो पूरी दुरगत कर डालेगा, और न मैं उस पर किसी तरह का दबाव ही डाल सकती हूँ क्योंकि राज्य का काम बिल्कुल उसी के हाथ में है, जब चाहे चौपट कर डाले ! जब राज्य ही नष्ट हुआ तो फिर यह सुख कहाँ ? अभी तक तो इन्द्रजीतसिंह का हाल उसे बिल्कुल नहीं मालूम है मगर अब क्या होगा सो नहीं कह सकती !!

माधवी घण्टे भर तक बैठी अपनी चालाक सखियों से राय मिलाती रही, आखिर जो कुछ करना था उसे निश्चय कर वहा से उठी और उस कमरे मे पहुँची जिसमें इन्द्रजीतसिंह को छोड गई थी।

जब तक माधवी अपनी सखियों के पास बैठी बातचीत करती रही तब तक हमारे इन्द्रजीतसिंह भी अपने ध्यान में डूबे रहे। अब माधवी के साथ उन्हें कैसा बर्ताव करना चाहिए और किस चालाकी से अपना पल्ला छुड़ाना चाहिये सब उन्होंने सोच लिया और उसी ढग पर चलने लगे।

जब माधवी इन्द्रजीतसिंह के पास आई तो उन्होंने पूछा, "क्यों एकदम घबडा कर कहा चली गई थी ?"

माधवी०। न मालूम क्यों जी मिचला गया था, इसीलिये दौडी चली गई। कुछ गरमी भी मालूम होने लगी, जाकर एक कै की तब होश ठिकाने हुए।

इन्द्र०। अब तबीयत कैसी है ?

माधवी०। अब तो अच्छी है।

इसके बाद इन्द्रजीतसिंह ने कुछ छेड छाड न की और हँसी खुशी में दिन बिता दिया क्योंकि जो कुछ करना था वह तो दिल में था जाहिर में तकरार करके माधवी के दिल में शक पैदा करना मुनासिब न समझा।

माधवी का तो मामूल ही था कि वह शाम को चिराग जले बाद इन्द्रजीतसिंह से पूछ कर दो घण्टे के लिये न मालूम किस राह से कहीं जाया

माधवी की यह सब कार्रवाई इन्द्रजीतसिंह देख रहे थे। जब उसने शमादान गुल किया और कमरे के बाहर जाने लगी वह भी अपनी चारपाई पर से उठ खड़े हुए और दबे कदम तथा अपने को हर तरह से छिपाये हुए उसके पीछे रवाना हुए।

सोने वाले कमरे से बाहर निकल माधवी एक दूसरी कोठड़ी के पास पहुंची और उसी चाभी से जो उसने आलमारी में से निकाली थी उस कोठरी का ताला खोला मगर अन्दर जाकर फिर बन्द कर लिया। कुंअर इन्द्रजीतसिंह इससे ज्यादे कुछ न देख सके और अफसोस करते हुए उसी कमरे की तरफ लौटे जिसमें उनका पलंग था।

अभी कमरे के दरवाजे तक पहुंचे भी न थे कि पीछे से किसी ने उनके कंधे पर हाथ रक्खा। वे चौंके और पीछे फिर कर देखने लगे। एक औरत नजर पड़ी मगर उसे किसी तरह पहिचान न सके। उस औरत ने हाथ के इशारे से उन्हें मैदान की तरफ चलने के लिए कहा और इन्द्रजीतसिंह भी बेखटके उसके पीछे पीछे मैदान में दूर तक चले गये। वह औरत एक जगह खड़ी हो गई और बोली, "क्या तुम मुझे पहिचान सकते हो?" इसके जवाब में इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "नहीं, तुम्हारी सी काली औरत तो आज तक मैंने देखी ही नहीं!!"

समय अच्छा था; आसमान पर बादल के टुकड़े इधर उधर घूम रहे थे, चन्द्रमा निकला हुआ था जो कभी कभी बादलों में छिप जाता और थोड़ी ही देर में फिर साफ दिखाई देता। वह औरत बहुत ही काली थी और उसके कपड़े भी गीले थे। जब इन्द्रजीतसिंह उसे न पहिचान सके तब उसने अपना बाजू खोला और एक जख्म का दाग उन्हें दिखा कर फिर पूछा, "क्या अब भी तुम मुझे नहीं पहिचान सकते?"

इन्द्रजीत०। (खुश हो कर) क्या मैं तुम्हें चाची कह कर पुकार सकता हूं?

औरत०। हां बेशक पुकार सकते हो।

पुनः माधवी के आंचल में बांध इन्द्रजीतसिंह के पास आकर बोली, "मैं साचा ले चुकी, अब जाती हूँ, कल दूसरी ताली बना कर लाऊँगी, तुम माधवी को रात भर इसी तरह बेहोश पड़ी रहने दो। आज वह अपने ठिकाने न जा सकी इस लिए सवेरे देखना कैसा घबड़ाती है !"

सुबह को कुछ दिन चढ़े माधवी की आंख खुली, घबड़ा कर उठ बैठी। उसने अपने दिल का भाव बहुत कुछ छिपाया मगर उसके चेहरे पर बदहवासी बनी ही रही जिससे इन्द्रजीतसिंह समझ गये कि रात इसकी आंख न खुली और मामूली जगह पर न जा सकी जिसका इसे बहुत रञ्ज है।

दूसरे दिन आधी रात बीतने पर इन्द्रजीतसिंह को सोता समझ माधवी अपने पलंग पर से उठी, शमादान बुझा कर आलमारी में से ताली निकाली और कमरे के बाहर हो उसी कोठरी के पास पहुँची, ताला खोल अन्दर गई और भीतर से फिर ताला बन्द कर लिया। इन्द्रजीतसिंह भी छिपे हुए माधवी के साथ ही साथ कमरे के बाहर निकले थे, जब वह कोठरी के अन्दर चली गई तो यह इधर उधर देखने लगे, उस काली औरत को भी पास ही मौजूद पाया।

माधवी के जाने के आधी घड़ी बाद काली औरत ने उसी नई ताली से कोठड़ी का दर्वाजा खोला जो मुताबिक साचे के आज वह बना कर लाई थी और इन्द्रजीतसिंह को साथ ले अन्दर जा कर फिर ताला बन्द कर दिया। भीतर बिल्कुल अन्धेरा था इसलिए काली औरत को अपने बटुए से सामान निकाल मोमबत्ती जलानी पड़ी जिससे मालूम हुआ कि इस छोटी सी कोठड़ी में केवल बीस पच्चीस सीढ़ियां नीचे उतरने के लिए बनी हैं, अगर बिना रोशनी किये ये दोनों आगे बढ़ते तो बेशक नीचे गिर कर अपने सर मुंह या पैर से हाथ धोते।

दोनों नीचे उतरे। वहां एक बन्द दर्वाजा और मिला, वह भी उसी ताली से खुल गया। अब एक बहुत लम्बी सुरंग में दूर तक जाने की नौबत पहुँची। गौर करने से मालूम होता था कि यह सुरंग पहाड़ी के

नीचे नीचे तैयार की गई है, क्योंकि चारो तरफ सिवाय पत्थर के ईंट चूना या लकड़ी दिखाई नहीं पड़ती थी। यह सुरङ्ग अन्दाज मे दो सौ गज लम्बी होगी। इसे तै करने बाद फिर एक बन्द दर्वाजा मिला। उसे खोलने पर यहा भी ऊपर चढ़ने के लिए वैसी ही सीढ़िया मिलीं जैसी शुरू मे पहिली कोठडी खोलने पर मिली थीं। काली औरत समझ गई कि अब यह सुरङ्ग तै हो गई और इस कोठडी का दर्वाजा खुलने से हम लोग जरूर किसी मकान या कमरे मे पहुचेगे, इसलिए उसने कोठडी को अच्छी तरह देख भाल कर मोमबत्ती गुल कर दी।

हम ऊपर लिख आये हैं और फिर याद दिलाते हैं कि इस सुरंग में जितने दर्वाजे हैं सभों मे इस किस्म के ताले लगे हैं जिनमे बाहर भीतर दोनों तरफ से चाभी लगती है, इस हिसाब से ताली लगाने का सूराख इस पार से उस पार तक ठहरा, अगर दर्वाजे के उस तरफ अन्धेरा न हो तो उस सूराख मे आख लगा कर उधर की चीजे बखूबी देखने में आ सकती हैं।

जब काली औरत मोमबत्ती गुल कर चुकी तो उसी ताली के सूराख से आती हुई एक बारीक रोशनी कोठड़ी के अन्दर मालूम पडी। उस ऐयारा ने सूराख में आख लगा कर देखा। एक बहुत बड़ा आलाशान कमरा बड़े तकल्लुफ से सजा हुआ नजर पड़ा, उसी कमरे में बेशकीमती मसहरी पर एक अधेड आदमी के पास बैठी कुछ बातचीत और हंसी दिल्लगी करती हुई माधवी भी दिखाई पडी। अब विश्वास हो गया कि इसी से मिलने के लिए माधवी रोज आया करती है। इस मर्द में किसी तरह की खूबसूरती न थी तिस पर भी माधवी न मालूम इसकी किस खूबी पर जी जान से मर रही थी और यहा आने में अगर इन्द्रजीतसिंह विघ्न डालते थे तो क्यों इतना परेशान हो जाती थी!

उस काली औरत ने इन्द्रजीतसिंह को भी उधर का हाल देखने के लिए कहा। कुमार बहुत देर तक देखते रहे। उन दोनों में क्या क्या बात-

चीत हो रही थी सो तो मालूम न हुआ मगर उनके हाव भाव से मुहब्बत की निशानी पाई जाती थी। थोड़ी देर के बाद दोनों पलंग पर सो रहे। उसी समय कुअर इन्द्रजीतसिंह ने चाहा कि ताला खोल कर उस कमरे में पहुँचे और उन दोनों नालायकों को कुछ सजा दें मगर काली औरत ने ऐसा करने से उन्हें रोका और कहा, "खबरदार, ऐसा इरादा भी करना नहीं तो हमारा बना बनाया खेल बिगड़ जायगा और बड़े बड़े हौसलों के पहाड़ मिट्टी में मिल जायगे, बस इस समय सिवाय वापस चलने के और कुछ मुनासिब नहीं है।

काली औरत ने जो कुछ कहा लाचार इन्द्रजीतसिंह को मानना और वहा से लौटना ही पड़ा। उसी तरह ताला खोलते और बन्द करते बरा बर चले गए और उस कमरे के दर्वाजे पर पहुचे जिसमें इन्द्रजीतसिंह सोया करते थे। कमरे के अन्दर न जा कर काली औरत इन्द्रजातसिंह को मैदान मे ले गई और नहर के किनारे एक पत्थर की चट्टान पर बैठने बाद दोनों मे यों बातचीत होने लगी :—

इन्द्र०। तुमने उस कमरे में जाने से व्यर्थ ही मुझे रोक दिया!

औरत०। ऐसा करने से क्या फायदा होता? यह कोई गरीब कगाल का घर नहीं है बल्कि ऐसे की अमलदारी है जिसके यहां हजारों बहादुर और एक से एक लड़ाके मौजूद हैं। क्या बिना गिरफ्तार हुए तुम निकल जाते? कभी नहीं। तुम्हारा यह सोचना भी ठीक नहीं है कि जिस राह से मैं आती जाती हूँ उसी राह से तुम भी इस सरजमीन के बाहर हो जाओगे, क्योंकि वह राह सिर्फ हमी लोगों के आने जाने लायक है तुम उससे किसी तरह नहीं जा सकते, फिर जान बूझ कर अपने को आफत में फसाना कौन सी बुद्धिमानी थी।

इन्द्र०। क्या जिस राह से तुम आती जाती हो उससे मैं नहीं जा सकता?

औरत०। कभी नहीं, इसका खयाल भी न करना।

इन्द्र० । सो क्यों ?

औरत० । इसका सबब भी जल्दी ही मालूम हो जायगा ।

इन्द्र० । खैर तो अब क्या करना चाहिये ?

औरत० । अब तुम्हें सब्र करके दस पन्द्रह दिन और इसी जगह रहना मुनासिब है ।

इन्द्र० । अब मैं किस तरह उस बदकार के साथ रह सकूँगा ।

औरत० । जिस तरह भी हो सके ।

इन्द्र० । खैर, फिर इसके बाद क्या होगा ?

औरत० । इसके बाद यही होगा कि तुम सहज ही मे इस खोह के बाहर ही न हो जाओगे बल्कि एक दम से यहाँ का राज्य ही तुम्हारे कब्जे में आ जायगा ।

इन्द्र० । क्या वह कोई राजा था जिसके पास माधवी बैठी थी ?

औरत० । नहीं, यह राज्य माधवी का है और वह उसका दीवान था ।

इन्द्र० । माधवी तो अपने राज काज को कुछ भी नहीं देखती !

औरत० । अगर वह इसी लायक होती तो दीवान की खुशामद क्यों करती ?

इन्द्र० । इस हिसाब से तो दीवान ही को राजा कहना चाहिए ?

औरत० । बेशक ।

इन्द्र० । खैर, अब तुम क्या करोगी ?

औरत० । इसके बताने की अभी कोई जरूरत नहीं, दस बारह दिन बाद मैं तुमसे मिलूँगी और जो कुछ इतने दिनों में कर सकूँगी उसका हाल कहूँगी, बस अब मै जाती हूँ, तुम अपने दिल को जिस तरह हो सके सम्हालो और माधवी पर किसी तरह यह मत जाहिर होने दो कि उसका भेद तुम पर खुल गया या तुम उससे कुछ रंज हो, इसके बाद देखना कि इतना बड़ा राज्य कैसे सहज ही मे हाथ लगता है जिसका मिलना हजारों सिर कटाने पर भी मुश्किल है ।

इन्द्र० । खैर यह तमाशा भी जरूर ही देखने लायक होगा ।

औरत० । अगर बन पड़ा तो इस बाड़े के बीच में भी एक दो दफे आकर तुम्हारी सुध ले जाऊँगी ।

इन्द्र० । जहाँ तक हो सके जरूर आना ।

इसके बाद वह काली औरत चली गई और इन्द्रजीतसिंह अपने कमरे मे आ कर सो रहे ।

पाठक समझते होंगे कि इस काली औरत या इन्द्रजीतसिंह ने जो कुछ किया या कहा सुना सो किसी को मालूम नहीं हुआ, मगर नहीं, यह भेद उसी वक्त खुल गया और काली औरत के काम में बाधा डालने वाला भी कोई पैदा हो गया बल्कि उसने इसी वक्त से छिपे छिपे अपनी कारवाई भी शुरू कर दी जिसका हाल माधवी तक को मालूम न हो सका ।

पन्द्रहवां बयान

अब इस जगह थोड़ा हाल इस राज्य का और साथ ही इसके माधवी का भी लिख देना जरूरी है ।

किशोरी की माँ अर्थात् शिवदत्त की रानी दो बहिनें थीं, एक जिसका नाम कलावती था शिवदत्त के साथ ब्याही थी, और दूसरी मायावती गया के राजा चन्द्रदत्त से ब्याही थी । इसी मायावती की लड़की यह माधवी थी जिसका हाल हम ऊपर लिख आये हैं ।

माधवी को दो वर्ष की छोड़ कर उसकी माँ मर गई थी, मगर माधवी का बाप चन्द्रदत्त होशियार होने पर माधवी को गद्दी देकर मरा था । अब आप समझ गए होंगे कि माधवी और किशोरी दोनों आपुस में मौसेरी बहिनें थीं ।

माधवी का बाप चन्द्रदत्त बहुत ही शौकीन और ऐयाश आदमी था । अपनी रानी को जान से ज्यादा मानता था, खास राजधानी गयाजी छोड़

कर प्रायः राजगृही में रहा करता था जो गया से दो मंजिल पर एक बड़ा भारी मशहूर तीर्थ है। यह दिलचस्प और खुशनुमा पहाड़ी उसे कुछ ऐसा भायी कि साल में दस महीने इसी जगह रहा करता। एक आलीशान मकान भी बनवा लिया। यह खुशनुमा और दिलचस्प जमीन जिसमें कुमार इन्द्रजीतसिंह बेबस पड़े हैं कुदरती तौर पर पहिले ही की बनी हुई थी मगर इसमें आने जाने का रास्ता और यह मकान चन्द्रदत्त ही ने बनवाया था।

माधवी के माँ बाप दोनों ही शौकीन थे। माधवी को अच्छी शिक्षा देने का उन लोगों को जरा भी ध्यान न था। वह दिन रात लाड प्यार ही में पला करती थी और एक खूबसूरत और चंचल दाई की गोद में रह कर अच्छी बातों के बदले हाव भाव ही सीखने में खुश रहती थी, इसी सबब से इसका मिजाज लड़कपन ही से खराब हो रहा था। बच्चों की तालीम पर यदि उनके माँ बाप ध्यान न दे सकें तो मुनासिब है कि उन्हें किसी ज्यादे उम्र वाली और नेकचलन दाई की गोद में दे दें, मगर माधवी के माँ बाप को इसका कुछ भी ख्याल न था और आखिर इसका नतीजा बहुत ही बुरा निकला।

माधवी के समय में इस राज्य में तीन आदमी मुखिया थे, बल्कि यों कहना चाहिये कि इस राज्य का आनन्द ये ही तीनों ले रहे थे और तीनों दोस्त एकदिल हो रहे थे। इनमें से एक तो दीवान अग्निदत्त था, दूसरा कुबेरसिंह सेनापति, और तीसरा धर्मसिंह जो शहर की कोतवाली करता था।

अब हम अपने किस्से की तरफ झुकते हैं और उस तालाब पर पहुँचते हैं जिसमें एक नौजवान औरत को पकड़ने के लिये योगिनी और बनचरी कूदी थीं। आज हम तालाब पर हम अपने कई ऐयारों को देखते हैं जो आपुस में बातचीत और सलाह करके कोई भारी आफत मचाने की तर्कीब जमा रहे हैं।

पण्डित बद्रीनाथ भैरोसिंह और तारासिंह तालाब के ऊपर पत्थर के चबूतरे पर बैठे यों बातचीत कर रहे हैं :—

भैरो०। कुमार को वहाँ से निकाल ले आना तो कोई बड़ी बात नहीं है।

तारा०। मगर उन्हें भी तो कुछ सजा देनी चाहिए जिनकी बदौलत कुमार इतने दिनों से तकलीफ उठा रहे हैं।

भैरो०। जरूर, बिना सजा दिए जी कब मानेगा।

बद्री०। जहाँ तक हम समझते हैं कल वाली राय बहुत अच्छी है।

भैरो०। उससे बढ़ कर कोई राय हो नहीं सकती, ये लोग भी क्या कहेंगे कि किसी से काम पड़ा था।

बद्री०। यहाँ तो बस ललिता और तिलोत्तमा ही शैतानी की जड़ हैं, सुनते हैं उनकी ऐयारी भी बहुत चढ़ी बढ़ी है।

तारा०। पहिले उन्हीं दोनों की खबर ली जायगी।

भैरो०। नहीं नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं, उन्हें गिरफतार किये बिना ही हमारा काम चल जायगा, व्यर्थ कई दिन बर्बाद करने का अब मौका नहीं है।

तारा०। हाँ यह ठीक है, हमें उनकी इतनी जरूरत नहीं है, और क्या ठिकाना जब तक हम लोग अपना काम करें तब तक वे चाची के फन्दे में आ फँसें।

भैरो०। बेशक ऐसा ही होगा, क्योंकि उन्होंने कहा भी था कि तुम लोग इस काम को करो तब तक बन पड़ेगा तो मैं ललिता और तिलोत्तमा को भी फाँस लूँगी।

बद्री०। खैर जो होगा देखा जायगा, अब हम लोग अपने काम में क्यों देर कर रहे हैं?

भैरो०। देर की जरूरत क्या है चलिए, हाँ पहिले अपना अपना शिकार बाट लीजिए।

बद्री०। दीवान साहब को तो मेरे लिये छोड़िये।

भैरो०। हाँ आपका उनका वजन भी बराबर है, अच्छा मैं सेनापति की खबर लूँगा।

तारा० । तो वह चाण्डाल कोतवाल मेरे बाँटे पड़ा ! खैर यही सही।

भैरो० । अच्छा अब यहाँ से चलो।

ये तीनों ऐयार वहाँ से उठे ही थे कि दाहिनी तरफ से छींक की आवाज आई।

बद्री० । धत्तेरे की, क्या तेरे छींकने का कोई दूसरा समय न था !

तारा० । क्या आप छींक से डर गये ?

बद्री० । मैं छींक से नहीं डरा मगर छींकने वाले से जी खटकता है।

भैरो० । हमारे काम में विघ्न पड़ता दिखाई देता है।

बद्री० । इस दुष्ट को पकड़ना चाहिये, बेशक यह चुपके चुपके हमारी बातें सुनता रहा है।

तारा० । छींक नहीं बदमाशी है !

बद्रीनाथ ने इधर उधर बहुत ढूंढ़ा मगर छींकने वाले का पता न लगा, लाचार तरद्दुद ही में तीनों ऐयार वहां से रवाना हुए।

॥ पहिला हिस्सा समाप्त ॥

१९५९ ई०—गुटका चौबीसवां संस्करण—२००० प्रति

मुद्रक—पारिजात प्रेस, बनारस।

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

दूसरा हिस्सा

पहिला बयान

घण्टा भर दिन बाकी है। किशोरी अपने उसी बाग में जिसका कुछ हाल ऊपर लिख चुके हैं कमरे की छत पर सात आठ सखियों के बीच में उदास तकिये के सहारे बैठी आसमान की तरफ देख रही है। सुगन्धित हवा के झोंके उसे खुश किया चाहते हैं मगर वह अपनी धुन में ऐसी उलझी हुई है कि दीन दुनिया की खबर नहीं है। आसमान पर पश्चिम की तरफ लालिमा छाई हुई है, श्याम रंग के बादल ऊपर की तरफ उठ रहे हैं जिनमें तरह तरह की सूरतें बात की बात में पैदा होतीं और देखते देखते बदल कर मिट जाती हैं। अभी यह बादल का टुकड़ा खण्ड पर्वत की तरह दिखाई देता था, अभी उसके ऊपर शेर की सूरत नजर आने लगी, लीजिये शेर की गर्दन इतनी बढ़ी कि साफ ऊँट की शक्ल बन गया और लहमे भर में हाथी का रूप धर लम्बी सूँड़ दिखाने लगा, उसी के पीछे हाथ में बन्दूक लिये एक सिपाही की शक्ल नजर आई लेकिन वह बन्दूक छोड़ने के पहिले खुद ही धूआँ हो कर फैल गया।

बादलों की यह ऐयारी इस समय न मालूम कितने आदमी देख देख कर खुश होते होंगे मगर किशोरी के दिल की धड़कन इसे देख देख कर बढ़ती ही जाती है। कभी तो उसका सर पहाड़ सा भारी हो जाता है, कभी माधवी बाघिन की सूरत ध्यान में आती है, कभी बाकरअली शुतुर-बेमोहर की बदमाशी याद आती है, कभी हाथ में बन्दूक लिए हर दम जान लेने को तैयार बाप की याद तड़पा देती है।

कमला को गये कई दिन हुए, आज तक वह लौट कर नहीं आई, इस सोच ने किशोरी को और भी दुःखी कर रक्खा है। धीरे धीरे शाम हो गई, सखियाँ सब पास बैठी ही रहीं मगर सिवाय ठंढी ठंढी साँस लेने के किशोरी ने किसी से बातचीत न की और वे सब भी दम न मार सकीं।

कुछ रात जाते जाते बादल अच्छी तरह से घिर आये, आँधी भी चलने लगी। किशोरी छत पर से नीचे उतर आई और कमरे के अन्दर मसहरी पर जा लेटी, थोड़ी ही देर बाद कमरे के सदर दर्वाजे का पर्दा हटा और कमला अपनी असली सूरत में आती हुई दिखाई पड़ी।

कमला के न आने से किशोरी उदास हो रही थी, उसे देखते ही पलंग पर से उठी, आगे बढ़ कमला को गले से लगा लिया और गद्दी पर अपने पास ला बैठाया, कुशल मंगल पूछने के बाद बातचीत होने लगी—

किशोरी०। कहो बहिन, तुमने इतने दिनों में क्या क्या काम किया? उनसे मुलाकात भी हुई या नहीं?

कमला०। मुलाकात क्यों न होती? आखिर मैं गई ही थी किस लिए!

किशोरी०। कुछ मेरा हालचाल भी पूछते थे?

कमला०। तुम्हारे लिए तो जान देने को तैयार हैं, क्या हालचाल भी न पूछेंगे? बस अब दो ही एक दिन में तुमसे मुलाकात हुआ चाहती है।

किशोरी० । (खुश होकर) हाँ ! तुम्हें मेरी ही कसम, मुझसे झूठ न बोलना !

कमला० । क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं तुमसे झूठ बोलूँगी ?

किशोरी० । नहीं नहीं, मैं ऐसा नहीं समझती हूँ, लेकिन इस ख्याल से कहती हूँ कि कहीं दिल्लगी न सूझी हो ।

कमला० । ऐसा कभी मत सोचना ।

किशोरी० । खैर यह कहो माधवी की कैद से उन्हें छुट्टी मिली या नहीं और अगर मिली तो क्योंकर ?

कमला० । इन्द्रजीतसिंह को माधवी ने उसी पहाड़ी के बीच वाले मकान में रक्खा था जिसमें पारसाल मुझे और तुम्हें दोनों को आंखों में पट्टी बांध कर ले गई थी ।

किशोरी० । बड़े बेढब ठिकाने छिपा रक्खा !

कमला० । मगर वहां भी उनके ऐयार लोग पहुँच ही गये ।

किशोरी० । (किशोरी को सखियों और लौंडियों की तरफ देख के) तुम लोग जाओ अपना अपना काम करो ।

किशोरी० । हां अभी कोई काम नहीं है, फिर बुलावेंगे तो आना ।

सखियों और लौंडियों के चले जाने पर कमला ने देर तक बातचीत करने के बाद कहा—

"माधवी का और अग्निदत्त दीवान का हाल भी चालाकी से इन्द्रजीतसिंह ने जान लिया, आज कल उनके कई ऐयार वहां पहुँचे हुए हैं, ताज्जुब नहीं कि दस पांच दिन में वे लोग राज्य ही को गारत कर डालें ।"

किशोरी० । मगर तुम तो कहती हो कि इन्द्रजीतसिंह वहां से छूट गये ?

कमला० । हां इन्द्रजीतसिंह तो वहां से छूट गये मगर उनके ऐयारों

ने अभी तक माधवी का पीछा नहीं छोड़ा, इन्द्रजीतसिंह के छुड़ाने का बन्दोबस्त तो उनके ऐयारों ही ने किया था मगर आखिर में मेरे ही हाथ से उन्हें छुट्टी मिली। मैं उन्हें चुनार पहुँचा कर तब यहां आई हूँ और जो कुछ मेरी जुबानी उन्होंने तुम्हें कहला भेजा है उसे कहना तथा उनकी बात मानना ही मुनासिब समझती हूँ।

किशोरी०। उन्होंने क्या कहा है?

कमला०। यों तो वे मेरे सामने बहुत कुछ बक गये मगर असल मतलब उनका यही है कि तुम चुपचाप चुनार उनके पास बहुत जल्द पहुँच जाओ।

किशोरी०। (देर तक सोच कर) मैं तो अभी चुनार जाने को तैयार हूँ मगर इसमें बड़ी हँसाई होगी।

कमला०। अगर तुम हँसाई का ख्याल करोगी तो बस हो चुका क्योंकि तुम्हारे मा बाप इन्द्रजीतसिंह के पूरे दुश्मन हो रहे हैं। जो तुम चाहती हो उसे वे खुशी से कभी मंजूर करेंगे। आखिर जब तुम अपने मन की करोगी तभी लोग हंसेंगे, ऐसा ही है तो इन्द्रजीतसिंह का ध्यान दिल से दूर करो या फिर बदनामी कबूल करो।

किशोरी०। तुम सच कहती हो, एक न एक दिन बदनामी होनी ही है क्योंकि इन्द्रजीतसिंह को मैं किसी तरह नहीं भूल सकती। आखिर तुम्हारी क्या राय है?

कमला०। सखी मैं तो यही कहूँगी कि अगर तुम इन्द्रजीतसिंह को नहीं भूल सकतीं तो उनसे मिलने के लिये इससे बढ़ कर कोई दूसरा मौका तुम्हें न मिलेगा। चुनार में जा कर बैठ रहोगी तो कोई भी तुम्हारा कुछ बिगाड़ न सकेगा, आज कौन ऐसा है जो महाराज बीरेन्द्रसिंह से मुकाबला करने का साहस रखता हो? तुम्हारे पिता अगर ऐसा करते हैं तो यह उनकी भूल है, आज सुरेन्द्रसिंह के खान्दान का सितारा बड़ी

तेजी से आसमान पर चमक रहा है और उनसे दुश्मनी का दावा करना अपने को मिट्टी मे मिला देना है।

किशोरी०। ठीक है मगर मेरे इस तरह वहा चले जाने से इन्द्रजीतसिंह के बड़े लोग कब खुश होंगे ?

कमला०। नहीं नहीं, ऐसा मत सोचो, क्योंकि तुम्हारी और इन्द्रजीतसिंह की मुहब्बत का हाल वहाँ किसी से छिपा नहीं है, सभी जानते हैं कि इन्द्रजीतसिंह तुम्हारे बिना जी नहीं सकते, फिर उन लोगों को इन्द्रजीतसिंह की कितनी मुहब्बत है यह तुम खुद जानती हो, अस्तु ऐसी दशा में वे लोग तुम्हारे जाने से कब नाखुश हो सकते हैं। दूसरे दुश्मन की लडकी अपने घर मे आ जाने से वे लोग अपनी जीत समझते हैं। मुझे महारानी चन्द्रकान्ता ने खुद कहा था कि जिस तरह बने तुम समझा बुझा कर किशोरी को ले आओ, बल्कि उन्होंने अपनी खास सवारी का रथ और कई लौंडी गुलाम भी मेरे साथ भेजे हैं।

किशोरी०। (चौंककर) क्या तुम उन लोगों को अपने साथ लाई हो!

कमला०। जी हा, जब महारानी चन्द्रकान्ता की इतनी मुहब्बत तुम पर देखी तभी तो मै भी वहा चलने के लिए राय देती हूँ।

किशोरी०। अगर ऐसा है तो मै किसी तरह रुक नहीं सकती, अभी तुम्हारे साथ चली चलूँगी, मगर देखो सखी तुम्हें बराबर मेरे साथ रहना पड़ेगा।

कमला०। भला मै कभी तुम्हारा साथ छोड सकती हूँ!

किशोरी०। अच्छा तो यहा किसी से कुछ कहना सुनना तो है नहीं ?

कमला०। किसी से कुछ कहने की जरूरत नहीं बल्कि तुम्हारी इन सखियों और लौंडियों को भी कुछ पता न लगना चाहिये जिनको मैंने इस समय यहाँ से हटा दिया है।

किशोरी०। वह रथ कहाँ खड़ा है ?

कमला० । इसी बगल वाली आम की बाडी में रथ और चुनार से आये हुए लौंडी गुलाम सब मौजूद हैं।

किशोरी० । खैर चलो, देखा जायगा, राम मालिक है।

किशोरी को साथ ले कमला चुपके से कमरे के बाहर निकली और पेडों मे छिपती हुई बाग से निकल कर बहुत जल्द उस आम की बाडी में जा पहुँची जिसमे रथ और लौंडी गुलामों के मौजूद रहने का पता दिया था। वहा किशोरी ने कई लौंडी गुलामों और उस रथ को भी मौजूद पाया जिसमें बहुत तेज चलने वाले ऊँचे काले रंग के नागौरी बैलों की जोडी जुती हुई थी। किशोरी और कमला दोनों सवार हुईं और रथ तेजी के साथ रवाना हुआ।

इधर घण्टे भर बीत जाने पर भी जब किशोरी ने अपनी सखियों और लाडियों को आवाज न दी तब वे लाचार होकर बिना बुलाये उस कमरे में पहुँचीं जिसमें कमला और किशोरी को छोड गईं थीं, मगर वहाँ दोनों में से किसी को भी मौजूद न पाया। घबरा कर इधर उधर ढूँढने लगीं, कहीं पता न पाया। तमाम बाग छान डाला, पर किसी की सूरत दिखाई न पडी। सभों में खलबली मच गई मगर क्या हो सकता था!

आधी रात तक कोलाहल मचा रहा। उसी समय कमला भी वहां आ मौजूद हुई। सभों ने उसे चारो तरफ से घेर लिया और पूछा, "हमारी किशोरी कहाँ है?"

कमला० । यह क्या मामला है जो तुम लोग इस तरह घबडा रही हो? क्या किशोरी कहीं चली गई?

एक० । चली नहीं गई तो कहाँ है, तुम उन्हें कहाँ छोड आई?

कमला० । क्या किशोरी को मैं अपने साथ ले गई थी जो मुझसे पूछती हो? वह कब से गायब है?

एक० । पहर भर से तो हम लोग ढूँढ रही हैं। तुम दोनों इसी कमरे

से बातें कर रही थीं, हम लोगों को हट जाने के लिए कहा, फिर न मालूम क्या हुआ और कहाँ चली गईं ?

कमला० । बस अब मैं समझ गई, तुम लोगों ने धोखा खाया, मैं तो अभी चली ही आती हूं। हाय, यह क्या हुआ! बेशक दुश्मन अपना काम कर गए और हम लोगों को आफत में डाल गए। हाय अब मैं क्या करूँ, कहा जाऊँ, किससे पूछूँ कि मेरी प्यारी किशोरी को कौन ले गया !

दूसरा बयान

किशोरी खुशी खुशी रथ पर सवार हुई और रथ तेजी से जाने लगा। वह कमला भी उसके साथ थी, इन्द्रजीतसिंह के विषय में तरह तरह की बातें कह कह कर उसका दिल बहलाती जाती थी। किशोरी भी बड़े प्रेम से उन बातों को सुनने में लीन हो रही थी। कभी सोचती कि जब इन्द्र-जीतसिंह के सामने जाऊँगी तो किस तरह खड़ी होऊँगी, क्या कहूँगी ? अगर वे पूछ बैठेंगे कि तुम्हें किसने बुलाया तो क्या जवाब दूँगी ? नहीं नहीं, वे ऐसा कभी न पूछेंगे क्योंकि मुझ पर प्रेम रखते हैं, मगर उनके घर की औरतें मुझे देख कर अपने दिल में क्या कहेंगी ! वे जरूर समझेंगी कि किशोरी बड़ी बेहया औरत है। इसे अपनी इज्जत और प्रतिष्ठा का कुछ भी ध्यान नहीं है। हाय, उस समय तो मेरी बड़ी ही दुर्गति होगी, जिंदगी जंजाल हो जायगी, किसी को मुँह न दिखा सकूँगी।

ऐसी ही ऐसी बातों को सोचती, कभी खुश होती कभी इस तरह बे समझे बूझे चल पड़ने पर अफसोस करती थी। कृष्ण पक्ष की सप्तमी थी, अन्धेरे ही में रथ के बैल बराबर दौड़े जा रहे थे। चारो तरफ से घेर कर चलने वाले सवारों के घोड़ों के टापों की बढ़ती हुई आवाज दूर दूर तक फैल रही थी। किशोरी ने पूछा, "क्यों कमला, क्या लौंडियाँ भी

घोड़ों ही पर सवार होकर साथ साथ चल रही हैं ?" जिसके जवाब मे कमला सिर्फ 'जी हाँ' कह कर चुप हो रही।

अब रास्ता खराब और पथरीला आने लगा, पहियों के नीचे पत्थर के छोटे छोटे ढोकों के पड़ने से रथ उछलने लगा जिसकी धमक से किशोरी के नाजुक बदन में दर्द पैदा हुआ।

किशोरी०। ओफ ओह, अब तो बड़ी तकलीफ होने लगी।

कमला०। थोड़ी दूर तक रास्ता खराब है, आगे हम लोग अच्छी सड़क पर जा पहुँचेंगे।

किशोरी०। मालूम होता है हम लोग सीधी और साफ सड़क छोड़ किसी दूसरी ही तरफ से जा रहे हैं।

कमला०। जी नहीं।

किशोरी०। नहीं क्या ? जरूर ऐसा ही है।

कमला०। अगर ऐसा भी है तो क्या बुरा हुआ ? हम लोगों की खोज में जो निकलेंगे वे पा तो न सकेंगे ?

किशोरी०। (कुछ सोच कर) खैर जो किया अच्छा किया मगर रथ का पर्दा तो उठा दो, जरा हवा लगे और इधर उधर की कैफियत देखने में आवे, रात का तो समय है।

लाचार होकर कमला ने रथ का पर्दा उठा दिया और किशोरी ताज्जुब भरी निगाहों से दोनों तरफ देखने लगी।

अभी तक तो रात अन्धेरी थी, मगर अब विधाता ने किशोरी को यह बताने के लिए कि देख तू किस बला में फँसी हुई है, तेरे रथ को चारो तरफ से घेर कर चलने वाले सवार कौन हैं, तू किस राह से जा रही है, और यह पहाड़ी जंगल कैसा भयानक है ? आसमान पर माहताबी जलाई। चन्द्रमा निकल आया और धीरे धीरे ऊँचा होने लगा जिसकी रोशनी में किशोरी ने अपनी बदकिस्मती के कुल सामान देख लिये और एक दम चौंक उठी। चारो तरफ की भयानक पहाड़ी और जंगल ने

उसका कलेजा दहला दिया। उसने उन सवारों की तरफ अच्छी तरह देखा जो रथ को घेरे हुए साथ साथ जा रहे थे। वह बखूबी समझ गई कि इन सवारों में, जैसा कि कहा गया था, कोई भी औरत नहीं है सब मर्द ही हैं। उसे निश्चय हो गया कि वह आफत में फस गई और घबड़ाहट में नीचे लिखे कई शब्द उसकी जुबान से निकल पड़े :—

"चुनार तो पूरब है, मैं दक्खिन तरफ क्यों जा रही हूँ ? इन सवारों में तो एक भी लौंडी नजर नहीं आती ! बेशक मुझे धोखा दिया गया। मैं निश्चय कह सकती हूँ कि मेरी प्यारी कमला कोई दूसरी है। अफसोस !"

रथ में बैठी हुई कमला किशोरी के मुँह से इन बातों को सुन कर होशियार हो गई और झट रथ के नीचे कूद पड़ी, साथ ही बहलवान ने भी बैलों को रोका और सवारों ने बहुत पास आकर रथ को घेर लिया।

कमला ने चिल्ला कर कुछ कहा जिसे किशोरी बिल्कुल न समझ सकी, हा एक सवार घोड़े से नीचे उतर पड़ा और कमला उसी घोड़े पर सवार हो तेजी के साथ पीछे की तरफ लौट गई।

अब किशोरी को अपने धोखा खाने और आफत में फँस जाने का पूरा विश्वास हो गया और वह एक दम चिल्ला कर बेहोश हो गई।

तीसरा बयान

सुबह का सुहावना समय भी बड़ा ही मजेदार होता है। जबर्दस्त भी परले सिरे का है। क्या मजाल कि इसकी अमलदारी में कोई धूम तो मचावे। इसके आने की खबर दो घण्टे पहिले ही से हो जाती है। वह देखिये आसमान के जगमगाते हुए तारे कितनी बेचैनी और उदासी के साथ हसरत भरी निगाहों से जमीन की तरफ देख रहे हैं जिनको सूरत और चलाचली की बेचैनी देख बागों की सुन्दर कलियों ने भी मुस्कुराना

शुरू कर दिया है, अगर यही हालत रही तो सुबह होते होते तक जरूर खिलखिला कर हँस पड़ेंगी।

लीजिये अब दूसरा ही रंग बदला। प्रकृति की न मालूम किस ताकत ने आसमान की स्याही को धो डाला और उनकी हुकूमत की रात बातते देख उदास तारों को भी बिदा होने का हुक्म सुना दिया। इधर बेचैन तारों की घबराहट देख अपने हुस्न और जमाल पर भूली हुई खिलखिला कर हँसने वाली कलियों को सुबह की ठण्डी ठण्डी हवा ने खूब ही आड़े हाथों लिया और मारे थपेड़ों के उनके उस बनाव को बिगाड़ना शुरू कर दिया जो दो ही घण्टे पहिले प्रकृति की किसी लौंडी ने दुरुस्त कर दिया था।

मोतियों से ज्यादे आबदार ओस की बूँदों को बिगड़ते और हँसती हुई कलियों का शृङ्गार मिटते देख उनकी तरफदार खुशबू से न रहा गया, झट फूलों से अलग हो सुबह की ठण्डी हवा से उलझ पड़ी और इधर उधर फैल धूम मचाना शुरू कर दिया। अपनी फरियाद सुनाने के लिये उन नौजवानों के दिमागों में घुस घुस कर उठाने की फिक्र करने लगी जो रात भर जाग जग कर इस समय खूबसूरत पलगड़ियों पर सुस्त पड़ रहे थे। जब उन्होंने कुछ न सुना और करवट बदल कर रह गये तो मालियों को जा घेरा। वे झट उठ बैठे और कमर कस उस जगह पहुँचे जहां फूलों और उमंग भरे हवा के झपेटों से कहा सुनी हो रही थी।

कम्बख्त छोटे लोगों का यह दिमाग कहां कि ऐसों का फैसला करें। बस फूलों को तोड़ ताड़ कर चँगेर भरने लगे। चलो छुट्टी हुई, न रहे बांस न बाजे बांसुरी। क्या अच्छा झगड़ा मिटाया है! इसके बदले में वे बड़े बड़े दरख्त खुश हो हवा की मदद से झुक झुक कर मालियों को सलाम करने लगे जिनकी टहनियों में एक भी फूल दिखाई नहीं देता था। क्यों ऐसा न करें! उनमें था ही क्या जो दूसरों को महक देते, अपना सूत सभी को भाता है और अपना सा होते देख सभी खुश होते हैं।

लीजिये उन परीजमालों ने भी पलङ्ग का पीछा छोड़ा और उठते ही आईने के मुकाबिल हो बैठीं जिनके बनाव को चाहने वालों ने रात भर में बिगोर कर रख दिया था। झटपट अपनी सम्बुली जुल्फों को सुलझा, माहताबी चेहरों को गुलाबजल से साफ कर अलबेली चाल से अठखेलियाँ करती, चम्पई दुपट्टा सभालती, रविशों पर घूमने और फूलों के मुकाबिल मे रुक कर पूछने लगीं कि 'कहिये आप अच्छे या हम ?' जब जवाब न पाया हाथ बढ़ा तोड़ लिया और बालियों मे झुमकों की जगह रख आगे बढ़ीं। गुलाब की पटरी तक पहुँची थीं कि काटों ने आँचल पकड़ा और इशारे से कहा, "जरा ठहर जाइये, आपके इस तरह लापरवाह जाने मे उलझन होती है, और नहीं तो चार आँखें ही करते और आँसू पोंछते जाइये !"

जाने दीजिये, ये सब घमण्डी हैं। हमे तो कुछ उन लोगों की कुलबुलाहट भला मालूम होती है जो सुबह होने के दो घण्टे पहिले ही उठ, हाथ मुँह धो, जरूरी कामों से छुट्टी पा, बगल मे धोती दबा, गंगाजी की तरफ लपके जाते हैं और वहा पहुँच स्नान कर भस्म या चन्दन लगा पटरों पर बैठ संध्या करते करते सुबह के सुहावने समय का आनन्द पतित पावनी श्री गंगाजी की पापनाशिनी तरंगों से ले रहे हैं। इधर गुसी में छुपी उंगलियों ने प्रेमानन्द मे मग्न मन-राज की आज्ञा मे गिरिजापति का नाम ले एक दाना पीछे हटाया और उधर तरनतारिनी भगवती जाह्नवी की लहरें तलवों ही से छू छू कर दस बीस जन्म का पाप बहा ले गईं। सुगन्धित हवा के झपेटे कहते फिरते हैं—"जरा ठहर जाइये, अर्घा न उठाइये, अभी भगवान सूर्यदेव के दर्शन देर मे होंगे, तब तक आप कमल के फूलों को खोल खोल इस तरह पर श्री गंगाजी को चढ़ाइये कि लड़ी टूटन न पावे, फिर देखिये देवता उसे खुदबखुद मालाकार बना देते हैं या नहीं !!"

ये सब तो सत्पुरुषों के काम हैं जो यहा भी आनन्द ले रहे हैं और

शुरू कर दिया है, अगर यही हालत रही तो सुबह होते होते तक जरूर खिलखिला कर हँस पड़ेगी।

लीजिये अब दूसरा ही रंग बदला। प्रकृति की न मालूम किस ताकत ने आस्मान की स्याही को धो डाला और उनकी हुकूमत की रात बातते देख उदास तारों को भी बिदा होने का हुक्म सुना दिया। इधर बेचैन तारों की घबराहट देख अपने हुस्न और जमाल पर भूली हुई खिलखिला कर हँसने वाली कलियों को सुबह की ठण्डी ठण्डी हवा ने खूब ही आड़े हाथों लिया और मारे थपेड़ों के उनके उस बनाव को बिगाड़ना शुरू कर दिया जो दो ही घण्टे पहिले प्रकृति की किसी लौंडी ने दुरुस्त कर दिया था।

मोतियों से ज्यादे आबदार ओस की बूँदों को बिगड़ते और हँसती हुई कलियों का शृङ्गार मिटने देख उनकी तरफदार खुशबू से न रहा गया, झट फूलों से अलग हो सुबह की ठण्डी हवा से उलझ पड़ी और इधर उधर फैल धूम मचाना शुरू कर दिया। अपनी फरियाद सुनाने के लिये उन नौजवानों के दिमागों में घुस घुस कर उठाने की फिक्र करने लगी जो रात भर जाग जगा कर इस समय खूबसूरत पलंगड़ियों पर सुस्त पड़ रहे थे। जब उन्होंने कुछ न सुना और करवट बदल कर रह गये तो मालियों को जा घेरा। वे झट उठ बैठे और कमर कस उस जगह पहुँचे जहां फूलों और उमंग भरे हवा के झपेटों से कहा सुनी हो रही थी।

कमबख्त छोटे लोगों का यह दिमाग कहां कि ऐसों का फैसला करें। बस फूलों को तोड़ तोड़ कर चँगेर भरने लगे। चलो छुट्टी हुई, न रहे बांस न बाजे बांसुरी। क्या अच्छा झगड़ा मिटाया है! इसके बदले में वे बड़े बड़े दरख्त खुश हो हवा की मदद से झुक झुक कर मालियों को सलाम करने लगे जिनकी टहनियों मे एक भी फूल दिखाई नहीं देता था। क्यों ऐसा न करें! उनमे था ही क्या जो दूसरों को महक देते, अपना सूरत शक्ल को भाता है और अपना सा होते देख सभी खुश होते हैं।

लीजिये उन परीजमालों ने भी पलङ्ग का पीछा छोड़ा और उठते ही आईने के मुकाबिल हो बैठीं जिनके बनाव को चाहने वालों ने रात भर में बिथोर कर रख दिया था। झटपट अपनी सम्बुली जुल्फों को सुलझा, मादहतानी चेहरों को गुनाबजल से साफ कर अलबेली चाल से अटखेलियाँ करती, चम्पई दुपट्टा सभालती, रविशों पर घूमने और फूलों के मुकाबिल में रुक कर पूछने लगीं कि 'कहिये आप अच्छे या हम?' जब जवाब न पाया हाथ बढ़ा, तोड़ लिया और बालियों में झुमकों की जगह रख आगे बढ़ीं। गुलाब की पटरी तक पहुँची थीं कि काटों ने आँचल पकड़ा और इशारे से कहा, "जरा ठहर जाइये, आपके इस तरह लापरवाह जाने से उलझन होती है, और नहीं तो चार आँखे ही करते और आँसू पोंछते जाइये!"

जाने दीजिये, ये सब घमण्डी हैं। हमें तो कुछ उन लोगों की कुलबुलाहट भली मालूम होती है जो सुबह होने के दो घण्टे पहिले ही उठ, हाथ मुँह धो, जरूरी कामों से छुट्टी पा, बगल में धोती दबा, गंगाजी की तरफ लपके जाते हैं और वहां पहुँच स्नान कर भस्म या चन्दन लगा पटरों पर बैठ संध्या करते करते सुबह के सुहावने समय का आनन्द पतित पावनी श्री गंगाजी की पापनाशिनी तरंगों से ले रहे हैं। इधर गुप्ती में घुसी उंगलियों ने प्रेमानन्द में मग्न मनराज की आज्ञा से गिरिजापति का नाम ले एक दाना पीछे हटाया और उधर तरनतारिनी भगवती जाह्नवी की लहरें तलवों ही से छू छू कर दस बीस जन्म का पाप बहा ले गईं। सुगन्धित हवा के झपेटे कहते फिरते हैं—"जरा ठहर जाइये, अर्घा न उठाइये, अभी भगवान सूर्यदेव के दर्शन देर में होंगे, तब तक आप कमल के फूलों को खोल खोल इस तरह पर श्री गंगाजी को चढ़ाइये कि लड़ी टूटने न पावे, फिर देखिये देवता उसे खुदबखुद मालाकार बना देते हैं या नहीं!!"

ये सब तो सत्पुरुषों के काम हैं जो यहां भी आनन्द ले रहे हैं और

वहां भी मजा लूटेंगे। आप जरा मेरे साथ चल कर उन दो दिलजलों की सूरत देखिये जो रात भर जागते और इधर उधर दौड़ते रहे हैं और सुबह के सुहावने समय में एक पहाड़ की चोटी पर चढ़ चारो तरफ देखते हुए सोच रहे हैं कि किधर जाय क्या करें? चाहे वे कितने ही बेचैन क्यों न हों मगर पहाड़ों से टक्कर खाते हुए सुबह के ठंडी ठंडी हवा के झोकों के डपटने और हिला हिला कर जताने से उन छोटे छोटे जंगली फूलों के पौधों की तरफ नजर डाल ही देते हैं जो दूर तक कतार बांधे मस्ती से झूम रहे हैं, उन कियारियों की तरफ ताक ही देते हैं जिनके फूल ओस के बोझ से तंग हो टहनियां छोड़ पत्थर के ढोकों का सहारा ले रहे हैं, उन साखू और शीशम के पत्तों की खनखनाहट सुन ही लेते हैं जो दक्खिन से आती हुई सुगन्धित हवा को रोक, रहे सहे जहर को चूस, गुनकारी बना, उन तक आने का हुक्म देते हैं।

इन दो आदमियों में से एक तो लगभग बीस वर्ष की उम्र का बहादुर सिपाही है जो ढाल तलवार के इलावे हाथ में तीर कमान लिये बड़ी मुस्तैदी से खड़ा है, मगर दूसरे के बारे में हम कुछ नहीं कह सकते कि वह कौन या किस दर्जे और इज्जत का आदमी है। इसकी उम्र चाहे पचास से ज्यादा क्यों न हो मगर अभी तक इसके चेहरे पर बल का नाम निशान नहीं है, जवानों की तरह खूबसूरत चेहरा दमक रहा है, बेशकीमती पोशाक और हरबों की तरफ खयाल करने से तो यही कहने को जी चाहता है कि किसी फौज का सेनापति है, मगर नहीं, उसका रोआबदार और गम्भीर चेहरा इशारा करता है कि यह कोई बहुत ही ऊँचे दर्जे का है जो कुछ देर से खड़ा एकटक वायुकोण की तरफ देख रहा है।

सूर्य की किरणों के साथ ही साथ लाल वर्दी के बेशुमार फौजी आदमी उत्तर से दक्खिन की तरफ जाते हुए दिखाई पड़े जिससे इस बहादुर का चेहरा जोश में आकर और भी दमक उठा और यह धीरे से बोला, "लो हमारी फौज भी आ पहुँची!"

थोड़ी ही देर में वह फौज इस पहाड़ी के नीचे आ कर रुक गई जिस पर ये दोनों खड़े थे और एक आदमी पहाड के ऊपर चढ़ता हुआ दिखाई दिया जो बहुत जल्द इन दोनों के पास पहुँच सलाम कर खड़ा हो गया।

इस नये आये हुए आदमी की उम्र भी पचास से कम न होगी। इसके सर और मूँछों के बाल चौथाई सुफेद हो चुके थे। कद के साथ साथ खूबसूरत चेहरा भी कुछ लम्बा था। इसका रंग सिर्फ गोरा ही न था बल्कि अभी तक रगों मे दौडती हुई खून की सुर्खी इसके गालों पर अच्छी तरह उमड रही थी। बड़ी बड़ी स्याह और जोश भरी आखों में गुलाबी डोरिया बहुत भली मालूम होती थीं। इसकी पौशाक ज्यादे कीमत का या कामदार न थी मगर कम दाम की भी न थी, उम्दे और मोटे स्याह मखमल की इतनी चुस्त थी कि उसके अगों की सुडौली कपड़े के ऊपर से जाहिर हो रही थी। कमर में सिर्फ एक खञ्जर और लपेटा हुआ कमन्द दिखाई देता था, बगल मे सुर्ख मखमल का एक बटुआ भी लटक रहा था।

पाठकों को ज्यादे देर तक हैरानी मे न डाल कर हम साफ साफ कह देना ही पसन्द करते हैं कि यह तेजसिंह हैं और इनके पहले पहुँचे हुए दोनों आदमियों में एक राजा बीरेन्द्रसिंह और दूसरे उनके छोटे लड़के कुअर आनन्दसिंह हैं जिनके लिए हमें ऊपर बहुत कुछ फजूल बक जाना पड़ा।

राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह कुछ देर तक सलाह करते रहे, इसके बाद तीनों बहादुर पहाडी के नीचे उतर अपनी फौज में मिल गए और दिल खुश करने के सिवाय बहादुरों को जोश मे भर देने वाले बाजे की आवाज के तालों पर एक साथ कदम रखती हुई वह फौज दक्खिन की तरफ रवाना हुई।

चौथा बयान

हम ऊपर लिख आये हैं कि माधवी के यहा तीन आदमी अर्थात् दीवान ग्निदत्त, कुबेरसिंह सेनापति, और धर्मसिंह कोतवाल मुखिया थे और ये ही तीनों मिल कर माधवी के राज्य का आनन्द लेते थे।

इन तीनों मे अग्निदत्त का दिन बहुत मजे में कटता था क्योंकि एक तो वह दिवान के मर्तबे पर था, दूसरे माधवी ऐसी खूबसूरत औरत उसे मिली थी। कुबेरसिंह और धर्मसिंह इसके दिली दोस्त थे मगर कभी कभी जब उन दोनों को माधवी का ध्यान आ जाता तो चित्त की वृत्ति बदल जाती और जी में कहते कि 'अफसोस, माधवी मुझे न मिली!'

पहिले इन दोनों को यह खबर न थी कि माधवी कैसी है। बहुत कहने सुनने से एक दिन दीवान साहब ने इन दोनों को माधवी को देखने का मौका दिया था। उसी दिन से इन दोनों ही के जी मे माधवी की सूरत चुभ गई थी और उसके बारे में बहुत कुछ सोचा करते थे।

आज हम आधी रात के समय दीवान अग्निदत्त को अपने सुनसान कमरे मे अकेले चारपाई पर लेटे किसी सोच में डूबे हुए देखते हैं। न मालूम वह क्या सोच रहा है या किस फिक्र में पड़ा है, हा एक दफे उसके मुँह से यह आवाज जरूर निकली—"कुछ समझ में नहीं आता! इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि उसने अपना दिल खुश करने का कोई सामान वहा पैदा कर लिया। तो मैं ही बेफिक्र क्यों बैठ रहूँ? खैर पहिले अपने दोस्तों से तो सलाह कर लूँ!" यह कहने के साथ ही वह चारपाई से उठ बैठा और कमरे में धीरे धीरे टहलने लगा, आखिर उसने खूँटी से लटकती हुई अपनी तलवार उतार ली और मकान के नीचे उतर आया।

दर्वाजे पर बहुत से सिपाही पहरा दे रहे थे। दीवान साहब को कहीं जाने के लिए तैयार देख वे लोग भी साथ चलने को तैयार हुए मगर

दीवान साहब के मना करने से उन लोगों को लाचार हो उसी जगह अपने काम पर मुस्तैद रहना पड़ा।

अकेले दीवान साहब वहां से रवाना हुए और बहुत जल्द कुबेरसिंह सेनापति के मकान पर जा पहुंचे जो इनके यहा से थोडी ही दूर पर एक सुन्दर सजे हुए मकान मे बड़े ठाट के साथ रहता था।

दीवान साहब को विश्वास था कि इस समय सेनापति अपने ऐश महल में आनन्द से सोता होगा, वहा से बुलवाना पड़ेगा, मगर नहीं, दर्वाजे पर पहुंचते ही पहरे वालों से पूछने पर मालूम हुआ कि सेनापति साहब अभी तक अपने कमरे में बैठे हैं, बल्कि कोतवाल साहब भी इस समय उन्हीं के पास हैं।

अग्निदत्त यह सोचता हुआ ऊपर चढ़ गया कि आधी रात के समय कोतवाल यहा क्यों आया है। और ये दोनों इस समय क्या सलाह विचार कर रहे हैं। कमरे में पहुंचते ही देखा कि सिर्फ वे ही दोनों एक गद्दी पर तकिये के सहारे लेटे हुए कुछ बातें कर रहे हैं जो यकायक दीवान साहब को अन्दर पैर रखते देख उठ खड़े हुए और सलाम करने के बाद सेनापति साहब ने ताज्जुब में आकर पूछा :—

"यह आधी रात के समय आप घर से क्यों निकले?"

दीवान०। ऐसा ही मौका आ पड़ा, लाचार सलाह करने के लिए आप दोनों से मिलने की जरूरत हुई।

कोत०। आइए बैठिए, कहिए कुशल तो है?

दीवान०। हां कुशल ही कुशल है मगर कई खुटकों ने जी बेचैन कर रक्खा है।

सेनापति०। सो क्या, कुछ कहिये भी तो?

दीवान०। हां कहता हूँ, इसीलिए तो आया हूँ, मगर पहिले (कोतवाल की तरफ देख कर) आप तो कहिए इस समय यहा कैसे पहुंचे?

कोतवाल० । मैं तो यहां बहुत देर से हूँ, सेनापति साहब ने एक विचित्र कहानी मे ऐसा उलझा रक्खा था कि बस क्या कहूँ, हाँ आप अपना हाल कहिए जी बेचैन हो रहा है ।

दीवान० । मेरा कोई नया हाल नहीं है, केवल माधवी के विषय में कुछ सोचने विचारने आया हूँ ।

सेनापति० । माधवी के विषय में किस नये सोच ने आपको आ घेरा ? कुछ तकरार की नौबत तो नहीं आई ।

दीवान० । तकरार की नौबत आई तो नहीं मगर आना चाहती है ।

सेनापति० । सो क्यों ?

दीवान० । उसके रग ढंग आज कल बेढब नजर आते हैं, तभी तो देखिये इस समय मै यहा हूँ, नहीं तो पहर रात के बाद क्या कोई मेरी सूरत देख सकता था ?

कोत० । इधर तो कई दिन आप अपने मकान पर रहे हैं ।

दीवान० । हा, इन दिनों वह अपने महल में कम आती है, उसी गुप्त पहाड़ी मे रहती है, कभी कभी आधी रात के बाद आती है और मुझे उसकी राह देखनी पड़ती है ।

कोत० वहां उसका जी कैसे लगता है ?

दीवान० । यही तो ताज्जुब है, मैं सोचता हूँ कि कोई मर्द वहा जरूर है क्योंकि वह भी अकेली रहने वाली नहीं ?

सेना० । अगर ऐसा है तो पता लगाना चाहिए ।

दीवान० । पता लगाने के उद्योग मे मैं कई दिन से लगा हूँ मगर कुछ हो न सका । जिस दर्वाजे को खोल कर वह आती जाती है उसकी ताली भी इसलिये बनवाई कि धोखे मे वहां तक जा पहुंचू मगर काम न चला क्योंकि जाती समय अन्दर से वह न मालूम ताले में क्या कर जाती है कि ताली ही नहीं लगती ।

कोतवाल० । तो दर्वाजा तोड़ के वहां पहुँचना चाहिए ।

दीवान०। ऐसा करने से बड़ा फसाद मचेगा।

कोतवाल०। फसाद करके कोई क्या कर लेगा? राज्य तो हम तीनों की मुट्ठी में है?

इतने ही में बाहर किसी आदमी के पैर की चाप मालूम हुई। तीनों देर तक उसी तरफ देखते रहे मगर कोई न आया। कोतवाल यह कहता हुआ कि 'कहीं कोई छिप के सुनता न हो' उठा और कमरे के बाहर जाकर इधर उधर देखने लगा मगर किसी का पता न लगा। लाचार फिर कमरे मे चला आया और बोला, "कोई नहीं है, खाली धोखा हुआ।"

इस जगह विस्तार से यह लिखने की कोई जरूरत नहीं कि इन तीनों में क्या क्या बातचीत होती रही या इन लोगों ने कौन सी सलाह पक्की की, हा इतना कहना जरूरी है कि बातों ही में इन तीनों ने रात बिता दी और सवेरा होते ही अपने अपने घर का रास्ता लिया।

दूसरे दिन पहर रात जाते जाते कोतवाल साहब के घर में एक विचित्र बात हुई। वे अपने कमरे मे बैठे कचहरी के कुछ जरूरी कागजों को देख रहे थे कि इतने ही में शोर गुल की आवाज उनके कानों में आई। गौर करने से मालूम हुआ कि बाहर दर्वाजे पर लड़ाई हो रही है। कोतवाल साहब के सामने जो मोमी शमादान जल रहा था उसी के पास एक घंटी पड़ी हुई थी जिसे उठा कर बजाते ही एक खिदमतगार दौड़ा दौड़ा सामने आया और हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। कोतवाल साहब ने कहा, "दरियाफ्त करो बाहर कैसा कोलाहल मचा हुआ है।"

खिदमतगार दौड़ा हुआ बाहर गया और तुरत लौट कर बोला, न मालूम कहां से दो आदमी आपुस में लड़ते हुये आये हैं, फर्यिाद करने के लिए बेधड़क भीतर घुसे आते थे, पहरे वालों ने रोका तो उन्हीं से झगड़ा करने लगे।"

कोतवाल० । मैं तो यहा बहुत देर से हूँ, सेनापति साहब ने एक विचित्र कहानी में ऐसा उलझा रक्खा था कि बस क्या कहूँ, हाँ आप अपना हाल कहिए जी बेचैन हो रहा है ।

दीवान० । मेरा कोई नया हाल नहीं है, केवल माधवी के विषय में कुछ सोचने विचारने आया हूँ ।

सेनापति० । माधवी के विषय में किस नये सोच ने आपको आ घेरा ? कुछ तकरार की नौबत तो नहीं आई ।

दीवान० । तकरार की नौबत आई तो नहीं मगर आना चाहती है ।

सेनापति० । सो क्यों ?

दीवान० । उसके रग ढग आज कल बेढब नजर आते हैं, तभी तो देखिये इस समय मे यहा हूँ, नहीं तो पहर रात के बाद क्या कोई मेरी सूरत देख सकता था ?

कोत० । इधर तो कई दिन आप अपने मकान पर रहे हैं ।

दीवान० । हा, इन दिनों वह अपने महल में कम आती है, उसी गुप्त पहाड़ी मे रहती है, कभी कभी आधी रात के बाद आती है और मुझे उसकी राह देखनी पड़ती है ।

कोत० वहा उसका जी कैसे लगता है ?

दीवान० । यही तो ताज्जुब है, मैं सोचता हूँ कि कोई मर्द वहा जरूर है क्योंकि वह भी अकेली रहने वाली नहीं ?

सेना० । अगर ऐसा है तो पता लगाना चाहिए ।

दीवान० । पता लगाने के उद्योग मे मै कई दिन से लगा हूँ मगर कुछ हो न सका । जिस दर्वाजे को खोल कर वह आती जाती है उसकी ताली भी इसलिये बनवाई कि धोखे मे वहां तक जा पहुँचू मगर काम न चला क्योंकि जाती समय अन्दर से वह न मालूम ताले में क्या कर जाती है कि ताली ही नहीं लगती ।

कोतवाल० । तो दर्वाजा तोड़ के वहां पहुँचना चाहिए ।

दीवान०। ऐसा करने से बड़ा फसाद मचेगा!

कोतवाल०। फसाद करके कोई क्या कर लेगा? राज्य तो हम तीनों की मुट्ठी में है?

इतने ही में बाहर किसी आदमी के पैर की चाप मालूम हुई। तीनों देर तक उसी तरफ देखते रहे मगर कोई न आया। कोतवाल यह कहता हुआ कि 'कहीं कोई छिप के सुनता न हो' उठा और कमरे के बाहर जाकर इधर उधर देखने लगा मगर किसी का पता न लगा। लाचार फिर कमरे मे चला आया और बोला, "कोई नहीं है, खाली धोखा हुआ।"

इस जगह विस्तार से यह लिखने की कोई जरूरत नहीं कि इन तीनों में क्या क्या बातचीत होती रही या इन लोगों ने कौन सी सलाह पक्की की, हा इतना कहना जरूरी है कि बातों ही में इन तीनों ने रात बिता दी और सवेरा होते ही अपने अपने घर का रास्ता लिया।

दूसरे दिन पहर रात जाते जाते कोतवाल साहब के घर मे एक विचित्र बात हुई। वे अपने कमरे मे बैठे कचहरी के कुछ जरूरी कागजों को देख रहे थे कि इतने ही में शोर गुल की आवाज उनके कानों में आई। गौर करने से मालूम हुआ कि बाहर दर्वाजे पर लड़ाई हो रही है। कोतवाल साहब के सामने जो मोमी शमादान जल रहा था उसी के पास एक घंटी पड़ी हुई थी जिसे उठा कर बजाते ही एक खिदमतगार दौड़ा दौड़ा सामने आया और हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। कोतवाल साहब ने कहा, "दरियाफ्त करो बाहर कैसा कोलाहल मचा हुआ है।"

खिदमतगार दौड़ा हुआ बाहर गया और तुरत लौट कर बोला, "न मालूम कहां से दो आदमी आपुस में लड़ते हुये आये हैं, फरियाद करने के लिए बेधड़क भीतर घुसे आते थे, पहरे वालों ने रोका तो उन्हीं से झगड़ा करने लगे।"

कोतवाल० । उन दोनों की सूरत शक्ल कैसी है ?

खिदमत० । दोनों भले आदमी मालूम पड़ते हैं, अभी मूछें नहीं निकली हैं, बड़े ही खूबसूरत हैं, मगर खून से तरबतर हो रहे हैं ।

कोत० । अच्छा कहो उन दोनों को हमारे सामने हाजिर करें ।

हुक्म पाते ही खिदमतगार फिर बाहर गया और थोड़ी ही देर में कई सिपाही उन दोनों को लिए हुए कोतवाल के सामने हाजिर हुए । नौकर की बात बिलकुल सच निकली । वे दोनों कम उम्र और बहुत ही खूबसूरत थे, बदन मे लिबास भी बेशकीमती था, कोई हर्बा उनके पास न था मगर खून से उन दोनों का कपडा तर हो रहा था ।

कोत० । तुम लोग आपुस में क्यों लडते हो और हमारे आदमियों से फसाद करने पर उतारू क्यों हुए ?

एक० । (सलाम करके) हम दोनों भले आदमी हैं, सरकारी सिपाहियों ने बदजुबानी की, लाचार गुस्सा तो चढ़ा ही हुआ था, बिगड गई ।

कोतवाल० । अच्छा इसका फैसला पीछे होता रहेगा पहिले तुम यह कहो कि आपस में क्यों खून खराबा कर बैठे और तुम दोनों का मकान कहा है ?

दूसरा० । जी हम दोनों आपकी रैयत हैं, गयाजी में रहते हैं, दोनों सगे भाई हैं, एक औरत के पीछे लड़ाई हो रही है जिसका फैसला आपसे चाहते हैं, बाकी हाल इतने आदमियों के सामने कहना हम लोग पसन्द नहीं करते ।

कोतवाल साहब ने सिर्फ उन दोनों को वहा रहने दिया बाकी सभों को वहा से हटा दिया, निराला होने पर फिर उन दोनों से लड़ाई का सबब पूछा ।

एक० । हम दोनों भाई सरकार से कोई मौजा ठीका लेने के लिए यहा आ रहे थे, यहां से तीस कोस पर एक पहाड़ी है, कुछ दिन रहते ही हम दोनों वहा पहुँचे और थोड़ी सुस्ताने की नीयत से घोड़े पर से उतर

पड़े, घोड़ों को चरने के लिए छोड़ दिया और एक पेड़ के नीचे पत्थर की चट्टान पर बैठ बातचीत करने लगे······

दूसरा०। (सिर हिला कर) नहीं कभी नहीं।

पहिला०। सरकार इसे हुक्म दीजिये कि चुप रहे, मैं कह लूँ तो जो कुछ इसके जी मे आवे कहे।

कोत०। (दूसरे को डाँट कर) बेशक ऐसा ही करना होगा।

दूसरा०। बहुत अच्छा।

पहिला०। थोड़ी ही देर तक बैठे थे कि पास ही से किसी औरत के रोने की बारीक आवाज आई जिसके सुनने से कलेजा पानी हो गया।

दूसरा०। ठीक, बहुत ठीक।

कोत०। (लाल आखें कर के) क्यों जी, तुम फिर बोलते हो ?

दूसरा०। अच्छा अब न बोलूँगा।

पहिला०। हम दोनों उठ कर उसके पास गए। आह, ऐसी खूबसूरत औरत तो आज तक किसी ने न देखी होगी, बल्कि मैं जोर देकर कहता हूँ कि दुनिया मे ऐसी खूबसूरत कोई दूसरी न होगी। वह अपने सामने एक तस्वीर जो चौखठे में जड़ी हुई थी, रक्खे बैठी थी और उसे देख फूट फूट कर रो रही थी।

कोत०। वह तस्वीर किसकी थी, तुम पहिचानते हो ?

पहिला०। जी हां पहिचानता हूँ, ह मेरी तस्वीर थी।

दूसरा०। झूठ झूठ झूठ, कभी नहीं, बेशक वह तस्वीर आपकी थी, मै इस समय बैठा बैठा उस तस्वीर से आपकी सूरत मिलान कर गया, बिलकुल आपसे मिलती है इसमे कोई शक नहीं, आप इसके हाथ मे गंगाजल देकर पूछिये किसकी तस्वीर थी ?

कोत०। (ताज्जुब मे आ कर) क्या मेरी तस्वीर थी ?

दूसरा०। बेशक आपकी तस्वीर थी, आप इससे कसम देकर पूछिये तो सही।

कोत० । (पहिले से) क्यों जी तुम्हारा भाई क्या कहता है ?

पहिला० । जी ई ई·····...

कोत० । (जोर से) कहो साफ साफ, सोचते क्या हो ?

पहिला० । जी बात तो यही ठीक है, आप ही की तस्वीर थी ।

कोत० । फिर झूठ क्यों बोले ?

पहिला० । बस यही एक बात झूठ मुँह से निकल गई, अब कोई बात झूठ न कहूँगा, माफ कीजिये ।

कोतवाल बेचारा ताज्जुब में आकर सोचने लगा कि उस औरत को मुझसे क्यों कर मुहब्बत हो गई जिसकी खूबसूरती की ये लोग इतनी तारीफ कर रहे हैं । थोड़ी देर बाद फिर पूछा :—

कोत० । हा तो आगे क्या हुआ ?

पहिला० । (अपने भाई की तरफ इशारा करके) बस यह उस पर आशिक हो गया और उसे तंग करने लगा ।

दूसरा० । यह भी उस पर आशिक हो उसे छेड़ने लगा ।

पहिला० । जी नहीं, उसने मुझे कबूल कर लिया और मुझसे शादी करने पर राजी हो गई बल्कि उसने यह भी कहा कि मैं दो दिन तक यहाँ रह कर तुम्हारा आसरा देखूँगी, अगर तुम पालकी लेकर आओगे तो तुम्हारे साथ चली चलूँगी ।

दूसरा० । जी नहीं, यह बड़ा भारी झूठा है, जब यह उसकी खुशामद करने लगा तब उसने कहा कि मैं उसी के लिए जान देने को तैयार हूँ जिसकी तस्वीर मेरे सामने है । जब इसने उसकी बात न सुनी तो उसने अपनी तलवार से इसे जख्मी किया और मुझसे बोली कि 'तुम जाकर मेरे दोस्त कहाँ हों ढूँढ निकालो और कह दो कि मैं तुम्हारे लिए बर्बाद हो गई, अब भी तो सुध लो !' जब मैंने इसे मना किया तो यह मुझसे लड़ पड़ा । असल में यही लड़ाई का सबब हुआ ।

पहिला० । जी नहीं, यह सन्देशा उसने मुझे दिया क्योंकि यही उसे दुःख दे रहा था ।

दूसरा० । नहीं यह झूठ बोलता है ।

पहिला० । नहीं यह झूठा है, मैं ठीक ठीक कहता हूँ ।

कोत० । अच्छा मुझे उस औरत के पास ले चलो, मैं खुद उससे पूछ लूँगा कि कौन झूठा है और कौन सच्चा है ।

पहिला० । क्या अभी तक वह उसी जगह होगी ?

दूसरा० । जरूर वहा होगी, यह बहाना करता है क्योंकि वहां जाने से झूठा साबित हो जायगा ।

पहिला० । (अपने भाई की तरफ देख कर) झूठा तू साबित होगा ! अफसोस तो इतना ही है कि अब मुझे वहां का रास्ता भी याद नहीं !

दूसरा० । (पहिले की तरफ देख कर) आप रास्ता भूल गए तो क्या हुआ मुझे तो याद है, मैं जरूर आपको वहां ले चल कर झूठा साबित करूँगा ! (कोतवाल साहब की तरफ देख कर) चलिए मैं आपको वहां ले चलता हूँ ।

कोत० । चलो ।

कोतवाल साहब तो खुद बेचैन हो रहे थे और चाहते थे कि जहाँ तक हो वहा जल्द पहुँच कर देखना चाहिए कि यह औरत कैसी है जो मुझ पर आशिक हो मेरी तस्वीर सामने रख याद किया करती है । एक पिस्तौल भरी भराई कमर मे रख उन दोनों भाइयों को साथ ले मकान के नीचे उतरे । उनको बाहर जाने के लिए मुस्तैद देख कई सिपाही साथ चलने के लिए तैयार हुए । उन्होंने अपनी सवारी का घोड़ा मंगवाया और उस पर सवार हो सिर्फ अर्दली के दो सिपाहियों को साथ ले उन दोनों भाइयों के पीछे पीछे रवाना हुए । दो घण्टे बराबर चले जाने बाद एक छोटी सी पहाड़ी के नीचे पहुंच वे दोनों भाई रुके और कोतवाल साहब को घोड़े से नीचे उतरने के लिए कहा ।

कोत० । क्या घोड़ा आगे नहीं जा सकता ?

पहिला० । घोड़ा आगे जा सकता है मगर मैं दूसरी ही बात सोच कर आपको उतरने के लिए कहता हूँ ।

कोत० । वह क्या ?

पहिला० । जिस औरत के पास आप आये हैं वह इसी जगह है, दो ही कदम आगे बढ़ने से आप उसे बखूबी देख सकते हैं, मगर मैं चाहता हूँ कि सिवाय आपके ये दोनों प्यादे उसे देखने न पावें । इसके लिए मैं किसी तरह जोर नहीं दे सकता मगर इतना जरूर कहूँगा कि आप जरा सा आगे बढ़ झाँक कर उसे देख लें फिर अगर जी चाहे तो इन दोनों को भी अपने साथ ले जाय, क्योंकि वह अपने को 'गया' की रानी बताती है ।

कोत० । (ताज्जुब से) अपने को गया की रानी बताती है !

दूसरा० । जी हाँ ।

अब तो कोतवाल साहब के दिल में कोई दूसरा ही शक पैदा हुआ । वह तरह तरह की बातें सोचने लगे । "गया की रानी तो हमारी माधवी है, यह दूसरी कहा से पैदा हुई ! क्या वही माधवी तो नहीं है ? नहीं नहीं, वह भला यहा क्यों आने लगी ! उससे मुझसे क्या सम्बन्ध है ? वह तो दीवान साहब की हो रही है । मगर वह आई भी हो तो कोई ताज्जुब नहीं, क्योंकि एक दिन हम तीनों दोस्त एक साथ महल में बैठे थे और रानी माधवी वहा पहुँच गई थी, मुझे खूब याद है कि उस दिन उसने मेरी तरफ बेढब तरह से देखा था और दीवान साहब की आँख बचा घड़ी घड़ी देखती थी, शायद उसी दिन से मुझ पर आशिक हो गई हो । हाय, वह अनोखी चितवन मुझे कभी न भूलेगी ! अहा, अगर यहाँ वही हो और मुझे विश्वास हो जाये कि वह मुझसे प्रेम रखती है तो क्या बात है ! मैं ही राजा हो जाऊँ और दीवान साहब की तो बात ही

जरा झांक कर देखना तो जरूर चाहिये, शायद ईश्वर ने दिन फेरा हो हो !" ऐसी ऐसी बहुत सी बातें सोचते विचारते कोतवाल साहब घोड़े से उतर पड़े और उन दोनों भाइयों के कहे मुताबिक आगे बढ़े।

यहा से पहाड़ियों का सिलसिला बहुत दूर तक चला गया था। जिस जगह कोतवाल साहब खड़े थे वहा दो पहाडिया इस तरह आपुस मे मिली हुई थीं कि बीच में कोसों तक एक लम्बा दरार मालूम पड़ती थी जिसके बीच में बहता हुआ पानी का चश्मा और दोनों तरफ छोटे छोटे दरख्त बहुत भले मालूम पडते थे, इधर उधर बहुत सी कदराओं पर निगाह पड़ने से यही विश्वास होता था कि ऋषियों और तपस्वियों के प्रेमी अगर यहा आवें तो अवश्य उनके दर्शन से अपना जन्म कृतार्थ कर सकेंगे।

दरार के कोने पर पहुँच कर दोनों भाइयों ने कोतवाल साहब को बाईं तरफ झांकने के लिये कहा। कोतवाल साहब ने झांक कर देखा, साथ ही एक दम चौंक पड़े और मारे खुशी के भरे हुए गले से चिल्ला कर बोले, "आहा हा, मेरी किस्मत जागी! बेशक यह रानी माधवी ही तो हैं!!"

पांचवां बयान

कमला को विश्वास हो गया कि किशोरी को कोई धोखा देकर ले भागा। वह उस बाग मे बहुत देर तक न ठहरी, ऐयारी के सामान से दुरुस्त थी ही, एक लालटेन हाथ में लेकर वहा से चल पड़ी और बाग के बाहर हो चारो तरफ घूम घूम कर किसी ऐसे निशान को ढूँढने लगी जिससे यह मालूम हो कि किशोरी किस सवारी पर यहा से गई है, मगर जब तक वह उस आम की बारी में न पहुँची तब तक सिवाय पैरों के चिन्ह के और किसी तरह का कोई निशान जमीन पर दिखाई न पड़ा।

बरसात का दिन था और जमीन अच्छी तरह नर्म हो रही थी इसलिये बाग की बारी में घूम घूम कर कमला ने मालूम कर लिया कि किशोरी यहाँ से रथ पर सवार होकर गई और उसके साथ में कई सवार भी हैं क्योंकि रथ के पहियों का दोहरा निशान और बैलों के खुर जमीन पर साफ मालूम पड़ते थे, इसी तरह घोड़ों के टापों के निशान भी अच्छी तरह दिखाई पड़ते थे।

कमला कई कदम उस निशान की तरफ चली गई जिधर रथ गया था और बहुत जल्द मालूम कर लिया कि किशोरी को ले जाने वाले किस तरफ गये हैं। इसके बाद वह पीछे लौटी और सीधे अस्तबल में पहुँच एक तेज घोड़े पर बहुत जल्द चारजामा कसने का हुक्म दिया।

कमला का हुक्म ऐसा न था कि कोई उससे इन्कार करता। घोड़ा बहुत जल्द कस कर तैयार किया गया और कमला उस पर सवार हो तेजी के साथ उस तरफ रवाना हुई जिधर रथ पर सवार होकर किशोरी के जाने का उसे विश्वास हो गया था।

पाच कोस बराबर चले जाने बाद कमला एक चौराहे पर पहुँची जहा से बाए तरफ का रास्ता चुनार को गया था, दाहिने तरफ की सडक सीधा होते हुए गयाजी तक पहुँची थी, तथा सामने का रास्ता एक भयानक जंगल से होता हुआ कई तरफ को फूट गया था।

एक चौमुहाने पर पहुँच कर कमला रुकी और सोचने लगी कि किधर जाऊं? अगर चुनार वाले किशोरी को ले गये होंगे तो इसी बाईं तरफ से गए होंगे, अगर किशोरी की दुश्मन माधवी ने उसे फंसाय होगा तो रथ दाहिनी तरफ से गयाजी गया होगा, सामने की सडक से रथ ले जाने वाला तो कोई ख्याल में नहीं आता क्योंकि यह जंगल का रास्ता बहुत ऊबड़ और पथरीला है।

चन्द्रमा निकल आया था और रोशनी अच्छी तरह फैल चुकी थी कमला घोड़े से नीचे उतर आई और दाहिनी तरफ जमीन पर रथ।

पहियों का दाग ढूँढने लगी मगर कुछ मालूम न हुआ, लाचार घोड़े पर सवार हो सोचने लगी कि किधर जाऊँ और क्या करूँ।

हम पहिले लिख आये हैं कि रथ पर जाते जाते नव किशोरी ने जान लिया कि वह धोखे में डाली गई तब उसके मुँह से कई शब्द ऐसे निकले जिन्हें सुन नकली कमला होशियार हो गई और रथ के नीचे कूद एक घोड़े पर सवार हो पीछे की तरफ लौट गई।

लौटी हुई नकली कमला ठीक उसी समय घोड़ा दौड़ाती हुई उस चौराहे पर पहुँची जिस समय असली कमला वहाँ पहुँच कर सोच रही थी कि किधर जाऊँ क्या करूँ? असली कमला ने सामने से तेजी के साथ आते हुए एक सवार को देख घोड़ा रोकने के लिए ललकारा मगर वह क्यों रुकने लगी थी, हाँ उसे असली कमला के दाहिनी तरफ वाली राह पर जाने के लिये घूमना था इसलिए अपने घोड़े की तेजी उसे कम करनी ही पड़ी।

जब असली कमला ने देखा कि सामने से आया हुआ सवार उसके ललकारने से किसी तरह नहीं रुकता और दाहिनी सड़क से निकल जाया चाहता है तो झट कमर से दुनाली पिस्तौल निकाल उसके घोड़े पर वार किया। गोली लगते ही घोड़ा नकली कमला को लिए हुए जमीन पर गिरा मगर घोड़े से गिरते ही वह बहुत जल्द संभल कर उठ खड़ी हुई और उसने अपनी कमर से दुनाली पिस्तौल निकाल असली कमला पर गोली चलाई।

असली कमला तो पहिले ही से सम्हली हुई थी, गोली की मार बचा गई, फिर दूसरी गोली आई पर वह भी न लगी। लाचार नकली कमला ने अपनी पिस्तौल फिर भरने का इरादा किया मगर असली कमला ने उसे यह मौका न दिया। दोनों गोली बेकार जाते देख वह समझ गई कि उसकी पिस्तौल खाली हो गई है, अस्तु हाथ में पिस्तौल लिए हुए झट उसके कल्ले पर पहुँच गई और ललकार कर बोली,

"खबरदार जो पिस्तौल भरने का इरादा किया है, देख मेरी पिस्तौल में दूसरी गोली अभी मौजूद है !" नकली कमला भी यह सोच कर चुपचाप खड़ी रह गई कि अब वह अपने दुश्मन का कुछ नहीं बिगाड़ सकती क्योंकि पिस्तौल की दोनों गोलिया बर्बाद हो चुकी थीं और घोड़ा उसका मर चुका था।

पिस्तौल के इलावे दोनों की कमर मे खञ्जर भी था मगर उसकी जरूरत न पडी। असली कमला ने ललकार कर पूछा, "सच बता तू कौन है !"

नकली कमला को जान दे देना क़बूल था मगर अपने मुँह से यह बताना मजूर न था कि वह कौन है। असली कमला ने यह देख अपने घोड़े का ऐसा झपेटा दिया कि वह किसी तरह सम्हल न सकी और जमीन पर गिर पडी। जब तक वह होशियार होकर उठना चाहे तब तक असली कमला झट घोड़े से कूद उसकी छाती पर सवार दिखाई देने लगी।

असली कमला ने जबर्दस्ती उसकी नाक में बेहोशी की दवा ठूँस दी और जब वह बेहोश हो गई तो उसकी छाती पर से उतर कर अलग खड़ी हो गई।

असली कमला जब उसकी छाती पर सवार हुई तो उसने उसे अपनी ही सूरत का पाया, इसलिए समझ गई कि यह कोई ऐयारा या ऐयार है, सिवाय इसके किशोरी की सखियों की जुबानी उसने मालूम कर ही लिया था कि कोई उसी का सूरत बन किशोरी को ले गया, अब उसे विश्वास हो गया कि किशोरी को इसी ने धोखा दिया।

थोड़ी देर बाद कमला ने अपने बटुए में से पानी का भरा छोटा सा बोतल निकाला और नकली कमला का मुँह धोकर साफ किया, इसके बाद चकमक से आग निकाल बत्ती जला कर पहिचानना चाहा कि यह कौन है मगर बिना ऐसा किये वह केवल चन्द्रमा ही की मदद से पहिचान ली गई कि माधवी की सखी ललिता है, क्योंकि कमला उसे अच्छी

तरह जानती थी और वर्षों साथ रहने के सिवाय बराबर मिला जुला भी करती थी।

कमला को यह विश्वास तो हो ही गया कि किशोरी को धोखा दे कर ले जाने वाली यही ललिता है, मगर इस बात का ताज्जुब बना ही रहा कि वह सामने से लौट कर आती हुई क्यों दिखाई पड़ी। कमला यह भी जानती थी कि चाहे जान चली जाय मगर ललिता असल भेद कभी न बतावेगी, इसलिए उसकी जुबानी पता लगाने का उद्योग करना उसने व्यर्थ समझा और अपने साथ ललिता को घोड़े पर लाद घर की तरफ पलट पड़ी।

रात बिल्कुल बीत चुकी थी बल्कि कुछ दिन निकल आया था, जब ललिता को लादे हुए कमला घर पहुँची। यहाँ किशोरी के गायब होने से बड़ा ही हाहाकार मचा हुआ था। उसकी खोज में कई आदमी चारो तरफ जा चुके थे। किशोरी का नाना रणधीरसिंह भारी जमींदार होने के सिवाय बड़ा ही दिमागदार और जबर्दस्त आदमी था। उसने यही समझ रक्खा था कि शिवदत्त के दुश्मन वीरेन्द्रसिंह की तरफ से यह कार्रवाई की गई है मगर जब ललिता को लिए हुए कमला पहुँची और उसकी जुबानी सब हाल मालूम हुआ तब माधवी की बदमाशी पर वह बहुत बिगड़ा। वह माधवी की चालचलन पर पहिले ही से रंज था मगर कुछ जोर न चलने से लाचार था, आज उसको गुस्से के मारे इस बात का बिल्कुल ध्यान न रहा कि माधवी एक भारी राज्य की मालिक है और जबर्दस्त फौज रखती है। उसने कमला के मुँह से सब हाल सुनते ही तलवार हाथ में ले कसम खा ली कि जिस तरह हो सकेगा अपने हाथ से माधवी का सिर काट कलेजा ठण्डा करूँगा।

ललिता एक अन्धेरी कोठरी में कैद की गई और रणधीरसिंह की आज्ञा पा कमला अपने बड़े भाई हरनामसिंह को साथ ले किशोरी की मदद को पैदल ही रवाना हुई।

कमला आज भी उसी कल वाले रास्ते पर रवाना हुई और दोपहर होते होते उसी चौराहे पर पहुँची जहां कल ललिता मिली थी। वे दोनों बेधड़क सामने वाली सड़क पर चले।

चौराहे के आगे लगभग तीन कोस चले जाने बाद खराब और पथरीली राह मिली जिसे देख हरनामसिंह ने कहा, "इस राह से रथ ले जाने में जरूर तकलीफ हुई होगी।"

कमला०। बेशक ऐसा ही हुआ होगा, और मुझे तो अभी तक निश्चय ही नहीं हुआ कि किशोरी इसी राह से गई है।

हरनाम०। मगर मैं तो यही समझता हूँ कि रथ इसी राह से गया है और किशोरी का साथ छोड़ कोई दूसरी कार्रवाई करने के लिये ललिता लौटी थी।

कमला०। शायद ऐसा ही हो।

और थोड़ी दूर जाने बाद एक पैर की पाजेब जमीन पर पड़ी हुई दिखाई दी। हरनामसिंह ने उसे देखते ही उठा लिया और कहा, "बेशक किशोरी इसी राह से गई है, इस पाजेब को मैं खूब पहिचानता हूँ।"

कमला०। अब तो मुझे भी निश्चय हो गया कि किशोरी इधर ही से गई है।

हर०। हां, जब उसे मालूम हो गया कि उसने धोखा खाया और दुश्मनों के फंदे में पड़ गई तब उसने यह पाजेब चुपके से जमीन पर फेंक दी।

कमला०। इसलिये कि वह जानती थी कि उसकी खोज में बहुत से आदमी निकलेंगे और इधर आकर इस पाजेब को देखेंगे तो जान जायेंगे कि किशोरी इधर ही गई है।

हरनाम०। मैं ख्याल करता हूँ कि आगे चल कर किशोरी की फेंकी हुई और भी कोई चीज हम लोग जरूर देखेंगे।

कमला०। बेशक ऐसा ही होगा।

कुछ आगे जाकर दूसरा पाजेब और उससे थोड़ी दूर पर किशोरी के और कई गहने इन लोगों ने पाये। अब कमला को किशोरी के इसी राह से जाने का पूरा विश्वास हो गया और वे दोनों बेधड़क कदम बढ़ाते हुए राजगृही की तरफ रवाना हुए।

छठवाँ बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह अभी तक उसी रमणीक स्थान में विराज रहे हैं। चाहे जी कितना ही बेचैन क्यों न हो मगर उन्हें लाचार माधवी के साथ दिन काटना ही पड़ता है। खैर जो होगा देखा जायगा मगर इस समय तो पहर दिन बाकी रहने पर भी कुंअर इन्द्रजीतसिंह कमरे के अन्दर सुनहले पायों की चारपाई पर आराम कर रहे हैं और एक लौंडी धीरे धीरे पंखा झल रही है। हम ठीक नहीं कह सकते कि उन्हें नींद दबाये हुए है या जान बूझ कर मटठियाये पड़े हैं और अपनी बदकिस्मती के जाल को सुलझाने की तरकीब सोच रहे हैं। खैर इन्हें इसी तरह पड़े रहने दीजिए और आप जरा तिलोत्तमा के कमरे में चल कर देखिए कि वह माधवी के साथ किस तरह की बातचीत कर रही है। माधवी का हंसता हुआ चेहरा कहे देता है कि बनिस्बत और दिनों के आज वह बहुत खुश है, मगर तिलोत्तमा के चेहरे से किसी तरह की खुशी नहीं मालूम होती।

माधवी ने तिलोत्तमा का हाथ पकड़ कर कहा, "सखी, आज तुझे इतना खुश नहीं पाती हूँ जितना मैं खुद हूं।"

तिलोत्तमा०। तुम्हारा खुश होना बहुत ठीक है।

माधवी०। तो क्या तुम्हें इस बात की खुशी नहीं है कि किशोरी मेरे फन्दे में फंस गई और एक कैदी की तरह मेरे यहां तहखाने में बन्द है।

तिलोत्तमा०। इस बात की मुझे भी खुशी है।

माधवी०। तो रंज किस बात का है? हाँ समझ गई, अभी तक ललिता के लौट कर न आने का बेशक तुम्हें दुःख होगा।

तिलोत्तमा० । ठीक है, मैं ललिता के बारे में भी बहुत कुछ सोच रही हूँ, मुझे तो विश्वास हो गया है कि उसे कमला ने पकड़ लिया।

माधवी० । तो उसे छुड़ाने की फिक्र करनी चाहिये।

तिलोत्तमा० । मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि उसे छुड़ाने के लिये जाऊँ, क्योंकि मेरे हाथ पैर किसी दूसरे ही तरद्दुद ने बेकार कर दिये हैं जिसकी तुम्हें जरा भी खबर नहीं, अगर खबर होती तो आज तुम्हें भी अपनी ही तरह उदास पाती।

तिलोत्तमा की इस बात ने माधवी को चौंका दिया और वह घबड़ा कर तिलोत्तमा का मुँह देखने लगी।

तिलोत्तमा० । मुँह क्या देखती है! मैं झूठ नहीं कहती। तू तो अपने ऐश वो आराम में ऐसी मस्त हो रही है कि दीन दुनिया की खबर नहीं। तू जानती ही नहीं कि दो ही चार दिन मे तुझ पर कैसी आफत आने वाली है। क्या तुझे विश्वास हो गया है कि किशोरी तेरी कैद में रह जायगी? कुछ बाहर की भी खबर है कि क्या हो रहा है? क्या बदनामी ही उठाने के लिए तू गया का राज्य कर रही है! मैं पचास दफे तुझे समझा चुकी कि अपनी चाल चलन को दुरुस्त कर मगर तैंने एक न सुनी, लाचार तुझे तेरी मर्जी पर छोड़ दिया और प्रेम के सबब तेरा हुक्म मानती आई मगर अब मेरे सम्हाले नहीं सम्हलता।

माधवी० । तिलोत्तमा, आज तुझे क्या हो गया है जो इतना कूद रही है? ऐसी कौन सी आफत आ गई है जिसने तुझे बदहवास कर दिया है! क्या तू नहीं जानती कि दीवान साहब इस राज्य का इन्तजाम कैसी अच्छी तरह कर रहे हैं और सेनापति और कोतवाल अपने काम में कितने होशियार हैं? क्या इन लोगों के रहते हमारे राज्य में कोई विघ्न डाल सकता है?

तिलोत्तमा० । यह जरूर ठीक है कि इन तीनों के रहते कोई इस राज्य में विघ्न नहीं डाल सकता, लेकिन तुझे तो इन्हीं तीनों की खबर

नहीं। कोतवाल साहब जहन्नुम में चले ही गए, दीवान साहब और सेनापति साहब भी आज कल मे जाया ही चाहते हैं बल्कि चले भी गए हों तो ताज्जुब नहीं।

माधवी०। यह तू क्या कह रही है!

तिलोत्तमा०। जी हा, मैं बहुत ठीक कहती हूँ। बिना परिश्रम ही यह राज्य वीरेन्द्रसिंह का हुआ चाहता है। इसीलिए कहती थी कि इन्द्रजीत-सिंह को अपने यहा मत फँसा, उनके एक एक ऐयार आफत के परकाले हैं। मैं कई दिनों से उन लोगों की कार्रवाई देख रही हूँ। उन लोगों को छेड़ना ऐसा है जैसा आतिशबाजी की चरखी में आग लगा देना।

माधवी०। क्या वीरेन्द्रसिंह को पता लग गया कि उनका लड़का यहा कैद है?

तिलोत्तमा०। पता नहीं लगा तो इसी तरह उनके ऐयार सब यहाँ पहुँच कर उधम मचा रहे हैं।

माधवी०। तो तूने मुझे खबर क्यों न की!

तिलोत्तमा०। क्या खबर करती, तुझे इस खबर को सुनने की छुट्टी भी है।

माधवी०। तिलोत्तमा, ऐसी जली कटी बातों का कहना छोड दे और मुझे ठीक ठीक बता कि क्या हुआ और क्या हो रहा है! सच पूछ तो मैं तेरे ही भरोसे कूद रही हूँ। मै खूब जानती हूँ कि सिवाय तेरे मेरी रक्षा करने वाला कोई नहीं। मुझे विश्वास था कि इन चार पहाड़ियो के बीच में जब तक मैं हूँ, मुझ पर किसी तरह की आफत न आवेगी, मगर अब तेरी बातों से यह उम्मीद बिल्कुल जाती रही।

तिलो०। ठीक है, तुझे अब ऐसा भरोसा न रखना चाहिये। इसमे कोई शक नहीं कि मै तेरे लिए जान देने को तैयार हूँ, मगर तू ही बता कि वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के सामने मै क्या कर सकती हूँ! एक बेचारी

ललिता मेरी मददगार थी, सो वह भी किशोरी को फँसाने में आप पकड़ी गई, अब अकेली मैं क्या क्या करूँ ?

माधवी० । तू सब कुछ कर सकती है हिम्मत मत हार, हां यह तो बता कि वीरेन्द्रसिंह के ऐयार यहाँ क्यों कर आये और अब क्या कर रहे हैं ?

तिलोत्तमा० । अच्छा सुन मैं सब कुछ कहती हूँ। यह तो मैं नहीं जानती कि पहिले पहिल यहा कौन आया, हाँ जब से चपला आई है तब से मैं थोड़ा बहुत हाल जानती हूँ ।

माधवी० । (चौंक कर) क्या चपला यहाँ पहुँच गई ।

तिलोत्तमा० । हाँ पहुँच गई, उसने यहा पहुँच कर उस सुरंग की दूसरी ताली भी तैयार कर ली जिस राह से तू आती जाती है और जिस मे तैने किशोरी को कैद कर रखा है । एक दिन रात को जब तू इन्द्र-जीतसिंह को सोता छोड़ दीवान साहब से मिलने के लिए गई तो वह चपला भी इन्द्रजीतसिंह को साथ ले अपनी ताली से सुरंग का ताला खोल तेरे पीछे पीछे चली गई और छिप कर तेरी और दीवान साहब की कैफियत इन दोनों ने देख ली । तू यह न समझ कि इन्द्रजीतसिंह बेचारे सीधे साधे हैं और तेरा हाल नहीं जानते, वे सब कुछ जान गये ।

माधवी० । (कुछ देर तक सोच में डूबी रहने बाद) तैने चपला को कैसे देखा ?

तिलोत्तमा० । मेरा बल्कि ललिता का भी कायदा है कि रात को तीन चार दफे उठ कर इधर उधर घूमा करती हूँ ? उस समय मैं अपने दालान मे खम्भे की आड़ मे खड़ी इधर उधर देख रही थी जब चपला और इन्द्रजीतसिंह तेरा हाल देख कर सुरंग से लौटे थे । उसके बाद ये दोनों बहुत देर तक नहर के किनारे खड़े बातचीत करते रहे, बस उसी समय से मैं होशियार हो गई और अपनी कार्रवाई करने लगी ।

माधवी० । इसके बाद फिर भी कुछ हुआ ?

तिलोत्तमा० । हां बहुत कुछ हुआ, सुनो मैं कहती हूँ । दूसरे दिन मैं ललिता को साथ ले उस तालाब पर पहुची, देखा कि वीरेन्द्रसिंह के कई ऐयार वहां बैठे बातचीत कर रहे हैं । मैंने छिप कर उनकी बातचीत सुनी । मालूम हुआ कि वे लोग दीवान साहब सेनापति और कोतवाल साहब को गिरफ्तार किया चाहते हैं । मुझे उस समय एक दिल्लगी सूझी । जब वे लोग राय पक्की करके यहां से जाने लगे, मैंने वहां से कुछ दूर हट कर एक छींक मारी और झट भाग गई ।

माधवी० । (मुस्कुरा कर) वे लोग घबड़ा गए होंगे ।

तिलोत्तमा० । बेशक घबड़ाए होंगे, उसी समय गाली गुफ्ता करने लगे, मगर हम दोनों ने वहां ठहरना पसन्द न किया ।

माधवी० । फिर क्या हुआ ?

तिलोत्तमा० । मैंने तो सोचा था कि वे लोग मेरी छींक से डर कर अपनी कार्रवाई रोकेंगे मगर ऐसा न हुआ । दो ही दिन की मेहनत में उन लोगों ने कोतवाल को गिरफ्तार कर लिया, भैरोसिंह और तारासिंह ने उन्हें बुरा धोखा दिया ।

इसके बाद तिलोत्तमा ने कोतवाल साहब के गिरफ्तार होने का पूरा हाल जैसा हम ऊपर लिख आए हैं माधवी से कहा, साथ ही उसके यह भी कह दिया कि दीवान साहब को भी गुमान हो गया है कि तूने किसी मर्द को यहां ला कर रक्खा है और उसके साथ आनन्द कर रही है ।

तिलोत्तमा की जुबानी सब हाल सुन कर माधवी सोच सागर में गोते खाने लगी और आध घण्टे तक उसे तनोबदन की सुध न रही, इसके बाद उसने अपने को सम्हाला और फिर तिलोत्तमा से बातचीत करना आरम्भ किया ।

माधवी० । खैर जो हुआ सो हुआ यह बता कि अब क्या करना चाहिये ?

तिलोत्तमा० । मुनासिब तो यही है कि इन्द्रजीतसिंह और किशोरी को छोड़ दो, बस फिर तुम्हारा कोई कुछ न बिगाड़ेगा ।

माधवी० । (तिलोत्तमा के पैरों पर गिर कर और रो कर) ऐसा न कहो, अगर मुझ पर तुम्हारा सच्चा प्रेम है तो ऐसा करने के लिए जिद्द न करो, अगर मेरा सिर चाहो तो काट लो मगर इन्द्रजीतसिंह को छोड़ने के लिए मत कहो ।

तिलो० । अफसोस कि इन बातों की खबर दीवान साहब को भी नहीं कर सकती, बड़ी मुश्किल है, अच्छा मैं उद्योग करती हूं मगर निश्चय नहीं कह सकती कि क्या होगा ।

माधवी० । तुम चाहोगी तो सब काम हो जायगा ।

तिलो० । पहिले तो मुझे ललिता को छुड़ाना मुनासिब है ।

माधवी० । अवश्य ।

तिलो० । हाँ एक काम इसके भी पहिले करना चाहिये नहीं तो किशोरी दो ही एक दिन में यहाँ से गायब हो जायगी और ताज्जुब नहीं कि धड़धड़ाते हुए वीरेन्द्रसिंह के कई ऐयार यहां पहुंच जाय और मनमानी लूट मचावें ।

माधवी० । शायद तुम्हारा मतलब उस पानी वाली सुरंग को बन्द कर देने से हो ?

तिलो० । हां ।

माधवी० । मैं भी यही मुनासिब समझती हूं । मैं सोचती हूं कि जरूर कोई ऐयार उस रोज उसी पानी वाली सुरंग की राह से यहां आया था जिसको देखादेखी इन्द्रजीतसिंह उस सुरंग में घुसे थे, मगर बेचारे पानी में आगे न जा सके और लौट आये । तुम जरूर उस सुरंग को अच्छी तरह बन्द कर दो जिसमें कोई ऐयार उस राह से आने जाने न पावे । तुम लोगों के लिए वह रास्ता हई है जिधर से मैं आती जाती हूँ । हां एक बात और है, तुम अपने पिता को मेरी मदद के लिए क्यों नहीं ले आतीं, उनसे और मेरे पिता से तो बड़ी दोस्ती थी मगर अफसोस, आज कल वे मुझसे बहुत रंज हैं ।

थी। यकायक वह उठ बैठी और धीरे से आप ही आप बोली, "अब मुझे खुद कुछ करना चाहिए। इस तरह पड़े रहने से काम नहीं चलता। मगर अफसोस, मेरे पास कोई हर्बा भी तो नहीं है।"

किशोरी पलंग के नीचे उतरी और कमरे में इधर उधर टहलने लगी आखिर कमरे के बाहर निकली। देखा कि पहरेदार लौंडिया गहरी नींद में सो रही हैं। आधी रात से ज्यादे जा चुकी थी, चारो तरफ अंधेरा छाया हुआ था। धीरे धीरे कदम बढ़ाती हुई कुन्दन के मकान की तरफ बढ़ी। जब पास पहुंची तो देखा कि एक आदमी काले कपड़े पहिने उसी तरफ लपका हुआ जा रहा है बल्कि उस कमरे के दालान में पहुँच गया जिसमें कुन्दन रहती है। किशोरी एक पेड़ की आड़ में खड़ी हो गई, शायद इसलिए कि वह आदमी लौट कर चला जाय तो आगे बढ़ूं।

थोड़ी देर बाद कुन्दन भी उसी आदमी के साथ बाहर निकली और धीरे धीरे बाग के उस तरफ रवाना हुई जिधर घने दरख्त लगे हुए थे। जब दोनों उस पेड़ के पास पहुंचे जिसकी आड़ में किशोरी छिपी हुई थी तब वह आदमी रुका और धीरे से बोला :—

आदमी०। अब तुम जाओ, ज्यादे दूर तक पहुँचाने की कोई जरूरत नहीं।

कुन्दन०। फिर भी मैं कह देती हूँ कि अब पांच सात दिन 'नारंगी' की कोई जरूरत नहीं।

आदमी०। खैर, मगर किशोरी पर दया बनाये रहना।

कुन्दन०। इसके कहने की कोई जरूरत नहीं।

वह आदमी पेड़ों के झुण्ड की तरफ चला गया और कुन्दन लौट कर अपने कमरे में चली गई। किशोरी भी फिर वहां न ठहरी और अपने कमरे में आकर पलंग पर लेट रही क्योंकि उन दोनों की बातों ने जिसे किशोरी ने अच्छी तरह सुना था उसे परेशान कर दिया और वह

तरह तरह की बातें सोचने लगी, मगर अपने दिल का हाल किससे कहे ! इस लायक वहा कोई भी न था।

पहिले तो किशोरी बनिस्बत कुन्दन के लाली को सच्ची और नेक समझती थी मगर अब वह बात न रही। किशोरी उस आदमी के मुह से निकली हुई उस बात को फिर याद करने लगी कि "किशोरी पर दया बनाए रहना!"

वह आदमी कौन था ? इस बाग मे आना और यहा से निकलकर जाना तो बड़ा ही मुश्किल है, फिर वह क्योंकर आया। उस आदमी की आवाज पहिचानी हुई सी मालूम होती है, बेशक मैं उससे कई दफे बातें कर चुकी हूँ मगर कब और कहा सो याद नही पड़ता और न उसकी सूरत का ध्यान बधता है। कुन्दन ने कहा था, "पाच सात दिन तक नारंगी की कोई जरूरत नही।" इससे मालूम होता है कि वह नारगी वाली बात कुछ उसी आदमी से सम्बन्ध रखती है और लाली उस भेद को जानती है। इस समय तो यही जान पड़ता है कि कुन्दन मेरी खैरखाह है और लाली मुझसे दुश्मनी किया चाहती है, मगर इसका भी विश्वास नहीं होता। कुछ भेद खुला मगर इसमे तो और भी उलझन हो गई खैर कोशिश करुगी तो कुछ और भी पता लगेगा मगर अबकी लाली का हाल मालूम करना चाहिए।

थोड़ी देर तक इन सब बातों को किशोरी सोचती रही, आखिर फिर अपने पलग से उठी और कमरे के बाहर आई। उसकी हिफाजत करने वाली लौंडिया उसी तरह गहरी नींद में सो रही थीं। जरा रुक कर बाग के उस कोने की तरफ बढ़ी जिधर लाली का मकान था। पेड़ों की आड़ मे अपने को छिपाती और रुक रुक कर चारो तरफ की आहट लेती हुई चली जाती थी, जब लाली के मकान के पास पहुची तो धीरे धीरे किसी की बातचीत की आहट पा एक अगूर की झाड़ी मे रुक रही और कान लगा कर सुनने लगी, केवल इतना ही सुना, "आप बेफिक्र रहिए, जब

तक मैं जीती हूं कुन्दन किशोरी का कुछ बिगाड़ नहीं सकती और न उसे कोई दूसरा ले जा सकता है। किशोरी इन्द्रजीतसिंह की है और बेशक उन तक पहुंचाई जायगी।"

किशोरी ने पहिचान लिया कि यह लाली की आवाज है। लाली ने यह बात बहुत धीरे से कही थी मगर किशोरी बहुत पास पहुँच चुकी थी इसलिए बखूबी सुनकर पहिचान सकी कि लाली की आवाज है मगर यह न मालूम हुआ कि दूसरा आदमी कौन है। लाली अपने कमरे के पास ही थी, बात कह कर तुरंत दो चार सीढ़ियां चढ़ अपने कमरे में घुस गई और उसी जगह से एक आदमी निकल कर पेड़ों की आड़ में छिपता हुआ बाग के पिछली तरफ जिधर दरवाजे में बराबर ताला बन्द रहने वाला मकान था चला गया, मगर उसी समय जोर से "चोर चोर!" की आवाज आई। किशोरी ने इस आवाज को भी पहिचान कर मालूम कर लिया कि कुन्दन है जो उस आदमी को फँसाया चाहती है। किशोरी फौरन लपकती हुई अपने कमरे में चली आई और चोर चोर की आवाज बढ़ती ही गई।

किशोरी अपने कमरे में आकर पलँग पर लेट रही और उन बातों पर गौर करने लगी जो अभी दो तीन घण्टे के हेर फेर में देख सुन चुकी थी। वह मन ही मन कहने लगी—"कुन्दन की तरफ भी गई और लाली की तरफ भी गई, जिससे मालूम हो गया कि वे दोनों ही एक एक आदमी से जान पहिचान रखती हैं जो बहुत छिप कर इस मकान में आता है। कुन्दन के साथ जो आदमी मिलने आया था उसकी जुबानी जो कुछ मैंने सुना उससे जाना जाता था कि कुन्दन मुझसे दुश्मनी नहीं रखती बल्कि मेहरबानी का बर्ताव किया चाहती है। इसके बाद जब लाली की तरफ गई तो वहां की बातचीत से मालूम हुआ कि लाली सच्चे दिल से मेरी मददगार है और कुन्दन शायद दुश्मनी की निगाह से मुझे देखती है। हां ठीक है, अब समझी, बेशक ऐसा ही होगा।

नहीं नहीं, मुझे कुन्दन की बातों पर विश्वास न करना चाहिए! अच्छा देखा जायगा। कुन्दन ने बेमौके चोर चोर का शोर मचाया, कहीं ऐसा न हो कि बेचारी लाली पर कोई आफत आवे!

इन्हीं सब बातों को सोचती हुई किशोरी ने बची हुई थोड़ी रात जागकर ही बिता दी और सुबह की सुफेदी फैलने के साथ ही अपने कमरे के बाहर निकली क्योंकि रात की बातों का पता लगाने के लिए उसका जी बेचैन हो रहा था।

किशोरी जैसे ही दालान मे पहुँची, सामने से कुन्दन को आते हुए देखा। कुन्दन ने पास आकर सलाम किया और कहा, "रात का कुछ हाल मालूम है या नहीं?"

किशोरी०। सब कुछ मालूम है! तुम्हीं ने तो गुल मचाया था!

कुन्दन०। (ताज्जुब से) यह कैसी बात कहती हो?

किशोरी०। तुम्हारी आवाज साफ मालूम होती थी।

कुन्दन०। मैं तो चोर चोर का गुल सुन कर वहाँ पहुँची थी और उन्हीं लोगों की तरह खुद भी चिल्लाने लगी थी!

किशोरी०। (हँस कर) शायद ऐसा ही हो।

कुन्दन०। क्या इसमें आपको कोई शक है?

किशोरी०। बेशक, लो यह लाली भी तो आ रही है।

कुन्दन०। (कुछ घबड़ा कर) जो कुछ किया उन्होंने किया।

इतने ही में लाली भी आकर खड़ी हो गई और कुन्दन की तरफ देख कर बोली, "आपका वार तो खाली गया!"

कुन्दन०। (घबड़ाकर) मैंने क्या......

लाली०। बस रहने दीजिए, आपने मेरी कार्रवाई कम देखी होगी मगर दो घन्टे पहिले मैं आपकी पूरी कार्रवाई मालूम कर चुकी थी।

कुन्दन०। (बदहवास होकर) आप तो कसम खा......

लाली०। हां हां मुझे खूब याद है, मैं उसे नहीं भूलती!

किशोरी० । जो हो, मुझे तो अब पांच सात दिन तक नारंगी की कोई जरूरत नहीं ।

किशोरी की इस बात ने लाली और कुन्दन दोनों को चौंका दिया । लाली के चेहरे पर कुछ हंसी थी मगर कुन्दन के चेहरे का रंग बिल्कुल ही उड़ गया था क्योंकि उसे विश्वास हो गया कि किशोरी ने भी रात की कुल बात सुन ली । कुन्दन की घबराहट और परेशानी यहां तक बढ़ गई कि किसी तरह अपने को सम्हाल न सकी और बिना कुछ कहे वहाँ से उठ कर अपने कमरे की तरफ चली गई । अब लाली और किशोरी मे बातचीत होने लगी—

लाली० । मालूम होता है तुमने भी रात को कुछ ऐयारी की ।

किशोरी० । हां मै कुन्दन की तरफ छिप कर गई थी ।

लाली० । तब तो तुम्हें मालूम हो गया होगा कि कुन्दन तुम्हें धोखा दिया चाहती है ।

किशोरी० । पहिले तो यह साफ नहीं जान पड़ता था मगर जब तुम्हारी तरफ गई और तुमको किसी से बातें करते सुना तो विश्वास हो गया कि इस महल मे केवल तुम्हीं से मैं कुछ भलाई की उम्मीद कर सकती हूँ ।

लाली० । ठीक है, कुन्दन की कुल बातें तुमने नहीं सुनी. क्या मुझसे भी......(रुक कर) खैर जाने दो । हां अब वह समय आ गया कि तुम और हम दोनों यहां से निकल भागें । क्या तुम मुझ पर विश्वास रखती हो ?

किशोरी० । बेशक तुमसे मुझे नेकी की उम्मीद है मगर कुन्दन बहुत बिगड़ी हुई मालूम होती है ।

लाली० । वह मेरा कुछ नहीं कर सकती ।

किशोरी० । अगर तुम्हारा हाल किसी से कह दे तो ?

लाली० । अपनी जुबान से वह नहीं कह सकती, क्योंकि वह मेरे पंजे मे उतनी ही फंसी हुई है जितना मैं उसके पंजे मे ।

किशोरी० । अफसोस, इतनी मेहरबानी रहने पर भी तुम वह भेद मुझसे नहीं कहतीं !

लाली० । घबडाओ मत, धीरे धीरे सब कुछ मालूम हो जायगा ।

इसके बाद लाली ने दबी जुबान से किशोरी को कुछ समझाया और दो घण्टे मे फिर मिलने का वादा करके वहाँ से चली गई ।

ग्यारहवां बयान

हम ऊपर कई दफे लिख आए हैं कि उस बाग में जिसमे किशोरी रहती थी एक तरफ एक ऐसी इमारत है जिसके दर्वाजे पर बराबर ताला बन्द रहता है और नंगी तलवार का पहरा पडा करता है ।

आधी रात का समय है । चारो तरफ अंधेरा छाया हुआ है । तेज हवा चलने के कारण बड़े बडे पेड़ों के पत्ते खड़खडा कर सन्नाटे को तोड रहे हैं । उसी समय हाथ में कमन्द लिए हुए लाली अपने को हर तरह से बचाती और चारो तरफ गौर से देखती हुई उसी मकान के पिछवाड़े की तरफ से जा रही है । जब दिवार के पास पहुँची कमन्द लगा कर छत के ऊपर चढ गई । छत के ऊपर चारो तरफ तीन तीन हाथ ऊँची दीवार थी । लाली ने बडी होशियारी से छत फोड कर एक इतना बडा सूराख किया जिसमे आदमी बखूबी उतर जा सके और खुद कमन्द के सहारे उसके अन्दर उतर गई ।

दो घण्टे के बाद एक छोटी सी सन्दूकडी लिए हुए निकली और कमन्द के सहारे छत के नीचे उतर एक तरफ को रवाना हुई । पूरब तरफ वाली बारहदरी मे आई जहा से महल मे जाने का रास्ता था, फाटक के अन्दर घुस कर महल मे पहुँची । यह महल बहुत बडा और आलीशान था, दो सौ लौंडियों और सखियों के साथ महारानी साहब इसी में रहा करती थीं । कई दालानों और दर्वाजों को पार करती हुई लाली ने एक कोठरी के दर्वाजे पर पहुच कर धीरे से कुण्डा खटखटाया ।

एक बुढ़िया ने उठ कर किवाड खोला और लाली को अन्दर करके फिर बन्द कर लिया। उस बुढिया की उम्र लगभग अस्सी वर्ष के होगी, नेकी और रहमदिली उसके चेहरे पर झलक रही थी। सिर्फ छोटी सी कोठरी, थोड़े से जरूरी सामान, और मामूली चारपाई पर ध्यान देने से मालूम होता था कि बुढिया लाचारी से अपनी जिन्दगी विता रही है। लाली ने दोनों पैर छू कर प्रणाम किया और उस बुढिया ने पीठ पर मुहब्बत से हाथ फेर कर बैठाने के लिए कहा।

लाली०। (सन्दूकड़ी आगे रख कर) यही है !

बुढ़िया०। क्या ले आई ? हां ठीक है, बेशक यही है। अब आगे जो कुछ कीजियो बहुत सम्हाल के। ऐसा न हो कि इस आखिरी समय में मुझे कलङ्क लगे।

लाली०। जहाँ तक हो सकेगा बडी होशियारी से काम करूँगी, आप आशीर्वाद दीजिए कि मेरा उद्योग सुफल हो।

बुढिया०। ईश्वर तुझे इस नेकी का बदला दे, वहाँ कुछ डर तो नहीं मालूम हुआ ?

लाली०। दिल कड़ा करके इसे ले आई, नहीं तो मैंने जो कुछ देखा जीते जी भूलने योग्य नहीं, अभी तो फिर एक दफे देखना नसीब होगा। ओफ, अभी तक कलेजा कांपता है।

बुढिया०। (मुस्कुरा कर) बेशक वहाँ ताज्जुब के सामान इकट्ठे हैं मगर डरने की कोई बात नहीं, जा ईश्वर तेरी मदद करे।

लाली ने उस सन्दूकड़ी को उठा लिया और अपने खास घर में आ सन्दूकड़ी को हिफाजत से रख कर पलंग पर जा लेट रही। सबेरे उठ कर किशोरी के कमरे में गई।

किशोरी०। मुझे रात भर तुम्हारा खयाल बना रहा और घड़ी घड़ी उठ कर बाहर जाती थी कि कहीं से गुल शोर की आवाज तो नहीं आती।

लाली०। ईश्वर की दया से मेरे काम में किसी तरह का विघ्न

नहीं पडा।

किशोरी०। आओ मेरे पास बैठो, अब तो तुम्हें उम्मीद हो गई कि मेरी जान बच जायगी और मैं यहाँ से जा सकूँगी।

लाली०। बेशक अब मुझे पूरी उम्मीद हो गई।

किशोरी०। सन्दूकडी मिली ?

लाली०। हाँ, यह सोचकर कि दिन को किसी तरह मौका न मिलेगा उसी समय मे बूढी दादी को दिखा आई उन्होंने पहिचान कर कहा कि बेशक यही सन्दूकडी है। उस रग की वहाँ कई सन्दूकडिया थीं मगर वह खास निशान जो बूढ़ी दादी ने बताया था देखकर मैं उसी एक को ले आई।

किशोरी०। मैं भी उस सन्दूकडी को देखा चाहती हूँ।

लाली०। बेशक मैं तुम्हें अपने यहा ले चल कर वह सन्दूकडी दिखा सकती हूँ मगर उसके देखने से तुम्हें किसी तरह का फायदा नहीं होगा बल्कि तुम्हारे वहाँ चलने से कुन्दन को खुटका हो जायगा और वह सोचेगी कि किशोरी लाली के यहा क्यों गई। उस सन्दूकडी मे कोई ऐसी बात नहीं है जो देखने लायक हो, उसे मामूली एक छोटा सा डिब्बा समझना चाहिए जिसमें कहीं ताली लगाने की जगह नहीं है और मजबूत भी इतनी है कि किसी तरह टूट नहीं सकती।

किशोरी०। फिर वह क्योंकर खुल सकेगा और उसके अन्दर से वह चाभी क्योंकर निकलेगी जिसकी हम लोगों को जरूरत है ?

लाली०। रेती से रेत कर उसमे सूराख किया जायगा।

किशोरी०। देर लगेगी।

लाली०। दो दो दिन मे यह काम होगा क्योंकि सिवाय रात के दिन को मौका नहीं मिल सकता।

किशोरी०। मुझे तो एक एक घड़ी सौ सौ वर्ष के समान बीतती है।

लाली०। खैर जहाँ इतने दिन बीते वहा दो दिन और सही।

थोड़ी देर तक बातचीत होती रही। इसके बाद लाली उठ कर अपने मकान में चली गई और मामूली कामों की फिक्र मे लगी।

इस मामले के तीसरे दिन आधी रात के समय लाली अपने मकान से बाहर निकली और किशोरी के मकान में आई। वे लोंडिया जो किशोरी के पहा पहरे पर मुकर्रर थीं गहरी नींद में पड़ी खुर्राटे ले रही थीं मगर किशोरी की आखों मे नींद का नाम निशान नहीं, वह पलङ्ग पर लेटी दर्वाजे की तरफ देख रही थी। उसी समय हाथ में एक छोटी सी गठड़ी लिए लाली ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा जिसे देखते ही किशोरी उठ खड़ी हुई और बड़ी मुहब्बत के साथ हाथ पकड़ लाली को अपने पास बैठाया।

किशोरी०। ओफ, ये दिन बड़ी कठिनता से बीते, दिन रात डर लगा ही रहता था।

लाली०। सो क्यों?

किशोरी। इसीलिये कि कोई उस छत पर जाकर देख न ले कि किसी ने सेंध लगाई है।

लाली०। उंह, कौन उस पर जाता है और कौन देखता है, लो अब देर करना मुनासिब नहीं।

किशोरी०। मैं तैयार हूँ, कुछ लेने की जरूरत तो नहीं है?

लाली०। जरूरत की सब चीजें मेरे पास हैं, तुम बस चली चलो।

लाली और किशोरी वहा से रवाना हुई और पेड़ों की आड में होती हुई उस मकान के पिछवाड़े पहुँची जिसकी छत मे लाली ने सेंध लगाई थी। कमन्द लगा कर दोनों ऊपर चढ़ीं, कमन्द खींच लिया और उसी कमन्द के सहारे सेंध की राह दोनों मकान के अन्दर उतर गईं। वहा कि अनोखी बातों को देख किशोरी की अजब हालत हो गई मगर तुरत ही उसका ध्यान दूसरी तरफ जा पड़ा। किशोरी और लाली जैसे ही उस मकान के अन्दर उतरीं वैसे ही बाहर से किसी के ललकारने की आवाज आई, साथ ही फुर्ती

से कई कमन्द लगा दस पन्द्रह आदमी छत पर चढ़ आए और "धरो धरो, जाने न पावे जाने न पावे !" की आवाज आने लगी।

बारहवाँ बयान

कुअर इन्द्रजीतसिंह तालाब के किनारे खड़े उस विचित्र इमारत और हसीन औरत की तरफ देख रहे हैं। उनका इरादा हुआ कि तैर कर उस मकान में चले जाय जो इस तालाब के बीचोबीच में बना हुआ है मगर उस नौजवान औरत ने इन्हें हाथ के इशारे से मना किया बल्कि वहा से भाग जाने के लिए कहा। उसका इशारा समझ ये रुक गए मगर जी न माना, फिर तालाब मे उतरे।

उस नाजनीन को जब विश्वास हो गया कि कुमार बिना यहा आए न मानेंगे तब उसने इशारे से ठहरने के लिए कहा और यह भी कहा कि मे किश्ती लेकर आती हूँ। उस औरत ने किश्ती खोली और उस पर सवार हो अजीब तरह से घुमाती फिराती तालाब के पिछले कोने की तरफ ले गई और कुमार को भी उसी तरफ आने का इशारा किया। कुमार उस तरफ गए और खुशी खुशी उस औरत के साथ किश्ती पर सवार हुए। वह किश्ती को उसी तरह घुमाती फिराती मकान के पास ले गई। दोनों आदमी उतर कर मकान के अन्दर गए।

उस छोटे से मकान की सजावट कुमार ने पसन्द की। वहा सभी चीजें जरूरत की मौजूद थीं। बीच का बड़ा कमरा अच्छी तरह से सजा हुआ था, बेशकीमती शीशे लगे हुए थे, काश्मीरी गलीचे जिनमें तरह तरह के फूल बूटे बने हुये थे बिछे थे, छोटी छोटी मगर ऊची सगमर्मर की चौकियों पर सजावट के सामान और गुलदस्ते लगाए हुए थे, गाने बजाने का सामान भी मौजूद था, दीवारों पर की तस्वीरों को बनाने मे मुसौवरों ने अच्छी कारीगरी खर्च की थी। उस कमरे के बगल में एक और छोटा सा कमरा सजा हुआ था जिसमें सोने के लिए एक मसहरी

बिछी हुई थी उसके बगल में एक कोठड़ी नहाने की थी जिसकी जमीन सुफेद और स्याह पत्थरों से बनी हुई थी। बीच में एक छोटा सा हौज बना हुआ था जिसमें एक तरफ से तालाब का जल आता था और दूसरी तरफ से निकल जाता था, इसके अलावे और भी तीन चार कोठ-ड़ियां जरूरी कामों के लिए मौजूद थीं मगर उस मकान में सिवाय उस एक औरत के और कोई दूसरी औरत न थी न कोई नौकर या मजदूरनी ही नजर आती थी।

उस मकान को देख और उसमें सिवाय उस नौजवान नाजनीन के और किसी को न पा, कुमार को बड़ा ही ताज्जुब हुआ। वह मकान इस योग्य था कि बिना पांच चार आदमियों के उसकी सफाई या वहां के सामान की दुरुस्ती हो नहीं सकती थी।

थके माँदे और धूप खाए हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह को यह जगह बहुत ही भली मालूम हुई और उस हसीन औरत के अलौकिक रूप की छटा में वे ऐसे मोहित हुए कि पीछे की धुन बिलकुल ही जाती रही। बड़े नाज और अन्दाज से उस औरत ने कुमार को कमरे में ले जाकर गद्दी पर बैठाया और आप उनके सामने बैठ गई।

कुमार०। तुमने जो कुछ एहसान मुझ पर किया मैं किसी तरह उसका बदला नहीं चुका सकता।

औरत०। ठीक है मगर मैं उम्मीद करती हूं कि आप कोई काम ऐसा भी न करेंगे जो मेरी बदनामी का सबब हो।

कुमार०। नहीं नहीं, मुझसे ऐसी उम्मीद कभी न करना, लेकिन क्या सबब है जो तुमने ऐसा कहा?

औरत०। इस मकान में जहां मैं अकेली रहती हूं आपका इस तरह आना और देर तक रहना बेशक मेरी बदनामी का सबब होगा।

कुमार०। (कुछ सोच कर) तुम इतनी खूबसूरत क्यों हुईं! अफ-सोस, तुम्हारी एक एक अदा मुझे अपनी तरफ खैंचती है! (कुछ

अटक कर) जो हो मुझे अब यहा से चले ही जाना चाहिए। अगर ऐसा ही था तो मुझे किश्ती पर चढ़ा कर यहाँ क्यों लाई ?

औरत०। मैंने तो पहिले ही आपको चले जाने का इशारा किया था मगर जब आप जल में तैर कर यहा आने लगे तो लाचार मुझे ऐसा करना पड़ा। मै जान बूझकर उस आदमी को किस तरह आफत मे फँसा सकती हूँ जिसकी जान खुद एक जालिम ऐयार के हाथ से बचाई हो। आप यह न समझे कि कोई आदमी इस तालाब में तैर कर यहाँ तक आ सकता है, क्योंकि इस तालाब में चारों तरफ जाल फेंके हुए हैं, अगर कोई आदमी यहा तैर कर आने का इरादा करेगा तो बेशक जाल में फँस कर अपनी जान बर्बाद करेगा। यही सबब था कि मुझे आपके लिए किश्ती ले जानी पड़ी।

कुमार०। बेशक तब इसके लिए भी मैं धन्यवाद दूँगा। माफ करना मै यह नहीं जानता था कि मेरे यहाँ आने से तुम्हारा नुकसान होगा, अब मै जाता हूँ मगर कृपा करके अपना नाम तो बता दो जिसमें मुझे याद रहे कि फलानी औरत ने बड़े वक्त पर मेरी मदद की थी।

औरत०। (हँस कर) मैं अपना नाम नहीं किया चाहती और न इस धूप मे आपको यहाँ से जाने के लिए कहती हूँ बल्कि मै उम्मीद करती हूँ कि आप मेरी मेहमानी कबूल करेंगे।

कुमार०। वाह वाह! कभी तो आप मुझे मेहमान बनाती हैं और कभी यहा से निकल जाने के लिए हुक्म लगाती है, आप लोग जो चाहे करें!

औरत०। (हँस कर) खैर ये सब बातें पीछे होती रहेंगी, अब आप यहा से उठें और कुछ भोजन करें क्योंकि मै जानती हूँ कि आपने अभी तक कुछ भोजन नहीं किया है।

कुमार०। अभी तो स्नान सन्ध्या भी नहीं किया। लेकिन मुझे ताज्जुब है कि यहा तुम्हारे पास कोई लौंडी दिखाई नहीं देती।

उस नई औरत को साथ ले उस खोह के बाहर चली गई। वे डाकू सब उन दोनों औरतों का मुँह देखते ही रह गये मगर कुछ कहने या पूछने की हिम्मत न पड़ी।

जब दो घण्टे तक दोनों औरतों में से कोई न लौटी तो वे डाकू लोग भी उठ खड़े हुए और खोह के बाहर निकल गये। उन लोगों के इशारे और आकृति से मालूम होता था कि वे दोनों औरतों के यकायक इस तरह पर चले जाने से ताज्जुब कर रहे हैं। यह हाल देख कर देवीसिंह भी वहां से चल पड़े और सुबह होते होते राजमहल में आ पहुँचे।

तेरहवां बयान

कुँअर इन्द्रजीतसिंह तो किशोरी पर जी जान से आशिक हो ही चुके थे। इस बीमारी की हालत में भी उसकी याद इन्हें सता रही थी और यह जानने के लिये बेचैन हो रहे थे कि उस पर क्या बीती, वह किस अवस्था में कहां है, और अब उसकी सूरत कब किस तरह देखनी नसीब होगी। जब तक वे अच्छी तरह दुरुस्त नहीं हो जाते, न तो खुद कहीं जाने के लिए हुक्म ले सकते थे और न किसी बहाने से अपने प्रेमी साथी ऐयार भैरोसिंह को ही कहीं भेज सकते थे। इसी बीमारी की हालत में समय पाकर उन्होंने भैरोसिंह से सब हाल मालूम कर लिया था। यह सुन कर कि किशोरी को दीवान अग्निदत्त उठा ले गया, बहुत ही परेशान थे मगर यह खबर उन्हें कुछ कुछ ढाढ़स देती थी कि चपला चम्पा और पण्डित बद्रीनाथ उसके छुड़ाने की फिक्र में लगे हुए हैं और राजा वीरेन्द्रसिंह को भी यह धुन जी से लगी हुई है कि जिस तरह बने शिवदत्त की लड़की किशोरी की शादी अपने लड़के के साथ करके शिवदत्त को नीचा दिखावें और शर्मिन्दा करें।

कुँअर आनन्दसिंह ने भी अब इश्क के मैदान में पैर रक्खा, मगर

इनकी हालत अजब गोमगो में पड़ी हुई है। जब उस औरत का ध्यान आता था जी बेचैन हो जाता था मगर जब देवीसिंह की बात को याद करते थे कि वह डाकुओं के एक गिरोह की सर्दार है तो कलेजे में अजीब तरह का दर्द पैदा होता था और थोडी देर के लिए चित्त का भाव बदल जाता था, लेकिन साथ ही इसके सोचने लगते थे कि नहीं अगर वह हम लोगों की दुश्मन होती तो मेरी तरफ देख कर प्रेम भाव से कभी न हँसती और फूलों के गुलदस्ते और गजरे सजाने के लिए जब उस कमरे में आई थी तो हम लोगों को नींद में गाफिल पा कर जरूर मार डालती। पर फिर हम लोगो की दुश्मन अगर नहीं तो उन डाकुओं का साथ कैसा!

ऐसे ऐसे सोच विचार ने उनकी अवस्था खराब कर रक्खी थी। कुँअर इन्द्रजीतसिंह भैरोसिंह और तारासिंह को उनके जी का पता कुछ कुछ लग चुका था मगर जब तक उसकी इज्जत आबरू और जात पात की खबर के साथ साथ यह भी न मालूम हो जाये कि वह दोस्त है या दुश्मन, तब तक कुछ कहना सुनना या समझाना मुनासिब नहीं समझते थे।

राजा वीरेन्द्रसिंह को अब यह चिन्ता हुई कि जिस तरह वह औरत इस घर में आ पहुँची, कहीं डाकू लोग भी आकर लड़कों को दुःख न दें और फसाद न मचावें। उन्होंने पहरे वगैरह का अच्छी तरह इन्तजाम किया और यह सोच कर कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह अभी तन्दुरुस्त नहीं हुए हैं कमजोरी बनी हुई है और किसी तरह लड़भिड़ नहीं सकते, इनको अकेले छोड़ना मुनासिब नहीं, अपने सोने का इन्तजाम भी उसी कमरे में किया और साथ ही एक नया और विचित्र तमाशा देखा।

हम ऊपर लिख आए हैं कि इस कमरे के दोनों तरफ दो कोठड़िया हैं, एक में सन्ध्या पूजा का सामान है और दूसरी वही विचित्र कोठड़ी है जिसमें से वह औरत पैदा हुई थी। सन्ध्या पूजा वाली कोठड़ी में बाहर से ताला बन्द कर दिया गया और दूसरी कोठड़ी का कुलाबा वगैरह

दुरुस्त करके बिना बाहर ताला लगाये उसी तरह छोड़ दिया गया जैसे पहिले था बल्कि राजा वीरेन्द्रसिंह ने उसी के दर्वाजे पर अपना पलंग बिछवाया और सारी रात जागते रह गये।

आधी रात बीत गई मगर कुछ देखने में न आया, तब वीरेन्द्रसिंह अपने बिस्तरे पर से उठे और कमरे में इधर उधर घूमने लगे। घण्टे भर बाद उस कोठड़ी में से कुछ खटके की सी आवाज आई। वीरेन्द्रसिंह ने फौरन तलवार उठा ली और तारासिंह को उठाने के लिए चले मगर खटके की आवाज पा तारासिंह पहिले ही से सचेत हो गये थे, अब हाथ में खञ्जर ले वीरेन्द्रसिंह के साथ टहलने लगे।

आधी घड़ी के बाद बजोर खटकने की आवाज इस तरह पर हुई जिससे साफ मालूम हो गया कि किसी ने इस कोठड़ी का दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया। थोड़ी ही देर बाद पैर के धमाधमी की आवाज भीतर से आने लगी, मानों चार-पांच आदमी भीतर उछल कूद रहे हैं। वीरेन्द्रसिंह कोठड़ी के दर्वाजे के पास गये और हाथ का धक्का देकर किवाड़ा खोलना चाहा मगर भीतर से बन्द रहने के कारण दर्वाजा न खुला, लाचार उसी जगह खड़े हो भीतर की आहट पर गौर करने लगे।

अब पैरों की धमाधमी की आवाज बढ़ने लगी और धीरे धीरे इतनी ज्यादा हुई कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी उठे और कोठड़ी के पास आ कर खड़े हो गये। फिर दर्वाजा खोलने की कोशिश की गई मगर न खुला। भीतर जल्द जल्द पैर उठने और पटकने की आवाज से सभों को निश्चय हो गया कि अन्दर लड़ाई हो रही है। थोड़ी ही देर बाद तलवारों की झनझनाहट भी सुनाई देने लगी। अब भीतर लड़ाई होने में किसी तरह का शक न रहा। आनन्दसिंह ने चाहा कि दर्वाजे का कुलावा तोड़ डालें मगर वीरेन्द्रसिंह की मरजी न पा कर सब चुपचाप खड़े आहट सुनते रहे।

यकायक धमधमाहट की आवाज बढ़ी और तब सन्नाटा हो गया। घड़ी भर तक ये लोग बाहर खड़े रहे मगर कुछ मालूम न हुआ और न फिर किसी तरह की आहट या आवाज ही सुनाई दी। रात भी सिर्फ दो घण्टे बल्कि इससे भी कम बाकी रह गई थी। पहरे वाले टहल टहल कर अच्छी तरह से पहरा दे रहे हैं या नहीं यह देखने के लिए तारासिंह बाहर गये और सभों को अपने काम पर मुस्तैद पाकर लौट आये। इतने ही में कमरे का दर्वाजा खुला और भैरोसिंह को साथ लिए देवीसिंह आते हुए दिखाई पड़े।

ये दोनों ऐयार सलाम करने के बाद वीरेन्द्रसिंह के पास बैठ गये मगर यह देख कर कि यहां अभी तक ये लोग जाग रहे हैं ताज्जुब करने लगे।

देवी०। आप लोग इस समय तक जाग रहे हैं?

वीरे०। हाँ, यहाँ कुछ ऐसा ही मामला हुआ कि जिससे निश्चिन्त हो सो न सके।

देवी०। सो क्या?

वीरे०। खैर तुम्हें यह भी मालूम हो जायगा पहिले अपना हाल तो कहो। (भैरोसिंह की तरफ देख कर) तुमने उस औरत को पहिचाना?

भैरो०। जी हां, बेशक वही औरत है जो यहां आई थी, बल्कि वहाँ एक और औरत भी दिखाई दी।

वीरे०। यहाँ से जाकर तुमने क्या किया और क्या क्या देखा सो खुलासा कह जाओ।

भैरोसिंह ने जो कुछ देखा था कहने बाद यहाँ का हाल पूछा। वीरेन्द्रसिंह ने भी यहाँ की कुल कैफियत कह सुनाई और बोले कि 'हम यही राह देख रहे थे कि सवेरा हो जाये और तुम लोग भी आ जाओ तो इस कोठरी को खोलें और देखें कि क्या है, कहीं से किसी के आने जाने का पता लगता है या नहीं।'

तिलो० । मैं कल उनके पास गई थी पर वे किसी तरह नहीं मानते, तुमसे बहुत ही ज्यादे रंज हैं, मुझ पर भी बहुत बिगड़ते थे, अगर मैं तुरन्त न चली आती तो बेइज्जती के साथ निकलवा देते, अब मैं उनके पास कभी न जाऊँगी ।

माधवी० । खैर जो कुछ किस्मत में है भोगूंगी । अच्छा अब तो सभों की आमदरफ्त इसी सुरंग से होगी, तो किशोरी को वहां से निकाल किसी दूसरी जगह रखना चाहिये ?

तिलोत्तमा० । उस सुरंग से बढ़ कर कौन ऐसी जगह है जहां उसे रक्खोगी, दीवान साहब का भी तो डर है ?

थोड़ी देर तक इन दोनों में बातचीत होती रही, इसके बाद इन्द्रजीतसिंह के सो कर उठने की खबर आई । शाम भी हो चुकी थी, माधवी उठ कर उनके पास गई और तिलोत्तमा पानी वाले सुरङ्ग को बन्द करने की फिक्र में लगी ।

पाठक, इस जगह मामला बड़ा ही गोलमाल हो गया । तिलोत्तमा ने चालाकी से वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों की कार्रवाई देख ली । माधवी और तिलोत्तमा की बातचीत से आप यह भी जान ही गये होंगे कि बेचारी किशोरी उसी सुरंग में कैद की गई है जिसका ताली चपला ने बनाई थी या जिस सुरंग की राह चपला और कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने माधवी के पीछे जाकर यह मालूम कर लिया था कि वह कहां जाती है । उस सुरंग की दूसरी ताली तो मौजूद ही थी, किशोरी को छुड़ाना चपला के लिए कोई बड़ी बात न थी अगर तिलोत्तमा होशियार होकर उस आने जाने वाली राह अर्थात् पानी वाली सुरङ्ग को जिसमें इन्द्रजीतसिंह गये थे और आगे जलामय देख कर लौट आए थे, पत्थर के ढोकों से मजबूती के साथ बन्द न कर देती । कुंअर इन्द्रजीतसिंह को बखूबी मालूम हो गया था कि हमारे ऐयार लोग इसी राह से आया जाया करते हैं, अब उन्होंने अपनी आँखों से यह भी देख लिया कि वह सुरंग

यकायक धमधमाहट की आवाज बढ़ी और तब सन्नाटा हो गया। घड़ी भर तक ये लोग बाहर खड़े रहे मगर कुछ मालूम न हुआ और न फिर किसी तरह की आहट या आवाज ही सुनाई दी। रात भी सिर्फ दो घण्टे बल्कि इससे भी कम बाकी रह गई थी। पहरे वाले टहल टहल कर अच्छी तरह से पहरा दे रहे हैं या नहीं यह देखने के लिए तारासिंह बाहर गये और सभों को अपने काम पर मुस्तैद पाकर लौट आये। इतने ही में कमरे का दर्वाजा खुला और भैरोसिंह को साथ लिए देवीसिंह आते हुए दिखाई पड़े।

ये दोनों ऐयार सलाम करने के बाद वीरेन्द्रसिंह के पास बैठ गये मगर यह देख कर कि यहां अभी तक ये लोग जाग रहे हैं ताज्जुब करने लगे।

देवी०। आप लोग इस समय तक जाग रहे हैं?

वीरे०। हाँ, यहाँ कुछ ऐसा ही मामला हुआ कि जिससे निश्चिन्त हो सो न सके।

देवी०। सो क्या?

वीरे०। खैर तुम्हें यह भी मालूम हो जायगा पहिले अपना हाल तो कहो। (भैरोसिंह की तरफ देख कर) तुमने उस औरत को पहिचाना?

भैरो०। जी हां, बेशक वही औरत है जो यहां आई थी, बल्कि वहाँ एक और औरत भी दिखाई दी।

वीरे०। यहाँ से जाकर तुमने क्या किया और क्या क्या देखा सो सुनाना कह जाओ।

भैरोसिंह ने जो कुछ देखा था कहने बाद यहाँ का हाल पूछा। वीरेन्द्रसिंह ने भी यहाँ की कुल कैफियत कह सुनाई और बोले कि 'हम यही राह देख रहे थे कि सवेरा हो जाये और तुम लोग भी आ जाओ तो इस कोठरी को खोलें और देखें कि क्या है, कहीं से किसी के आने जाने का पता लगता है या नहीं।'

तिलो० । मैं कल उनके पास गई थी पर वे किसी तरह नहीं मानते, तुमसे बहुत ही ज्यादे रञ्ज हैं, मुझ पर भी बहुत बिगड़ते थे, अगर मैं तुरन्त न चली आती तो बेइज्जती के साथ निकलवा देते, अब मैं उनके पास कभी न जाऊँगी।

माधवी० । ख़ैर जो कुछ किस्मत में है भोगूंगी ! अच्छा अब तो सभों की आमदरफ्त इसी सुरंग से होगी, तो किशोरी को वहां से निकाल किसी दूसरी जगह रखना चाहिये !

तिलोत्तमा० । उस सुरंग से बढ़ कर कौन ऐसी जगह है जहां उसे रक्खोगी, दीवान साहब का भी तो डर है !

थोड़ी देर तक इन दोनों में बातचीत होती रही, इसके बाद इन्द्रजीतसिंह के सो कर उठने की खबर आई। शाम भी हो चुकी थी; माधवी उठ कर उनके पास गई और तिलोत्तमा पानी वाले सुरङ्ग को बन्द करने की फिक्र में लगी।

पाठक, इस जगह मामला बड़ा ही गोलमाल हो गया। तिलोत्तमा ने चालाकी से बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों की कार्रवाई देख ली। माधवी और तिलोत्तमा की बातचीत से आप यह भी जान ही गये होंगे कि बेचारी किशोरी उसी सुरंग में कैद की गई है जिसकी ताली चपला ने बनाई थी या जिस सुरंग की राह चपला और कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने माधवी के पीछे जाकर यह मालूम कर लिया था कि वह कहाँ जाती है। उस सुरंग की दूसरी ताली तो मौजूद ही थी, किशोरी को छुड़ाना चपला के लिए कोई बड़ी बात न थी अगर तिलोत्तमा होशियार होकर उस आने जाने वाली राह अर्थात् पानी वाली सुरङ्ग को जिसमें इन्द्रजीत[illegible] गये थे और आगे जलामय देख कर लौट आए थे, पत्थर [illegible] मजबूती के साथ बन्द न कर देती। कुंअर इन्द्रजीतसिं[illegible] मालूम हो गया था कि हमारे ऐयार लोग इसी रा[illegible] करते हैं, अब उन्होंने अपनी आँखों से यह भी देख लि[illegible]

वसूली बन्द कर दी गई। उनकी नाउम्मीदी हर तरह बढ़ने लगी, उन्होंने समझ लिया कि अब चपला से मुलाकात न होगी और बाहर हमारे छुड़ाने के लिए क्या क्या तर्कीब हो रही है इसका पता बिल्कुल न लगेगा। सुरंग की नई ताली जो चपला ने बनवाई थी वह उसी के पास थी। तो भी इन्द्रजीतसिंह ने हिम्मत न हारी, उन्होंने जी में ठान लिया कि अब जबर्दस्ती से काम लिया जायगा, जितनी औरतें यहा मौजूद हैं सभों की मुश्कें बाध नहर के किनारे डाल देंगे और सुरंग की असली ताली माधवी के पास से लेकर सुरग की राह माधवी के महल में पहुच कर खूनखराबा मचावेंगे। आखिर क्षत्रियों को इससे बढ़कर लड़ने भिड़ने और जान देने का कौन सा समय हाथ लगेगा! मगर ऐसा करने के लिये सब से पहिले सुरग की ताली अपने कब्जे मे कर लेना मुनासिब है, नहीं तो मुझे बिगड़ा हुआ देख जब तक मै दो चार औरतों की मुश्कें बाधूंगा सब सुरग की राह भाग जायगी, फिर मेरा मतलब जैसा मैं चाहता हू सिद्ध न होगा।

इन्द्रजीतसिंह ने सुरग की ताली लेने के लिए बहुत कोशिश की मगर न ले सके क्योंकि अब वह ताली उस जगह से जहा पहिले रहती थी हटा कर किसी दूसरी जगह रख दी गई थी।

सातवां बयान

आपस में लड़ने वाले दोनों भाइयों के साथ जाकर सुबह की सुफेदी निकलने के साथ ही कोतवाल ने माधवी की सूरत देखी और यह समझ कर कि दीवान साहब को छोड़ महारानी अब मुझसे प्रेम रक्खा चाहती हैं बहुत खुश हुआ। कोतवाल साहब के गुमान में भी न था कि वे ऐयारों के फेर में पड़े हैं। उनको इन्द्रजीतसिंह के कैद होने और वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के यहा पहुंचने की खबर ही न थी। वह तो जिस तरह

हमेशा रिआया लोगों के घर अकेले पहुँच कर तहकीकात किया करते थे उसी तरह आज भी सिर्फ दो अर्दली के सिपाहियों को साथ ले इन दोनों ऐयारों के फेर मे आ घर से निकल पड़े थे।

कोतवाल साहब ने जब माधवी को पहिचाना तो अपने सिपाहियों को उसके सामने ले जाना मुनासिब न समझा और अकेले ही माधवी के पास पहुचे। देखा कि हकीकत में उन्हीं की तस्वीर सामने रक्खे माधवी उदास बैठी है।

कोतवाल साहब को देखते ही माधवी उठ खड़ी हुई और मुहब्बत भरी निगाहों से उनकी तरफ देख कर बोली :—

"देखो मैं तुम्हारे लिये कितनी बेचैन हो रही हूं पर तुम्हें जरा भी खबर नही!"

कोत०। अगर मुझे यकायक इस तरह अपनी किस्मत के जागने की खबर होती तो क्या मैं लापरवाह बैठा रहता ? कभी नहीं, मै तो आप ही दिन रात आपसे मिलने की उम्मीद मे अपना खून सुखा रहा था।

माधवी०। (हाथ का इशारा करके) देखो ये दोनों आदमी बड़े ही बदमाश हैं, इनको यहा से चले जाने के लिए कहो तो फिर हमसे तुमसे बातें होंगी।

इतना सुनते ही भैरोसिंह और तारासिंह वहा से चलते बने, इधर चपला जो माधवी की सूरत बनी हुई थी कोतवाल को बातों मे फसाये हुए वहा से दूर एक गुफा के मुहाने पर ले गई और बैठ कर बातचीत करने लगी।

चपला माधवी की सूरत तो बनी मगर उसकी और माधवी की उम्र में बहुत कुछ फर्क था। कोतवाल भी बड़ा धूर्त और चालाक था। सूर्य की चमक मे जब उसने माधवी की सूरत अच्छी तरह देखी और बातों में भी कुछ फर्क पाया तो फौरन उसे खुटका पैदा हुआ और वह बड़े गौर

से उसे सिर से पैर तक देख अपनी निगाह के तराजू में तौलने और जाँचने लगा। चपला समझ गई कि अब कोतवाल को शक पैदा हो गया। देर करना मुनासिब न जान उसने जफील (सीटी) बजाई। उसी समय गुफा के अन्दर से देवीसिंह निकल आये और कोतवाल साहब से तलवार रख देने के लिए कहा।

कोतवाल ने भी जो सिपाही और शेरदिल आदमी था, बिना लड़े भिड़े अपने को कैदी बना देना पसन्द न किया और म्यान से तलवार निकाल देवीसिंह पर हमला किया। थोड़ी ही देर में देवीसिंह ने उसे अपने खञ्जर से जख्मी किया और जमीन पर पटक उसकी मुश्कें बांध डालीं।

कोतवाल साहब का हुक्म पा भैरोसिंह और तारासिंह जब उनके सामने से चले गये तो वहाँ पहुँचे जहाँ कोतवाल के साथी दोनों सिपाही खड़े अपने मालिक के लौट आने की राह देख रहे थे। इन दोनों ऐयारों ने उन सिपाहियों को अपनी मुश्कें बंधवाने के लिए कहा मगर उन्होंने इन दोनों को साधारण समझ मंजूर न किया और लड़ने भिड़ने को तैयार हो गये। उन दोनों की मौत आ चुकी थी, आखिर भैरोसिंह और तारासिंह के हाथ से मारे गये, मगर उसी समय बारीक आवाज में किसी ने इन दोनों ऐयारों को पुकार कर कहा, "भला भैरोसिंह और तारासिंह, अगर मेरी जिन्दगी है तो बिना इसका बदला लिए न छोड़ूंगी!"

भैरोसिंह ने उस तरफ देखा जिधर से आवाज आई थी। एक लड़का भागता हुआ दिखाई पड़ा। ये दोनों उसके पीछे दौड़े मगर पा न सके क्योंकि उस पहाड़ी की छोटी कन्दराओं और खोहों में न मालूम कहाँ छिप उसने इन दोनों के हाथों से अपने को बचा लिया।

पाठक समझ गए होंगे कि इन दोनों ऐयारों को ऐसे समय पुकार कर चिताने वाली वही तिलोत्तमा है जिसने बात करते करते माधवी से इन दोनों ऐयारों के हाथ कोतवाल के फँस जाने का समाचार कहा था।

अठवाँ बयान

इस जगह हम उस तालाब का हाल खोलते हैं जिसका जिक्र कई दफे ऊपर आ चुका है, जिसमें एक औरत को गिरफ्तार करने के लिए योगिनी और बनचरी कूदी थीं, या जिसके किनारे बैठ हमारे ऐयारों ने माधवी के दीवान कोतवाल और सेनापति को पकड़ने के लिए राय पक्की की थी।

यही तालाब उस रमणीक स्थान में पहुँचने का रास्ता था जिसमें कुँअर इन्द्रजीतसिंह कैद हैं। इसका दूसरा मोहाना वही पानी वाला सुरंग था जिसमें कुँअर इन्द्रजीतसिंह घुसे थे और कुछ दूर जा कर जलामयी देख लौट आये थे या जिसको तिलोत्तमा ने अब पत्थर के ढोकों से बन्द करा दिया है।

जिस पहाड़ी के नीचे यह तालाब था उसी पहाड़ी के दूसरी तरफ वह गुप्त स्थान था जिसमें इन्द्रजीतसिंह कैद थे। इस राह से हर एक का आना जाना मुश्किल था क्योंकि जल के अन्दर अन्दर लगभग दो सौ हाथ के जाना पड़ता था, हाँ ऐयार लोग अलबत्ता जा सकते थे जिनका दम खूब सधा हुआ था और तैरना बखूबी जानते थे। पर इस तालाब की राह से वहाँ तक पहुँचने के लिये कारीगरों ने एक सुबीता भी किया था। उस सुरंग से इस तालाब की जाट (लाट) तक भीतर ही भीतर एक मजबूत जंजीर लगी हुई थी जिसे थाम कर वहाँ तक पहुँचने में बड़ा ही सुबीता होता था।

कोतवाल साहब को गिरफ्तार करने के बाद कई दफे चपला ने चाहा कि इसी तालाब की राह से इन्द्रजीतसिंह के पास पहुँच कर इधर के हाल चाल की खबर करूँ मगर ऐसा न कर सकी क्योंकि तिलोत्तमा ने सुरंग का मुँह बन्द कर दिया था। अब हमारे ऐयारों को निश्चय हो गया कि दुश्मन सम्हल बैठा और उसको हम लोगों की खबर हो गई।

इधर कोतवाल साहब के गिरफ्तार होने से और उनके सिपाहियों की लाश मिलने से शहर में हलचली मच रही थी। दीवान साहब वगैरह इस खोज में परेशान हो रहे थे कि हम लोगों का दुश्मन ऐसा कौन आ पहुँचा जिसने कोतवाल साहब को गायब कर दिया।

कई दिन के बाद एक दिन आधी रात के समय भैरोसिंह तारासिंह पण्डित बद्रीनाथ देवीसिंह और चपला इस तालाब पर बैठे आपुस में सलाह कर रहे थे और सोच रहे थे कि अब कुँअर इन्द्रजीतसिंह के पास किस तरह पहुँचना चाहिये और उनके छुड़ाने की क्या तरकीब करनी चाहिये।

चपला०। अफसोस, मैंने जो ताली तैयार की थी वह अपने साथ लेती आई नहीं तो इन्द्रजीतसिंह कुछ न कुछ उस ताली से जरूर काम निकालते। अब हम लोगों का वहाँ तक पहुँचना बहुत ही मुश्किल हो गया।

बद्री०। इस पहाड़ी के उस पार ही तो इन्द्रजीतसिंह हैं! चाहे यह पहाड़ी कैसी ही बेढब क्यों न हो मगर हमलोग उस पार पहुँचने के लिये चढ़ने उतरने की जगह बना ही सकते हैं।

भैरोसिंह०। मगर यह काम कई दिनों का है।

तारासिंह०। सब से पहिले इस बात की निगरानी करनी चाहिये कि माधवी ने जहाँ इन्द्रजीतसिंह को कैद कर रक्खा है वहाँ कोई ऐसा मर्द न पहुँचने पावे जो उन्हें सता सके, औरतें यदि पाँच सौ भी होंगी तो कुछ न कर सकेंगी।

देवी०। कुँअर इन्द्रजीतसिंह ऐसे बोदे नहीं हैं कि यकायक किसी के फंदे में आ जावें मगर फिर भी हम लोगों को होशियार रहना चाहिए, आज कल में उन तक पहुँचने का मौका न मिलेगा तो हम लोग इस घर को उजाड़ कर डालेंगे और दीवान साहब वगैरह को जहन्नुम में मिला देंगे।

भैरोसिंह० । अगर कुमार को यह मालूम हो गया होगा कि हम लोगों के आने जाने का रास्ता बन्द कर दिया गया तो वे चुप न बैठे रहेंगे कुछ न कुछ फसाद जरूर मचावेंगे ।

तारा० । बेशक ।

इसी तरह की बहुत सी बातें वे लोग कर रहे थे कि तालाब के उस पार जल में उतरता हुआ एक आदमी दिखाई पड़ा । ये लोग टकटकी बांध उसी तरफ देखने लगे । वह आदमी जल में कूदा और जाट के पास पहुंच कर गोता मार गया जिसे देख भैरोसिंह ने कहा, "बेशक यह कोई ऐयार है जो माधवी के पास जाना चाहता है ।"

चपला० । मगर माधवी की तरफ का ऐयार नहीं है, अगर माधवी की तरफ का होता तो रास्ता बन्द होने का हाल इसे जरूर मालूम होता ।

भैरोसिंह० । ठीक है ।

तारासिंह० । अगर माधवी की तरफ का नहीं है तो हमारे कुमार का पक्षपाती होगा ।

देवी० । वह लौटे तो अपने पास बुलाना चाहिये ।

थोड़ी ही देर बाद उस आदमी ने जाट के पास सर निकाला और जाट थाम कर सुस्ताने लगा, कुछ देर बाद किनारे पर चला आया और तालाब के ऊपर वाले चौतरे पर बैठ कुछ सोचने लगा ।

भैरोसिंह अपने ठिकाने से उठे और धीरे धीरे उस आदमी की तरफ चले । जब उसने अपने पास किसी को आते देखा तो उठ खड़ा हुआ, साथ ही भैरोसिंह ने आवाज दी, "डरो मत, जहां तक मैं समझता हूं तुम भी उसी की मदद किया चाहते हो जिसके छुड़ाने की फिक्र में हम लोग हैं ।"

भैरोसिंह के इतना कहते ही उस आदमी ने खुशी भरी आवाज से

कहा, "वाह वाह वाह, आप भी यहां पहुंच गए! सच पूछो तो यह सब फसाद तुम्हारा ही खड़ा किया हुआ है!"

भैरो० । जिस तरह मेरी आवाज तूने पहिचान ली उसी तरह तेरी मुहब्बत ने मुझे भी कह दिया कि तू कमला है!

कमला० । बस बस, रहने दीजिये, आप लोग बड़े मुहब्बती हैं इसे मैं खूब जानती हूं ।

भैरो० । जब जानती ही हो तो ज्यादे क्यों कहूं!

कमला० । कहने का मुंह भी तो हो ।

भैरो० । कमला, मैं तो यही चाहता हूं कि तुम्हारे पास बैठा बातें ही करता रहूँ मगर इस समय मौका नहीं है क्योंकि (हाथ का इशारा करके) पण्डित बद्रीनाथ देवीसिंह तारासिंह और मेरी मा वहां बैठी हुई हैं, तुमको तालाब में जाते और नाकाम लौटते हम लोगों ने देख लिया और इसी से हम लोगों ने मालूम कर लिया कि तुम माधवी की तरफदार नहीं हो अगर होतीं तो सुरंग बन्द किये जाने का हाल तुम्हें जरूर मालूम होता ।

कमला० । क्या तुम्हें सुरंग बन्द करने का हाल मालूम है?

भैरो० । हां हम लोग जानते हैं ।

कमला० । फिर अब क्या करना चाहिये?

भैरो० । तुम वहां चली चलो जहां हम लोगों के संगी साथी हैं, उसी जगह मिल जुल के सलाह करेंगे ।

कमला० । चलो मैं तैयार हूं ।

भैरोसिंह कमला को लिए हुए अपनी मा चपला के पास पहुंचे । और पुकार कर कहा, "मा, यह कमला है, इसका नाम तो तुमने सुना ही होगा।"

"हां हां मैं इसे बखूबी जानती हूं।" यह कह चपला ने उठ क कमला को गले लगा लिया और कहा, "बेटी तू अच्छी तरह तो है

मैं तेरी बड़ाई बहुत दिनों से सुन रही हूँ, भैरो ने तेरी बड़ी तारीफ की थी, मेरे पास बैठ और कह किशोरी कैसी है ?"

कमला० । (बैठ कर) किशोरी का हाल क्या पूछती हो ! वह बेचारी तो माधवी के कैद में पड़ी है, ललिता इन्द्रजीतसिंह के नाम का धोखा दे कर उसे ले आई ।

भैरो० । (चौंक कर) हैं, क्या यहां तक नौबत पहुंच गई !

कमला० । जी हाँ, मैं वहाँ मौजूद न थी नहीं तो ऐसा न होने पाता ।

भैरो० । खुलासा हाल कहो क्या हुआ ।

कमला ने सब हाल किशोरी के धोखा खाने और ललिता के पकड़ लेने का सुना कर कहा, "यह सब बखेड़ा (भैरोसिंह की तरफ इशारा कर के) इन्हीं का मचाया हुआ है, न यह इन्द्रजीतसिंह बन कर शिवदत्तगढ़ जाते न बेचारी किशोरी की यह दशा होती !"

चपला० । हाँ मैं सुन चुकी हूँ । इसी कसूर पर बेचारी को शिवदत्त ने अपने यहाँ से निकाल दिया । खैर तूने यह बड़ा काम किया कि ललिता को पकड़ लिया, अब हम लोग अपना काम सिद्ध कर लेंगे ।

कमला० । आप लोगों ने क्या क्या किया और अब यहाँ क्या करने का इरादा है ?

चपला ने भी अपना और इन्द्रजीतसिंह का सब हाल कह सुनाया । थोड़ी देर तक बातचीत होती रही । सुबह की सुफेदी निकला ही चाहती थी कि ये लोग वहाँ से उठ खड़े हुए और पहाड़ी की तरफ चले ।

नौवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह अब जबर्दस्ती करने पर उतारू हुए और इस ताक में लगे कि माधवी सुरंग का ताला खोल दीवान से मिलने के लिये महल में जाय तो मैं अपना रंग दिखाऊं । तिलोत्तमा के होशियार कर

देने से माधवी भी चेत गई थी और दीवान साहब के पास आना जाना उसने बिल्कुल बन्द कर दिया था, मगर जब से पानी वाली सुरङ्ग बन्द की गई तब से तिलोत्तमा इसी दूसरी सुरङ्ग की राह आने जाने लगी और इस सुरङ्ग की ताली जो माधवी के पास रहती थी अपने पास रखने लगी। पानी वाली सुरङ्ग के बन्द होते ही इन्द्रजीतसिंह जान गये कि अब तो इन औरतों की आमदरफ्त इसी सुरङ्ग से होगी मगर माधवी ही की ताक मे लगे रहने से कई दिनों तक उनका मतलब सिद्ध न हुआ।

अब कुअर इन्द्रजीतसिंह उस दालान में ज्यादे टहलने लगे जिसमे सुरङ्ग के दरवाजे वाली कोठरी थी। एक दिन आधी रात के समय माधवी का पलग खाली देख इन्द्रजीतसिंह ने जाना कि वह बेशक दीवान से मिलने गई है। वह भी पलग पर से उठ खड़े हुए और खूँटी से लट-कती हुई एक तलवार उतारने बाद बलते शमादान को बुझा उसी दालान मे पहुँचे जहाँ इस समय बिल्कुल अन्धेरा था और उसी सुरङ्ग वाले दर्वाजे के बगल में छिप कर बैठ रहे। जब पहर भर रात बाकी रही उस सुरङ्ग का दर्वाजा भीतर से खुला और एक औरत ने इस तरफ निकल कर फिर ताला बन्द करना चाहा मगर इन्द्रजीतसिंह ने फुर्ती से उसकी कलाई पकड़ ताली छीन ली और कोठड़ी के अन्दर जा भीतर से ताला बन्द कर लिया।

वह औरत माधवी थी जिसके हाथ से इन्द्रजीतसिंह ने ताली छीनी थी, वह अन्धेरे मे इन्द्रजीतसिंह को पहिचान न सकी, हाँ उसके चिल्लाने से कुमार जान गए कि यह माधवी है।

इन्द्रजीतसिंह एक दफे उस सुरङ्ग मे जा ही चुके थे, उसके रास्ते और कोठरियों को वह बखूबी जानते थे, इसलिये अन्धेरे में उनको बहुत तकलीफ न हुई और वह अन्दाज मे टटोलते हुए तहखाने की सीढ़ियाँ उतर गये। नीचे पहुँच के जब उन्होंने दूसरा दर्वाजा खोला तो उस

सुरंग के अन्दर कुछ दूर पर रोशनी मालूम हुई जिसे देख उन्हें ताज्जुब हुआ और बहुत धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे, जब उस रोशनी के पास पहुंचे एक औरत पर नजर पड़ी जो हथकड़ी और बेड़ी के सबब उठने बैठने से बिल्कुल लाचार थी। चिराग की रोशनी में इन्द्रजीतसिंह ने उस औरत को और उसने इनको अच्छी तरह देखा और दोनों ही चौंक पड़े।

ऊपर जिक्र आ जाने से पाठक समझ ही गए होंगे कि यह किशोरी है जो तकलीफ के सबब बहुत ही कमजोर और सुस्त हो रही थी। इन्द्रजीतसिंह के दिल में उसकी तस्वीर मौजूद थी और इन्द्रजीतसिंह उसकी आँखों में पुतली की तरह डेरा जमाये हुए थे। एक ने दूसरे को बखूबी पहिचान लिया और ताज्जुब मिली हुई खुशी के सबब देर तक एक दूसरे की सूरत देखते रहे, इसके बाद इन्द्रजीतसिंह ने उसकी हथकड़ी और बेड़ी खोल डाली और बड़े प्रेम से हाथ पकड़ कर कहा, "किशोरी, तू यहां कैसे आई!"

किशोरी०। (इन्द्रजीतसिंह के पैरों पर गिर कर) अभी तक तो मैं यही सोचती थी कि मेरी बदकिस्मती मुझे यहां ले आई मगर नहीं अब मुझे कहना पड़ा कि मेरी खुशकिस्मती ने मुझे यहां पहुंचाया और ललिता ने मेरे साथ बड़ी नेकी की जो मुझे कैद कर लाई, नहीं तो न मालूम कब तक तुम्हारी सूरत......

इससे ज्यादा बेचारी किशोरी कुछ कह न सकी और जोर जोर से रोने लगी। इन्द्रजीतसिंह भी बराबर रो रहे थे। आखिर उन्होंने किशोरी को उठाया और दोनों हाथों से उसकी कलाई पकड़े हुए बोले :—

"हाय, मुझे कब उम्मीद थी कि मैं तुम्हें यहां देखूंगा। मेरी जिन्दगी में आज की खुशी याद रखने लायक होगी। अफसोस, दुश्मन ने तुम्हें बड़ा ही कष्ट दिया!"

किशोरी०। बस अब मुझे किसी तरह की आरजू नहीं है। मैं ईश्वर

से यही मागती थी कि एक दिन तुम्हें अपने पास देख लूं, सो मुराद आज पूरी हो गई, अब चाहे माघवी मुझे मार भी डाले तो मैं खुशी से मरने को तैयार हूँ।

इन्द्र०। जब तक मेरे दम में दम है किसकी मजाल है जो तुम्हें दुःख दे, अब तो किसी तरह इस सुरंग की ताली मेरे हाथ लग गई जिससे हम दोनों को निश्चय समझना चाहिये कि इस कैद से छुट्टी मिल गई। अगर जिन्दगी है तो मैं माधवी से समझ लूंगा, वह जाती कहाँ है।

इन दोनों को यकायक इस तरह के मिलाप से कितनी खुशी हुई यह वे ही जानते होंगे। दीन दुनिया की सुध भूल गये। यह याद ही नहीं रहा कि हम कहा जाने वाले थे, कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं और क्या करना चाहिये, मगर यह खुशी बहुत ही थोडी देर के लिये थी, क्योंकि इसी समय हाथ में मोमबत्ती लिए एक औरत उसी तरफ से आती हुई दिखाई दी जिधर इन्द्रजीतसिंह जाने वाले थे और जिसको देख ये दोनों ही चौंक पड़े।

वह औरत इन्द्रजीतसिंह के पास पहुंची और बदन का दाग दिखला बहुत जल्द जाहिर कर दिया कि वह चपला है।

चपला०। इन्द्रजीत! हैं तुम यहा कैसे आये!! (चारो तरफ देख कर) मालूम होता है बेचारी किशोरी को तुमने इसी जगह पाया है।

इन्द्र०। हा यह इसी जगह कैद थी मगर मै नहीं जानता था। मै तो माधवी के हाथ से जबर्दस्ती ताली छीन इस सुरंग में चला आया और उसे चिल्लाती ही छोड़ आया।

चपला०। माधवी तो अभी इस सुरंग की राह वहा गई थी।

इन्द्र०। हा, और मै दर्वाजे के पास छिपा खड़ा था। जैसे ही वह ताला खोल अन्दर पहुंची वैसे ही मैने पकड़ लिया और ताली छीन इधर आ भीतर से ताला बन्द कर दिया।

चपला० । जो हो, अब क्या कर ही सकते हैं !

कमला० । खैर जो होगा देखा जायगा, जल्दी नीचे उतरो ।

इस खुशनुमा और आलीशान मकान के चारो तरफ बाग था जिसके चारो तरफ ऊँची ऊँची चहारदीवारियां बनी हुई थीं । बाग के पूरब तरफ बहुत बड़ा फाटक था जहां बारी बारी से बीस आदमी हाथ में नंगी तलवारें लिए घूम घूम कर पहरा देते थे । चपला और कमला कमन्द के सहारे बाग की पिछली दीवार लांघ कर यहां पहुँची थीं और इस समय भी ये चारो उसी तरफ से निकल जाया चाहते थे ।

हम यह कहना भूल गए थे कि बाग के चारो कोनों में चार गुमटियां बनी हुई थीं जिसमें सौ सिपाहियों का डेरा था और आज कल तिलोत्तमा के हुक्म से वे सभी हरदम तैयार रहते थे । तिलोत्तमा ने उन लोगों को यह भी कह रक्खा था कि जिस समय मैं अपने बनाये हुए बम के गोले को जमीन पर पटकूं और उसकी भारी आवाज तुम लोग सुनो, फौरन हाथ में नङ्गी तलवारें लिये बाग के चारो तरफ फैल जाओ और जिस आदमी को आते जाते देखो तुरत गिरफ्तार कर लो ।

चारो आदमी सुरंग का दर्वाजा खुला छोड़ नीचे उतरे और कमरे के बाहर हो बाग की पिछली दिवार की तरफ जैसे ही चले कि तिलोत्तमा पर नजर पड़ी । चपला यह खयाल करके कि अब बहुत ही बुरा हुआ तिलोत्तमा की तरफ लपकी और उसे पकड़ना चाहा मगर वह शैतान लोमड़ी की तरह चक्कर मार निकल ही गई और एक किनारे पहुँच मसाले से भरा हुआ एक गेंद जमीन पर पटका जिसकी भारी आवाज चारो तरफ गूँज गई और उसके कहे मुताबिक सिपाहियों ने होशियार हो कर चारो तरफ से बाग को घेर लिया ।

तिलोत्तमा के भाग कर निकल जाते ही ये चारो आदमी जिनके आगे आगे हाथ में नंगी तलवार लिए इन्द्रजीतसिंह थे बाग की पिछली दीवार की तरफ न जा कर सदर फाटक की तरफ लपके मगर वहां

पहुँचते ही पहरे वाले सिपाहियों से रोके गये और मार काट शुरू हो गई। इन्द्रजीतसिंह ने तलवार तथा चपला और कमला ने खञ्जर चलाने मे अच्छी बहादुरी दिखाई।

हमारे ऐयार लोग भी जो बाग के बाहर चारो तरफ छुके छिपे खड़े थे, तिलोत्तमा के चलाए हुए गोले की आवाज सुन और किसी भारी फसाद का होना खयाल कर फाटक पर आ जुटे और खञ्जर निकाल माधवी के सिपाहियों पर टूट पड़े। बात की बात मे माधवी के बहुत से सिपाहियों की लाशें जमीन पर दिखाई देने लगीं और बहुत बहादुरी के साथ लड़ते भिड़ते हमारे बहादुर लोग किशोरी को साथ लिये निकल ही गए।

ऐयार लोग तो दौड़ने और भागने में तेज होते ही हैं, इन लोगों का भाग जाना कोई आश्चर्य न था, मगर गोद मे किशोरी को उठाये इन्द्रजीतसिंह उन लोगो के बराबर कब दौड़ सकते थे और ऐयार लोग भी ऐसी अवस्था मे उनका साथ कैसे छोड़ सकते थे! लाचार जैसे बना उन दोनों को भी साथ लिए हुए मैदान का रास्ता लिया। इस समय पूरब की तरफ सूर्य की लालिमा अच्छी तरह फैल चुकी थी।

माधवी के दीवान अग्निदत्त का मकान इस बाग से बहुत दूर न था और वह बड़े सवेरे उठा करता था। तिलोत्तमा के चलाए हुए गोले की आवाज उसके कान में पहुच ही चुकी थी, बाग के दर्वाजे पर लड़ाई होने की खबर भी उसे उसी समय मिल गई। वह शैतान का बच्चा बहुत ही दिलेर और लड़ाका था, फौरन ढाल तलवार ले मकान के नीचे उतर आया और अपने यहा रहने वाले कई सिपाहियों को साथ ले बाग के दर्वाजे पर पहुचा। देखा कि बहुत से सिपाहियों की लाशें जमीन पर पड़ी हुई हैं और दुश्मन का पता नहीं है।

बाग के चारो तरफ फैले हुए सिपाही भी फाटक पर आ जुटे थे जो गिनती में एक सौ से ज्यादे थे।

साथ ले इन्द्रजीतसिंह का पीछा किया। थोड़ी ही दूर पर उन लोगों को पा लिया और चारो तरफ से घेर मारकाट शुरू कर दी।

अग्निदत्त की निगाह किशोरी पर जा पड़ी। अब क्या पूछना था? सब तरफ का खयाल छोड़ इन्द्रजीतसिंह के ऊपर टूट पड़ा। बहुत से आदमियों से लड़ते हुए इन्द्रजीतसिंह किशोरी को सम्हाल न सके और उसे छोड़ तलवार चलाने लगे। अग्निदत्त को मौका मिला, इन्द्रजीतसिंह के हाथ से जख्मी होने पर भी उसने दम न लिया और किशोरी को गोद में उठा ले भागा। यह देख इन्द्रजीतसिंह की आँखों से खून उतर आया। इतनी भीड़ को काट कर उसका पीछा तो न कर सके मगर अपने ऐयारों को ललकार कर इस तरह की लड़ाई की कि उन सौ में से आधे तो बेदम होकर जमीन पर गिर पड़े और बाकी अपने सर्दार को चले गये देख जान बचा भाग गये। इन्द्रजीतसिंह भी बहुत से जख्मों के लगने से बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। चपला और भैरोसिंह वगैरह बहुत ही बेदम हो रहे थे तो भी वे लोग बेहोश इन्द्रजीतसिंह को उठा वहाँ से निकल गये और फिर किसी की निगाह पर न चढ़े।

दसवाँ बयान

जख्मी इन्द्रजीतसिंह को लिए हुए उनके ऐयार लोग वहां से दूर निकल गए और बेचारी किशोरी को दुष्ट अग्निदत्त उठा कर अपने घर ले गया। यह सब हाल देख तिलोत्तमा वहां से चलती बनी और बाग के अन्दर कमरे में पहुँची। देखा कि सुरंग का दरवाजा खुला हुआ है और ताला भी उसी जगह जमीन पर पड़ा है। उसने ताली उठा ली और सुरंग के अन्दर जा किवाड़ बन्द करती हुई माधवी के पास पहुँची। माधवी की अवस्था इस समय बहुत ही खराब हो रही थी। दीवान साहब पर बिल्कुल भेद खुल गया होगा यह समझ मारे डर के वह

घबड़ा गई थी और उसे निश्चय हो गया था कि अब किसी तरह कुशल नहीं है क्योंकि बहुत दिनों की लापरवाही में दीवान साहब ने तमाम रियाया और फौज को अपने कब्जे में कर लिया था। तिलोत्तमा ने वहां पहुँचते ही माधवी से कहा :—

तिलो०। अब क्या सोच रही है और क्यों रोती है। मैंने पहिले ही कहा था कि इन बखेड़ों में मत फँस, इनका नतीजा अच्छा न होगा, वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग बला की तरह जिसके पीछे पड़ते हैं उसका सत्यानाश कर डालते हैं, पर तूने मेरी बात न मानी—अब यह दिन देखने की नौबत पहुँची।

माधवी०। वीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार यहां नहीं आया, इन्द्रजीत जबर्दस्ती मेरे हाथ से ताली छीन कर चला गया, मैं कुछ न कर सकी।

तिलो०। आखिर तू उनका कर ही क्या सकती थी?

माधवी०। अब उन लोगों का क्या हाल है?

तिलोत्तमा०। वे लोग लड़ते भिड़ते तुम्हारे सैकड़ों आदमियों को यमलोक पहुँचाते निकल गये। किशोरी को आपके दीवान साहब उठा ले गए। जब उनके हाथ किशोरी लग गई तब उन्हें लड़ने भिड़ने की जरूरत ही क्या थी? किशोरी की सूरत देख कर तो आस्मान पर की उड़ती चिड़ियायें भी नीचे उतर आती हैं फिर दीवान साहब क्या चीज हैं? अब तो वह दुष्ट इस धुन में होगा कि तुम्हें मार पूरी तरह से राजा बन जाय और किशोरी को रानी बनावे, तुम उसका कर ही क्या सकती हो।

माधवी०। हाय, मेरे बुरे कर्मों ने मुझे मिट्टी में मिला दिया। अब मेरी क़िस्मत में राज्य नहीं है, अब तो मालूम होता है कि मैं भिखमंगनियों की तरह मारी फिरूँगी!

तिलो०। हां अगर किसी तरह यहां से जान बचा कर निकल जाओगी तो भीख मांग कर भी जान बचा लोगी नहीं तो बस यह भी उम्मीद नहीं है।

माधवी० । क्या दीवान साहब मुझसे इस तरह की बेमुरौवती करेंगे ?

तिलो० । अगर तुझे उन पर भरोसा है तो रह और देख कि क्या क्या होता है, पर मैं तो अब एक मिनट भी टिकने वाली नहीं।

माधवी० । अगर किशोरी उसके हाथ न पड़ गई होती तो मुझे किसी तरह की उम्मीद होती और कोई बहाना भी कर सकती, मगर अब तो......

इतना कह माधवी बेतरह रोने लगी, यहाँ तक कि हिचकी बँध गई और तिलोत्तमा के पैर पर गिर कर बोली :—

"तिलोत्तमा, मैं कसम खाती हूँ कि आज से तेरे हुक्म के खिलाफ कभी कोई काम न करूँगी।"

तिलो० । अगर ऐसा है तो मैं भी कसम खाकर कहती हूँ कि तुझे फिर इसी दर्जे पर पहुँचाऊँगी और बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों और दीवान साहब से भी ऐसा बदला लूँगी कि वे भी याद करेंगे।

माधवी० । बेशक मैं तेरा हुक्म मानूँगी और जो कहेगी सो करूँगी।

तिलो० । अच्छा तो आज रात को यहाँ से निकल चलना चाहिये और जहाँ तक जमा पूँजी अपने साथ ले चलते बने ले लेना चाहिये।

माधवी० । बहुत अच्छा मैं तैयार हूँ जब चाहे चलो, मगर यह तो कहो कि मेरी इन सखी सहेलियों की क्या दशा होगी ?

तिलो० । बुरों का संग करने से जो फल सब भोगते हैं सो ये भी भोगेंगी। मैं इनका कहाँ तक ख्याल करूँगी ? जब अपने पर आ बनती तो कोई किसी की खबर नहीं लेता।

दीवान अग्निदत्त किशोरी को लेकर भागे तो सीधे अपने घर में आ छुपे। वे किशोरी की सूरत पर ऐसे मोहित हुए कि तनोबदन की सुध जाती रही। सिपाहियों ने इन्द्रजीतसिंह और उनके ऐयारों को गिरफ्तार किया या नहीं अथवा उनकी बदौलत सभों की क्या दशा हुई इसको

परवाह उन्हें जरा भी न रही, असल तो यह है कि इन्द्रजीतसिंह को वे पहिचानते भी न थे।

बेचारी किशोरी की क्या दशा थी और वह किस तरह रो रो कर अपने सिर के बाल नोच रही थी इसके बारे में इतना ही कहना बहुत है कि अगर दो दिन तक उसकी यही दशा रही तो किसी तरह जीती न बचेगी और 'हा इन्द्रजीतसिंह, हा इन्द्रजीतसिंह!' कहते कहते प्राण छोड़ देगी।

दीवान साहब के घर में उनकी जोरू और किशोरी ही के बराबर की एक कुँआरी लड़की थी जिसका नाम कामिनी था और वह जितनी खूबसूरत थी उतनी ही स्वभाव की भी अच्छी थी। दीवान साहब की स्त्री का भी स्वभाव और चालचलन अच्छा था मगर वह बेचारी अपने पति के दुष्ट स्वभाव और बुरे व्यवहारों से बराबर दुःखी रहा करती थी और डर के मारे कभी किसी बात मे कुछ रोक टोक न करती, तिस पर भी आठ दस दिन पीछे वह अग्निदत्त के हाथ से जरूर मार खाया करती।

बेचारी किशोरी को अपनी जोरू और लड़की के हवाले कर हिफाजत करने के अतिरिक्त समझाने बुझाने को भी ताकीद कर दीवान साहब बाहर चले आये और अपने दीवानखाने में बैठ सोचने लगे कि किशोरी को किस तरह राजी करना चाहिये, यह औरत कौन और किसकी लड़की है, जिन लोगों के साथ यह थी वे लोग कौन हैं, और यहां आकर धूम फसाद मचाने की उन्हें क्या जरूरत थी? चाल ढाल और पोशाक से तो वे लोग ऐयार मालूम पड़ते थे मगर यहां उन लोगों के आने का क्या सबब था? इसी सब सोच विचार में अग्निदत्त को आज स्नान तक करने की नौबत न आई, दिन भर इधर उधर घूमते तथा लाशों को टिकाने पहुँचवाते और तहकीकात करते बीत गया मगर किसी तरह इस बखेड़े का ठीक पता न लगा, हा महल के पहरेवालों ने इतना कहा कि 'दो तीन दिन से तिलोत्तमा हम लोगों पर सख्त ताकीद रखती थी और

हुक्म दे गई थी कि जब मेरे चलाये बम के गोले की आवाज तुम लोग सुनो तो फौरन मुस्तैद हो जाओ और जिसको आते जाते देखो गिरफ्तार कर लो।'

अब दीवान साहब का शक माधवी और तिलोत्तमा के ऊपर हुआ और देर तक सोचने विचारने के बाद उन्होंने निश्चय कर लिया कि इस बखेड़े का हाल बेशक ये दोनों पहिले ही से जानती थीं मगर यह भेद मुझसे छिपाये रखने का कोई विशेष कारण अवश्य है।

चिराग जलने के बाद अग्निदत्त अपने घर पहुंचा। किशोरी के पास न जाकर निराले में अपनी स्त्री को बुला कर उसने पूछा, "उस औरत की जुबानी उसका कुछ हालचाल तुम्हें मालूम हुआ या नहीं?"

अग्निदत्त की स्त्री ने कहा, "हाँ, उसका हाल मालूम हो गया, यह महाराज शिवदत्त की लड़की है और उसका नाम किशोरी है। राजा वीरेन्द्रसिंह के लड़के इन्द्रजीतसिंह पर रानी माधवी मोहित हो गई थी और उनको अपने यहां किसी तरह से फँसा ला कर खोह में रख छोड़ा था। इन्द्रजीतसिंह का प्रेम किशोरी पर था इसलिए उसने ललिता को भेज कर धोखा दे किशोरी को भी अपने फन्दे में फंसा लिया था। वह भी कई दिनों से यहां कैद थी और वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग भी कई दिनों से इसी शहर में टिके हुए थे। किसी तरह मौका मिलने पर इन्द्रजीतसिंह किशोरी को ले खोह से बाहर निकल आये और यहाँ तक नौबत पहुंची।"

राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयारों का नाम सुन मारे डर के अग्निदत्त कांप उठा, बदन के रोंगटे खड़े हो गए, घबड़ाया हुआ बाहर निकल आया और अपने दीवानखाने में पहुच मसनद के ऊपर गिर भूखा प्यासा आधी रात तक यही सोचता रह गया कि अब क्या करना चाहिये?

अग्निदत्त समझ गया कि कोतवाल साहब को जरूर वीरेन्द्रसिंह

के ऐयारों ने पकड़ लिया है और अब किशोरी को अपने यहां रखने से किसी तरह जान न बचेगी, तिस पर भी वह किशोरी को छोड़ना नहीं चाहता था और सोचते विचारते जब उसका जी ठिकाने आता तब यही कहता कि 'चाहे जो हो किशोरी को तो कभी न छोड़ूँगा !'

किशोरी को अपने यहां रख कर सलामत रहने की सिवाय इसके उसे कोई तर्कीब न सूझी कि वह माधवी को मार डाले और स्वयं राजा बन बैठे। आखिर इसी सलाह को उसने ठीक समझा और अपने घर से निकल माधवी से मिलने के लिए महल की तरफ रवाना हुआ, मगर वहां पहुंच कर बिल्कुल बातें मामूल के खिलाफ देख और भी ताज्जुब में हो गया। उसे उम्मीद थी कि खोह का दर्वाजा बन्द होगा मगर नहीं, खोह का दर्वाजा खुला हुआ था और माधवी की कुल सखियां जो खोह के अन्दर रहती थीं, महल में ऊपर नीचे चारो तरफ फैली हुई थीं जो रोती और इधर उधर माधवी को खोज रही थीं।

रात आधी से ज्यादे तो जा ही चुकी थी, बाकी की रात भी दीवान साहब ने माधवी की सखियों के इजहार लेने में बिता दी और दिन रात का पूरा अखण्ड व्रत किए रहे। देखना चाहिए इसका फल उन्हें कब मिलता है।

शुरू से लेकर माधवी के भाग जाने तक का हाल उसकी सखियों ने दीवान साहब से कह सुनाया। आखिर में कहा, "सुरंग की ताली माधवी अपने पास रखती थी इस लिए हम लोग लाचार थीं, यह सब हाल आपसे कह न सकीं।"

अग्निदत्त दांत पीस कर रह गया, आखिर यही निश्चय किया कि कल दशहरा (विजयादशमी) है, गद्दी पर खुद बैठ राजा बन और किशोरी को रानी बना नजरें लूँगा, फिर जो होगा देखा जायगा। सुबह को जब वह अपने घर पहुँचा और पलँग पर जाकर लेटना चाहा तो वैसे ही तकिये के पास एक तह किये हुए कागज पर उसकी नजर पड़ी। खोल कर देखा तो उसी की तस्वीर मालूम पड़ी, छाती पर चढ़ा हुआ एक

भयानक सूरत का आदमी उसके गले पर खञ्जर फेर रहा था। इसे देखते ही वह चौंक पड़ा। डर और चिन्ता ने उसे ऐसा पटका कि बुखार चढ़ आया, मगर थोड़ी ही देर में चंगा हो घर के बाहर निकल फिर तहकीकात करने लगा।

ग्यारहवाँ बयान

हम ऊपर के बयान में सुबह की सीनरी लिख कर कह आये हैं कि राजा वीरेन्द्रसिंह कुँअर आनन्दसिंह और तेजसिंह सेना सहित किसी तरफ को जा रहे हैं। पाठक तो समझ ही गये होंगे कि इन्होंने जरूर किसी तरफ चढ़ाई की है और बेशक ऐसा ही है भी। राजा वीरेन्द्रसिंह ने यकायक माधवी की राजधानी गयाजी पर धावा कर दिया है जिसका लेना इस समय उन्होंने बहुत ही सहज समझ रक्खा था, क्योंकि माधवी के चाल चलन की खबर उन्हें बखूबी लग गई थी। वे जानते थे कि राज काज पर ध्यान न दे दिन रात ऐश में डूबे रहने वाले राजा का राज्य कितना कमजोर हो जाता है, रैयत को ऐसे राजा से कितनी नफरत हो जाती है, और दूसरे नेक और धर्मात्मा राजा के आ पहुँचने के लिए वे लोग कितनी मन्नतें मानते रहते हैं।

वीरेन्द्रसिंह का ख्याल बहुत ही ठीक था। गया दखल करने में उनको जरा भी तकलीफ न हुई, किसी ने उनका मुकाबला न किया। एक तो उनका बढ़ा चढ़ा प्रताप ही ऐसा था कि कोई मुकाबला करने का साहस भी नहीं कर सकता था, दूसरे बेदिल रिआया और फौज तो चाहती ही थी कि वीरेन्द्रसिंह से ऐसा कोई यहाँ का भी राजा हो। चाहे दिन रात ऐश में डूबे और शराब के नशे में चूर रहने वाले मान्त्रियों को कुछ भी खबर न हो मगर बड़े बड़े जमींदारों और राजकर्मचारियों को माधवी और कुँअर इन्द्रजीतसिंह के खिचाखिची की खबर लग

चुकी थी और उन्हें मालूम हो चुका था कि आजकल बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग राजगृही में विराज रहे हैं।

राजा बीरेन्द्रसिंह ने बेरोक टोक शहर में पहुँच कर अपना दखल जमा लिया और अपने नाम की मुनादी करवा दी। वहां के दो एक राजकर्मचारी जो दीवान अग्निदत्त के दोस्त और खैरख्वाह थे रंग कुरंग देख कर भाग गये, बाकी फौज अफसरों और रैयतों ने उनकी अमलदारी खुशी खुशी कबूल कर ली जिसका हाल राजा बीरेन्द्रसिंह को इसी से मालूम हो गया कि उन लोगों ने दर्बार में बेखौफ और हँसते हुए पहुँच कर मुबारकबादी के साथ नजरें गुजारीं।

विजयादशमी के एक दिन पहले गया का राज्य राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे में आया और विजयादशमी को अर्थात् दूसरे दिन प्रातःकाल उनके लड़के आनन्दसिंह को यहाँ की गद्दी पर बैठे हुए लोगों ने देखा तथा नजरें दीं। अपने छोटे लड़के कुँअर आनन्दसिंह को गया की गद्दी दे दूसरे ही दिन राजा बीरेन्द्रसिंह चुनार लौट जाने वाले थे, मगर उनके रवाना होने के पहिले ही ऐयार लोग जख्मी और बेहोश कुँअर इन्द्रजीतसिंह को लिए हुए गयाजी पहुँच गये जिन्हें देख राजा बीरेन्द्रसिंह को अपना इरादा तोड़ देना पड़ा और बहुत दिनों से बिछुड़े हुए प्यारे लड़के को आज इस अवस्था में पाकर अपने तनोबदन की सुध भुला देनी पड़ी।

राजा बीरेन्द्रसिंह के मौजूद होने पर भी गयाजी का बड़ा भारी राजभवन सूना हो रहा था क्योंकि उसमें रहने वाली रानी माधवी और दीवान अग्निदत्त के रिश्तेदार लोग भाग गये थे और हुक्म के मुताबिक किसी ने भी उनको भागते समय नहीं रोका था। इस समय राजा बीरेन्द्रसिंह उनके दोनों लड़के और ऐयारों के सिवाय सिर्फ थोड़े से फौजी अफसरों का डेरा इस महल में पड़ा हुआ है। ऐयारों में सिर्फ भैरोसिंह और तारासिंह यहां मौजूद हैं बाकी के कुल ऐयार चुनार लौटा

दिये गये थे। शहर के इन्तजाम में सब के पहिले यह किया गया था कि चीठी या अरजी डालने के लिये एक बगल छेद करके दो बड़े बड़े सन्दूक राजभवन के फाटक के दोनों तरफ लटका दिये गये और मुनादी करवा दी गई कि जिसको अपना सुख दुःख अर्ज करना हो दर्बार में हाजिर होकर अर्ज किया करे और जो किसी कारण से हाजिर न हो सके वह अरजी लिख कर इन्हीं सन्दूकों में डाल दिया करे। हुक्म था कि बारी बारी से ये सन्दूक दिन रात में छः मर्तबे कुँअर आनन्दसिंह के सामने खोले जाया करें। इस इन्तजाम से गयाजी की रियाया बहुत प्रसन्न थी।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। एक सजे हुए कमरे में जिसमें रोशनी अच्छी तरह हो रही है, छोटी सी खूबसूरत मसहरी पर जख्मी कुँअर इन्द्रजीतसिंह लेटे हुए हलकी दुलाई गर्दन तक ओढ़े हैं। आज कई दिनों पर इन्हें होश आई है इससे अचम्भे में आकर इस नये कमरे के चारो तरफ निगाह दौड़ा कर अच्छी तरह देख रहे हैं। बगल में बायें हाथ का ढासना पलङ्गड़ी पर दिये हुए उनके पिता राजा बीरेन्द्रसिंह बैठे उनका मुँह देख रहे हैं, और कुछ पायताने की तरफ हट कर पाटी पकड़े कुँअर आनन्दसिंह बैठे बड़े भाई की तरफ देख रहे हैं। पायताने की तरफ पलङ्गड़ी के नीचे बैठे भैरोसिंह और तारासिंह धीरे धीरे तलवा मल रहे हैं। कुँअर आनन्दसिंह के बगल में देवीसिंह बैठे हैं। इनके अलावे वैद्य जर्राह और बहुत से मुसाहब वगैरह चारो तरफ बैठे हैं। कमरे के बाहर बहुत से सिपाही नंगी तलवार लिए पहरा दे रहे हैं।

थोड़ी देर तक कमरे में सन्नाटा रहा, इसके बाद कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अपने पिता की तरफ देख कर पूछा :—

इन्द्र०। यह कौन सी जगह है? यह मकान किसका है?

बीरेन्द्र०। यह चन्द्रदत्त की राजधानी गयाजी है। ईश्वर की कृपा से आज यह हमारे कब्जे में आ गई है। यह मकान भी चन्द्रदत्त ही के

रहने का है। हम लोग इस शहर मे अपना दखल जमा चुके थे जब तुम यहाँ पहुँचाये गये।

यह सुन इन्द्रजीतसिंह चुप हो रहे और कुछ सोचने लगे, साथ ही इसके राजगृह में दीवान अग्निदत्त के साथ होने वाली लड़ाई का समा उनकी आँखों के आगे घूम गया और वे किशोरी को याद कर अफसोस करने लगे। इनके बेहोश होने के बाद क्या हुआ और किशोरी पर क्या बीती, इसके जानने के लिए जी बेचैन था मगर पिता का लेहाज कर भैरोसिंह से कुछ पूछ न सके सिर्फ ऊँची सास लेकर रह गए, मगर देवीसिंह उनके जी का भाव समझ गए और बिना पूछे ही कुछ कहने का मौका समझ कर बोले, "राजगृही में लड़ाई के समय जितने आदमी आपके साथ थे ईश्वर की कृपा से सभी बच गए और अपने अपने ठिकाने पर हैं, केवल आपही को इतना कष्ट भोगना पड़ा।"

देवीसिंह के इतना कहने से इन्द्रजीतसिंह की बेचैनी बिलकुल ही जाती तो नहीं रही मगर कुछ कम जरूर हो गई। इतने में दिल बहलाने का ठिकाना समझ कर देवीसिंह पुनः बोल उठे :—

देवी०। अर्जियों वाला सदूक हाजिर है, उसके देखने का समय भी हो गया है।

इन्द्र०। कैसा सन्दूक?

आनन्द०। यहां महल के फाटक पर दो सन्दूक इसलिये रख दिये गये हैं कि जो लोग दर्बार में हाजिर होकर अपना दुःख सुख न कह सकें वे लोग अरजी लिख कर इन सन्दूकों में डाल दिया करें।

इन्द्र०। बहुत मुनासिब, इससे रैयतों के दिल का हाल अच्छी तरह मालूम हो सकता है। इस तरह के कई सन्दूक शहर में इधर उधर भी रखवा देना चाहिए क्योंकि बहुत से आदमी खौफ से फाटक तक आते भी हिचकेंगे।

आनन्द०। बहुत खूब, कल इसका भी इन्तजाम हो जायगा।

वीरेन्द्र० । हमने यहा की गद्दी पर आनन्दसिंह को बैठा दिया है।

इन्द्र० । बड़ी खुशी की बात है, यहा का इन्तजाम ये बहुत अच्छी तरह कर सकेंगे क्योंकि यह तीर्थ का मुकाम है और इनको पुराणों से बड़ा प्रेम है और उन्हें अच्छी तरह समझते भी हैं। (देवीसिंह की तरफ देख कर) हाँ साहब यह संदूक मगवाइये जरा दिल ही बहले।

हाथ भर का चौखूटा संदूक हाजिर किया गया और उसे खोल कर बिल्कुल अर्जिया जिनसे वह सन्दूक भर रहा था बाहर निकाली गईं। पढ़ने से मालूम हुआ कि यहा की रिआया नये राजा की अमलदारी से बहुत प्रसन्न है और मुबारकबाद दे रही है, हा एक अर्जी उसमे ऐसी भी निकली जिसके पढ़ने से सभों को तरद्दुद ने आ घेरा और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। पाठकों की दिलचस्पी के लिए हम उस अर्जी की नकल नीचे लिख देते हैं —

"हम लोग मुद्दत से मनाते थे कि यहां की गद्दी पर हुजूर को या हुजूर के खानदान मे से किसी को बैठे देखें। ईश्वर ने आज हम लोगों की आरजू पूरी की और कमबख्त माधवी और अग्निदत्त का बुरा साया हम लोगों के सर से हटाया। चाहे उन दोनों दुष्टों का खौफ अभी हम लोगों को बना हो मगर फिर भी हुजूर के भरोसे पर हम लोग बिना मुबारकबाद दिए और खुशी मनाये नहीं रह सकते। वह डर इस बात का नहीं है कि यहाँ फिर उन दुष्टों की अमलदारी होगी तो कष्ट भोगना पड़ेगा। राम राम, ऐसा तो कभी हो ही नहीं सकता। हम लोगों को यह गुमान तो स्वप्न मे भी नहीं हो सकता, वह डर बिल्कुल दूसरा ही है जो हम लोग नीचे अर्ज करते हैं। आशा है कि बहुत जल्द उससे हम लोगों की रिहाई होगी, नहीं तो महीने भर मे यहा की चौथाई रिआया यमलोक मे पहुँच जायगी। मगर नहीं, हुजूर के नामी और अपनी आप नजीर रखने वाले ऐयारों के हाथ से वे बेईमान हरामजादे कब बच सकते हैं जिनके डर से हम लोगों को पूरी नींद सोना कभी नसीब नहीं होता।

"कुछ दिन से दीवान अग्निदत्त की तरफ से थोड़े बदमाश इस काम के लिए मुकर्रर कर दिये गए हैं कि अगर कोई आदमी अग्निदत्त के खिलाफ नजर आवे तो बेधड़क उसका सर चोरी से रात के समय काट डालें, या दीवान साहब को जब रुपये की जरूरत हो तो किस अमीर या जमीदार के घर में चाहे डाका डाल दें या चोरी करके उसे कङ्गाल बना दें। इसकी फरियाद कहीं सुनी नहीं जाती इस वजह से और बाहरी चोरों को भी अपना घर भरने और हम लोगों को सताने का मौका मिलता है। हम लोगों ने अभी उन दुष्टों की सूरत नहीं देखी और नहीं जानते कि वे लोग कौन हैं या कहाँ रहते हैं जिनके खौफ से दिन रात हम लोग काँपा करते हैं।"

इस अरजी के नीचे कई मशहूर और नामी रईसों और जमीदारों के दस्तखत थे। यह अरजी उसी समय देवीसिंह के हवाले कर दी गई और देवीसिंह ने वादा किया कि एक महीने के अन्दर इन दुष्टों को जिन्दा या मरे हुजूर में हाजिर करेंगे।

इसके बाद जर्राहों ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह के जख्मों को खोला और दूसरी पट्टी बदली, कविराज ने दवा खिलाई, और हुक्म पाकर सब अपने अपने ठिकाने चले गए। देवीसिंह भी उसी समय बिदा हो न मालूम कहाँ चले गए और राजा वीरेन्द्रसिंह भी वहां से हट कर अपने कमरे में चले गए।

इस कमरे के दोनों तरफ छोटी छोटी दो कोठड़िया थीं। एक में सन्ध्या पूजा का सामान दुरुस्त था और दूसरी में खाली फर्श पर एक मसहरी बिछी हुई थी जो उस मसहरी से कुछ छोटी थी जिस पर कुँअर इन्द्रजीतसिंह आराम कर रहे थे। कोठड़ी में से वह मसहरी बाहर निकाली गई और कुँअर आनन्दसिंह के सोने के लिए कुँअर इन्द्रजीतसिंह की मसहरी के पास बिछाई गई। भैरोसिंह और तारासिंह ने भी दोनों मसहरियों के नीचे अपना बिस्तर जमाया। सिवाय इन चारो के उस कमरे

मे और कोई भी न रहा। इन लोगों ने रात भर आराम से काटी और सबेरा होने पर आँख खुलते ही एक विचित्र तमाशा देखा।

सुबह के पहिले ही दोनों ऐयारों की आँख खुली और हैरत भरी निगाहों से चारो तरफ देखने लगे, इसके बाद कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी जागे और फूलों की खुशबू जो इस कमरे में बहुत देर पहिले ही से भर रही थी लेने तथा दोनों ऐयारों की तरह ताज्जुब से चारो तरफ देखने लगे।

आनन्द०। ये खुशबूदार फूलों के गजरे और गुलदस्ते इस कमरे में किसने सजाये हैं?

इन्द्र०। ताज्जुब है, हमारे आदमी बिना हुक्म पाये ऐसा कब कर सकते हैं!

भैरो०। हम दोनों आदमी घण्टे भर पहिले से उठ कर इस पर गौर कर रहे हैं मगर कुछ समझ में नहीं आता कि यह क्या मामला है।

आनन्द०। गुलदस्ते भी बहुत खूबसूरत और बेशकीमती मालूम पड़ते हैं।

तारा०। (एक गुलदस्ता उठा कर और पास ला कर) देखिये इस सोने के गुलदस्ते पर क्या उम्दा मीने का काम किया हुआ है! बेशक किसी बहुत बड़े शौकीन का बनवाया हुआ है, इसी ढग के सब गुलदस्ते हैं।

भैरो०। हां एक बात ताज्जुब की और भी है जो अभी आपसे नहीं कही।

इन्द्र०। वह क्या?

भैरो०। (हाथ का इशारा करके) ये दोनों दर्वाजे सिर्फ घुमा फर मैंने खुले छोड़ दिये थे मगर सुबह को और दर्वाजों की तरह इन्हें भी बन्द पाया।

तारा०। (आनन्दसिंह की तरफ देख कर) शायद रात को आप उठे हों!

आन० । नहीं।

इसी तरह देर तक लोग ताज्जुब भरी बातें करते रहे मगर अक्ल ने कुछ गवाही न दी कि यह क्या मामला है। राजा वीरेन्द्रसिंह भी आ पहुँचे, उनके साथ और भी कई मुसाहिब लोग आ जमे, और सभी इस आश्चर्य की बात को सुन कर सोचने और गौर करने लगे। कई बुजदिलों को भूत प्रेत और पिशाच का ध्यान आया मगर महाराज और दोनों कुमारों के खौफ से कुछ बोल न सके क्योंकि ये लोग ऐसे डरपोक और इस खयाल के आदमी न थे और न ऐसे आदमियों को अपने साथ रखना ही पसन्द करते थे।

उन फूलों के गजरों और गुलदस्तों को किसी ने न छेड़ा और वे ज्यों के त्यों जहा के तहा लगे रह गये। रईसों की हाजिरी और शहर के इन्तजाम में दिन बीत गया और रात को फिर कल की तरह दोनों भाई मसहरी पर सो रहे। दोनों ऐयार भी मसहरी के बगल में जमीन पर लेट गये मगर आपुस में मिल जुल कर बारी बारी से जागते रहने का विचार दोनों ने ही कर लिया था और अपने बीच में एक लम्बी छड़ी इस लिए रख ली थी कि अगर रात को किसी समय कोई ऐयार कुछ देखे तो बिना मुँह से बोले लकड़ी के इशारे से दूसरे को उठा दे। इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने भी कह रक्खा था कि अगर घर में किसी को देखना तो चुपके से हमें जगा देना जिससे हम लोग भी देख लें कि कौन है और कहा से आता है।

आधी रात से कुछ ज्यादे जा चुकी है। कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह गहरी नींद में बेसुध पड़े हैं। पारी के मुताबिक लेटे लेटे तारासिंह दर्वाजे की तरफ देख रहे हैं। यकायक पूरब तरफ वाली कोठड़ी में कुछ खटका हुआ। तारासिंह जरा सा घूम गये और पड़े पड़े ही उस कोठड़ी की तरफ देखने लगे। बारीक चादर पहिले ही से दोनों ऐयारों के मुँह पर पड़ी हुई थी और रोशनी अच्छी तरह हो रही थी।

कोठरी का दर्वाजा धीरे धीरे खुलने लगा। तारासिंह ने लकड़ी के इशारे से भैरोसिंह को उठा दिया जो बड़ी होशियारी से घूम कर कोठरी की तरफ देखने लगे। कोठड़ी के दर्वाजे का एक पल्ला अब अच्छी तरह खुल गया और एक निहायत हसीन और कमसिन औरत किवाड़ पर हाथ रक्खे खड़ी दोनों मसहरियों की तरफ देखती नजर पड़ी। भैरोसिंह और तारासिंह ने मसहरी के पावे पर पैर का इशारा देकर दोनों भाइयों को भी जगा दिया।

इन्द्रजीतसिंह का रुख तो पहिले ही उस कोठड़ी की तरफ था मगर आनन्दसिंह उस तरफ पीठ किये सो रहे थे। जब उनकी आंखें खुलीं तो अपने सामने की तरफ जहां तक देख सकते थे कुछ भी न देखा, लाचार धीरे से उनको करवट बदलनी पड़ी और तब मालूम हुआ कि इस कमरे में क्या आश्चर्य की बात दिखाई दे रही है।

अब कोठरी का दोनों पल्ला खुल गया और वह हसीन औरत सिर से पैर तक अच्छी तरह इन चारो को दिखाई देने लगी क्योंकि उसके तमाम बदन पर बखूबी रोशनी पड़ रही थी। वह औरत नखसिख से ऐसी दुरुस्त थी कि उसकी तरफ चारो की टकटकी बँध गई। बेशकीमत सुफेद साड़ी और जड़ाऊ जेवरों से वह बहुत ही भली मालूम होरही थी। जेवरों में सिर्फ खुशरंग मानिक जड़ा हुआ था जिसकी सुर्खी उसके गोरे रङ्ग पर पड़ कर उसके हुस्न को हद से ज्यादा रौनक दे रही थी। उसकी पेशानी (माथे) पर एक दाग था जिसके देखने से विश्वास होता था कि बेशक इसने कभी तलवार या किसी हर्बे की चोट खाई है। यह दो अंगुल का दाग भी उसकी खूबसूरती को बढ़ाने के लिए जेवर ही हो रहा था। उसे देख ये चारो आदमी यही सोचते होंगे कि इससे बढ़ कर खूबसूरत रम्भा और उर्वशी अप्सरा भी न होंगी। कुँअर इन्द्रजीतसिंह तो किशोरी पर मोहित हो रहे थे, उसकी तस्वीर इनके दिल में खिंच रही थी, उन पर चाहे इसके हुस्न ने ज्यादे असर न किया हो मगर आनन्दसिंह

की क्या हालत हो गई यह वे ही जानते होंगे। बहुत बचाये रहने पर भी ठंडी साँसें उनसे न रुक सकीं जिससे हम भी कह सकते हैं कि उनके दिल ने उनकी ठंडी सासों के साथ ही बाहर निकल कर कह दिया कि अब हम तुम्हारे कब्जे में नहीं हैं।

कुँअर आनन्दसिंह अपने को संभाल न सके, उठ बैठे और उधर ही देखने लगे जिधर वह औरत किवाड़ का पल्ला थामे खड़ी थी। इनकी यह हालत देख तीनों आदमियों को विश्वास हो गया कि वह भाग जायगी, मगर नहं, वह इनको उठ कर बैठते देख जरा भी न हिचकी, ज्यों की त्यों खड़ी रही, बल्कि इनकी तरफ देख उसने जरा सा हँस दिया जिससे ये और भी बेचैन हो गए।

कुँअर आनन्दसिंह यह सोच कर कि उस कोठड़ी में किसी दूसरी तरफ निकल जाने के लिए दूसरा दर्वाजा नहीं है, मसहरी पर से उठ खड़े हुए और उस औरत की तरफ चले। इनको अपनी तरफ आते देख वह औरत कोठड़ी मे चली गई और फुर्ती से उसका दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह की तबीयत चाहे दुरुस्त हो गई हो मगर कमजोरी अभी तक मौजूद है बल्कि सब जख्म भी अभी तक कुछ गीले हैं इसलिए अभी घूमने फिरने लायक नहीं हुए। उस परी-जमाल को भीतर से किवाड़ बन्द कर लेते देख सब उठ खड़े हुए, कुँअर इन्द्रजीतसिंह भी तकिये का सहारा लेकर बैठ गए और बोले, "इस कोठड़ी में किसी तरफ से निकल जाने का रास्ता तो नहीं है।"

भैरो०। जी नहीं।

आनन्द०। (किवाड़ में धक्का देकर) इसे खोलना चाहिए।

तारा०। दर्वाजे में कुलाबा जड़ा है।

आनन्द०। कुलाबा काटना क्या मुश्किल है?

तारा० । मुश्किल तो कुछ भी नहीं, (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर) क्या हुक्म होता है ?

इन्द्र० । जब उस कोठड़ी में दूसरी तरफ निकल जाने का रास्ता ही नहीं है तो जल्दी क्यों करते हो ?

इन्द्रजीतसिंह के इतना कहते ही आनन्दसिंह वहां से हटे और अपने भाई के पास आ कर बैठ गए। भैरोसिंह और तारासिंह भी उनके पास आकर बैठ गए और यों बातचीत होने लगी :—

इन्द्रजीत० । (भैरोसिंह और तारासिंह की तरफ देख कर) तुममें से कोई जागता भी रहा या दोनों सो गए थे ?

भैरो० । नहीं सो क्या जायेंगे ? हम लोग बारी बारी से बराबर जागते और महीन चादर से मुँह ढाँपे दर्वाजे की तरफ देखते रहे।

इन्द्र० । तो क्या हम दर्वाजे में से इस औरत को आते देखा था ?

आनन्द० । बेशक इसी तरफ से आई होगी।

तारा० । जी नहीं, यही तो ताज्जुब है कि कमरे के दर्वाजे ज्यों के त्यों भिड़े रह गए और यकायक कोठड़ी का दर्वाजा खुला और वह नजर आई।

इन्द्र० । यह तो अच्छी तरह मालूम है न कि उस कोठड़ी में और कोई दर्वाजा नहीं है ?

भैरो० । जी हां अच्छी तरह जानते हैं, और कोई दर्वाजा नहीं है।

तारा० । क्या कहें, कोई सुने तो यही कहे कि चुड़ैल थी।

आनन्द० । राम राम, यह भी कोई बात है !!

इन्द्र० । खैर जो हो, मेरी राय तो यही है कि पिताजी के आने तक कोठड़ी का दर्वाजा न खोला जाय।

आनन्द० । जो हुक्म, मगर मैं तो यह चाहता था कि पिताजी के आने तक दर्वाजा खोल कर सब कुछ दरियाफ्त कर लिया जाता।

इन्द्र० । खैर खोलो।

हुक्म पाते ही कुँअर आनन्दसिंह उठ खड़े हुए, खूटी से लटकती हुई एक भुजाली उतार ली और उस दर्वाजे के पास जा एक एक हाथ दोनों कुलाबों पर मारा जिससे कुलाबे कट गए। तारासिंह ने दोनों पल्ले उतार अलग रख दिये, भैरोसिंह ने एक बलता हुआ शमादन उठा लिया, और तीनों आदमी उस कोठरी के अन्दर गए, मगर वहा एक चूहे का बच्चा भी नजर न आया।

इस कोठरी में तीन तरफ मजबूत दीवार थी और एक तरफ वही दर्वाजा था जिसका कुलाब काट ये लोग अन्दर आये थे, हा सामने की तरफ वाली अर्थात् बिचली दीवार में काठ की एक आलमारी जडी हुई थी। इन लोगों का ध्यान उस आलमारी पर गया और सोचने लगे कि शायद यह आलमारी इस ढग की हो जो दर्वाजे का काम देती हो और इसी राह से वह औरत आई हो, मगर उन लोगों का यह ख्याल भी तुरन्त ही जाता रहा और विश्वास हो गया कि यह आलमारी किसी तरह दर्वाजा नहीं हो सकती और न इस राह से वह औरत आई ही होगी, क्योंकि उस आलमारी मे भैरोसिंह ने अपने हाथ से कुछ जरूरी असबाब रख कर ताला लगा दिया था जो अभी तक ज्यों का त्यों बन्द था। यह कब हो सकता है कि कोई ताला खोल कर इस आलमारी के अन्दर घुस गया हो और बाहर का ताला फिर जैसा का तैसा दुरुस्त कर दिया हो! लेकिन तब फिर क्या हुआ? वह औरत क्योंकर आई थी और किस राह से चली गई? उन लोगों ने लाख सिर धुना और गौर किया मगर कुछ समझ में न आया।

ताज्जुब भरी बातों ही में रात बीत गई। सुबह को जब राजा बीरेन्द्र-सिंह अपने लड़के को देखने के लिए उस कमरे में आये तो जर्राह वैद्य और कई मुसाहिब लोग भी उनके साथ थे। बीरेन्द्रसिंह ने इन्द्रजीतसिंह से तबीयत का हाल पूछा। उन्होंने कहा, "अब तबीयत अच्छी है मगर एक जरूरी बात अर्ज किया चाहता हूँ जिसके लिए तखलिया (एकान्त) हो जाना बेहतर होगा।"

वीरेन्द्रसिंह ने भैरोसिंह की तरफ देखा। उसने तखलिया हो जाने में महाराज की रजामन्दी जान कर सभों को हट जाने का इशारा किया। बात की बात में सन्नाटा हो गया और सिर्फ वही पांच आदमी उस कमरे में रह गए।

वीरेन्द्र०। कहो क्या बात है?

इन्द्र०। रात एक अजीब बात देखने में आई।

वीरेन्द्र०। वह क्या?

इन्द्र०। (तारासिंह की तरफ देख कर) तारासिंह, तुम्हीं सब हाल कह जाओ क्योंकि उस समय तुम्हीं जागते थे, हम लोग तो पीछे जगाए गए हैं।

तारा०। बहुत खूब।

तारासिंह ने रात का हाल पूरा पूरा राजा वीरेन्द्रसिंह से कह सुनाया जिसे सुन कर उन्होंने बहुत ताज्जुब किया और घण्टों तक गौर में डूबे रहने बाद बोले, "खैर अब यह बात किसी और को न मालूम हो नहीं तो मुसाहबों और अहलकारों में खलबली पैदा हो जायगी और सैकड़ों तरह की गप्पें उड़ने लगेंगी। देखो तो क्या होता है और कब तक पता नहीं लगता, आज हम भी इसी कमरे में सोवेंगे।"

एक दिन क्या कई दिनों तक राजा वीरेन्द्रसिंह उस कमरे में सोए मगर कुछ मालूम न हुआ और न फिर कोई बात ही देखने में आई। आखिर उन्होंने हुक्म दिया कि उस कोठड़ी का दर्वाजा नया कुलावा लगा कर फिर उसी तरह दुरुस्त कर दिया जाय।

बारहवां बयान

आज पाँच दिन के बाद देवीसिंह लौट कर आये हैं। जिस कमरे का हाल हम ऊपर लिख आये हैं उसी में राजा वीरेन्द्रसिंह, उनके दोनों

लड़के, भैरोसिंह, तारासिंह, और कई सर्दार लोग बैठे हैं। इन्द्रजीतसिंह की तबीयत अब बहुत अच्छी है और वे चलने फिरने लायक हो गये हैं। देवीसिंह को बहुत जल्द लौट आते देख कर सभों को विश्वास हो गया कि वे जिस काम पर मुस्तैद किये गए थे उसे कर चुके मगर ताज्जुब इस बात का था कि वे अकेले क्यों आए।

वीरे०। कहो देवीसिंह खुश तो हो?

देवी०। खुशी तो मेरी खरीदी हुई है! (और लोगों की तरफ देख कर) अच्छा अब आप लोग जाइये, बहुत विलम्ब हो गया।

दरबारियों और खुशामदियों के चले जाने बाद वीरेन्द्रसिंह ने देवीसिंह से पूछा :—

वीरे०। कहो उस अर्जी मे जो कुछ लिखा था सच था या झूठ?

देवी०। उसमें जो लिखा था बहुत ठीक था। ईश्वर की कृपा से शीघ्र ही उन दुष्टों का पता लग गया, मगर क्या कहूँ, ऐसी ऐसी ताज्जुब की बातें देखने मे आई कि अभी तक बुद्धि चकरा रही है।

वीरे०। (हँस कर) उधर तुम ताज्जुब की बातें देखो इधर हम लोग अद्भुत बातें देखें!

देवी०। सो क्या?

वीरे०। पहिले तुम अपना हाल कह लो तो यहाँ की सुनना।

देवी०। बहुत अच्छा, फिर सुनिए। रामशिला की पहाडी के नीचे मैने एक कागज अपने हाथ से लिख कर चपका दिया जिसमे यह लिखा था :—

"हम खूब जानते हैं कि जो अग्निदत्त के विरुद्ध होता है उसका तुम लोग सिर काट लेते हो और जिसका घर चाहते हो लूट लेते हो। मैं डंके की चोट से कहता हूँ कि अग्निदत्त का दुश्मन मुझसे बढ के कोई न होगा और गयाजी मे मुझसे बढ कर मालदार भी कोई नहीं है, तिस

पर मज़ा यह कि मैं अकेला हूँ, अब देखा चाहिये तुम लोग मेरा क्या करते हो !"

आनन्द० । अच्छा तब क्या हुआ !

देवी० । उन दुष्टों का पता लगाने के उपाय तो मैंने और भी कई किये थे मगर काम इसी से चला । उस राह से आने जाने वाले सभी उस कागज को पढ़ते थे और चले जाते थे । मैं उस पहाड़ी के कुछ ऊपर जाकर एक पत्थर की चट्टान की आड़ मे छिपा हुआ हर दम उसकी तरफ देखा करता था । एक दफे दो आदमी एक साथ वहां आये और उसे पढ़ मूछों पर ताव देते शहर की तरफ चले गये । शाम को वे दोनों लौटे और फिर उस कागज को पढ़ सिर हिलाते बराबर की पहाड़ी की ओर चले गये । मैंने सोचा कि इनका पीछा जरूर करना चाहिये क्योंकि इस कागज के पढ़ने का असर सब से ज्यादे इन्हीं दोनों पर हुआ । आखिर मैंने उनका पीछा किया और जो सोचा था वही ठीक निकला । वे लोग पन्द्रह बीस आदमी हैं और सभी हट्टे कट्टे और मुछण्टे हैं । उसी झुण्ड मे मैंने एक औरत को भी देखा । अहा, ऐसी खूबसूरत औरत तो मैंने आज तक नहीं देखी ! पहिले तो मैंने सोचा कि वह इन लोगों मे से किसी की लड़की होगी क्योंकि उसकी अवस्था बहुत कम थी, मगर नहीं उसके हाव भाव और उसकी हुकूमत भरी बातचीत से मालूम हुआ कि वह उन सभों की मालिक है, पर सच तो यह है कि मेरा जी इस बात पर भी नहीं जमता । उसकी चाल ढाल, उसकी बढ़ियाँ पौशाक, और उसके जड़ाऊ कीमती गहनों पर जिसमे सिर्फ खुशरंग मानिक ही जड़े हुए थे ध्यान देने से दिल की कुछ विचित्र हालत हो जाती है ।

मानिक के जड़ाऊ जेवरों का नाम सुनते ही कुँअर आनन्दसिंह चौंक पड़े । इन्द्रजीतसिंह, भैरोसिंह और तारासिंह का भी चेहरा बदल गया और उस औरत का विशेष हाल जानने के लिए घबड़ाने लगे क्योंकि उस रात को इन चारो ने इस कमरे मे या यों कहिये कि कोठड़ी

में जिस औरत की झलक देखी थी वह भी मानिक के जड़ाऊ जेवरों से ही अपने को सजाये हुए थी। आखिर आनन्दसिंह से न रहा गया, देवीसिंह को बात कहते कहते रोक कर पूछा :—

आनन्द। उस औरत का नखशिख जरा अच्छी तरह कह जाइये।

देवी०। सो क्या?

वीरे०। (लड़कों की तरफ देख कर) तुम लोगों को ताज्जुब किस बात का है? तुम लोगों के चेहरे पर हैरानी क्यों छा गई है?

भैरो०। जी वह औरत भी जिसे हम लोगों ने देखा था ऐसे ही गहने पहिरे हुए थी जैसा चाचाजी* कह रहे हैं।

वीरेन्द्र०। हाँ!

भैरो०। जी हाँ।

देव०। तुम लोगों ने कैसी औरत देखी थी?

वीरेन्द्र०। सो पीछे सुनना, पहिले जो ये पूछते हैं उसका जवाब दे लो।

देवी०। नखशिख सुन के क्या कीजियेगा, सब से ज्यादे पक्का निशान तो यह है कि उसके ललाट में दो ढाई अंगुल का एक अड़ा दाग है, मालूम होता है शायद उसने कभी तलवार की चोट खाई है।

आनन्द०। बस बस बस!

इन्द्रजीत०। बेशक वही औरत है!

तारा०। इसमे कोई शक नहीं कि वही है!

भैरो०। अवश्य वही है!

वीरेन्द्र०। मगर आश्चर्य है, कहाँ उन दुष्टों का संग और कहा हम लोगों के साथ आपुस का बर्ताव!

---

* भैरोसिंह और देवीसिंह का रिश्ता तो मामा भाजे का था मगर भैरोसिंह उन्हें चाचाजी कहा करते थे।

भैरो० । हम लोग तो उसे दुश्मन नहीं समझते ।

देवी० । अब हम न बोलेंगे जब तक यहां का खुलासा हाल न सुन लेंगे । न मालूम आप लोग क्या कह रहे हैं !

वीरेन्द्र० । खैर यही सही, अपने लड़के से पूछिये कि यहाँ क्या हुआ ।

तारा० । जी हाँ सुनिये मैं अर्ज करता हूँ ।

तारासिंह ने यहां का बिल्कुल हाल अच्छी तरह कहा, फूल तो फेंक दिये गये थे मगर गुलदस्ते अभी तक मौजूद थे, वे भी दिखाये । देव सिंह हैरान थे कि यह क्या मामला है ! देर तक सोचने के बाद बोले, "मुझे तो विश्वास नहीं होता कि यहां वही औरत आई होगी जिसे मैंने वहां देखा है ।"

वीरेन्द्र० । यह शक भी मिटा ही डालना चाहिये ।

देवी० । उन लोगों का जमाव वहां रोज ही होता है जहां से मैं देख आया हूँ । आज तारा या भैरो को अपने साथ ले चलूँगा, ये खुद ही देख लें कि वही औरत है या दूसरी ।

वीरेन्द्र० । ठीक है, आज ऐसा ही करना । हाँ अब तुम अपना हाल और आगे कहो ।

देवी० । मुझे यह भी मालूम हुआ कि उन दुष्टों ने हमेशे के लिये अपना डेरा उस पहाड़ी में कायम किया है और बातचीत से यह भी जाना गया कि लूट और चोरी का माल भी वे लोग इसी ठिकाने कहीं रखते हैं । मैंने अभी बहुत खोज उन लोगों की नहीं की, जो कुछ मालूम हुआ था आपसे कहने के लिये चला आया । अब उन लोगों को गिरफ्तार करना कुछ मुश्किल नहीं है हुक्म हो तो थोड़े से आदमी अपने साथ ले जाऊँ और आज ही उन लोगों को उस औरत के सहित गिरफ्तार कर लाऊँ ।

वीरेन्द्र० । आज तो तुम भैरो या तारा को अपने साथ ले जाओ, फिर कल उन लोगों की गिरफ्तारी की फिक्र की जायगी ।

आखिर भैरोसिंह को अपने साथ लेकर देवीसिंह बराबर के पहाड़ पर

गये जो गयाजी से तीन या चार कोस की दूरी पर होगा। घूमघुमौवी और पेचीली पगडण्डियों को ते करते हुए पहर रात जाते जाते ये दोनों उस खोह के पास पहुँचे जिसमें वे बदमाश डाकू लोग रहते थे। उस खोह के पास ही एक और छोटी सी गुफा थी जिसमें मुश्किल से दो आदमी बैठ सकते थे। इस गुफा में एक बारीक दरार ऐसी पड़ी हुई थी जिससे ये दोनों ऐयार उस लम्बी चौड़ी गुफा का हाल बखूबी देख सकते थे जिसमे वे डाकू लोग रहते थे और इस समय वे सब के सब वहाँ मौजूद भी थे, बल्कि वह औरत भी सर्दारी के तौर पर छोटी सी गद्दी लगाए वहाँ मौजूद थी। ये दोनों ऐयार उस दरार से उन लोगों की बातचीत तो नहीं सुन सकते थे मगर सूरत शक्ल भाव और इशारे अच्छी तरह देख सकते थे।

इन लोगों ने इस समय वहाँ पन्द्रह डाकुओं को बैठे हुए पाया और उस औरत को देख भैरोसिंह ने पहिचान लिया कि यह वही है जो कुँअर इन्द्रजीतसिंह के कमरे में आई थी, आज वह वैसी साड़ी या उन जेवरों को पहिरे हुए न थी तो भी सूरत शक्ल में किसी तरह का फर्क न था।

इन दोनों ऐयारों के पहुँचने बाद दो घण्टे तक वे डाकू लोग आपुस में कुछ बातचीत करते रहे, इस बीच में कई डाकुओं ने दो तीन दफे हाथ जोड़ कर उस औरत से कुछ कहा जिसके जवाब में उसने सिर हिला दिया जिससे मालूम हुआ कि मंजूर नहीं किया। इतने ही में एक दूसरी हसीन कमसिन और फुर्तीली औरत लपकती हुई वहाँ आ मौजूद हुई। उसके हाँफने और दम फूलने से मालूम होता था कि वह बहुत दूर से दौड़ती हुई आ रही है।

इस नई आई हुई औरत ने न मालूम उस सर्दार औरत के कान में झुक कर क्या कहा जिसके सुनते ही उसकी हालत बदल गई। बड़ी बड़ी आँखें सुर्ख हो गईं, खूबसूरत चेहरा तमतमा उठा, और गुस्से से बदन काँपने लगा। उसने अपने सामने पड़ी हुई तलवार उठा ली और तुरत

कोठड़ी खोली गई। एक हाथ मे रोशनी दूसरी में नङ्गी तलवार लेकर पहिले देवीसिंह कोठडी के अन्दर घुसे और तुरत ही बोल उठे—"वाह वाह, यहा तो खूनाखराबा मच चुका है !!" अब राजा वीरेन्द्रसिंह दोनों कुमार और उनके दोनों ऐयार भी कोठड़ी के अन्दर गए और ताज्जुब भरी निगाहों से चारो तरफ देखने लगे।

इस कोठडी में जो फर्श बिछा हुआ था वह इस तरह से सिमट गया था जैसे कई आदमियों के बेअख्तियार उछल कूद करने या लड़ने से इकट्ठा हो गया हो, ऊपर से वह खून से तर भी हो रहा था। चारो तरफ दीवारों पर भी खून के छींटे और लड़ती समय हाथ बहक कर बैठ जाने वाली तलवारों के निशान दिखाई दे रहे थे। बीच में एक लाश पड़ी हुई थी मगर बेसिर के, कुछ समझ मे नहीं आता था कि यह लाश किसकी है। कपड़ों मे सिर्फ एक लंगोटा उसकी कमर मे था। तमाम बदन नङ्गा जिसमे अन्दाज से ज्यादा तेल मला हुआ था। दाहिने हाथ मे तलवार थी मगर वह हाथ भी कटा हुआ सिर्फ जरा सा चमड़ा लगा हुआ था वह भी इतना कम कि अगर कोई खेंचे तो अलग हो जाये। सब से ज्यादे परेशान और बेचैन करने वाली एक चीज और दिखाई दी।

दाहिने हाथ की कटी हुई एक कलाई जिसमे फौलादी कटार अभी तक मौजूद था, दिखाई पड़ी। आनन्दसिंह ने फौरन उस हाथ को उठा लिया और सभों की निगाह गौर के साथ उस पर पड़ने लगी। यह कलाई किसी नाजुक हसीन और कमसिन औरत की थी। हाथ में हीरे का कड़ा कड़ा और जमीन पर मानिक की दो तीन बारीक जड़ाऊ चूड़ियाँ भी मौजूद थीं, शायद कलाई कट कर गिरती समय ये चूड़ियाँ हाथ से अलग हो जमीन पर फैल गई हों।

इस कलाई के देखने से सभों को रंज हुआ और झट उस औरत की तरफ खयाल दौड़ गया जिसे इस कोठड़ी में से निकलते सभों ने देखा था। चाहे उस औरत के सबब से ये लोग कैसे ही हैरान क्यों न हों मगर

उसकी सूरत ने सभों को अपने ऊपर मेहरबान बना लिया था, खास करके कुँअर आनन्दसिंह के दिल में तो वह उनके जान और माल की मालिक ही हो कर बैठ गई थी इस लिए सब से ज्यादे दुःख छोटे कुअर साहब को हुआ। यह सोच कर कि वेशक यह उसी औरत की कलाई है कुँअर आनदसिंह की आँखों में जल भर आया और कलेजे में एक अजीब किस्म का दर्द पैदा हुआ, मगर इस समय कुछ कहने या अपने दिल का हाल जाहिर करने का मौका न समझ उन्होंने बड़ी कोशिश से अपने को सम्हाला और चुपचाप सभों का मुँह देखने लगे।

पाठक, अभी इस औरत के बारे में बहुत कुछ लिखना है, इस लिए जब तक यह न मालूम हो जाय कि यह औरत कौन है तब तक अपने और आपके सुभीते के लिये हम इसका नाम 'किन्नरी' रख देते हैं।

राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयारों ने इन सब अद्भुत बातों को जो इधर कई दिनों में हो चुकी थीं छिपाने के लिए बहुत कोशिश की मगर न हो सका। कई तरह पर रंग बदल कर यह बात तमाम शहर मे फैल गई। कोई कहता था 'महाराज के मकान में देव और परियों ने डेरा डाला है!' कोई कहता था 'गयाजी के भूत प्रेत इन्हें सता रहे हैं!' कोई कहता था 'दीवान अग्निदत्त के तरफदार बदमाश और डाकुओं ने यह फसाद मचाया है!' इत्यादि बहुत तरह की बातें शहर वाले आपुस में कहने लगे, मगर उस समय उन बातों का ढंग बिल्कुल ही बदल गया जब राजा वीरेन्द्रसिंह के हुक्म से देवीसिंह ने उस सिरकटी लाश को जो कोठड़ी मे से निकली थी उठवा कर सदर चौक में रखवा दिया और उसके पास एक मुनादी वाले को यह कह कर पुकारने के लिए बैठा दिया कि—'अग्निदत्त के तरफदार डाकू लोग जो शहर के रईसों और अमीरों को सताया करते थे ऐयारों के हाथ गिरफ्तार होकर मारे जाने लगे, आज

कमला० । जहां तक हो सका तुमने किशोरी की मदद जी जान से की, बेशक किशोरी जन्म भर याद रक्खेगी और तुम्हें अपनी बहिन मानेगी । खैर कोई चिन्ता नहीं, हम लोगों को हिम्मत न हारनी चाहिए और किसी समय ईश्वर को न भूलना चाहिए । मुझे घड़ी घड़ी बेचारे आनन्दसिंह याद आते हैं । तुम पर उनकी सच्ची मुहब्बत है मगर तुम्हारा कुछ हाल न जानने से न मालूम उनके दिल में क्या क्या बातें पैदा होती होंगी, हां अगर वे जानते कि जिसको उनका दिल प्यार करता है वह पास ही है तो बेशक वे खुश होते ।

कामिनी० । (ऊंची सांस ले कर) जो ईश्वर की मरजी !!

कमला० । देखो वह उस पुराने मकान की दीवार दिखाई देने लगी ।

कामिनी० । हां ठीक है, अब आ पहुंचे ।

इतने ही में ये दोनों एक ऐसे टूटे फूटे मकान के पास पहुँचीं जिसकी चौड़ी चौड़ी दीवारें और बड़े बड़े फाटक कहे देते थे कि किसी ज़माने में यह इज्जत रखता होगा । चाहे इस समय यह इमारत कैसी ही खराब हालत में क्यों न हो तो भी इसमें छोटी छोटी कोठड़ियों के अलावे कई बड़े बड़े दालान और कमरे अभी तक मौजूद थे ।

ये दोनों उस मकान के अन्दर चली गईं । बीच में चूने मिट्टी और ईंटों का ढेर लगा हुआ था, जिसके बगल से घूमती हुई एक दालान में पहुंचीं । इस दालान में एक तरफ एक कोठड़ी थी जिसमें जा कर कमला ने मोमबत्ती जलाई और चारो तरफ देखने लगी । बगल में एक आलमारी दीवार के साथ जड़ी हुई थी जिसमें पल्ला खोलने के लिए दो मुट्ठे लगे हुए थे । कमला ने बत्ती किशोरी के हाथ में दे कर दोनों हाथों से दोनों मुट्ठों को तीन चार दफे घुमाया, तुरत पल्ला खुल गया और भीतर एक छोटी सी कोठड़ी नजर आई । दोनों उस कोठड़ी के अन्दर चली गईं और उन पल्लों को फिर बन्द कर लिया । उन पल्लों में भीतर की तरफ भी उसी तरह खोलने और बन्द करने के लिए दो मुट्ठे लगे हुए थे ।

इस कोठडी में एक तहखाना था जिसमें उतर जाने के लिए छोटी छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई थी। ये दोनों नीचे उतर गईं और वहां एक आदमी को बैठे देखा जिसके सामने मोमबत्ती जल रही थी और वह कुछ लिख रहा था।

इस आदमी की उम्र लगभग साठ वर्ष के होगी। सर और मूछों के बाल आधे से ज्यादे सुफैद हो रहे थे तौ भी उसके बदन में किसी तरह की कमजोरी नहीं मालूम होती थी। उसके हाथ पैर गठीले और मजबूत थे तथा चौड़ी छाती उसकी बहादुरी को जाहिर कर रही थी। चाहे उसका रंग सांवला क्यों न हो मगर चेहरा खूबसूरत और रोबीला था। बड़ी बड़ी आखों में अभी तक जवानी की चमक मौजूद थी, चुस्त मिरजई उसके बदन पर बहुत भली मालूम होती थी। सर नंगा था मगर पास ही जमीन पर एक सुफैद मुड़ासा रक्खा हुआ था जिसके देखने से मालूम होता था कि गरमी मालूम होने पर उसने उतार कर रख दिया है। उसके बाएं हाथ में पंखा था जिसके जरिए से वह गरमी दूर कर रहा था मगर अभी तक पसीने की नमी बदन में मालूम होती थी।

एक तरफ टीकड़े में थोड़ी सी आग थी जिसमें कोई खुशबूदार चीज जल रही थी जिससे वह तहखाना अच्छी तरह सुगन्धित हो रहा था। कमला और किन्नरी के पैर की आहट पा वह पहिले ही से सीढ़ियों की तरफ ध्यान लगाए था और इन दोनों को देखते ही उसने कहा, "तुम दोनों आ गईं ?"

कमला०। जी हां।

आदमी०। (किन्नरी की तरफ इशारा करके) इन्हीं का नाम कामिनी है ?

कमला०। जी हां।

आदमी०। कामिनी, आओ बेटी, तुम मेरे पास बैठो। मैं जिस तरह कमला को समझता हूं उसी तरह तुम्हें भी मानता हूँ।

कामिनी० । बेशक कमला की तरह मैं भी आपको अपना सगा चाचा मानती हूँ ।

आदमी० । तुम किसी तरह की चिन्ता मत करो । जहाँ तक होगा मैं तुम्हारी मदद करूँगा । (कमला की तरफ देख कर) तुम्हें कुछ रोहतास-गढ़ की खबर भी मालूम है ?

कमला० । कल मैं वहाँ गई थी मगर अच्छी तरह हाल मालूम न कर सकी, आपसे यहाँ मिलने का वादा किया था इसीलिए जल्दी लौट आई ।

आदमी० । अभी पहर भर हुआ मैं खुद रोहतासगढ़ से चला आ रहा हूँ ।

कम० । तो बेशक आपको बहुत कुछ हाल वहाँ का मिला होगा ।

आदमी० । मुझसे ज्यादे वहाँ का हाल कोई नहीं मालूम कर सकता क्योंकि पचीस वर्ष तक ईमानदारी और नेकनामी के साथ वहाँ के राजा की नौकरी कर चुका हूँ । चाहे आज दिग्विजयसिंह हमारे दुश्मन हो गए फिर भी मैं कोई काम ऐसा न करूँगा जिससे उस राज्य का नुकसान हो, हाँ तुम्हारे सबब से किशोरी की मदद जरूर करूँगा ।

कमला० । दिग्विजयसिंह नाहक ही आपसे रंज हो गये !

आदमी० । नहीं नहीं, उन्होंने अनर्थ नहीं किया । जब वे किशोरी को जबर्दस्ती अपने यहाँ रखना चाहते हैं और जानते हैं कि शेरसिंह ऐयार की भतीजी कमला किशोरी के यहाँ नौकर है और ऐयारी के फन में तेज है, वह किशोरी को छुड़ाने के लिए दाँव घात करेगी, तो उन्हें मुझसे परहेज करना बहुत मुनासिब था, चाहे मैं कैसा ही खैरख्वाह और नेक क्यों न समझा जाऊँ । उन्होंने मुझे कैद करने का इरादा बेजा नहीं किया । हाय ! एक वह जमाना था कि रणधीरसिंह (किशोरी का नाना) और राजा नरसिंह में दोस्ती थी, मैं दिग्विजयसिंह के यहाँ नौकर था और मेरा छोटा भाई अर्थात् तुम्हारा बाप, ईश्वर उसे बैकुण्ठ दे, रणधीरसिंह के यहाँ रहता था । आज देखो कितना उलट फेर हो गया है । मैं बेकसूर कैद

होने के खौफ से भाग तो आया मगर लोग जरूर कहेंगे कि शेरसिंह ने धोखा दिया।

कमला०। जब आप दिल से रोहतासगढ की बुराई नहीं करते तो लोगों के कहने से क्या होता है, वे लोग आपकी बुराई क्योंकर दिखा सकते है?

शेर०। हा ठीक है, खैर इन बातों को जाने दो, हा कुन्दन बेचारी को लाली ने खूब ही छकाया, अगर मैं लाली का एक भेद न जानता होता और कुन्दन को न कह देता तो लाली कुन्दन को जरूर बर्बाद कर देती। कुन्दन ने भी भूल की, अगर वह अपना सच्चा हाल लाली से कह देती ता बेशक दोनों मे दोस्ती हो जाती।

कमला०। कुछ कुअर इन्द्रजीतसिंह का भी हाल मालूम हुआ?

शेर०। हा मालूम है, उन्हें उसी चुडैल ने फसा रक्खा है जो अजायबघर मे रहती है।

कमला०। कौन सा अजायबघर?

शेर०। वही जो तालाब के बीच में बना है और जिसे जड बुनियाद से खोद कर फेंक देने का मैंने इरादा किया है, यहा से थोडी ही दूर तो है।

कमला०। जो हा मालूम हुआ, उसके बारे में तो बडी बडी विचित्र बातें सुनने मे आती है।

शेर०। बेशक वहा की सभी बातें ताज्जुब से भरी हुई हैं। अफसोस, न मालूम कितने खूबसूरत और नौजवान बेचारे वहा बेदर्दी के साथ मारे गए होंगे!

इतने मे छत के ऊपर किसी के पैर की आहट मालूम हुई, तीनों का ध्यान सीढियों पर गया।

कमला०। कोई आता है।

शेर०। इस तो यहा किसी के आने की उम्मीद न थी [illegible]

[illegible]

शेर० । मैं इसे ले जाता हूं, अपने एक दोस्त के सुपुर्द कर दूंगा। वहां यह बड़े आराम से रहेगी। जब सब तरफ से फसाद मिट जायगा मैं इसे ले आऊंगा और तब यह भी अपनी मुराद को पहुंच जायगी।

यमुना० । जो मर्जी।

तीनों आदमी तहखाने के बाहर निकले और जैसा ऊपर लिखा जा चुका है उसी तरह कोठड़ियों और दालानों में से होते हुए इस मकान के बाहर निकल आए।

शेर० । कमला, ले अब तू जा और कामिनी की तरफ से बेफिक्र रह, मुझसे मिलने के लिए यही ठिकाना मुनासिब है।

कमला० । अच्छा मैं जाती हूं मगर यह तो कह दीजिए कि उस आदमी से मुझे कहां तक होशियार रहना चाहिए जो आपसे मिलने आया था!

शेर० । (कड़ी आवाज में) एक दफे तो कह दिया कि उसका ध्यान भुला दे, उससे होशियार रहने की कोई जरूरत नहीं और न वह तुझे फिर कभी दिखाई देगा!

चौदहवां बयान

रोहतासगढ़ किले के चारों तरफ घना जंगल है जिसमें साखू, शीशम, तेंद, आसन और सलई इत्यादि के बड़े बड़े पेड़ों की घनी छाया से एक तरह का अन्धकार सा हो रहा है। रात की तो बात ही दूसरी है वहां दिन को भी रास्ते या पगडण्डी का पता लगाना मुश्किल था क्योंकि सूर्य की सुनहरी किरणों को पत्तों में छन कर जमीन तक पहुंचने का बहुत कम मौका मिलता था। कहीं कहीं छोटे छोटे पेड़ों की बदौलत जंगल इतना घना हो गया था कि उसमें घुसते हुए आदमियों को मुश्किल से छुटकारा मिलता था। ऐसे मौके पर उसमें हजारों आदमी इस तरह छिप सकते थे कि हजार सिर पटकने और खोजने पर भी उनका पता लगाना असम्भव था। दिन को तो इस जंगल में अन्धकार रहता ही था मगर हम रात का हाल लिखते हैं

जिस समय उस जंगल की अन्धेरी और वहां के सन्नाटे का आलम भूले भटके मुसाफिरों को मौत का समाचार देता था और वहां की जमीन के लिये अमावस्या और पूर्णिमा की रात एक समान थी।

किले के दाहिने तरफ वाले जंगल में आधी रात के समय हम तीन आदमियों को जो स्याह चोगे और नकाबों से अपने को छिपाए हुए थे घूमते हुए देख रहे हैं। न मालूम ये किसकी खोज और किस जमीन की तलाश में हैरान हो रहे हैं। इनमें से एक कुंअर आनन्दसिंह दूसरे भैरोसिंह और तीसरे तारासिंह हैं। ये तीनों आदमी देर तक घूमने के बाद एक छोटी सी चारदीवारी के पास पहुंचे जिसके चारों तरफ की दीवार पांच हाथ से ज्यादे ऊंची न थी और वहां के पेड़ भी कम घने और गुंजान थे, कहीं कहीं चन्द्रमा की रोशनी भी जमीन पर पड़ रही थी।

आनन्द०। शायद यही चारदीवारी है।

भैरो०। बेशक यही है, देखिये फाटक पर हड्डियों का ढेर लगा हुआ है।

तारा०। खैर भीतर चलिये, देखा जायगा।

भैरो०। जरा ठहरिए, पत्तों की खड़खड़ाहट से मालूम होता है कि कोई आदमी इसी तरफ आ रहा है।

आनन्द०। (कान लगा कर) हां ठीक तो है, हम लोगों को जरा छिप कर देखना चाहिए कि वह कौन है और इधर क्यों आता है।

उस आने वाले की तरफ ध्यान लगाए हुए तीनों आदमी पेड़ों की आड़ में छिप रहे और थोड़ी ही देर में सुफेद कपड़े पहिरे एक औरत को आते हुए उन लोगों ने देखा। वह औरत पहिले तो फाटक पर रुकी, तब कान लगा कर चारों तरफ की आहट लेने बाद फाटक के अन्दर घुस गई। भैरोसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "आप दोनों इसी जगह ठहरिए, मैं उस औरत के पीछे जा कर देखता हूं कि वह कहां जाती है।" इस बात को दोनों ने मंजूर किया और भैरोसिंह छिपते हुए उस औरत के पीछे रवाना हुए।

ऐसे घने जंगल में भी उस चारदीवारी के अन्दर पेड़ झाड़ी या जंगल का न होना ताज्जुब की बात थी। भैरोसिंह ने वहां की जमीन बहुत साफ पाई हां छोटे छोटे जंगली बेर के दस बीस पेड़ वहां जरूर थे जो किसी तरह का नुकसान न पहुंचा सकते थे और न उनकी आड़ में कोई आदमी छिप ही सकता था, मगर मरे हुए जानवरों और हड्डियों की बहुतायत से वह जगह बड़ी ही भयानक हो रही थी। उस चारदीवारी के अन्दर बहुत सी कब्रें बनी हुई थीं जिनमें कई कच्ची तथा कई ईंट चूने और पत्थर की भी थीं और बीच में एक सब से बड़ी कब्र संगमर्मर की बनी हुई थी।

भैरोसिंह ने फाटक के अन्दर पैर रखते ही उस औरत को जिसके पीछे गए थे बीच वाली संगमर्मर की बड़ी कब्र पर खड़े और चारो तरफ देखते पाया, मगर थोड़ी ही देर में वह देखते देखते वहां गायब हो गई। भैरोसिंह ने उस कब्र के पास जा कर उसे ढूंढा मगर पता न लगा, दूसरी कब्रों के चारो तरफ और इधर उधर भी खोजा मगर कोई निशान न मिला। लाचार वे आनन्दसिंह और तारासिंह के पास लौट आए और बोले :—

भैरो० । वह औरत तो यहां ही चली गई जहां हम लोग जाया चाहते हैं।

आनन्द० । हां !!

भैरो० । जी हां।

आनन्द० । फिर अब क्या राय है ?

भैरो० । उसे जाने दीजिए, चलिए हम लोग भी चलें। अगर वह रास्ते में मिल ही जायगी तो क्या हर्ज है ! एक औरत हम लोगों का कुछ नुकसान नहीं कर सकती।

ये तीनों आदमी भी उस चारदीवारी के अन्दर गए और बीच वाली संगमर्मर की बड़ी कब्र पर पहुँच कर खड़े हो गए। भैरोसिंह ने उस कब्र

की जमीन को अच्छी तरह टटोलना शुरू किया। थोड़ी ही देर में एक खटके की आवाज आई और एक छोटा सा पत्थर का टुकड़ा जो शायद कमानी के जोर पर लगा हुआ था दर्वाजे की तरह खुल कर अलग हो गया। ये तीनों आदमी उसके अन्दर घुसे और उस पत्थर के टुकड़े को उसी तरह बन्द कर आगे बढ़े। अब ये तीनों आदमी एक सुरंग में थे जो बहुत ही तंग और लंबी थी। भैरोसिंह ने अपने बटुए में से एक मोमबत्ती निकाल कर जलाई और चारो तरफ अच्छी तरह निगाह करने बाद आगे बढ़े। थोड़ी ही देर में यह सुरंग खतम हो गई और ये तीनों एक भारी दालान में पहुंचे। इस दालान की छत बहुत ऊंची थी और उसमें कड़ि-यों के सहारे कई जञ्जीरें लटक रही थीं। इस दालान के दूसरी तरफ एक और दर्वाजा था जिसमें से हो कर ये तीनों एक कोठरी में पहुंचे। इस कोठरी के नीचे एक तहखाना था जिसमें उतरने के लिए संगमर्मर की सीढ़ियां बनी हुई थीं। ये तीनों नीचे उतर गये। अब एक बड़े भारी घण्टे के बजने की आवाज इन तीनों के कानों में पड़ी जिसे सुन वे कुछ देर के लिये रुक गए। मालूम हुआ कि इस तहखाने वाली कोठरी के बगल में कोई और मकान है जिसमें घण्टा बज रहा है। इन तीनों को वहां और भी कई आदमियों के मौजूद होने का गुमान हुआ।

इस तहखाने में भी दूसरी तरफ निकल जाने के लिए एक दर्वाजा था जिसके पास पहुंच कर भैरोसिंह ने मोमबत्ती बुझा दी और धीरे से दर्वाजा खोल उस तरफ झांका। एक बड़ी संगीन बारहदरी नजर पड़ी जिसके खम्भे संगमर्मर के थे। इस बारहदरी में दो मशाल जल रहे थे जिनकी रोशनी से वहां की हर एक चीज साफ मालूम होती थी और इसी से वहां दस पन्द्रह आदमी भी दिखाई पड़े जिनमें रस्सियों से मुश्कें बंधी हुई तीन औरतें भी थीं। भैरोसिंह ने पहिचाना कि इन तीन औरतों में एक किशोरी है जिसके दोनों हाथ पीठ की तरफ कस कर बांधे हुए हैं और बाल सिर [illegible]

थी मगर इन्हें भैरोसिंह आनन्दसिंह या तारासिंह नहीं पहिचानते थे। उन तीनों के पीछे नंगी तलवार लिए तीन आदमी भी खड़े थे जिनकी सूरत और पोशाक से मालूम होता था कि वे जल्लाद हैं।

उस बारहदरी के बीचोंबीच चांदी के सिंहासन पर स्याह पत्थर की एक मूरत इतनी बड़ी बैठी हुई थी कि आदमी पास में खड़ा हो कर भी उस बैठी हुई मूरत के सिर पर हाथ नहीं रख सकता था। उस मूरत की सूरत शक्ल के बारे में इतना ही लिखना काफी है कि उसे आप राक्षस समझें जिसकी तरफ आंख उठा कर देखने से डर मालूम होता था।

भैरोसिंह तारासिंह और आनन्दसिंह उसी जगह खड़े हो कर देखने लगे कि उस दालान में क्या हो रहा है। अब घण्टे की आवाज बड़े जोर से आ रही थी मगर यह नहीं मालूम होता था कि वह कहां बज रहा है।

उन तीनों औरतों को जिसमें किशोरी भी थी छः आदमियों ने अच्छी तरह मजबूती से पकड़ा और बारी बारी से उस स्याह मूरत के पास ले गए बल्कि उसके पैरों पर जबर्दस्ती सिर रखवा कर पीछे हटे और फिर उसी तरह सामने खड़ा कर दिया।

इसके बाद दो आदमी एक औरत को लेकर आगे बढ़े जिसे हमारे तीनों आदमियों में से कोई भी नहीं पहिचानता था, उस औरत के पीछे जो जल्लाद नंगी तलवार लिए खड़ा था वह भी आगे बढ़ा। दोनों आदमियों ने उस औरत को स्याह मूरत के ऊपर इस जोर से ढकेल दिया कि बेचारी बेतहाशा गिर पड़ी, साथ ही जल्लाद ने एक हाथ तलवार का ऐसा मारा कि सिर कट कर दूर जा पड़ा और धड़ तड़पने लगा। इस हाल को देख के दोनों औरतें जिनमें बेचारी किशोरी भी थी बड़े जोर से चिल्लाईं और बदहवास हो कर जमीन पर गिर पड़ीं।

इस कैफियत को देख कर हमारे दोनों ऐयार और कुंअर आनन्दसिंह की अजब हालत हो गई। गुस्से के मारे थर थर कांपने लगे। [illegible] [illegible] में [illegible] के [illegible] और [illegible]

उसके साथ ही दूसरा जल्लाद भी आगे बढ़ा। अब ये तीनों किसी तरह बर्दाश्त न कर सके। कुंअर आनन्दसिंह ने दोनों ऐयारों को ललकारा—"मारो इन जालिमों को! ये थोड़े से आदमी हैं क्या चीज!"

तीनों आदमी खञ्जर निकाल आगे बढ़ना ही चाहते थे कि पीछे से कई आदमियों ने आकर इन लोगों को भी पकड़ लिया और "यही हैं, यही हैं!! पहिले इन्हीं को बलि देना चाहिए!!" कह कर चिल्लाने लगे।

॥ तीसरा हिस्सा समाप्त ॥

१९५५ ई०—गुप्ता बाईसवां संस्करण—२००० प्रति

—पारिजात प्रेस, काशी।

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

चौथा हिस्सा

—:०:—

पहिला बयान

अब हम अपने किस्से को फिर उस जगह से शुरू करते हैं जब रोह-तासगढ़ किले के अन्दर लाली को साथ लेकर किशोरी सींध की राह उस अजायबघर में घुसी जिसका ताला हमेशा बन्द रहता था और दर्वाजे पर बराबर पहरा पड़ा करता था। हम पहिले लिख आये हैं कि जब लाली और किशोरी उस मकान के अन्दर घुसीं उसी समय कई आदमी उस छत पर चढ़ गये और "मारो, पकड़ो, जाने न पावे!" की आवाज लगाने लगे। लाली और किशोरी ने भी यह आवाज सुनी। किशोरी तो डरी मगर लाली ने उसी समय उसे धीरज दिया और कहा, "तुम डरो मत, ये लोग हमारा कुछ भी नहीं कर सकते।"

लाली और किशोरी छत की राह जब नीचे उतरीं तो एक छोटी सी कोठरी में पहुँचीं जो बिल्कुल खाली थी। उसके तीन तरफ दीवार में तीन दर्वाजे थे, एक दर्वाजा तो बन्द था या जिसके आगे बाहर की तरफ

पहरा पड़ा करता था, दूसरा दर्वाजा खुला हुआ था और मालूम होता था कि किसी दालान या कमरे में जाने का रास्ता है, लाली ने जल्दी में केवल इतना ही कहा कि ताली लेने के लिये इसी राह से एक मकान में मैं गई थी, और तीसरी तरफ एक छोटा सा दर्वाजा था जिसका ताला किवाड़ के परले ही में जड़ा हुआ था। लाली ने वही ताली जो इस अजायबघर में से ले गई थी लगा कर उस दर्वाजे को खोला, दोनों उसके अन्दर घुसीं, लाली ने फिर उसी ताली से उस मजबूत दर्वाजे को अन्दर की तरफ से बन्द कर दिया। ताला इस ढंग से जड़ा हुआ था कि वही ताली बाहर और भीतर दोनों तरफ लग सकती थी ❀। लाली ने यह काम बड़ी फुर्ती से किया, यहाँ तक कि उसके अन्दर चले जाने के बाद तब टूटी हुई छत की राह वे लोग जो लाली और किशोरी को पकड़ने के लिये आ रहे थे नीचे इस कोठरी में उतर सके। भीतर से ताला बन्द करके लाली ने कहा, "अब हम लोग निश्चिन्त हुए, डर केवल इतना ही है कि किसी दूसरी राह से कोई आकर हम लोगों को तंग न करे, पर जहाँ तक मैं जानती हूँ और जो कुछ मैंने सुना है उससे तो विश्वास है कि इस अजायबघर में आने के लिये और कोई राह नहीं है।"

लाली और किशोरी अब एक ऐसे घर में पहुँचीं जिसकी छत बहुत ही नीची थी यहाँ तक कि हाथ उठाने से छत छूने में आती थी। यह घर बिल्कुल अँधेरा था। लाली ने अपनी गठरी खोली और सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई। मालूम हुआ कि यह एक कोठरी है जिसके चारो तरफ की दीवार पत्थर की बनी हुई तथा बहुत ही चिकनी और मजबूत है। लाली खोजने लगी कि इस मकान से किसी दूसरे मकान में जाने के लिये रास्ता या दरवाजा है या नहीं।

❀ इस मकान में जहा जहा लाली ने ताला खोला इसी ताली और इसी ढंग से खोला।

जमीन में एक दर्वाजा बना हुआ दिखा जिसे लाली ने खोला और हाथ में मोमबत्ती लिये नीचे उतरी। लगभग बीस पचीस सीढ़ियाँ उतर कर दोनों एक सुरंग में पहुंचीं जो बहुत दूर तक चली गई थी। ये दोनों लगभग तीन सौ कदम के गई होंगी कि यह आवाज दोनों के कानों में पहुंची :—

"हाय, एक ही दफे मार डाल, क्यों दुःख देता है!"

यह आवाज सुन कर किशोरी कांप गई और उसने रुक कर लाली से पूछा, "बहिन, यह आवाज कैसी है? आवाज बारीक है और किसी औरत की मालूम होती है!"

लाली०। मुझे मालूम नहीं कि यह आवाज कैसी है और न इसके बारे में बूढ़ी माँजी ने मुझे कुछ कहा ही था।

किशोरी०। मालूम पड़ता है कि किसी औरत को कोई दुःख दे रहा है, कहीं ऐसा न हो कि वह हम लोगों को भी सतावे, हम दोनों का हाथ खाली है, एक छुरा तक पास में नहीं।

लाली०। मैं अपने साथ दो छुरे लाई हूं, एक अपने वास्ते और एक तेरे वास्ते। (कमर से एक छुरा निकाल कर और किशोरी के हाथ में दे कर) ले एक तू रख, मुझे खूब याद है एक दफे तूने कहा था कि मैं यहाँ रहने की बनिस्बत मौत पसन्द करती हूं, फिर क्यों डरती है? देख मैं तेरे साथ जान देने को तैयार हूं।

उसके पास ही छोटी सी पत्थर की चौकी पर साफ और हलकी पौशाक पहिरे एक बुड्ढा बैठा हुआ छुरे से कोई चीज काट रहा था, इसका मुँह उसी तरफ था जिधर लाली और किशोरी खड़ी वहा की कैफियत देख रही थीं। उस बूढे के सामने भी एक चिराग जल रहा था जिससे उसकी सूरत साफ साफ मालूम होती थी। उस बुड्ढे की उम्र लगभग सत्तर वर्ष के होगी, उसकी सुफेद दाढी नाभी तक पहुँचती थी और दाढ़ी तथा मूछों ने उसके चेहरे का ज्यादा हिस्सा छिपा रक्खा था।

उस दालान की ऐसी अवस्था देख कर किशोरी और लाली दोनों हिचकीं और उन्होंने चाहा कि पीछे की तरफ मुड चलें मगर पीछे फिर कर कहाँ जायें इस विचार ने उनके पैर उसी जगह जमा दिये। उन दोनों के पैरों की आहट उस बुड्ढे ने भी पाई, सर उठा कर उन दोनों की तरफ देखा और कहा—"वाह वाह, लाली और किशोरी भी आ गई! आओ आओ, मैं बहुत देर से राह देख रहा था।।"

दूसरा बयान

कञ्चनसिंह के मारे जाने और कुँअर इन्द्रजीतसिंह के गायब हो जाने से लश्कर मे बड़ी हलचली मच गई। पता लगाने के लिए चारो तरफ जासूस भेजे गये। ऐयार लोग भी इधर उधर फैल गये और फसाद मिटाने के लिये दिलोजान से कोशिश करने लगे। राजा वीरेन्द्रसिंह से इजाजत ले कर तेजसिंह भी रवाना हुए और भेप वदल कर रोहतासगढ किले के अन्दर चले गये। किले के सदर दर्वाजे पर पहरे का पूरा इन्तजाम था मगर तेजसिंह की फकीरी सूरत पर किसी ने शक न किया।

साधू की सूरत बने हुए तेजसिंह सात दिन तक रोहतासगढ़ किले के अन्दर घूमते रहे। इस बीच मे उन्होंने हर एक मोहल्ला, बाजार, गली, रास्ता, देवल, धर्मशाला इत्यादि को अच्छी तरह देख और समझ लिया, कई बार दर्बार मे भी जा कर राजा दिग्विजयसिंह और उनके दीवान

तथा ऐयारों की चाल और बातचीत के ढंग पर ध्यान दिया और यह भी मालूम किया कि राजा दिग्विजयसिंह किस किस को चाहता है, किस किस की खातिर करता है, और किस किस को अपना विश्वासपात्र समझता है। इस सात दिन के बीच में तेजसिंह को कई बार चोबदार और औरत बनने की भी जरूरत पड़ी और अच्छे अच्छे घरों में घुस कर वहां की कैफियत और हालत को भी देख सुन आये। एक दफे तेजसिंह उस शिवालय में भी गये जिसमें भैरोसिंह और बद्रीनाथ ने ऐयारी की थी या जहां से कुँअर कल्याणसिंह को पकड़ ले गये थे।

तेजसिंह ने उस शिवालय के रहने वालों तथा पुजेरियों की अजब हालत देखी। जब से कुँअर कल्याणसिंह गिरफ्तार हुए थे तब से उन लोगों के दिल में ऐसा डर समा गया था कि वे बात बात में चौंकते और डरते थे, रात को एक पत्ती के खड़कने से भी किसी ऐयार के आने का गुमान होता था, साधु ब्राह्मणों की सूरत से उन्हें घृणा हो गई थी, किसी संन्यासी ब्राह्मण साधु को देखा और चट बोल उठे कि ऐयार है, किसी मजदूर को भी अगर मंदिर के आगे खड़ा पाते तो चट उसे ऐयार समझ लेते और जब तक गर्दन में हाथ दे हाते के बाहर न कर देते चैन न लेते। इत्तिफाक से आज तेजसिंह भी साधु की सूरत बने शिवाले में जा पहुँचे। पुजेरियों ने देखते ही गुल करना शुरू किया कि 'ऐयार है, ऐयार है, धरो पकड़ो, जाने न पावे!' बेचारे तेजसिंह बड़ा घबड़ाये और ताज्जुब करने लगे कि इन लोगों को कैसे मालूम हो गया कि हम ऐयार हैं, क्योंकि तेजसिंह को इस बात का गुमान भी न था कि यहां के रहने वाले कुत्ते बिल्ली को भी ऐयार समझते हैं, मगर यकायकी यहाँ से भाग निकलना भी मुनासिब न समझ कर रुके और बोले :—

तेज०। तुम कैसे जानते हो कि हम ऐयार हैं?

एक पुजेरी०। अजी हम खूब जानते हैं, सिवाय ऐयार के कोई दूसरा हमारे सामने आ सकता है! अजी तुम्हीं लोग तो हमारे कुँअर

साहब को पकड़ ले गये हो या कोई दूसरा ? बस बस, यहाँ से चले जाओ, नहीं तो कान पकड़ के खा जायगे !

'बस बस, यहाँ से चले जाओ' इत्यादि सुनते ही तेजसिंह समझ गये कि ये लोग बेवकूफ हैं, अगर हमारे ऐयार होने का इन्हें विश्वास होता तो ये लोग 'चले जाओ' कभी,न कहते बल्कि हमें गिरफ्तार करने का उद्योग करते, बस इन्हें भैरोसिंह और बद्रीनाथ डरा गये हैं और कुछ नहीं।

तेजसिंह खड़े यह सोच ही रहे थे कि इतने मे एक लँगड़ा भिखमगा हाथ मे ठीकड़ा लिये लाठी टेकता वहाँ आ पहुँचा और पुजेरीजी की जयजयकार मनाने लगा। सूरत देखते ही एक पुजेरी चिल्ला उठा और बोला, "लो देखो, एक दूसरा ऐयार भी आ पहुँचा, अबकी शैतान लँगड़ा बन कर आया है, जानता नहीं कि हमलोग बिना पहिचाने न रहेंगे, भाग नहीं तो सर तोड़ डालूँगा !"

अब तेजसिंह को पूरा विश्वास हो गया कि ये लोग सिड़ी हो गये हैं, जिसे देखते हैं उसे ही ऐयार समझ लेते हैं। तेजसिंह वहाँ से लौटे और यह सोचते हुए खिड़की की राह * दीवार के पार हो जगल में चले गये कि अब यहाँ के ऐयारों से मिलना चाहिये और देखना चाहिये कि वे कैसे हैं और ऐयारी के फन मे कितने तेज है।

इस किले के अन्दर गाँजा पिलाने वालों की कई दूकानें थीं जिन्हें

---

* रोहतासगढ किले की बड़ी चहारदीवारी मे चारो तरफ छोटी छोटी बहुत सी खिड़कियाँ थीं जिनमे लोहे के मजबूत दर्वाजे लगे रहते थे और दो सिपाही बराबर पहरा दिया करते थे। फकीर मोहताज और गरीब रिआया अक्सर उन खिड़कियों (छोटे दर्वाजों) की राह जगल मे से सूखी लकड़ियाँ चुनने या जगली फल तोड़ने या जरूरी काम के लिये बाहर जाया करते थे, मगर चिराग जलते ही ये खिड़कियाँ बन्द कर दी जाती थीं।

यहाँ वाले 'अड्डा' कहा करते थे। चिराग जलने के बाद ही से गंजेड़ी लोग वहाँ जमा होते जिन्हें अड्डे का मालिक गाँजा बना बना कर पिलाता और उसके एवज में पैसे वसूल करता। वहाँ तरह तरह की गप्पें उड़ा करती थीं जिनसे शहर भर का हाल झूठ सच मिला जुला लोगों को मालूम हो जाया करता था।

शाम होने के पहिले ही तेजसिंह जंगल से लौटे, लकड़हारों के साथ साथ बैरागी के भेष में किले के अन्दर दाखिल हुए, और सीधे अड्डे पर चले गये जहाँ गंजेड़ी लोग दम पर दम लगा कर धुएँ का गुब्बार बांध रहे थे। यहाँ तेजसिंह का बहुत कुछ काम निकला और उन्हें मालूम हो गया कि महाराज के यहाँ केवल दो ऐयार हैं, एक का नाम रामानन्द दूसरे का नाम गोविन्दसिंह है। गोविन्दसिंह तो कुँअर कल्याणसिंह को छुड़ाने के लिये चुनार गया हुआ है बाकी रामानन्द यहाँ मौजूद है। दूसरे दिन तेजसिंह ने दरबार में जाकर रामानन्द को अच्छी तरह देख लिया और निश्चय कर लिया कि आज रात को इसी के साथ ऐयारी करेंगे, क्योंकि रामानन्द का ढाँचा तेजसिंह से बहुत कुछ मिलता था और यह भी जाना गया था कि महाराज सब से ज्यादा रामानन्द को मानते और अपना विश्वासपात्र समझते हैं।

आधी रात के समय तेजसिंह सन्नाटा देख रामानन्द के मकान में कमन्द लगा कर चढ़ गये। देखा कि धूर ऊपर वाले बँगले में रामानन्द मसहरी के ऊपर पड़ा खुर्राटे ले रहा है, दर्वाजे पर पर्दे की जगह एक जाल लटक रहा है जिसमें छोटी छोटी घंटियाँ बंधी हुई हैं। पहिले तो तेजसिंह ने उसे एक मामूली पर्दा समझा मगर ये तो बड़े ही चालाक और होशियार थे, यकायक पर्दे पर हाथ डालना मुनासिब न समझ कर उसे गौर से देखने लगे। जब मालूम हुआ कि नालायक ने इस जालदार पर्दे में बहुत सी घंटियाँ लटका रक्खी हैं, तो समझ गये कि यह बड़ा ही बेवकूफ है, समझता है कि इन घंटियों के लटकाने से हम बचे रहेंगे, इस

घर मे जब कोई पर्दा हटा कर आवेगा तो घटियों की आवाज से हमारी आँख खुल जायगी, मगर यह नहीं समझता कि ऐयार लोग बुरे होते हैं।

तेजसिंह ने अपने बटुए में से कैंची निकाली और बहुत सम्हाल कर पर्दे में से एक एक करके घटी काटने लगे। थोड़ी ही देर में सब घटियों को काट किनारे कर दिया और पर्दा हटा अन्दर चले गये। रामानन्द अभी तक खुर्राटे ले रहा था। तेजसिंह ने बेहोशी की दवा उसके नाक के आगे की, हलका धूरा सास लेते ही दिमाग में चढ गया, रामानन्द को एक छींक आई जिससे मालूम हुआ कि अब बेहोशी इसे घण्टों तक होश मे न आने देगी।

तेजसिंह ने बटुए मे से एक उस्तरा निकाल कर रामानन्द की दाढी और मूँछ मूड़ ली और उसके बाल हिफाजत से अपने बटुए में रख कर उसी रग की दूसरी दाढी और मूँछ उसे लगा दी जो उन्होंने दिन ही को किले के बाहर जगल मे तैयार की थी। बस तेजसिंह इतने ही काम के लिये रामानन्द के मकान पर गए थे और इसे पूरा कर कमन्द के सहारे नीचे उतर आये तथा धर्मशाला की तरफ रवाना हुए।

तेजसिंह जब बैरागी साधू के भेष में रोहतासगढ किले के अन्दर आए थे तो उन्होंने धर्मशाला * के पास एक बैठक वाले के मकान में छोटी सी कोठड़ी किराये पर ले ली थी और उसी मे रह कर अपना काम करते थे। उस कोठड़ी का एक दरवाजा सडक की तरफ था जिसमें ताला लगा कर उसकी ताली वे अपने पास रखते थे, इसलिये उस कोठड़ी मे जाने आने के लिये उनको दिन और रात एक समान था।

रामानन्द के मकान मे जब तेजसिंह अपना काम करके उतरे उस वक्त पहर भर रात बाकी थी, धर्मशाला के पास अपनी कोठड़ी मे गए और सवेरा होने के पहिले ही अपनी सूरत रामानन्द की सी बना और

* रोहतासगढ मे एक ही धर्मशाला थी।

वही दाढ़ी और मूँछ जो मूड़ लाये थे दुरुस्त करके खुद लगा कोठड़ी से बाहर निकले और शहर में गश्त लगाने लगे, सवेरा होते तक राजमहल की तरफ रवाना हुए और इत्तला करा कर महाराज के पास पहुंचे।

हम ऊपर लिख आए हैं कि रोहतासगढ़ में रामानन्द और गोविन्दसिंह केवल दो ही ऐयार थे। इन दोनों के बारे में इतना और लिख देना जरूरी है कि इन दोनों में से गोविन्दसिंह तो ऐयारी के फन में बहुत ही तेज और होशियार था और वह दिन रात यही काम किया करता था। रामानन्द भी ऐयारी का फन अच्छी तरह जानता था मगर उसे अपनी दाढ़ी और मूँछ बहुत प्यारी थी इसलिये वह ऐयारी के वे ही काम करता था जिसमें दाढ़ी और मूँछ मुड़ाने की जरूरत न पड़े और इसलिये महाराज ने भी उसे दीवानी का काम दे रक्खा था। इसमें भी कोई शक नहीं कि रामानन्द बहुत ही खुशदिल मसखरा और बुद्धिमान था और उसने अपनी तदबीरों से महाराज का दिल अपनी मुट्ठी में कर लिया था।

रामानन्द की सूरत बने हुए तेजसिंह महाराज के पास पहुँचे, मामूल से बहुत पहिले रामानन्द को आते देख महाराज ने समझा कि कोई नई खबर लाया है।

महा०। आज तुम बहुत सवेरे आये! क्या कोई नई खबर है?

रामा०। (गाँस कर) महाराज, हमारे यहाँ कल तीन मेहमान आये हैं।

महा०। कौन कौन?

रामा०। एक तो नाँगी जिसने मुझे बहुत ही तंग कर रक्खा है, दूसरे कुँअर आनन्दसिंह, तीसरे उनके चार ऐयार जो आज ही कल में किशोरी को यहाँ से निकाल ले जाने का दावा करते हैं।

महा०। (हँस कर) मेहमान तो बड़े नाजुक हैं! इनकी खातिर का भी कोई इन्तजाम किया गया है या नहीं?

रामा०। इसीलिए तो सरकार में आया हूँ। कल दर्बार में उनके

ऐयार मौजूद थे। सब के पहिले किशोरी का बन्दोबस्त करना चाहिये, उसकी हिफाजत में किसी तरह की कमी न होनी चाहिए।

महा०। जहां तक मैं समझता हूँ वे लोग किशोरी को तो किसी तरह नहीं ले जा सकते हाँ वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को जिस तरह भी हो सके गिरफ्तार करना चाहिये।

रामा०। वीरेन्द्रसिंह के ऐयार तो अब मेरे पंजे से बच नहीं सकते। वे लोग सूरत बदल कर दर्बार मे जरूर आवेंगे, और ईश्वर चाहे तो आज ही किसी को गिरफ्तार करूँगा, मगर वे लोग बड़े ही धूर्त और चालबाज हैं, प्रायः कैदखाने से भी निकल जाया करते हैं।

महा०। खैर हमारे तहखाने से निकल जायँगे तो समझेंगे कि चालाक और धूर्त हैं।

महाराज की इतनी ही बातचीत से तेजसिंह को मालूम हो गया कि यहाँ कोई तहखाना है जिसमें कैदी लोग रक्खे जाते हैं, अब उन्हें यह फिक्र हुई कि जहाँ तक हो सके इस तहखाने का ठीक ठीक हाल मालूम करना चाहिये। यह सोच तेजसिंह ने अपनी लच्छेदार बातचीत मे महाराज को ऐसा उलझाया कि मामूली समय से भी आधे घण्टे की देर हो गई। ऐसा करने से तेजसिंह का अभिप्राय यह था कि देर होने से असली रामानन्द अवश्य महाराज के पास आवेगा और मुझे देख चौंकेगा, उसी समय मे अपना वह काम निकाल लूँगा जिसके लिये उसकी दाढ़ी मूँड़ लाया हूँ, और आखिर तेजसिंह का सोचना ठीक भी निकला।

तेजसिंह रामानन्द की सूरत मे जिस समय महाराज के पास आए थे उस समय ड्योढ़ी पर जितने सिपाही पहरा दे रहे थे वे सब बदल गए और दूसरे सिपाही अपनी बारी के अनुसार ड्योढ़ी के पहरे पर मुस्तैद हुए जो इस बात से बिल्कुल ही बेखबर थे कि रामानन्द महाराज से मिलने के लिये महल मे गए हुए हैं।

ठीक समय पर दर्बार लग गया। बड़े बड़े ओहदेदार, नायब

खिदमतगार आया और हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया। उसकी सूरत से मालूम होता था कि वह घबड़ाया हुआ है और कुछ कहना चाहता है मगर आवाज मुँह से नहीं निकलती। तेजसिंह समझ गये कि अब कुछ गुल खिला चाहता है, आखिर खिदमतगार की तरफ देख कर बोले :—

तेज०। क्यों क्या कहना चाहता है?

खिद०। मैं ताज्जुब के साथ यह इत्तला करते डरता हूँ कि दीवान साहब (रामानन्द) ड्योढ़ी पर हाजिर हैं!

महा०। रामानन्द!

खिद०। जी हाँ।

महा०। (तेजसिंह की तरफ देख कर) यह क्या मामला है?

तेज०। (मुस्कुरा कर) महाराज, बस अब काम निकला ही चाहता है। मैं जो कुछ अर्ज कर चुका वही बात है। कोई ऐयार मेरी सूरत बन कर आया है और आपको धोखा दिया चाहता है, लीजिये इस कम्बख्त को तो मैं अभी गिरफ्तार करता हूँ फिर देखा जायगा। सरकार उसे हाजिर होने का हुक्म दें, फिर देखें मैं क्या तमाशा करता हूँ। मुझे जरा छिप जाने दें, वह आकर बैठ जाय तो मैं उसका पर्दा खोलूँ।

महा०। तुम्हारा कहना ठीक है, बेशक कोई ऐयार है, अच्छा तुम छिप जाओ, मैं उसे बुलाता हूँ।

तेज०। बहुत खूब, मैं छिप जाता हूँ, मगर ऐसा है कि सरकार उसकी दाढ़ी मूँछ पर खूब ध्यान दें, मैं एकाएक पर्दे से निकल कर उसकी दाढ़ी उखाड़ लूँगा क्योंकि नकली दाढ़ी जरा ही सा झटका चाहती है।

महा०। (हँस कर) अच्छा अच्छा, (खिदमतगार की तरफ देख कर) देख उनसे और कुछ मत कहियो, केवल हाजिर होने का हुक्म सुना दे।

तेजसिंह दूसरे कमरे में जाकर छिप रहे और असली रामानन्द धीरे धीरे वहाँ पहुँचा जहाँ महाराज विराज रहे थे। रामानन्द को ताज्जुब था

कि आज महाराज ने देर क्यों लगाई, इससे उसका चेहरा भी कुछ उदास सा हो रहा था। दाढ़ी तो वही थी जो तेजसिंह ने लगा दी थी। तेजसिंह ने दाढ़ी बनाते समय जान बूझ कर कुछ फर्क डाल दिया था जिस पर रामानन्द ने तो कुछ ध्यान न दिया मगर वही फर्क अब महाराज की आँखों में खटकने लगा। जिस निगाह से कोई किसी बहुरूपिये को देखता है उसी निगाह से बिना कुछ बोले चाले महाराज अपने दीवान साहब को देखने लगे। रामानन्द यह देख कर और भी उदास हुआ कि इस समय महाराज की निगाह में अन्तर क्यों पड़ गया है।

तरद्दुद और ताज्जुब के सबब रामानन्द के चेहरे का रंग जैसे जैसे बदलता गया वैसे वैसे उसके ऐयार होने का शक भी महाराज के दिल में बैठता गया। कई सायत बीतने पर भी न तो रामानन्द ही कुछ पूछ सका और न महाराज ही ने उसे बैठने का हुक्म दिया। तेजसिंह ने अपने लिये यह मौका बहुत अच्छा समझा, झट बाहर निकल आये और ऐंठते हुए एक फर्शी सलाम उन्होंने रामानन्द को किया। ताज्जुब तरद्दुद और डर से रामानन्द के चेहरे का रंग उड़ गया और वह एकटक तेजसिंह की तरफ देखने लगा।

ऐयारी भी कठिन काम है। इस फन में सब से भारी हिस्सा जीवट का है। जो ऐयार जितना डरपोक होगा उतना ही जल्द फंसेगा। तेजसिंह को देखिये, किस जीवट का ऐयार है कि दुश्मन के घर में घुस कर भी जरा नहीं डरता और दिन दोपहर सच्चे को झूठा बना रहा है! ऐसे समय अगर जरा भी उसके चेहरे पर खौफ या तरद्दुद की निशानी आ जाय तो ताज्जुब नहीं कि वह खुद फंस जाय।

तेजसिंह ने रामानन्द को बात करने की भी मोहलत न दी, ऐंठ कर उसकी तरफ देखा और कहा, "क्यों बे! क्या महाराज दिग्विजयसिंह के दर्बार को तैंने ऐसा वैसा समझ रक्खा है? क्या तू यहां भी ऐयारी से

काम निकालना चाहता है ? यहां तेरी कारीगरी न लगेगी, देख तेरी गदहे की भी मुटाई मैं पचकाता हूँ।"

तेजसिंह ने फुर्ती से रामानन्द की दाढ़ी पर हाथ डाल दिया और महाराज को दिखा कर एक झटका दिया। झटका तो जोर से दिया मगर इस ढंग से कि महाराज को बहुत हलका झटका मालूम हो। रामानन्द की नकली दाढ़ी अलग हो गई।

इस तमाशे ने रामानन्द को पागल सा बना दिया। उसके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगी। यह समझ कर कि यह ऐयार मुझ सच्चे को झूठा किया चाहता है उसे क्रोध चढ़ आया और वह खंजर निकाल कर तेजसिंह पर झपटा, पर तेजसिंह वार बचा गया। महाराज को रामानन्द पर और भी शक बैठ गया। उन्होंने उठ कर रामानद की कलाई जिसमें खंजर लिये था मजबूती से पकड़ ली और एक घूँसा उसके मुँह पर दिया। ताकतवर महाराज के हाथ का घूँसा खाते ही रामानद का सर घूम गया और वह जमीन पर बैठ गया। तेजसिंह ने जेब से बेहोशी की दवा निकाली और जबर्दस्ती रामानन्द को सुंघा दी।

महा०। क्यों इसे बेहोश क्यों कर दिया ?

तेज०। महाराज, गुस्से में आया हुआ और अपने को फँसा जान यह ऐयार न मालूम कैसी कैसी बेहूदा बातें बकता, इसीलिये इसे बेहोश कर दिया। कैदखाने में ले जाने बाद फिर देखा जायगा।

महा०। खैर यह भी अच्छा ही किया, अब मुझसे ताली लो और तहखाने में ले जाकर इसे दारोगा के सुपुर्द करो।

महाराज की बात सुन तेजसिंह घबड़ाये और सोचने लगे कि अब बुरी हुई। महाराज से तहखाने की ताली ले कर कहां जाऊँ ? मैं क्या जानूँ तहखाना कहाँ है और दारोगा कौन है ? बड़ी मुश्किल हुई। अगर जरा भी नाकर नूकर करता हूँ तो उल्टी बातें गले पड़ती हैं। आखिर कुछ सोच विचार कर तेजसिंह ने कहा :—

तेज० । महाराज भी साथ चलें तो ठीक है ।

महा० । क्यों ?

तेज० । दारोगा साहब इस ऐयार को और मुझे देख कर घबड़ायेंगे और उन्हें न जाने क्या क्या शक पैदा हो । यह पाजी अगर होश में आ जायेगा तो जरूर कुछ बात बनावेगा, आप रहेंगे तो दारोगा को किसी तरह का शक न होगा ।

महा० । (हंस कर) अच्छा चलो हम भी चलते हैं ।

तेज० । हां महाराज, फिर मुझे पीठ पर यह भारी लाश लादे ताला खोलने और बन्द करने में भी मुश्किल होगी ।

महाराज ने अपने कलमदान में से ताली निकाली और खिदमतगार से एक लालटेन मंगवा कर हाथ में ली । तेजसिंह ने रामानन्द की गठरी बांध पीठ पर लादी । तेजसिंह को साथ लिये हुए महाराज अपने सोने वाले कमरे में गये और दीवार में जड़ी हुई एक आलमारी का ताला खोला । तेजसिंह ने देखा कि दीवार पोली है और उस जगह से नीचे उतरने का एक रास्ता है । रामानन्द की गठरी लिये हुए महाराज के पीछे पीछे तेजसिंह नीचे उतरे, एक दालान में पहुंचने के बाद छोटी सी कोठरी में जाकर दर्वाजा खोला और बहुत बड़ी बारहदरी में पहुंचे । तेजसिंह ने देखा कि बारहदरी के बीचोबीच में छोटी सी गद्दी लगाये एक बूढ़ा आदमी बैठा कुछ लिख रहा है जो महाराज को देखते ही उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ कर सामने आया ।

महा० । दारोगा साहब, देखिये आज रामानन्द ने दुश्मन के एक ऐयार को फांसा है, इसे अपनी हिफाजत में रखिये ।

तेज० । (पीठ से गठरी उतार और उसे खोल कर) लीजिये इन्हें सम्हालिये, अब आप जानिये ।

दारोगा० । (ताज्जुब से) क्या यह दीवान साहब की सूरत बन कर आया था ?

तेज० । जी हाँ, इसने मुझी को फजूल समझा !

महा० । (हँस कर) खैर चलो, अब दारोगा साहब इसका वन्दोवस्त कर लेंगे ।

तेज० । महाराज यदि आज्ञा हो तो मै ठहर जाऊँ और इस नालायक को होश में ला कर अपने मतलब की बातों का कुछ पता लगाऊँ । सरकार को भी अटकने के लिये मै कहता परन्तु दर्बार का समय बिल्कुल निकल जाने और दर्बार न करने से रिआया के दिल में तरह तरह के शक पैदा होंगे और आज कल ऐसा न होना चाहिये ।

महा० । तुम ठीक कहते हो, अच्छा मै जाता हूँ, अपनी ताली साथ लिये जाता हूँ और ताला बन्द करता जाता हूँ, तुम दूसरी राह से दारोगा के साथ आना । (दारोगा की तरफ देख कर) आप भी आइयेगा और अपना रोजनामचा लेते आइयेगा ।

तेजसिंह को उसी जगह छोड़ महाराज चले गये । रामानन्द रूपी तेजसिंह को लिये दारोगा साहब अपनी गद्दी पर आए और अपनी जगह तेजसिंह को बैठा कर आप नीचे बैठे । तेजसिंह ने आधे घण्टे तक दारोगा को अपनी बातों में खूब ही उलझाया, इसके बाद यह कहते हुए उठे कि 'अच्छा अब इस ऐयार को होश मे लाकर मालूम करना चाहिये कि यह कौन है, और उस ऐयार के पास आये । अपने जेब मे हाथ डाल लखलखे की डिबिया खोलने लगे, आखिर बोले, "ओफ ओह, लखलखे की डिबिया तो दीवानखाने ही मे भूल आये, अब क्या किया जाय ?"

दारो० । मेरे पास लखलखे की डिबिया है, हुक्म हो तो लाऊँ ?

तेज० । लाइये मगर आपके लखलखे से यह होश मे न आयेगा क्योंकि जो बेहोशी की दवा इसे दी गई है वह मैंने नए ढग से बनाई है और उसके लिए लखलखे का नुसखा भी दूसरा है, खैर लाइये तो सही शायद काम चल जाय ।

"बहुत अच्छा" कह कर दारोगा साहब लखलखा लेने चले गये,

इधर निगला पाकर तेजसिंह ने एक दूसरी डिबिया जेब से निकाली जिसमें लाल रंग की कोई बुकनी थी, एक चुटकी रामानन्द के नाक मे साँस के साथ चढ़ा दी और निश्चिन्त हो कर बैठे, अब सिवाय तेजसिंह के दूसरे का बनाया लखलखा उसे कब होश में ला सकता है, हाँ दो एक रोज तक पड़े रहने पर वह आप से आप चाहे भले ही होश मे आ जाय।

दम भर मे दारोगा साहब लखलखे की डिबिया लिये आ पहुँचे, तेजसिंह ने कहा, "बस आप ही सुँघाइये और देखिये इस लखलखे से कुछ काम निकलता है या नहीं।"

दारोगा साहब ने लखलखे की डिबिया बेहोश रामानन्द की नाक से लगाई पर क्या असर होना था, लाचार तेजसिंह का मुँह देखने लगे।

तेज०। क्यों व्यर्थ मेहनत करते हैं, मे पहिले ही कह चुका हूँ कि इस लखलखे से काम नहीं चलेगा। चलिये महाराज के पास चलें, इसे यों ही रहने दीजिये, अपना लखलखा लेकर फिर लौटेंगे तो काम चलेगा।

दारोगा०। जैसी मर्जी, इस लखलखे से तो काम नहीं चलता।

दारोगा साहब ने रोजनामचे की किताब बगल में दाबी और तालियों का झब्बा और लालटेन हाथ में लेकर रवाना हुए। एक कोठरी में घुस कर दारोगा साहब ने दूसरा दर्वाजा खोला, ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़ियाँ नजर आईं। ये दोनों ऊपर चढ़ गये और दो तीन कोठरियों में घूमते हुए एक सुरंग में पहुँचे। दूर तक चले जाने बाद इनका सर छत में अड़ा। दारोगा ने एक सुराख में ताली लगाई और कोई खटका दबाया। एक पत्थर का टुकड़ा अलग हो गया और ये दोनों बाहर निकले। यहाँ तेजसिंह ने अपने को एक कब्रिस्तान में पाया।

इस सन्तति के तीसरे हिस्से के चौदहवें बयान मे हम इस कब्रिस्तान का हाल लिख चुके हैं। इसी राह से कुँअर आनन्दसिंह, भैरोसिंह और तारासिंह उस तहखाने में गये थे। इस समय हम जो हाल लिख रहे हैं यह कुँअर आनन्दसिंह के तहखाने मे जाने के पहिले का है, तिलिस्मा

मिलाने के लिए फिर पीछे की तरफ लौटना पड़ा। तहखाने के हर एक दर्वाजे में पहिले ताला लगा रहता था मगर जब तेजसिंह ने इसे अपने कब्जे में कर लिया (जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा) तब से ताला लगाना बन्द हो गया, केवल खटकों ही पर कार्रवाई रह गई।

तेजसिंह ने चारो तरफ निगाह दौड़ा कर देखा और मालूम किया कि इस जङ्गल में जासूसी करते हुए कई दफे आ चुके हैं और इस कब्रिस्तान मे भी पहुँच चुके है मगर जानते नहीं थे कि यह कब्रिस्तान क्या है और किस मतलब से बना हुआ है। अब तेजसिंह ने सोच लिया कि हमारा काम चल गया, दारोगा साहब को इसी जगह फँसाना चाहिये जाने न पावें।

तेज०। दारोगा साहब, हकीकत में तुम बड़े ही जूतीखोर हौ !

दारोगा०। (ताज्जुब से तेजसिंह का मुँह देख के) मैंने क्या कसूर किया है जो आप गाली दे रहे है ? ऐसा तो कभी नहीं हुआ था !!

तेज०। फिर मेरे सामने गुर्राता है ! कान पकड़ के उखाड़ लूँगा !!

दारोगा०। आज तक महाराज ने भी कभी मेरी ऐसी बेइज्जती नहीं की थी !!

तेजसिंह ने दारोगा को एक लात ऐसी लगाई कि वह बेचारा धम्म से जमीन पर गिर पड़ा। तेजसिंह उसकी छाती पर चढ़ बैठे और बेहोशी की दवा जबर्दस्ती नाक में ठूँस दी। बेचारा दारोगा बेहोश हो गया। तेजसिंह ने दारोगा की कमर से और अपनी कमर से भी चादर खोली और उसी में दारोगा की गठरी बाँध तालों का गुच्छा और रोजनामचे की किताब भी उसी में रख पीठ पर लाद तेजी के साथ अपने लश्कर की तरफ रवाना हुए तथा दोपहर दिन चढते चढ़ते राजा वीरेन्द्रसिंह के खेमे में जा पहुँचे। पहिले तो रामानन्द की सूरत देख वीरेन्द्रसिंह चौंके मगर जब बन्धे हुए इशारे से तेजसिंह ने अपने को जाहिर किया तो वे बहुत ही खुश हुए।

तीसरा बयान

तेजसिंह के लौट आने से राजा बीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और उस समय तो उनकी खुशी और भी ज्यादे हो गई जब तेजसिंह ने रोहतासगढ़ जाकर अपनी कारवाई करने का खुलासा हाल कहा। रामानन्द की गिरफ्तारी सुन कर हँसते हँसते लोट गये मगर साथ ही इसके यह सुन कर कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह का पता रोहतासगढ़ में नहीं लगता बल्कि मालूम होता है कि वे रोहतासगढ़ में नहीं हैं, राजा बीरेन्द्रसिंह उदास हो गये। तेजसिंह ने उन्हें हर तरह से समझाया और दिलासा दिया। थोड़ी देर बाद तेजसिंह ने अपने दिल की वे सब बातें कहीं जो वे किया चाहते थे, बीरेन्द्रसिंह ने उनकी राय बहुत पसन्द की और बोले:—

बीरेन्द्र०। तुम्हारी कौन सी ऐसी तरकीब है जिसे मैं पसन्द नहीं कर सकता, हाँ यह कहो कि इस समय अपने साथ किस ऐयार को ले जाओगे?

तेज०। मुझे तो इस समय कई ऐयारों की जरूरत थी मगर यहाँ केवल चार मौजूद हैं और बाकी सब कुँअर इन्द्रजीतसिंह का पता लगाने गये हुए हैं, खैर कोई हर्ज नहीं पण्डित बद्रीनाथ को तो इसी लश्कर में रहने दीजिये, उन्हें किसी दूसरी जगह भेजना मैं मुनासिब नहीं समझता क्योंकि यहाँ बड़े ही चालाक और पुराने ऐयार का काम है, बाकी ज्योतिषीजी भैरो और तारा को मैं अपने साथ ले जाऊँगा।

बीरेन्द्र०। अच्छी बात है, इन तीनों ऐयारों से तुम्हारा काम बखूबी चलेगा।

तेज०। जी नहीं, मैं तीनों ऐयारों को अपने साथ नहीं रक्खा चाहता बल्कि भैरो और तारा को वहाँ का रास्ता दिखा कर वापस कर दूँगा। इसके बाद ये दोनों थोड़े से लड़ाकों को मेरे पास पहुँचा कर फिर आपको या कुँअर आनन्दसिंह को लेकर मेरे पास जायेंगे, तब वह सब कारवाई की जायगी जो मैं आपसे कह चुका हूँ।

बीरेन्द्र०। और यह दारोगा वाली किताब जो तुम ले आये हो क्या होगी?

तेज० । इसे फिर अपने साथ ले जाऊँगा और मौका मिलने पर शुरू से आखीर तक पढ़ जाऊँगा, यही तो एक चीज हाथ लगी है ।

वीरेन्द्र० । बेशक उम्दा चीज है, (किताब तेजसिंह के हाथ से लेकर) रोहतासगढ़ तहखाने का कुल हाल इससे तुम्हें मालूम हो जायगा, बल्कि इसके अलावे वहाँ का और भी बहुत कुछ भेद मालूम होगा ।

तेज० । जी हाँ, इसमें दारोगा ने रोज रोज का हाल लिखा है, मैं समझता हूं वहाँ ऐसी ऐसी और भी कई किताबें होंगी जो इसके पहिले के और दारोगों के हाथ से लिखी गई होंगी ।

वीरेन्द्र० । जरूर होंगी, और इससे उस तहखाने के खजाने का भी पता लगता है ।

तेज० । लीजिए अब वह खजाना भी हमी लोगों का हुआ चाहता है । अब हमे यहाँ देर न करके बहुत जल्द वहाँ पहुचना चाहिये, क्योंकि दिग्विजयसिंह मुझे और दारोगा को अपने पास बुला गया था, देर हो जाने पर वह फिर तहखाने में आवेगा और किसी को न देखेगा तो सब काम ही चौपट हो जायगा ।

वीरेन्द्र० । ठीक है, अब तुम जाओ, देर मत करो ।

कुछ जलपान करने बाद ज्योतिषीजी भैरोसिंह और तारासिंह को साथ लिये हुए तेजसिंह वहां से रोहतासगढ की तरफ रवाना हुए और दो घण्टे दिन रहते ही तहखाने में जा पहुँचे । अभी तक तेजसिंह रामानन्द की सूरत में थे । तहखाने का रास्ता दिखाने बाद भैरोसिंह और तारासिंह को तो वापस किया और ज्योतिषीजी को अपने पास रक्खा । अबकी दफे तहखाने से बाहर निकलने वाले दर्वाजे मे तेजसिंह ने ताला नहीं लगाया, उन्हें केवल खटकों पर बन्द रहने दिया ।

दारोगा वाले रोजनामचे के पढने से तेजसिंह को बहुत सी बातें मालूम हुईं जिसे यहां लिखने की कोई जरूरत नहीं, समय समय पर आप ही मालूम हो जायगा, हा उनमे से एक बात यहा लिख देना जरूरी है ।

जिस दालान में दारोगा रहता था उसमें एक खम्भे के साथ लोहे की एक तार बँधी हुई थी जिसका दूसरा सिरा छत में सूराख करके ऊपर की तरफ निकाल दिया गया था। तेजसिंह को किताब के पढ़ने से मालूम हुआ कि इस तार को खैंचने या हिलाने से वह घण्टा बोलेगा जो खास दिग्विजयसिंह के दीवानखाने में लगा हुआ है क्योंकि उस तार का दूसरा सिरा उसी घण्टे से बँधा है। जब किसी तरह की मदद की जरूरत पड़ती थी तब दारोगा उस तार को छेड़ता था। उस दालान के बगल की एक कोठरी के अन्दर भी एक बड़ा सा घण्टा लटकता था जिसके साथ बंधी हुई लोहे की तार का दूसरा हिस्सा महाराज के दीवानखाने में था। महाराज भी जब तहखाने वालों को होशियार किया चाहते थे या और कोई जरूरत पड़ती थी तो ऊपर लिखी रीति से वह तहखाने वाला घंटा भी बजाया जाता था और यह काम केवल महाराज का था क्योंकि तहखाने का हाल बहुत गुप्त था, तहखाना कैसा है और इसके अन्दर क्या होता है यह हाल सिवाय खास खास आठ दस आदमियों के और किसी को भी मालूम न था, इसके भेद मन्त्र की तरह गुप्त रक्खे जाते थे।

हम ऊपर लिख आये हैं कि असली रामानन्द को ऐयार समझ कर महाराज दिग्विजयसिंह तहखाने में ले आये और लौट कर जाती समय नकली रामानन्द अर्थात् तेजसिंह और दारोगा को कहते गये कि तुम दोनों फुरसत पा कर हमारे पास आना।

महाराज के हुक्म की तामील न हो सकी क्योंकि दारोगा को कैद कर तेजसिंह अपने लश्कर में ले गये थे और ज्यादा हिस्सा दिन का उधर ही बीत गया था जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं। जब तेजसिंह लौट कर तहखाने में आये तो ज्योतिषीजी को बहुत सी बातें समझाई और उन्हें दारोगा बना कर गद्दी पर बैठाया, उसी समय सामने की कोठड़ियों में से खटके की आवाज आई। तेजसिंह समझ गये कि महाराज आरहे हैं, ज्योतिषीजी को तो लिटा दिया और कहा कि तुम हाय हाय करो,

मैं महाराज से बातचीत करूँगा। थोड़ी देर में महाराज उस तहखाने में उसी राह से आ पहुँचे जिस राह से तेजसिंह को साथ लाए थे।

महा०। (तेजसिंह की तरफ देख कर) रामानन्द, तुम दोनों को हम अपने पास आने के लिए हुक्म दे गये थे, क्यों नहीं आये, और इस दारोगा को क्या हुआ जो हाय हाय कर रहा है ?

तेज०। महाराज इन्हीं के सबब से तो आना नहीं हुआ। यकायक बेचारे के पेट में दर्द पैदा हो गई, बहुत सी तर्कीबें करने के बाद अब कुछ आराम हुआ है।

महा०। (दारोगा के हाल पर अफसोस करने के बाद) उस ऐयार का कुछ हाल मालूम हुआ है ?

तेज०। जी नहीं, उसने कुछ भी नहीं बताया, खैर क्या हर्ज है, दो एक दिन में पता लग ही जायगा, ऐयार लोग जिद्दी तो होते ही हैं।

थोड़ी देर बाद महाराज दिग्विजयसिंह वहाँ से चले गये। महाराज के जाने के बाद तेजसिंह भी तहखाने के बाहर हुए और महाराज के पास गये। दो घण्टे तक हाजिरी देकर शहर में गश्त करने के बहाने से बिदा हुए। पहर रात से कुछ ज्यादा गई थी कि तेजसिंह फिर महाराज के पास गये और बोले :—

तेज०। मुझे जल्द लौट आते देख महाराज ताज्जुब करते होंगे मगर एक जरूरी खबर देने के लिये आना पड़ा।

महा०। वह क्या ?

तेज०। मुझे पता लगा है कि मेरी गिरफ्तारी के लिए कई ऐयार आये हुए हैं, महाराज होशियार रहें अगर रात भर में उनके हाथ से बच गया तो कल जरूर कोई तर्कीब करूँगा, यदि फँस गया तो खैर।

महा०। तो आज रात भर तुम यहीं क्यों नहीं रहते ?

तेज०। क्या मैं उन लोगों के खौफ से बिना कुछ कार्रवाई किये अपने को छिपाऊँ ? यह नहीं हो सकता !!

महा०। शाबाश, ऐसा ही मुनासिब है, खैर जाओ जो होगा देखा जायगा।

तेजसिंह घर की तरफ लौटे। रामानन्द के घर की तरफ नहीं बल्कि अपने लश्कर की तरफ। उन्होंने इस बहाने अपनी जान बचाई और चलते हुए। सबेरे जब दर्बार में रामानन्द न आए, महाराज को विश्वास हो गया कि वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने उन्हें फँसा लिया।

चौथा बयान

अपनी कार्यवाई पूरी करने के बाद तेजसिंह ने सोचा कि अब असली रामानन्द को तहखाने से किसी खूबसूरती के साथ निकाल लेना चाहिए, जिसमें महाराज को किसी तरह का शक न हो और यह गुमान भी न हो कि तहखाने में वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग घुसे हैं या तहखाने का हाल किसी दूसरे को मालूम हो गया है, और यह काम तभी हो सकता है जब कोई ताजा मुर्दा कहीं से हाथ लगे।

रोहतासगढ़ से चल कर तेजसिंह अपने लश्कर में पहुँचे और सब हाल वीरेन्द्रसिंह से कहने बाद कई जासूसों को इस काम के लिए रवाना किया कि अगर कहीं कोई ताजा मुर्दा जो सड़ न गया हो या फूल न गया हो मिले तो उठा लावें और लश्कर के पास ही कहीं रख कर हमें इत्तिला दें। इत्तिफाक से लश्कर से दो तीन कोस की दूरी पर नदी के किनारे एक लावारिस भिखमंगा उसी दिन मरा था जिसे जासूस लोग शाम होते होते उठा लाये और लश्कर से कुछ दूर रख तेजसिंह को खबर की। भैरोसिंह को साथ लेकर तेजसिंह उस मुर्दे के पास गए और अपनी कार्रवाई करने लगे।

तेजसिंह ने उस मुर्दे को ठीक रामानन्द की सूरत बनाया और भैरोसिंह की मदद* से उठा कर रोहतासगढ़ तहखाने के अन्दर ले गये और

---

* मुर्दा अक्सर ऐंठ जाया करता है इस लिए गठरी में बँध नहीं सकता, लाचार दो आदमी मिल कर उठा ले गये।

तहखाने के दारोगा (ज्योतिषीजी) के सुपुर्द कर और उसके बारे में बहुत सी बातें समझा बुझा कर असली रामानन्द को अपने लश्कर में उठा लाये।

तेजसिंह के जाने बाद हमारे नए दारोगा साहब ने खम्भे से बँधे हुए उस तार को खैंचा जिसके सबब से दिग्विजयसिंह के दीवानखाने वाला घण्टा बोलता था। उस समय दो घण्टे रात जा चुकी थी, महाराज अपने कई मुसाहबों को साथ लिए दीवानखाने में बैठे दुश्मन पर फतह पाने के लिए बहुत सी तरकीबें सोच रहे थे, यकायक घण्टे की आवाज सुन कर चौंके और समझ गये कि तहखाने में हमारी जरूरत है। दिग्विजयसिंह उसी समय उठ खड़े हुए और उन जल्लादों को बुलाने का हुक्म दिया जो जरूरत पड़ने पर तहखाने म जाया करते थे और जान की खौफ या निमकहलाली के सबब से वहां का हाल किसी दूसरे से कभी नहीं कहते थे।

महाराज दूसरे कमरे में गए, जब तक कपड़े बदल कर तैयार हों जल्लाद लोग भी हाजिर हुए। ये जल्लाद बड़े ही मजबूत ताकतवर और कद्दावर थे। स्याह रंग, मूछें चढ़ी हुई, पोशाक में केवल जाँघिया मिर्जई और कण्टोप पहिरे, हाथ में भारी तेगा लिए, बड़े ही भयङ्कर मालूम होते थे। महाराज ने केवल चार जल्लादों को साथ लिया और उसी मामूली रास्ते से तहखाने मे उतर गए। महाराज को आते देख दारोगा चैतन्य हो गया और सामने आ हाथ जोड़ कर बोला, "लाचार महाराज को तकलीफ देनी पड़ी।"

महा०। क्या मामला है ?

दारोगा०। वह ऐयार मर गया जिसे दीवान रामानन्दजी ने गिरफ्तार किया था।

महा०। (चौंक कर) हैं, मर गया !!

दारोगा० । जी हाँ मर गया, न मालूम कैसी जहरीली बेहोशी दी गई थी कि जिसका असर यहाँ तक हुआ !

महा० । यह बहुत ही बुरा हुआ, दुश्मन समझेंगे कि दिग्विजयसिंह ने जान बूझ कर हमारे ऐयार को मार डाला जो कायदे के बाहर बात है। दुश्मनों को अब हमसे जिद हो जायगी और वे भी कायदे के खिलाफ बेहोशी की जगह जहर का बर्ताव करने लगेंगे तो हमारा बड़ा नुकसान होगा और बहुत आदमी जान से मारे जायँगे।

दारोगा० । लाचारी है, फिर क्या किया जाय ! यह भूल तो दीवान साहब की है।

महा० । (कुछ क्रोध में आकर) रामानन्द तो पूरा उजड्ड है ! राम मारने के लिए उसने अपने को ऐयार मशहूर कर रक्खा है, तभी तो वीरेन्द्रसिंह का एक अदना ऐयार आया और उसे पकड़ कर ले गया, चलो छुट्टी हुई !!

महाराज की बातें सुन कर मन ही मन ज्योतिषीजी हँसते और कहते थे कि देखो कितना होशियार और बहादुर राजा क्या जरा सी बात में बेवकूफ बना है ! वाह रे तेजसिंह, तू जो चाहे सो कर सकता है।

महाराज ने रामानन्द की लाश को खुद देखा और दूसरी जगह ले जाकर जमीन में गाड़ देने के लिए जल्लादों को हुक्म दिया। जल्लादों ने उसी तहखाने में दूसरी जगह जहाँ मुर्दे गाड़े जाते थे ले जाकर उस लाश को दफन किया, महाराज अफसोस करते हुए तहखाने के बाहर निकल आए और इस सोच में पड़े कि देखें वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग इसका क्या बदला लेते हैं।

पांचवा बयान

ऊपर लिखी वारदात के तीसरे दिन दारोगा साहब अपनी गद्दी पर बैठे रोजनामचा देख रहे थे और उस तहखाने की पुरानी बातें पढ़ पढ़

कर ताज्जुब कर रहे थे कि यकायक पीछे की कोठड़ी में खटके की आवाज आई। वे घबरा कर उठ खड़े हुए और पीछे की तरफ देखने लगे। फिर आवाज आई। ज्योतिषीजी दर्वाजा खोल कर अन्दर गये। मालूम हुआ कि उस कोठड़ी के दूसरे दर्वाजे से कोई भागा जाता है। कोठड़ी में बिलकुल अंधेरा था, ज्योतिषीजी कुछ आगे बढ़े ही थे कि जमीन पर पड़ी हुई एक लाश उनके पैर में अड़ी जिसकी ठोकर खा वे गिर पड़े मगर फिर सम्हल कर आगे बढ़े, लेकिन ताज्जुब करते थे कि यह लाश किसकी है। मालूम होता है यहाँ कोई खून हुआ है, और ताज्जुब नहीं कि वह भागने वाला ही खूनी हो !!

वह आदमी आगे आगे सुरङ्ग में भागा जाता था और पीछे पीछे ज्योतिषीजी हाथ मे खञ्जर लिये दौड़े जा रहे थे मगर उसे किसी तरह पकड़ न सके। यकयक सुरङ्ग के मुहाने पर रोशनी मालूम हुई। ज्यो-तिषीजी समझे कि अब वह बाहर निकल गया। दम भर में ये भी वहाँ पहुँचे और सुरङ्ग के बाहर निकल चारो तरफ देखने लगे। ज्योतिषीजी की पहिली निगाह जिस पर पड़ी वह पण्डित बद्रीनाथ थे, देखा कि एक औरत को पकड़े हुए बद्रीनाथ खड़े हैं और दिन आधी घड़ी से कम बाकी है।

बद्री०। दारोगा साहब, देखिये आपके यहाँ चोर घुसे और आपको खबर भी न हो !

ज्यो०। अगर खबर न होती तो पीछे पीछे दौड़ा हुआ यहाँ तक क्यों आता।

बद्री०। फिर भी आपके हाथ से तो चोर निकल ही गया था, अगर इस समय हम न पहुँच जाते तो आप इसे न पा सकते।

ज्यो०। हाँ बेशक इसे मैं मानता हूँ। क्या आप पहिचानते हैं कि यह कौन है ? याद आता है कि इस औरत को मैंने कभी देखा है।

बद्री० । जरूर देखा होगा, खैर इसे तहखाने में ले चलो फिर देखा जायगा। इसका तहखाने से खाली हाथ निकलना मुझे ताज्जुब में डालता है।

ज्यो० । यह खाली हाथ नहीं बल्कि हाथ साफ करके आई है। इसके पीछे आती समय एक लाश मेरे पैर में अड़ी थी मगर पीछा करने की धुन में मैं कुछ जाँच न कर सका।

पण्डित बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी उस औरत को गिरफ्तार किए हुए तहखाने में आये और उस दालान या बारहदरी में जिसमें दारोगा साहब की गद्दी लगी रहती थी पहुँचे। उस औरत को खम्भे के साथ बाँध दिया और हाथ में लालटेन ले उस लाश को देखने गये जो ज्योतिषीजी के पैर में अड़ी थी। बद्रीनाथ ने देखते ही उस लाश को पहिचान लिया और बोले, "यह तो माधवी है !!"

ज्योति० । यह यहाँ क्योंकर आई ! (माधवी की नाक पर हाथ रख कर) अभी दम है, मरी नहीं। यह देखिए इसके पेट में जख्म लगा है। जख्म भारी नहीं है, बच सकती है।

बद्री० । (नब्ज देख कर) हाँ बच सकती है, रंग इसके जख्म पर पट्टी बाँध कर इसी तरह छोड़ दो, फिर समझा जायगा। हाँ थोड़ा सा अर्क भी इसके मुँह में डाल देना चाहिये।

बद्रीनाथ ने माधवी के जख्म पर पट्टी बाँधी और थोड़ा सा अर्क उसके मुँह में डाल कर उसे वहाँ से उठा दूसरी कोठरी में ले गये। इस तहखाने में कई जगह से रोशनी और हवा पहुँचा करती थी, कारीगरों ने इसके लिये अच्छी तर्कीब की थी, बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी माधवी को उठाकर एक ऐसी कोठरी में ले गये जहाँ आवश्यकता की सब चीजें रखी हुई थीं और उसे उसी जगह छोड़ आप बारहदरी में जहाँ उस औरत को जिसने माधवी को घायल किया था खम्भे के साथ बाँधा था। बद्रीनाथ ने धीरे से ज्योतिषीजी से कहा, 'आज कुछ और ठहिए और उनके थोड़ी ही देर बाद मैं भी बीस पचीस आदमियों

को साथ लेकर यहाँ आऊँगा। अब मैं जाता हूँ, वहाँ बहुत कुछ काम है, केवल इतना ही कहने के लिये आया था। मेरे जाने बाद तुम इस औरत से पूछताछ लेना कि यह कौन है, मगर एक बात का खौफ है।

ज्योति०। वह क्या?

बद्री०। यह औरत हम लोगों को पहिचान गई है, कहीं ऐसा न हो कि तुम महाराज को बुलाओ और वे आ जावें तो यह कह उठे कि दारोगा साहब तो वीरेन्द्रसिंह के ऐयार हैं।

ज्योतिषी०। जरूर ऐसा होगा, इसका भी बन्दोबस्त कर लेना चाहिये।

बद्री०। खैर कोई हर्ज नहीं, मेरे पास मसाला तैयार है। (बटुए में से एक डिबिया निकाल कर और ज्योतिषीजी के हाथ में देकर) इसे आप रक्खें, जब मौका हो इसमें से थोड़ी सी दवा इसकी जुबान पर जबर्दस्ती मल दीजियेगा, बात की बात में जुबान ऐंठ जायगी, फिर यह साफ तौर पर कुछ भी न कह सकेगी, तब जो आपके जी में आवे महाराज को समझा दें।

बद्रीनाथ वहाँ से चले गये। उनके जाने बाद उस औरत को डरा धमका और कुछ मार पीट कर ज्योतिषीजी ने उसका हाल मालूम करना चाहा मगर कुछ न हो सका, पहरों की मेहनत बर्बाद गई, आखिर उस औरत ने ज्योतिषीजी से कहा, "ज्योतिषीजी, मैं आपको अच्छी तरह से जानती हूँ। आप यह न समझिये कि माधवी को मैंने मारा है, उसको घायल करने वाला कोई दूसरा ही था, खैर इन सब बातों से कोई मतलब नहीं क्योंकि अब तो माधवी भी आपके कब्जे में नहीं रही।"

ज्योतिषी०। माधवी अब मेरे कब्जे से कहाँ जा सकती है?

औरत०। जहाँ जा सकती थी वहाँ गई, आप जहाँ रख आये थे जा कर देखिये तो है या नहीं।

औरत की बात सुन कर ज्योतिषीजी बहुत घबड़ाये और उठ कर वहाँ गये जहाँ माधवी को छोड़ आये थे। उस औरत की बात सच

निकली, माधवी का वहाँ पता भी न था। हाथ में लालटेन ले के घन्टों ज्योतिषीजी इधर उधर खोजते रहे मगर कुछ फायदा न हुआ, आखिर लौट कर फिर उस औरत के पास आये और बोले, "तेरी बात ठीक निकली, मगर अब मैं तेरी जान लिये बिना नहीं रहता, हाँ अगर सच सच अपना हाल बता दे तो छोड़ दूँ।"

ज्योतिषीजी ने हजार सिर पटका मगर उस औरत ने कुछ भी न कहा। इसी औरत के चिल्लाने या बोलने की आवाज किशोरी और लाली ने इस तहखाने में आकर सुनी थी जिसका हाल इस हिस्से के पहिले बयान में लिख आये हैं, क्योंकि इसी समय लाली और किशोरी भी वहाँ आ पहुँची थीं।

ज्योतिषीजी ने किशोरी को पहिचाना, किशोरी के साथ लाली का नाम लेकर भी पुकारा, मगर अभी यह नहीं मालूम हुआ कि लाली को ज्योतिषीजी क्योंकर और कब से जानते थे, हाँ किशोरी और लाली को इस बात का ताज्जुब था कि दारोगा ने उन्हें क्योंकर पहिचान लिया क्योंकि ज्योतिषीजी दारोगा के भेष में थे।

ज्योतिषीजी ने किशोरी और लाली को अपने पास बुला कर कुछ बात करना चाहा मगर मौका न मिला। उसी समय घन्टे के बजने की आवाज आई। ज्योतिषीजी समझ गये कि महाराज आ रहे हैं। मगर इस समय महाराज क्यों आते हैं! शायद इस वजह से कि लाली और किशोरी इस तहखाने में हुन आई हैं और इसका हाल महाराज को मालूम हो गया है।

जल्दी के मारे ज्योतिषीजी सिर्फ दो काम कर सके, एक तो किशोरी और लाली की तरफ देख कर बोले, "अफसोस, अगर आधी घड़ी की भी मोहलत मिलती तो तुम्हें यहाँ से निकाल ले जाता, क्योंकि यह सब बखेड़ा तुम्हारे ही लिए हो रहा है।" दूसरे उस औरत की जुबान पर मसाला लगा सके जिसमें वह महाराज के सामने कुछ कह न सके। इतने ही में

मशालचियों और कई जल्लादों को लेकर महाराज आ पहुंचे और ज्योतिषीजी की तरफ देख कर बोले, "इस तहखाने में किशोरी और लाली आई है, तुमने देखा है ?"

दारोगा०। (खड़े होकर) जी अभी तक तो यहाँ नहीं पहुँचीं।

राजा०। खोजो कहा हैं, हाँ यह औरत कौन है ?

दारोगा०। मालूम नहीं कौन है और क्यों आई है ? मैंने इसी तहखाने मे इसे गिरफ्तार किया है, पूछने से कुछ नहीं बताती।

राजा०। खैर किशोरी और लाली के साथ इसे भी भूतनाथ पर चढा देना (बलि देना) चाहिये, क्योंकि यहाँ का बंधा कायदा है कि लिखे आदमियो के सिवाय दूसरा जो इस तहखाने को देख ले उसे तुरत बलि दे देना चाहिये।

सब कोई किशोरी और लाली को खोजने लगे। इस समय ज्योतिषीजी घबड़ाये और ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि कुँवर आनन्दसिंह और हमारे ऐयार लोग जल्द यहा आवें जिसमें किशोरी की जान बचे।

किशोरी और लाली कही दूर न थीं, तुरत गिरफ्तार कर ली गई और उनकी मुश्कें बंध गईं। इसके बाद उस औरत से महाराज ने कुछ पूछा जिसकी जुबान पर ज्योतिषीजी ने दवा मल दी थी, पर उसने महाराज की बात का कुछ भी जवाब न दिया। आखिर खम्भे से खोल कर उसकी भी मुश्कें बांध ली गई और तीनों औरतें एक दर्वाजे की राह दूसरी संगीन बारहदरी मे पहुंचाई गई जिसमे सिंहासन के ऊपर स्याह पत्थर की वह भयानक मूरत बैठी हुई थी जिसका हाल इस सन्तति के तीसरे हिस्से के आखिरी बयान मे हम लिख आये हैं। इसी समय आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह वहाँ पहुँचे और उन्होंने अपनी आखों से उस औरत के मारे जाने का दृश्य देखा जिसकी जुबान पर दवा लगा दी गई थी। जब किशोरी के मारने की बारी आई तब कुंअर आनन्दसिंह और दोनों ऐयारों से न रहा गया और इन्होंने

कोई ताज्जुब की चीज थी। डिब्बा खोलने बाद पहिले कुछ कपड़ा हटाया जो बेठन की तौर पर लगा हुआ था, इसके बाद झांक कर उस चीज को देखा जो उस डिब्बे के अन्दर थी।

न मालूम उस डिब्बे में क्या चीज थी कि जिसे देखते ही उस औरत की अवस्था बिल्कुल बदल गई। झांक के देखते ही वह हिचकी और पीछे की तरफ हट गई, पसीने से तर हो गई और बदन कांपने लगा, चेहरे पर हवाई उड़ने लगी और आँखें बन्द हो गई। उस आदमी ने फुर्ती से बेठन का कपड़ा डाल दिया और उस डिब्बे को उसी तरह बन्द कर उस औरत के सामने से हटा लिया। उसी समय बजड़े के बाहर से एक आवाज आई, "नानकजी!"

नानकप्रसाद उसी आदमी का नाम था जो गठड़ी लाया था। उसका कद न लम्बा और न बहुत नाटा था। बदन मोटा, रंग गोरा, और ऊपर के दांत कुछ खुड़खुड़े थे। आवाज सुनते ही वह आदमी उठा और बाहर आया, मल्लाहों ने डाँड़ लगाना बन्द कर दिया था, और तीन सिपाही मुस्तैद दर्वाजे पर खड़े थे।

नानक०। (एक सिपाही से) क्या है?

सिपाही०। (पार की तरफ इशारा करके) मुझे मालूम होता है कि उस पार बहुत से आदमी खड़े हैं। देखिये कभी कभी बादल हट जाने से जब चन्द्रमा की रोशनी पड़ती है तो साफ मालूम होता है कि वे लोग भी बहाव ही की तरफ हटे जाते हैं जिधर हमारा बजड़ा जा रहा है।

नानक०। (गौर से देख कर) हाँ ठीक तो है।

सिपाही०। क्या ठिकाना शायद हमारे दुश्मन ही हों!

नानक०। कोई ताज्जुब नहीं, अच्छा तुम नाव को बहाव की तरफ जाने दो, पार मत चलो।

इतना कह कर नानकप्रसाद अन्दर गया, तब तक उस औरत के भी हवास ठीक हो गये थे और वह उस टीन के डब्बे की तरफ जो इस समय

बन्द था बड़े गौर से देख रही थी, नानक को देख कर उसने इशारे से पूछा, "क्या है?"

इसके जवाब में नानक ने लकड़ी की पटिया पर खड़िये से लिख कर दिखाया कि पार की तरफ बहुत से आदमी दिखाई पड़ते हैं, कौन ठिकाना शायद हमारे दुश्मन हों।

औरत०। (लिख कर) बजड़े को बहाव की तरफ जाने दो। सिपाहियों को कहो बन्दूक लेकर तैयार रहें, अगर कोई जल में तैर कर यहाँ आता हुआ दिखाई पड़े तो बेशक गोली मार दें।

नानक०। बहुत अच्छा।

नानक फिर बाहर आया और सिपाहियों को हुक्म सुना कर भीतर चला गया। उस औरत ने अपने आँचल से एक ताली खोल कर नानक के हाथ में दी और इशारे से कहा कि इस टीन के डब्बे को हमारे सन्दूक में रख दो।

नानक ने वैसा ही किया, दूसरी कोठड़ी में जिसमें पलंग बिछा हुआ था और कुछ असबाब और सन्दूक रक्खा हुआ था गया और उसी ताली से एक सन्दूक खोल कर वह टीन का डब्बा रख दिया और उसी तरह ताला बन्द कर ताली उस औरत के हवाले की। उसी समय बाहर से बन्दूक की आवाज आई।

नानक ने तुरत बाहर आकर पूछा, "क्या है?"

सिपाही०। देखिये कई आदमी तैर कर इधर आ रहे हैं।

दूसरा०। मगर बन्दूक की आवाज पा कर अब लौट चले।

नानक फिर अन्दर गया और बाहर का हाल पटिये पर लिख कर औरत को समझाया। वह भी उठ खड़ी हुई और बाहर आकर पार की तरफ देखने लगी। घण्टा भर यों ही गुजर गया और अब वे आदमी जो पार दिखाई दे रहे थे या तैर कर इस बजड़े की तरफ आ रहे थे कहीं चले गये, दिखाई नहीं देते। नानकप्रसाद को साथ आने का इशारा करके वह

औरत फिर बजड़े के अन्दर चली गई और पीछे पीछे नानक भी गया। इस गठड़ी में और जो जो चीजें थीं वह गूँगी औरत देखने लगी। तीन चार बेशकीमत मर्दाने कपड़ों के सिवाय और उस गठड़ी में कुछ भी न था। गठड़ी बाँध कर एक किनारे रख दी गई और पटियेपर लिख लिख कर दोनों में बातचीत होने लगी।

औरत०। कलमदान में जो चीठियाँ हैं वे तुमने कहा से पाईं।

नानक०। उसी कलमदान में थीं।

औरत०। और वह कलमदान कहाँ पर था?

नानक०। उसकी चारपाई के नीचे पड़ा हुआ था, घर में सन्नाटा था, कोई दिखाई न पड़ा, जो कुछ जल्दी में पाया ले आया।

औरत०। खैर कोई हर्ज नहीं, हमें केवल उस टीन के डब्बे से मतलब था, यह कलमदान मिल गया तो इन चीठी पुर्जों से भी बहुत काम चलेगा।

इसके अलावे और कई बातें हुईं जिसके लिखने की यहाँ कोई जरूरत नहीं। पहर रात से ज्यादे जा चुकी थी जब वह औरत वहाँ से उठी और शमादान जो जल रहा था बुझा अपनी चारपाई पर जा कर लेट रही। नानक भी एक किनारे फर्श पर सो रहा और रात भर नाव बेखटके चली गई, कोई बात ऐसी नहीं हुई जो लिखने योग्य हो।

जब थोड़ी रात बाकी रही वह औरत अपनी चारपाई से उठी और खिड़की से बाहर झाँक कर देखने लगी। इस समय आसमान बिलकुल साफ था, चन्द्रमा के साथ ही साथ तारे भी समयानुसार अपनी चमक दिखा रहे थे और दो तीन खिड़कियों की राह इस बजड़े के अन्दर भी चांदनी आ रही थी, बल्कि जिस चारपाई पर वह औरत सोई हुई थी चन्द्रमा की रोशनी अच्छी तरह पड़ रही थी। वह औरत धीरे से चारपाई के नीचे उतरी और उस सन्दूक को खोला जिसमें नानक का लाया हुआ टीन का डब्बा रखवा दिया था। टीन का डब्बा उसमें से निकाल कर चारपाई पर रक्खा और सन्दूक बन्द करने के बाद दूसरा सन्दूक खोल

कर उसमें से एक मोमबत्ती निकाली और चारपाई पर आकर बैठ रही। मोमबत्ती में से मोम लेकर उसने टीन के डब्बे की दरारों को अच्छी तरह बन्द किया और हर एक जोड़ में मोम लगाया जिसमें हवा तक भी उसके अन्दर न जा सके। इस काम के बाद वह खिड़की के बाहर गर्दन निकाल कर बैठी और किनारे की तरफ देखने लगी। दो माँझी धीरे धीरे डाँड़ ले रहे थे, जब वे थक जाते तो दूसरे दो को उठा कर उस काम पर लगा देते और आप आराम करते।

सवेरा होते होते वह नाव एक ऐसी जगह पहुँची जहाँ किनारे पर कुछ आबादी थी, बल्कि गङ्गा के किनारे ही पर एक ऊँचा शिवालय भी था और उतर कर गङ्गाजी में स्नान करने के लिए सीढ़िया भी बनी हुई थीं। औरत ने उस मुकाम को अच्छी तरह देखा और जब वह बजड़ा उस शिवालय के ठीक सामने पहुचा तब उसने वह टीन का डब्बा जिसमें कोई अद्भुत वस्तु थी और जिसके सूराखों को उसने अच्छी तरह मोम से बन्द कर दिया था जल में फक दिया और फिर अपनी चारपाई पर लेट रही। यह हाल किसी दूसरे को मालूम न हुआ। थोड़ी ही देर में वह आबादी पीछे रह गई और बजड़ा दूर निकल गया।

जब अच्छी तरह सवेरा हुआ और सूर्य की लालिमा निकल आई तो उस औरत के हुक्म के मुताबिक बजड़ा एक जंगल के किनारे पहुँचा। उस औरत ने किनारे किनारे चलने का हुक्म दिया। यह किनारा इसी पार का था जिस तरफ काशी पड़ती है या जिस हिस्से से बजड़ा खोल कर सफर किया गया था।

बजड़ा किनारे किनारे जाने लगा और वह औरत किनारे के दरख्तों को बड़े गौर से देखने लगी। जगल गुञ्जान और रमणीक था सुबह के सुहावने समय में तरह तरह के पत्ती बोल रहे थे, हवा के झपेटों के साथ जङ्गली फूलों की मीठी खुशबू आ रही थी। वह औरत एक खिड़की में सिर रक्खे जंगल की शोभा देख रही थी। यका-

यक उसकी निगाह किसी चीज पर पड़ी जिसे देखते ही वह चौंकी और बाहर आकर बजड़ा रोकने और किनारे पर लगाने का इशारा करने लगी।

बजड़ा किनारे लगाया गया और वह गूँगी औरत अपने सिपाहियों को कुछ इशारा करके नानक को साथ लेकर नीचे उतरी।

घन्टे भर तक वह जङ्गलों मे घूमती रही, इस बीच में उसने अपने जरूरी काम और नहाने धोने मे छुट्टी पा ली और तब बजड़े में आकर कुछ भोजन करने बाद उसने अपनी मर्दानी सूरत बनाई। चुस्त पायजामा, घुटने के ऊपर तक का चपकन, कमरबन्द, सर में बड़ा सा मड़ासा बांधा और ढाल तलवार खञ्जर के अलावे एक छोटी सी पिस्तौल जिसमें गोली भरी हुई थी कमर मे छिपा और थोड़ी सी गोली बारूद भी पास रख बजड़े से उतरने के लिये तैयार हुई।

नानक ने उसकी ऐसी अवस्था देखी तो सामने अड़ कर खड़ा हो गया और इशारे से पूछा कि अब हम क्या करें? इसके जवाब में उस औरत ने पटिया और खड़िया मागी और लिख लिख कर दोनों में बातचीत होने लगी।

औरत०। तुम इसी बजड़े पर अपने ठिकाने चले जाओ, मैं तुमसे आ मिलूँगी।

नानक०। मैं किसी तरह तुम्हें अकेला नहीं छोड़ सकता, तुम खूब जानती हो कि तुम्हारे लिए मैंने कितनी तकलीफें उठाई हैं और नीच से नीच काम करने को तैयार रहा हूँ।

औरत०। तुम्हारा कहना ठीक है मगर मुझ गूँगी के साथ तुम्हारी जिन्दगी खुशी से नहीं बीत सकती, हाँ तुम्हारी मुहब्बत के बदले में तुम्हें अमीर किये देती हूँ जिसके जरिये तुम खूबसूरत से खूबसूरत औरत ढूँढ कर शादी कर सकते हो।

नानक०। अफसोस, आज तुम इस तरह की नसीहत करने पर

उतारू हुई और मेरी सच्ची मुहब्बत का कुछ खयाल न किया। मुझे धन दौलत की परवाह नहीं और न मुझे तुम्हारे गूँगी होने का रञ्ज है, बस मैं इस बारे में ज्यादे बातचीत करना नहीं चाहता, या तो मुझे कबूल करो या साफ जवाब दो ताकि मैं इसी जगह तुम्हारे सामने अपनी जान देकर हमेशे के लिये छुट्टी पाऊँ। मैं लोगों के मुँह से यह नहीं सुना चाहता कि रामभोली के साथ तुम्हारी मुहब्बत सच्ची न थी और तुम कुछ न कर सके।

रामभोली०। (गूँगी औरत) अभी मैं अपने कामों से निश्चिन्त नहीं हुई, जब आदमी बेफिक्र होता है तो शादी व्याह और हँसी खुशी की बातें सूझती हैं, मगर इसमें शक नहीं कि तुम्हारी मुहब्बत सच्ची है और मैं तुम्हारी कदर करती हूँ।

नानक०। जब तक तुम अपने कामों से छुट्टी नहीं पाती मुझे अपने साथ रक्खो, मैं हर एक काम में तुम्हारी मदद करूंगा और जान तक देने को तैयार रहूँगा।

रामभोली०। खैर मैं इस बात को मन्जूर करती हूँ, सिपाहियों को समझा दो कि बजड़े को ले जावें और इसमें जो कुछ चीज हैं अपनी हिफाजत में रक्खें, क्योंकि वह लोहे का डब्बा भी जो तुम कल लाये थे मैं इसी नाव में छोड़े जाती हूँ।

नानकप्रसाद खुशी के मारे ऐंठ गये। बाहर आकर सिपाहियों को बहुत कुछ समझाने बुझाने के बाद आप भी हर तरह से लैस हो बदन पर हर्बा लगा साथ चलने को तैयार हो गये। रामभोली और नानक बजड़े के नीचे उतरे। इशारा पाकर माझियों ने बजड़ा खोल दिया और वह फिर बनारस की तरफ जाने लगा।

नानक को साथ लिये हुए रामभोली जंगल में घुसी। थोड़ी ही दूर जाकर वह एक ऐसी जगह पहुँची जहां बहुत सी पगडण्डियां थीं, खड़ी

होकर चारो तरफ देखने लगी। उसकी निगाह एक कटे हुए साखू के पेड़ पर पड़ी जिसके पत्ते सूख कर गिर चुके थे। यह उस पेड़ के पास जाकर खड़ी हो गई और इस तरह चारो तरफ देखने लगी जैसे कोई निशान ढूँढ़ती हो। उस जगह की जमीन बहुत पथरीली और ऊँची नीची थी। लगभग पचास गज की दूरी पर एक पत्थर का ढेर नजर आया जो आदमी के हाथ का बनाया हुआ मालूम होता था। वह उस पत्थर के ढेर के पास गई और दम लेने या सुस्ताने के लिए बैठ गई। नानक ने अपना कमरबन्द खोला और एक पत्थर की चट्टान झाड़ कर उसे बिछा दिया, रामभोली उसी पर जा बैठी और नानक को अपने पास बैठने का इशारा किया।

ये दोनों आदमी अभी सुस्ताये भी न थे, चलने की मेहनत से जो पसीना बदन में आ चुका था वह सूखने भी न पाया था, कि सामने से एक सवार सुर्ख पोशाक पहिरे इन्हीं दोनों की तरफ आता हुआ दिखाई पड़ा। पास आने से मालूम हुआ कि यह नौजवान औरत है जो बड़े ठाठ के साथ हर्बे लगाये मर्दों की तरह घोड़े पर बैठी बहादुरी का नमूना दिखा रही है। वह रामभोली के पास आ कर खड़ी हो गई और उस पर एक भेद वाली नजर डाल कर हँसी। रामभोली ने भी उसकी हँसी का जवाब मुस्करा कर दिया और कनखियों से नानक की तरफ इशारा किया। उस औरत ने रामभोली को अपने पास बुलाया और जब वह घोड़े के पास जा कर खड़ी हो गई तो आप घोड़े से नीचे उतर पड़ी। कमर से एक छोटा सा बटुआ खोल एक चीठी और एक अंगूठी निकाली जिस पर सुर्ख नगीना जड़ा हुआ था और रामभोली के हाथ में रख दिया।

रामभोली का चेहरा गवाही दे रहा था कि वह इस अंगूठी को पाकर हद से ज्यादे खुश हुई। रामभोली ने इज्जत देने के ढंग पर उस अंगूठी को सिर से लगाया और इसके बाद अपनी अंगुली में पहिर लिया, चीठी

कमर में खोंस कर फुर्ती से उस घोड़े पर सवार हो गई और देखते ही देखते जङ्गल में घुस कर नजरों से गायब हो गई।

नानकप्रसाद यह तमाशा देख भौंचक सा रह गया, कुछ करते धरते बन न पड़ा, न मुँह से कोई आवाज निकली और न हाथ के इशारे ही से कुछ पूछ सका। पूछता भी तो किससे? रामभोली ने तो नजर उठा कर उसकी तरफ देखा तक नहीं। नानक बिल्कुल नहीं जानता था कि यह सुर्ख पोशाक वाली औरत है कौन जो यकायक यहां आ पहुँची और जिसने इशारेबाजी करके रामभोली को अपने घोड़े पर सवार करा भगा दिया। वह औरत नानक के पास आई और हँस के बोली :—

औरत०। वह औरत जो तेरे साथ थी मेरे घोड़े पर सवार होकर चली गई, खैर कोई हर्ज नहीं, मगर तू उदास क्यों हो गया? क्या तुमसे और उससे कोई रिश्तेदारी थी?

नानक०। रिश्तेदारी थी तो नहीं मगर होने वाली थी, तुमने सब चौपट कर दिया।

औरत०। (मुस्कुरा कर) क्या उससे शादी करने की धुन समाई थी।

नानक०। बेशक ऐसा ही था। वह मेरी हो चुकी थी, तुम नहीं जानतीं कि मैंने उसके लिये कैसी कैसी तकलीफें उठाईं। अपने बाप दादे की जमींदारी चौपट की और उसकी गुलामी करने पर तैयार हुआ।

औरत०। (बैठ कर) किसकी गुलामी?

नानक०। उसी रामभोली की, जो तुम्हारे घोड़े पर सवार हो कर चली गई।

औरत०। (चौंक कर) क्या नाम लिया, जरा फिर तो कहो!

नानक०। रामभोली।

औरत०। (हँस कर) बहुत ठीक, तू मेरी सखी अर्थात् उस औरत को कब से जानता है?

नानक०। (कुछ चिढ़ कर और मुँह बना कर) उसे मैं लड़कपन

से जानता हूँ, मगर तुम्हें सिवाय आज के कभी नहीं देखा, वह तुम्हारी सखी क्योंकर हो सकती है ?

औरत० । तू झूठा बेवकूफ और उल्लू बल्कि उल्लू का इत्र है ! तू मेरी सखी को क्या जाने, जब तू मुझे नहीं जानता तो उसे क्योंकर पहिचान सकता है ?

उस औरत की बातों ने नानक को आपे से बाहर कर दिया । वह एक दम चिढ़ गया और गुस्से में आकर म्यान से तलवार निकाल कर बोला :—

नानक० । कम्बख्त औरत, तैं मुझे बेवकूफ बनाती है ! जली कटी बातें कहती है और मेरी आंखों में धूल डाला चाहती है ! अभी तेरा सर काट के फेंक देता हूं !!

औरत० । (हँस कर) शाबाश, क्यों न हो, आप जवाँमर्द जो ठहरे ! (नानक के मुँह के पास चुटकियाँ बजा कर) चेत ऐ ऽ.सिंह, जरा होश की दवा कर !

अब नानकप्रसाद बर्दाश्त न कर सका और यह कह कर कि 'ले अपने किये का फल भोग!' उसने तलवार का वार उस औरत पर किया। औरत ने फुर्ती से अपने को बचा लिया और हाथ बढ़ा नानक की कलाई पकड़ जोर से ऐसा झटका दिया कि तलवार उसके हाथ से निकल कर दूर जा गिरी और नानक अश्चर्य में आकर उसका मुंह देखने लगा। औरत ने हंस कर नानक से कहा, "बस इसी जवाँमर्दी पर मेरी सखी से ब्याह करने का इरादा था ! बस जा और हिजड़ों में मिल कर नाचा कर !!"

इतना कह वह औरत हट गई और पश्चिम की तरफ रवाना हुई । नानक का क्रोध अभी शान्त नहीं हुआ था । उसने अपनी तलवार जो दूर पड़ी हुई थी, उठा कर म्यान में रख ली और कुछ सोचता और दांत पीसता हुआ उस औरत के पीछे पीछे चला । वह औरत इस बात से भी

होशियार थी कि नानक पीछे से आकर धोखे में तलवार न मारे, वह कनखियों से पीछे की तरफ देखती जाती थी।

थोड़ी दूर जाने के बाद वह औरत एक कूँए पर पहुंची जिसका संगीन चबूतरा एक पुर्से से कम ऊँचा न था चारो तरफ ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़िया बनी हुई थीं। कुँआ बहुत बडा और खूबसूरत था। वह औरत कुए पर चली गई और बैठ कर धीरे धीरे कुछ गाने लगी।

समय दोपहर का था, धूप खूब निकली थी, मगर इस जगह कुएँ के चारो तरफ घने पेड़ों की ऐसी छाया थी और ठढी ठढी हवा आ रही थी कि नानक की तबियत खुश हो गई, क्रोध रज्ज और बदला लेने क ध्यान बिल्कुल ही जाता रहा, तिस पर उस औरत की सुरीली आवाज ने और भी रग जमाया। वह उस औरत के सामने जाकर बैठ गया और उसका मुँह देखने लगा। दो ही तीन तान लेकर वह औरत चुप हो गई और नानक से बोली :—

औरत०। अब तू मेरे पीछे पीछे क्यों घूम रहा है? जहाँ तेरा जी चाहे जा और अपना काम कर व्यर्थ समय क्यों नष्ट करता है? अब तुझे तेरी रामभोली किसी तरह नहीं मिल सकती, उसका ध्यान अपने दिल से दूर कर दे।

नानक०। रामभोली भख मारेगी और मेरे पास आवेगी, वह मेरे कब्जे में है, उसकी एक ऐसी चीज मेरे पास है जिसे वह जीते जी कभी नहीं छोड सकती।

औरत०। हँस कर इसमें कोई शक नहीं कि तू पागल है, तेरी बातें सुनने से हसी आती है, खैर तू जान तेरा काम जाने मुझे इससे क्या मतलब!

इतना कह कर उस औरत ने कूए में झाका और पुकार कर कहा, "कूपदेव, मुझे प्यास लगी है, जरा पानी तो पिलाओ।"

औरत की बात सुन कर नानक घबराया और जी में सोचने लगा कि

यह अजब औरत है। कुएँ पर हुकूमत चलाती है और कहती है कि मुझे पानी पिला! यह औरत मुझे पागल कहती है मगर मैं इसी को पागल समझता हूँ, भला कुआं इसे क्योंकर पानी पिलावेगा? जो हो, मगर यह औरत खूबसूरत है और इसका गाना भी बहुत ही उम्दा है।

नानक इन बातों को सोच ही रहा था कि कोई चीज देख कर चौंक पड़ा, बल्कि घबड़ा कर उठ खड़ा हुआ और कांपते हुए तथा डरी हुई सूरत से कूएँ की तरफ देखने लगा। वह एक हाथ था जो चाँदी के कटोरे में साफ और ठण्ढा जल लिये हुए कुएँ के अन्दर से निकला था और इसी को देख कर नानक घबड़ा गया था।

वह हाथ किनारे आया, उस औरत ने कटोरा ले लिया और जल पीने बाद कटोरा उसी हाथ पर रख दिया, हाथ कुएँ के अन्दर चला गया और वह औरत फिर उसी तरह गाने लगी। नानक ने अपने जी में कहा, "नहीं नहीं, यह औरत पागल नहीं है बल्कि मैं ही पागल हूँ क्योंकि इसे अभी तक न पहिचान सका। बेशक यह कोई गन्धर्व या अपसरा है, नहीं नहीं कोई देवनी है जो रूप बदल कर आई है, तभी तो इसके बदन में इतनी ताकत है कि मेरी कलाई पकड़ और झटका देकर इसने तलवार गिरा दी! मगर रामभोली से इसका परिचय कहां हुआ?"

गाते गाते यकायक वह औरत उठ खड़ी हुई और बड़े जोर से चिल्ला कर उसी कूँए में कूद पड़ी।

सातवां बयान

लाल पोशाक वाली औरत की अद्भुत बातों ने नानक को हैरान कर दिया। वह घबड़ा कर चारो तरफ देखने लगा और डर के मारे उसकी अजब हालत हो गई। वह उस कूएँ पर भी ठहर न सका और जल्दी जल्दी कदम बढ़ाता हुआ इस उम्माद में गंगाजी की तरफ रवाना हुआ कि अगर हो सके तो किनारे किनारे चल कर उस बजड़े तक पहुँच

जाय मगर यह भी न हो सका क्योंकि उस जंगल में बहुत सी पगडण्डियां थीं जिन पर चल कर वह रास्ता भूल गया और किसी दूसरी ही तरफ जाने लगा।

नानक लगभग आध कोस के गया होगा कि प्यास के मारे बेचैन हो गया। वह जल खोजने लगा मगर उस जंगल में कोई चश्मा या सोता ऐसा न मिला जिससे प्यास बुझाता। आखिर घूमते घूमते उसे पत्तों की एक झोपड़ी नजर पड़ी जिसे वह किसी फकीर की कुटिया समझ कर उसी तरफ चल पड़ा मगर पहुँचने पर मालूम हुआ कि उसने धोखा खाया। उस जगह कई पेड़ ऐसे थे जिनकी डालियां झुक कर और आपस में मिल कर ऐसी हो रही थीं कि दूर से झोपड़ी मालूम पड़ती थी, तो भी नानक के लिये वह जगह बहुत उत्तम थी, क्योंकि उन्हीं पेड़ों में उसे एक चश्मा साफ पानी का बहता हुआ दिखाई पड़ा जिसके दोनों तरफ खुशनुमा सायेदार पेड़ लगे हुए थे जिन्होंने एक तौर पर उस चश्मे को भी अपने साये के नीचे कर रक्खा था। नानक खुशी खुशी चश्मे के किनारे पहुँचा और हाथ मुँह धोने बाद जल पीकर आराम करने के लिये बैठ गया।

थोड़ी देर चश्मे के किनारे बैठे रहने के बाद दूर से कोई चीज पानी में बह कर इसी तरफ आती हुई नानक ने देखी। पास आने पर मालूम हुआ कि कोई कपड़ा है। वह जल में उतर गया और उस कपड़े को खैंच लाकर गौर से देखने लगा क्योंकि यह वही कपड़ा था जो बजड़े से उतरते समय रामभोली ने अपनी कमर में लपेटा था।

नानक ताज्जुब में आकर देर तक उस कपड़े को देखता और तरह तरह की बातें सोचता रहा। रामभोली उसके देखते देखते घोड़े पर सवार हो चली गई थी, फिर उसे क्योंकर विश्वास हो सकता था कि यह कपड़ा रामभोली का है। तो भी उसने कई दफे अपनी आँखें मलीं और उस कपड़े को देखा, आखिर विश्वास करना ही पड़ा कि यह राम-

भोली की चादर है। रामभोली से मिलने की उम्मीद में वह चश्मे के किनारे किनारे रवाना हुआ क्योंकि उसे इस बात का गुमान हुआ कि घोड़े पर सवार होकर चले जाने बाद रामभोली जरूर कहीं पर इसी चश्मे के किनारे पहुँची होगी और किसी सबब से यह कपड़ा जल में गिर पड़ा होगा।

नानक चश्मे के किनारे किनारे कोस भर के लगभग चला गया और चश्मे के दोनों तरफ उसी तरह सायेदार पेड़ मिलते गये, यहाँ तक कि दूर से उसे एक छोटे से मकान की सुफेदी नजर आई। वह यह सोच कर खुश हुआ कि शायद इसी मकान में रामभोली से मुलाकात होगी। वह कदम बढ़ाता हुआ तेजी से जाने लगा और थोड़ा ही देर में उस मकान के पास जा पहुँचा।

यह मकान चश्मे के बीचोबीच में पुल के तौर पर बना हुआ था। चश्मा बहुत चौड़ा न था, उसकी चौड़ाई बस पचीस हाथ से ज्यादे न होगी। चश्मे के दोनों पार की जमीन इस मकान के नीचे आ गई थी और बीच में पानी बह जाने के लिये नहर की चौड़ाई के बराबर पुल की तरह का एक दर बना हुआ था जिसके ऊपर वह छोटा सा एक-मञ्जिला मकान निहायत खूबसूरत बना हुआ था। नानक इस मकान को देख कर बहुत ही खुश हुआ और सोचने लगा कि यह जरूर किसी मनचले शौकीन का बनवाया हुआ होगा। यहाँ से इस चश्मे और चारो तरफ के जङ्गल की बहार खूब ही नजर आती है। इस मकान के अन्दर चल कर देखना चाहिये खाली है या कोई रहता है। नानक उस मकान के सामने की तरफ गया। उसकी कुर्सी बहुत ऊंची थी, पन्द्रह सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद दर्वाजे पर पहुँचा। दर्वाजा खुला हुआ था, बेधड़क अन्दर घुस गया।

इस मकान के चारो कोनों में चार कोठड़ियाँ और चारो तरफ चार दालान बरामदे की तौर पर थे जिनके आगे कमर बराबर ऊँचा जङ्गला लगा

हुआ था, अर्थात् हर एक दालान के दोनों बगल कोठड़िया पड़ती थीं और बीच में एक भारी कमरा था। इस मकान में किसी तरह की सजावट न थी मगर साफ था।

दर्वाजे के अन्दर पैर रखते ही बीच वाले कमरे में बैठे हुए एक साधु पर नानक की निगाह पड़ी। वह मृगछाले पर बैठा हुआ था। उसकी उम्र अस्सी वर्ष से भी ज्यादे होगी, उसके बाल रूई की तरह सफेद हो रहे थे, लम्बे लम्बे सर के बाल सूखे और खुले रहने के सबब खूब फैले हुए थे, और दाढ़ी नाभी तक लटक रही थी। कमर में मूँज की रस्सी के सहारे कोपीन थी, और कोई कपड़ा उसके बदन पर न था, गले में जनेऊ पड़ा हुआ था और उसके दमकते हुए चेहरे से बुजुर्गी और तपोबल की निशानी पाई जाती थी। जिस समय नानक की निगाह उस साधू पर पड़ी वह पद्मासन बैठा हुआ ध्यान में था, आखें बन्द थीं और दोनों हाथ जघे पर पड़े हुए थे। नानक उसके सामने जाकर देर तक खड़ा रहा मगर उसे कुछ खबर न हुई। नानक ने सर उठा कर चारो तरफ अच्छी तरह देखा मगर सिवाय बड़ी बड़ी दो तस्वीरों के जिन पर पर्दा पड़ा हुआ था और साधू के पीछे की तरफ दीवार के साथ लगी हुई थीं और कुछ कहीं दिखाई न पड़ा।

नानक को ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगा कि इस मकान में किसी तरह का सामान नहीं है, फिर इस महात्मा का गुजर क्योंकर चलता होगा? और ये दोनों तस्वीरें कैसी हैं जिनका रहना इस मकान में जरूरी समझा गया! इसी फिक्र में वह चारो तरफ घूमने और देखने लगा। उसने हर एक दालान और कोठड़ियों की सैर की मगर कहीं एक तिनका भी नजर न आया, हाँ एक कोठड़ी में वह न जा सका जिसका दर्वाजा बन्द था मगर जाहिर में कोई ताला या जञ्जीर उस दर्वाजे में दिखाई न दिया, मालूम नहीं वह क्योंकर बन्द था। घूमता फिरता नानक बगल के दालान में आया और बरामदे से झाँक कर नीचे

बहते हुऐ चश्मे की बहार देखने लगा और इसी में उसने घण्टा भर बिता दिया।

घूम फिर कर पुनः बाबाजी के पास गया मगर उन्हें उसी तरह आँखे बन्द किये बैठा पाया। लाचार इस उम्मीद में एक किनारे बैठ गया कि आखिर कभी तो आँख खुलेगी। शाम होते होते बगल की कोठड़ी में से जिसका दर्वाजा बन्द था और जिसके अन्दर नानक न जा सका था शंख बजने की आवाज आई। नानक को बड़ा ही ताज्जुब हुआ मगर उस आवाज ने साधू का ध्यान तोड़ दिया, आँखें खुलते ही नानक पर उनकी नजर पड़ी।

साधू०। तू कौन है और यहाँ क्योंकर आया?

नानक०। मैं मुसाफिर हूँ, आफत का मारा भटकता हुआ इधर आ निकला, यहाँ आपके दर्शन हुए, दिल में बहुत कुछ उम्मीदें पैदा हुईं।

साधू०। मनुष्य से किसी तरह की उम्मीद न रखनी चाहिये, खैर यह बता तेरा मकान कहाँ है और इस जंगल में जहाँ आकर वापस जाना मुश्किल है कैसे आया।

नानक०। मैं काशी का रहने वाला हूँ, कार्यवश एक औरत के साथ जो मेरे मकान के बगल ही में रहा करती थी यहां आना हुआ, इस जंगल में उस औरत का साथ छूट गया और ऐसी ऐसी विचित्र बातें देखने में आईं जिनके डर से अभी तक मेरा कलेजा काँप रहा है।

साधू०। ठीक है, तेरा किस्सा बहुत बड़ा मालूम होता है जिसके सुनने की अभी मुझे फुरसत नहीं है, जरा ठहर मैं एक काम से छुट्टी पा लूँ तो तुझसे बातें करूँ। घबराइयो नहीं मैं ठीक एक घण्टे में आऊंगा।

इतना कह कर साधू वहाँ से चला गया। दर्वाजे की आवाज और अन्दाज से नानक को मालूम हुआ कि साधू उसी कोठड़ी में गया जिसका दर्वाजा बन्द था और जिसके अन्दर नानक न जा सका था। लाचार नानक बैठा रहा मगर इस बात से कि साधू को आने में घण्टे भर क

देर लगेगी, वह घबराया और सोचने लगा कि तब तक क्या करना चाहिये ? यकायक उसका ख्याल उन दोनों तस्वीरों पर गया जो दीवार के साथ लगी हुई थीं। जी में आया कि इस समय यहां सन्नाटा है, साधू महाशय भी नहीं हैं, जरा पर्दा उठा कर देखें तो यह तस्वीर किसकी है। नहीं नहीं कहीं ऐसा न हो कि साधू आ जायँ अगर देख लेंगे तो रञ्ज होंगे जिस तस्वीर पर पर्दा पड़ा हो उसे बिना आज्ञा कभी न देखना चाहिये। लेकिन अगर देख ही लेंगे तो क्या होगा ? साधू तो आप ही कह गए हैं कि हम घण्टे भर में आवेंगे, फिर डर किसका है ?

नानक एक तस्वीर के पास गया और डरते डरते पर्दा उठाया। तस्वीर पर निगाह पड़ते ही वह खौफ से चिल्ला उठा, हाथ से पर्दा गिर पड़ा, हाँफता हुआ पीछे हटा और अपनी जगह पर आ कर बैठ गया, यह हिम्मत न पड़ा कि दूसरी तस्वीर देखे।

यह तस्वीर दो औरत और एक मर्द की थी, नानक उन तीनों को पहिचानता था। एक औरत तो रामभोली और दूसरी वह थी जिसके घोड़े पर सवार हो कर रामभोली चली गई थी और जो नानक के देखते देखते कूएँ में कूद पड़ी थी, तीसरी नानक के पिता की थी। उस तस्वीर का भाव यह था कि नानक का पिता जमीन पर पड़ा हुआ था, दूसरी औरत उसके सर के बाल पकड़े हुए थी, और रामभोली उसकी छाती पर सवार गले पर छुरी फेर रही थी।

इस तस्वीर को देख कर नानक की अजब हालत हो गई। वह एक दम घबड़ा उठा और बीती हुई बातें उसकी आँखों के सामने इस तरह मालूम होने लगीं जैसे आज हुई हैं। अपने बाप की हालत याद कर उसकी आँखों में डबडबा आई और कुछ देर तक सिर नीचे किये कुछ सोचता रहा। आखिर में उसने एक लम्बी सांस ली और सिर उठा कर कहा, "ओफ ! क्या मेरा बाप इन औरतों के हाथ से मारा गया ? नहीं

कभी नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मगर इस तस्वीर में ऐसी अवस्था क्यों दिखाई गई है? बेशक दूसरी तस्वीर भी कुछ ऐसे ही ढंग की होगी, उसका भी सम्बन्ध कुछ मुझ ही से होगा? जी घबड़ाता है, यहाँ बैठना मुश्किल है!" इतना कह नानक उठ खड़ा हुआ और बाहर बरामदे में जा कर टहलने लगा। सूर्य बिल्कुल अस्त हो गये, शाम की पहिली अन्धेरी चारो तरफ फैल गई और धीरे धीरे अन्धकार का नमूना दिखाने लगी, इस मकान में भी अन्धेरा हो गया और नानक सोचने लगा कि यहाँ रोशनी का कोई सामान दिखाई नहीं पड़ता, क्या बाबाजी अन्धेरे ही में रहते हैं। ऐसा सुन्दर और साफ मकान मगर बालने के लिए दिया तक नहीं और सिवाय एक मृगछाला के जिस पर बाबाजी बैठते हैं एक चटाई तक नजर नहीं आती। शायद इसका सबब यह हो कि यहाँ की जमीन बहुत साफ चिक्नी और धोई हुई है।

तरह तरह के सोच विचार में नानक को दो घन्टे बीत गये। यकायक उसे याद आया कि बाबाजी एक घन्टे का वादा करके गये थे, अब वह अपने ठिकाने आ गये होंगे और वहाँ मुझे न देख न मालूम क्या सोचते होंगे, बिना उनसे मिले और बातचीत किये यहां का कुछ हाल मालूम न होगा, चलो देखें तो सही वे आ गये या नहीं।

नानक उठ कर उस कमरे में गया जिसमें बाबाजी से मुलाकात हुई थी, मगर वहाँ सिवाय अन्धकार के और कुछ दिखाई न पड़ा। थोड़ी देर तक उसने आँखें फाड़ फाड़ कर अच्छी तरह देखा मगर कुछ मालूम न हुआ, लाचार उसने पुकारा—"बाबाजी!" मगर कुछ जवाब न मिला, उसने और दो दफे पुकारा मगर कुछ फल न हुआ। आखिर टटोलता हुआ बाबाजी के मृगछाले तक गया मगर उसे खाली पाकर लौट आया और बाहर बरामदे में जिसके नीचे चश्मा बह रहा था आ कर बैठ रहा।

घण्टे भर तक चुपचाप सोच विचार में बैठे रहने बाद बाबाजी से

मिलने की उम्मीद में वह फिर उठा और उस कमरे की तरफ चला। अबकी उसने कमरे का दर्वाजा भीतर से बन्द पाया, ताज्जुब और खौफ से काँपता हुआ फिर लौटा और बरामदे में अपने ठिकाने आकर बैठ रहा। इसी हेर फेर में पहर भर से ज्यादे रात गुजर गई और चारो तरफ से जंगल में बोलते हुये दरिन्दे जानवरों की आवाजें आने लगीं जिनके खौफ से वह इस लायक न रहा कि मकान के नीचे उतरे, बल्कि बरामदे में रहना भी उसने नापसन्द किया और बगल वाली कोठरी में घुस कर किवाड़ बन्द करके सो रहा। नानक आज दिन भर भूखा रहा और इस समय भी उसे खाने को कुछ न मिला फिर नींद क्यों आने लगी थी। इसके अतिरिक्त उसने दिन भर में ताज्जुब पैदा करने वाली कई तरह की बातें देखी और सुनी थीं जो अभी तक उसकी आखों के सामने घूम रही थीं और नींद की बाधक हो रही थीं। आधी रात बीतने पर उसने और भी ताज्जुब की बातें देखीं।

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी थी जब नानक के कानों में दो आदमियों के बातचीत की आवाज आई। वह गौर से सुनने लगा, क्योंकि जो कुछ बातचीत हो रही थी उसे वह अच्छी तरह सुन और समझ सकता था। नीचे लिखी बातें उसने सुनीं—आवाज बारीक होने के सबब से नानक ने समझा कि वे दोनों औरतें हैं :—

एक०। नानक ने इश्क को एक दिल्लगी समझ लिया।

दूसरा०। आखिर उसका नतीजा भी भोगेगा।

एक०। इस कम्बख्त को सूझी क्या जो अपना घर बार छोड़ कर इस तरह एक औरत के पीछे निकल पड़ा।

दूसरा०। यह तो उसी से पूछना चाहिये।

एक०। बाबाजी ने उससे मिलना मुनासिब न समझा, मालूम नहीं इसका क्या सबब है।

दूसरा०। जो हो मगर नानक आदमी बहुत ही होशियार और

चालाक है, ताज्जुब नहीं कि उसने जो कुछ इरादा कर रक्खा है उसे पूरा करे।

एक०। यह जरा मुश्किल है, मुझे उम्मीद नहीं कि रानी इसे छोड़ दें, क्योंकि वह इसके खून की प्यासी हो रही है, हाँ अगर यह उस बजड़े पर पहुँच कर वह डब्बा अपने कब्जे में कर लेगा तो फिर इसका कोई कुछ न कर सकेगा!

दूसरा०। (हँस कर, जिसकी आवाज नानक ने अच्छी तरह सुनी) यह तो हो ही नहीं सकता!

एक०। खैर इन बातों से अपने को क्या मतलब? हम लौंडियों को इतनी अक्ल कहाँ कि इन बातों पर बहस करें।

दूसरा०। क्या लौंडी होने से अक्ल में बट्टा लग जाता है?

एक०। नहीं, मगर असली असली बातों की लौंडियों को खबर ही कम होती है।

दूसरा०। मुझे तो खबर है।

एक०। सो क्या।

दूसरा०। यही कि दम भर में नानक गिरफ्तार कर लिया जायगा, बस अब बातचीत करना मुनासिब नहीं, हरिहर आता ही होगा।

इसके बाद फिर नानक ने कुछ न सुना मगर इन बातों ने उसे परेशान कर दिया, डर के मारे काँपता हुआ उठ बैठा और चुपचाप वहाँ से भाग चलने पर मुस्तैद हुआ। धीरे से किवाड़ खोल कर कोठड़ी के बाहर आया, चारो तरफ सन्नाटा था। इस मकान से बाहर निकल कर जंगल में भालू चीते या शेर के मिलने का डर जरूर था मगर इस मकान में रह कर उसने अपने बचाव की कोई सूरत न समझी क्योंकि उन दोनों औरतों की बातों ने उसे हर तरह से निराश कर दिया था। हाँ बजड़े पर पहुँच कर उस डब्बे पर कब्जा कर लेने के खयाल ने उसे बेबस कर दिया और जहाँ तक जल्द

हो सके बजड़े तक पहुँचना उसने अपने लिये उत्तम समझा।

नानक बरामदे से होता हुआ सदर दर्वाजे पर आया और सीढ़ी के नीचे उतरा ही चाहता था कि दूसरे दालान में से झपटते हुए कई आदमियों ने आ कर उसे गिरफ्तार कर लिया। उन आदमियों ने जबर्दस्ती नानक की आखें चादर से बाँध दीं और कहा, "जिधर हम ले चलें चुपचाप चला चल नहीं तो तेरे लिये अच्छा न होगा।" लाचार नानक को ऐसा ही करना पड़ा।

नानक की आखें बन्द थीं और हर तरह लाचार था तौ भी वह रास्ते की चलाई पर खूब ध्यान दिये हुए था। आधे घण्टे तक वह बराबर चला गया, पत्तों की खड़खड़ाहट और जमीन की नमी से उसने जाना कि वह जङ्गल ही जङ्गल जा रहा है। इसके बाद उसे एक ड्योढ़ी लाँघने की नौबत आई और उसे मालूम हुआ कि वह किसी फाटक के अन्दर जा कर पत्थर पर या किसी पक्की जमीन पर चल रहा है। वहाँ से कई दफे बाईं और दाहिनी तरफ घूमना पड़ा। बहुत देर बाद फिर एक फाटक लाघने की नौबत आई और फिर उसने अपने को कच्ची जमीन पर चलते पाया। कोस भर जाने बाद फिर एक चौखट लाँघ कर पक्की जमीन पर चलने लगा। यहाँ पर नानक को विश्वास हो गया कि रास्ते का भुलावा देने के लिये हम बेफायदे घुमाये जा रहे हैं, ताज्जुब नहीं कि यह वही जगह हो जहां पहिले आ चु हैं।

थोड़ी ही दूर चलने बाद नानक सीढी पर चढ़ाया गया, बीस पचीस सीढियां चढने बाद फिर नीचे उतरने की नौबत आई, और सीढ़ियाँ खतम होने के बाद उसकी आँखें खोल दी गईं।

नानक ने अपने को एक विचित्र स्थान मे पाया। उसकी पीठ की तरफ एक ऊँची दीवार और सीढियाँ थीं, सामने की तरफ एक खुशनुमा बाग था जिसके चारो तरफ ऊँची दीवार थी और उसमें रोशनी बखूबी हो रही थी, फलों के कलमी पेड़ों में लगी शीशे की छोटी छोटी कन्दीलों में

मोमबत्तियाँ जल रही थीं और बहुत से आदमी भी घूमते फिरते दिखाई दे रहे थे। बाग के बीचोबीच में एक आलीशान बंगला था, नानक वहां पहुँचाया गया और उसने आसमान की तरफ देख कर मालूम किया कि अब रात बहुत थोड़ी रह गई है।

यद्यपि नानक बहुत होशियार चालाक बहादुर और ढीठ था मगर इस समय बहुत ही घबड़ाया हुआ था। उसके ज्यादे घबड़ाने का सबब यह था कि उसके हरबे छीन लिये गये थे और वह इस लायक न रह गया था कि दुश्मनों के हमला करने पर उनका मुकाबला करे या किसी तरह अपने को बचा सके। हाँ हाथ पैर खुले रहने के सबब नानक इस खयाल से भी बेफिक्र न था कि अगर किसी तरह भागने का मौका मिले तो भाग जाय।

बाहर ही से मालूम होता था कि इस मकान में रोशनी बखूबी हो रही है। बाहर के सहन में कई दीवारगीरें जल रही थीं और चोबदार हाथ में सोने का आसा लिए नौकरी अदा कर रहे थे। उन्हीं के पास नानक खड़ा कर दिया गया और वे आदमी जो उसे गिरफ्तार कर लाये थे और गिनती में आठ थे मकान के अन्दर चले गये, मगर चोबदारों को यह कहते गये कि इस आदमी से होशियार रहना, हम सरकार में खबर करने जाते हैं। नानक को आधे घण्टे तक वहाँ खड़ा रहना पड़ा।

जब वे लोग जो उसे गिरफ्तार कर लाये थे और खबर करने के लिए अन्दर गये थे लौटे तो नानक की तरफ देख कर बोले, "इत्तिला कर दी गई, अब तू अन्दर चला जा।"

नानक०। मुझे क्या मालूम है कि कहां जाना होगा और रास्ता कौन है?

एक०। यह मकान तुझे आप ही रास्ता बतावेगा, पूछने की जरूरत नहीं।

लाचार नानक ने चौकठ के अन्दर पैर रक्खा और अपने को तीन दर के एक दालान मे पाया, फिर कर पीछे की तरफ देखा तो वह दर्वाजा भी बन्द हो गया था जिस राह से इस दालान मे आया था। उसने सोचा कि बस इसी जगह मै कैद हो गया और अब नहीं निकल सकता, यह सब कार्रवाई केवल इसी के लिए थी। मगर नहीं उसका विचार ठीक न था, क्योंकि तुरत ही उसके सामने का दर्वाजा खुला और उधर रोशनी मालूम होने लगी। डरता हुआ नानक आगे बढा और चौकठ के अन्दर पैर रक्खा ही था कि दो नौजवान औरतों पर नजर पड़ी जो साफ और सुथरी पोशाक पहिरे हुई थीं, दोनों ने नानक के दोनों हाथ पकड़ लिये और ले चलीं।

नानक डरा हुआ था मगर उसने अपने दिल को काबू में रक्खा, तौ भी उसका कलेजा उछल रहा था और दिल में तरह तरह की बातें पैदा हो रही थीं। कभी तो वह अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद हो जाता, कभी यह सोच कर कि मैने कोई कसूर नहीं किया ढाढ़स होती, और कभी सोचता कि जो कुछ होता है वह तो होवेहीगा मगर किसी तरह उन बातों का पता तो लगे जिनके जाने बिना जी बेचैन हो रहा है। कल से जो जो बातें ताज्जुब की देखने मे आई हैं जब तक उनका असल भेद नहीं खुलता मेरे हवास दुरुस्त नहीं होते।

वे दोनों औरत उसे कई दालानों और कोठड़ियों में घुमाती फिराती एक बारहदरी में ले गईं जिसमे नानक ने कुछ अजब ही तरह का समा देखा। यह बारहदरी अच्छी तरह से सजी हुई थी और यहाँ रोशनी भी बखूबी हो रही थी। दर्बार का बिल्कुल सामान यहां मौजूद था। बीच में जड़ाऊ सिंहासन पर एक नौजवान औरत दक्खिणी ढंग की बेशकीमत पोशाक पहिरे सिर से पैर तक जड़ाऊ जेवरों से लदी हुई बैठी थी। उसकी खूबसूरती के बारे में इतना ही कहना बहुत है कि अपनी जिन्दगी में नानक ने ऐसी खूबसूरत औरत कभी नहीं देखी थी। उसे इस बात का विश्वास

यह कोठड़ी बहुत बड़ी न थी, इसके चारो कोनों में हड्डियों के ढेर लगे थे, चारो तरफ दीवारों में पुरसे पुरसे भर ऊँचे चार मोखे (छेद) थे जो बहुत बड़े न थे मगर इस लायक थे कि आदमी का सर उनके अन्दर जा सके। नानक ने देखा कि उसके सामने की तरफ वाले मोखे में कोई चीज चमकती हुई दिखाई देरही है। बहुत गौर करने पर थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि बड़ी बड़ी दो आखें हैं जो उसी की तरफ देख रही हैं।

उस अन्धेरी कोठरी मे धीरे धीरे चमक पैदा होने और उजाला हो जाने ही से नानक डरा था, अब इन आँखों ने उसे और भी डरा दिया। धीरे धीरे नानक का डर बढ़ता ही गया क्योंकि उसने कलेजा दहलाने वाली और भी कई बातें यहाँ पाईं।

हम ऊपर लिख आये हैं कि उस कोठड़ी की जमीन पत्थर की थी, धीरे धीरे यह जमीन गर्म होने लगी जिससे नानक के बदन में हरारत पहुँची और वह सर्दी जिसके सबब से वह लाचार हो गया था जाती रही। आखिर वहा की जमीन यहाँ तक गर्म हुई कि नानक को अपनी जगह से उठना पड़ा, मगर कहा जाता ? उस कोठड़ी की तमाम जमीन एक सा गरम हो रही थी, वह जिधर जाता उधर ही पैर जलता था। नानक का ध्यान फिर उस मोखे की तरफ गया जिसमें चमकती हुई आँखें दिखाई दी थीं, क्योंकि इस समय उसी मोखे में से एक हाथ निकल कर नानक की तरफ बढ़ रहा था। नानक दबक कर एक कोने में हो रहा जिसमें वह हाथ उस तक न पहुँचे मगर हाथ बढता ही गया यहाँ तक कि उसने नानक की कलाई पकड़ ली।

न मालूम वह हाथ कैसा था जिसने नानक की कलाई मजबूती से थाम ली। बदन के साथ छूते ही एक तरह की झुनझुनी पैदा हुई और बात की बात मे इतनी बढी कि नानक अपने को किसी तरह सम्हाल न सका और न उस हाथ से अपने को छुड़ा ही सका, यहाँ तक कि वह

रामभोली० । जो हुक्म होगा करूंहीगी ।

महारानी० । तुम दोनों जाओ और जो कुछ करते बने करो ।

रामभोली० । काम बाँट दीजिये ।

महारानी० । (धनपति की तरफ देख के) नानक के कब्जे से किताब निकाल लेना तुम्हारा काम, (रामभोली की तरफ देख के) किशोरी को गिरफ्तार कर लाना तुम्हारा काम ।

बाबाजी० । मगर दो बातों का ध्यान रखना नहीं तो जीती न बचोगी ।

दोनों ० । वह क्या ?

बाबाजी० । एक तो कुँअर इन्द्रजीतसिंह या आनन्दसिंह को हाथ न लगाना, दूसरे ऐसा करना जिसमें नानक को तुम दोनों का पता न लगे, नहीं वह बिना जान लिए कभी न छोड़ेगा और तुम लोगों के किए कुछ न होगा । (रामभोली की तरफ देख के) यह न समझना कि अब वह तुम्हारा मुलाहजा करेगा, अब उसे असल हाल मालूम हो गया, हम लोगों को जड़ बुनियाद से खोद कर फेंक देने का उद्योग वह अवश्य करेगा ।

महारानी० । ठीक है इसमें कोई शक नहीं, मगर ये दोनों चालाक हैं, अपने को बचावेंगी । (दोनों की तरफ देख कर) खैर तुम लोग जाओ, देखो ईश्वर क्या करता है । खूब होशियार और अपने को बचाए रहना ।

दोनों० । कोई हर्ज नहीं ।

नौवां बयान

अब हम रोहतासगढ़ की तरफ चलते हैं और तहखाने में बेबस पड़ी हुई बेचारी किशोरी और कुँअर आनन्दसिंह इत्यादि की सुध लेते हैं ।

जिस समय कुँअर आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह तहखाने के

अन्दर गिरफ्तार हो गये और राजा दिग्विजयसिंह के सामने लाये गये तो राजा के आदमियों ने उन तीनों का परिचय दिया जिसे सुन राजा हैरान रह गया और सोचने लगा कि ये तीनों यहा क्योंकर आ पहुंचे। किशोरी भी उसी जगह खडी थी। जब उसने सुना कि ये लोग फलाने है तो वह घवडा गई, उसे विश्वास हो गया कि अब इनकी जान नही बचती। इस समय वह मन ही मन मे ईश्वर से प्रार्थना करने लगी कि जिस तरह हो सके इनकी जान बचा, इसके बदले मे मेरी जान जाय तो कोई हर्ज नहीं परन्तु मै अपनी आखो से इन्हें मरते नहीं देखा चाहती, इसमें कोई शक नही कि ये मुझी को छुडाने आये थे नही तो इन्हें क्या मतलब था कि इतना कष्ट उठाते।

जितने आदमी तहखाने के अन्दर मौजूद थे सभी जानते थे कि इस समय तहखाने के अन्दर कुअर आनन्दसिंह का मददगार कोई भी नहीं है परन्तु हमारे पाठक महाशय जानते है कि पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी जो इस समय दारोगा बने यहा मौजूद है कुँअर आनन्दसिंह की मदद जरूर करेंगे, मगर एक आदमी के किये होता ही क्या है। तो भी ज्योतिषी जी ने हिम्मत न हारी और वह राजा से बातचीत करने लगे। ज्योतिषी जी जानते थे कि मेरे अकेले के किये ऐसे मौके पर कुछ नहीं हो सकता और वहा की किताब पढने से उन्हें यह भी मालूम हो गया था कि इस तहखाने के कायदे के मुताबिक ये जरूर मारे जायगे, फिर भी ज्योतिषीजी को इनके बचने की उम्मीद कुछ कुछ जरूर थी क्योंकि पंडित बद्रीनाथ कह गये थे कि आज इस तहखाने मे कुँअर आनन्दसिंह आवेंगे और उनके थोडी ही देर बाद कुछ आदमियों को लेकर हम भी आवेंगे। अब ज्योतिषीजी सिवाय इसके और कुछ नहीं कर सकते थे कि राजा को बातों मे लगा कर देर करें जिसमे पण्डित बद्रीनाथ वगैरह आ जाय और आखिर उन्होंने ऐसा ही किया। ज्योतिषीजी अर्थात् दारोगा साहब राजा साहब के सामने गये और बोले :—

दारोगा० । मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप से आप कुँअर आनन्दसिंह हम लोगों के कब्जे में आ गये ।

राजा० । (सिर से पैर तक ज्योतिषीजी को अच्छी तरह देख कर) ताज्जुब है कि आप ऐसा कहते हैं । मालूम होता है कि आज आपकी अक्लि चरने चली गई है ! छिः !!

दारोगा० । (घबड़ा कर और हाथ जोड़ कर) सो क्या महाराज !

राजा० । (रञ्ज हो कर) फिर भी आप पूछते हैं सो क्या ? आप ही कहिये कि आनन्दसिंह आप से आप यहाँ आ फँसे तो आप क्यों खुश हुए ?

दारोगा० । मैं यह सोच कर खुश हुआ कि जब इनकी गिरफ्तारी का हाल राजा वीरेन्द्रसिंह सुनेंगे तो जरूर कहला भेजेंगे कि आनन्दसिंह को छोड़ दीजिए इसके बदले में हम कुँअर कल्याणसिंह को छोड़ देंगे ।

राजा० । अब मुझे मालूम हो गया कि तुम्हारी अकिल चरने गई है या तुम वह दारोगा नहीं हो कोई दूसरे हो ।

दारोगा० । (काँप कर) शायद आप इसलिये कहते हों कि मैंने जो कुछ अर्ज किया इस तहखाने के कायदे के खिलाफ किया ।

राजा० । हाँ, अब तुम राह पर आये । बेशक ऐसा ही है । मुझे इनके यहाँ आ फँसने का बड़ा रञ्ज है । अब मैं अपनी और अपने लड़के की जिन्दगी से भी नाउम्मीद हो गया । बेशक अब यह रोहतासगढ़ उजाड़ हो गया । मैं किसी तरह कायदे के खिलाफ नहीं कर सकता । चाहे जो हो आनन्दसिंह को अवश्य मारना पड़ेगा और इसका नतीजा बहुत ही बुरा होगा । मुझे इस बात का भी विश्वास है कि कुँअर आनन्दसिंह पहिले पहिल यहाँ नहीं आये बल्कि इनके कई ऐयार इसके पहिले भी जरूर यहाँ आकर सब हाल देख गये होंगे । कई दिनों से यहाँ के मामले में जो विचित्रता दिखाई पड़ती है यह सब उन्हीं का नतीजा है । सच तो यह है कि इस समय की बातें सुन कर मुझे आप पर भी शक हो गया है । यहाँ का दारोगा इस तरह आनन्दसिंह के आ फँसने से कभी

न कहता कि मैं खुश हूँ। वह जरूर समझता कि कायदे के मुताबिक इन्हें मारना पड़ेगा, इसके बदले में कल्याणसिंह मारा जायगा, और इसके अतिरिक्त वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग ऐयारी के कायदे को तिलांजलि देकर बेहोशी की दवा के बदले जहर का बर्ताव करेंगे और एक ही सप्ताह में रोहतासगढ़ को चौपट कर डालेंगे। इस तहखाने के दारोगा को जरूर इस बात का रञ्ज होता।

राजा की बातें सुन कर ज्योतिषीजी की आँखें खुल गईं। उन्होंने मन में अपनी भूल कबूल की और गर्दन नीची करके कुछ सोचने लगे। उसी समय राजा ने पुकार कर अपने आदमियों से कहा, "इस नकली दारोगा को भी गिरफ्तार कर लो और अच्छी तरह आजमाओ कि यह यहाँ का दारोगा है या वीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार!"

बात की बात में दारोगा साहब की मुश्कें बाँध ली गईं और राजा ने दो आदमियों को गरम पानी लाने का हुक्म दिया। नौकरों ने यह समझ कर कि यहा पानी गरम करने में देर होगी ऊपर दीवानखाने में हर दम गरम पानी मौजूद रहता है वहाँ से लाना उत्तम होगा, महाराज से आज्ञा चाही। महाराज ने इसको पसन्द करके ऊपर दीवानखाने से पानी लाने का हुक्म दिया।

दो नौकर गर्म पानी लाने के लिए दौड़े मगर तुरत लौट आ कर बोले, "ऊपर जाने का रास्ता तो बन्द हो गया।"

महा०। सो क्या! रास्ता कैसे बन्द हो सकता है?

नौकर०। क्या जानें ऐसा क्यों हुआ!

महा०। ऐसा कभी नहीं हो सकता! (ताली दिखा कर) देखो यह ताली मेरे पास मौजूद है, इस ताली बिना कोई क्योंकर उन दर्वाजों को बन्द कर सकता है?

नौकर०। जो हो, मैं कुछ नहीं अर्ज कर सकता, सर्कार चल कर देख लें।

राजा ने स्वयं जा कर देखा तो ऊपर जाने का रास्ता अर्थात् दर्वाजा बन्द पाया। ताज्जुब हुआ और सोचने लगा कि दर्वाजा किसने बन्द किया, ताली तो मेरे पास थी! आखिर दर्वाजा खोलने के लिये ताली लगाई मगर ताला न खुला। आज तक इसी ताली से बराबर इस तहखाने में आने जाने का दर्वाजा खोला जाता था, लेकिन इस समय ताली कुछ काम नहीं करती। यह अनोखी बात जो राजा दिग्विजयसिंह के ध्यान में भी कभी न आई थी आज यकायक पैदा हो गई। राजा के ताज्जुब का कोई हद्द न रहा। उस तहखाने में और भी बहुत से दर्वाजे उसी ताली से खुला करते थे। दिग्विजयसिंह ने ताली ठोंक पीट कर एक दूसरे दरवाजे में लगाई, मगर वह भी न खुला। राजा की आँखों में आंसू भर आया और यकायक उसके मुँह से यह आवाज निकली, "अब इस तहखाने की और हम लोगों की उम्र पूरी हो गई!"

राजा दिग्विजयसिंह घबड़ाया हुआ चारो तरफ घूमता और घड़ी घड़ी दर्वाजों में ताली लगाता था। इतने ही में उस काले रंग की भयानक मूर्ति के मुँह में से जिसके सामने एक औरत बलि दी जा चुकी थी एक तरह की आवाज निकलने लगी। यह भी एक नई बात थी। दिग्विजयसिंह और जितने आदमी वहां थे सब डर गये और उसी तरफ देखने लगे। कांपता हुआ राजा उस मूर्ति के पास जाकर खड़ा हो गया और गौर से सुनने लगा कि क्या आवाज आती है।

थोड़ी देर तक वह आवाज समझ में न आई, इसके बाद यह सुनाई पड़ा—"तेरी ताली केवल बारह नम्बर की कोठड़ी को खोल सकेगी। जहां तक जल्दी हो सके किशोरी को उसमें बन्द कर दे नहीं तो सभों की जान मुफ्त में जायगी!"

यह नई अद्भुत और अनोखी बात देख सुन कर राजा का कलेजा दहलने लगा मगर उसकी समझ में कुछ न आया कि यह मूरत क्योंकर बोली। आज तक कभी ऐसी बात नहीं हुई थी। सैकड़ों आदमी इसके

सामने वलि पड़ गये लेकिन ऐसी नौवत न आई थी। आज राजा को विश्वास हो गया कि इस मूरत में कोई करामात जरूर है तभी तो बड़े लोगों ने वलि का प्रबन्ध किया है। यद्यपि राजा ऐसी बातों पर विश्वास कम रखता था परन्तु आज उसे डर ने दबा लिया, उसने सोच विचार मे ज्यादे समय नष्ट न किया और उसी ताली से बारह नम्बर वाली कोठड़ी खोल कर किशोरी को उसके अन्दर वन्द कर दिया।

राजा दिग्विजयसिंह ने अभी इस काम से छुट्टी न पाई थी कि बहुत से आदमियों को साथ लेकर पण्डित बद्रीनाथ उस तहखाने मे आ पहुँचे। कुँअर आनन्दसिंह और तारासिंह को बेबस पाकर झपट पड़े और बहुत जल्द उनके हाथ पैर खोल दिये। महाराज के आदमियों ने इनका मुकाबला किया, पण्डित बद्रीनाथ के साथ जो आदमी आये थे वे लोग भी भिड़ गये। जब आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह छूटे तो लड़ाई गहरी हो गई, इन लोगो के सामने ठहरने वाला कौन था? केवल चार ऐयार ही उतने लोगों के लिये काफी थे। कई मारे गये, कई जख्मी हो कर गिर पड़े, राजा दिग्विजयसिंह गिरफ्तार कर लिया गया, वीरेन्द्रसिंह की तरफ का कोई न मरा। इन सब कामों से छुट्टी पाने के बाद किशोरी की खोज की गई।

इस तहखाने मे जो कुछ आश्चर्य की बातें हुई थीं सभो ने देखी सुनी थी। लाली और ज्योतिषीजी ने सब हाल आनन्दसिंह और ऐयार लोगों को बताया और यह भी कहा कि किशोरी बारह नम्बर की कोठडी में बन्द कर दी गई है।

पण्डित बद्रीनाथ ने दिग्विजयसिंह की कमर से ताली निकाल ली और बारह नम्बर की कोठडी खोली मगर किशोरी को उसमे न पाया। चिराग ले कर अच्छी तरह ढूँढा परन्तु किशोरी न दिखाई पड़ा, न मालूम जमीन मे समा गई या दीवार खा गई। इस बात का आश्चर्य सभों को हुआ कि कोठड़ी मे से किशोरी कहां गायब हो गई, हा एक

कागज का पुर्जा उस कोठड़ी मे जरूर मिला जिसे भैरोसिंह ने उठा लिया और पढ़ कर सभों को सुनाया। यह लिखा हुआ था :—

" धनपति रंग मचायो साध्यो काम।

भोली भलि मुडि ऐहै यदि यहि ठाम।"

इस बरवे का मतलब किसी की समझ मे न आया, लेकिन इतना विश्वास हो गया कि अब इस जगह किशोरी का मिलना कठिन है। उधर लाली इस बरवे को सुनते ही खिलखिला कर हँस पड़ी, लेकिन जब लोगों ने उससे हँसने का सबब पूछा तो कुछ जवाब न दिया बल्कि सिर नीचे कर के चुप हो रही, जब ऐयारों ने बहुत जोर दिया तो बोली, "मेरे हँसने का कोई खास सबब नहीं है। बडी मेहनत करके किशोरी को मैने यहा से छुड़ाया था। (किशोरी को छुडाने के लिये जो जो काम उसने किये थे सब कहने के बाद) मैं सोचे हुये थी कि इस काम के बदले में राजा वीरेन्द्र-सिंह से कुछ इनाम पाऊँगी, लेकिन कुछ न हुआ, मेरी मेहनत चौपट हो गई, मेरे देखते ही देखते किशोरी उस कोठड़ी मे बन्द की गई थी। जब आप लोगों ने कोठरी खोली तो मुझे उम्मीद थी कि उसे देखूँगी और वह अपनी जुबान से मेरे परिश्रम का हाल कहेगी परन्तु कुछ नहीं। ईश्वर की भी क्या विचित्र गति है, वह क्या करता है सो कुछ समझ मे नहीं आता! यही सोच कर मै हँसी थी और कोई बात नही है।"

लाली की बातों का और सभों को चाहे विश्वास हो गया हो लेकिन हमारे ऐयारों के दिल मे उसकी बातें न बैठीं। देखा चाहिये अब वे लोग लाली के साथ क्या सलूक करते है।

"दिल बद्रीनाथ की राय हुई कि अब इस तहखाने मे ठहरना मुनासिब नहीं, जब यहा की अजायब बातों से खुद यहा का राजा परेशान हो गया तो हम लोगों की क्या बात है, यह भी उम्मीद नहीं है कि इस समय

किशोरी का पता लगे, अस्तु जहा तक जल्द हो सके यहा से चले चलना ही मुनासिब है ।

जितने आदमी मर गये थे उसी तहखाने में गड्हा खोद कर गाड़ दिये गये, वाकी बचे हुए चार पाँच आदमियों को राजा दिग्विजयसिंह के सहित कैदियों की तरह साथ लिया और सभों का मुँह चादर से बाध दिया। ज्योतिषीजी ने भी ताली का झब्बा सम्हाला, रोजनामचा हाथ मे लिया, और सभों के साथ तहखाने से बाहर हुए। अबकी दफे तहखाने से बाहर निकलते हुए जितने दर्वाजे थे सभों मे ज्योतिषीजी ताला लगाते गए जिसमें उसके अन्दर कोई आने न पावे ।

तहखाने से बाहर निकलने पर लाली ने कुँअर आनन्दसिंह से कहा, "मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मेरी मेहनत बर्बाद हो गई और किशोरी से मिलने की आशा न रही। अब यदि आप आज्ञा दें तो मैं अपने घर जाऊँ क्योंकि किशोरी ही की तरह मैं भी इस किले में कैद की गई थी।"

आनन्द०। तुम्हारा मकान कहा है।

लाली०। मथुराजी।

भैरो०। (आनन्दसिंह से) इसमें कोई शक नहीं कि लाली का किस्सा भी बहुत बड़ा और दिलचस्प होगा, इन्हें हमारे महाराज के पास अवश्य ले चलना चाहिए।

पन्नी०। जरूर ऐसा होना चाहिये, नहीं तो महाराज रञ्ज होंगे।

ऐयारों का मतलब कुँअर आनन्दसिंह समझ गये और इसी जगह से लाली को विदा होने की आज्ञा उन्होंने न दी। लाचार लाली को कुँअर साहब के साथ जाना ही पड़ा और वे लोग बिना किसी तरह की तकलीफ पाए राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर मे पहुँच गये जहा लाली इज्जत के साथ एक खेमे मे रक्खी गई।

दसवां बयान

दूसरे दिन सन्ध्या के समय राजा वीरेन्द्रसिंह अपने खेमे मे बैठे रोहतासगढ के बारे मे बातचीत करने लगे। पंडित बद्रीनाथ, भैरोसिंह, तारासिंह, ज्योतिषीजी, कुँअर आनन्दसिंह और तेजसिंह उनके पास बैठे हुए थे। अपने अपने तौर पर सभी ने रोहतासगढ के तहखाने का हाल कह सुनाया और अन्त मे वीरेन्द्रसिंह तेजसिंह से बातचीत होने लगी :—

वीरेन्द्र०। रोहतासगढ के बारे मे अब क्या करना चाहिये ?

तेज०। इसमें तो कोई शक नहीं कि रोहतासगढ़ के मालिक आप हो चुके। जब राजा और दीवान दोनों आपके कब्जे मे आ गये तो अब किस बात की कसर रह गई ? हां अब यह सोचना है कि राजा दिग्विजयसिंह के साथ क्या सलूक करना चाहिये।

वीरेन्द्र०। और किशोरी के लिये क्या बन्दोबस्त करना चाहिये।

तेज०। जी हां, यही दो बातें है। किशोरी के बारे मे तो मैं अभी कुछ कह नहीं सकता, बाकी राजा दिग्विजयसिंह के बारे मे मै पहिले आपकी राय सुनना चाहता हूँ।

वीरेन्द्र०। मेरी राय तो यही है कि यदि वह सच्चे दिल से ताबेदारी कबूल करे तो रोहतासगढ़ पर खिराज (मालगुजारी) मुकर्रर करके उसे छोड़ देना चाहिए।

तेज०। मेरी भी यही राय है।

भैरो०। यदि वह इस समय कबूल करने के बाद पीछे बेईमानी पर कमर बाधे तो ?

तेज०। ऐसी उम्मीद नहीं है। जहा तक मैने सुना है वह ईमानदार सच्चा और बहादुर जाना गया है, ईश्वर न करे यदि उसकी नीयत कुछ दिन बाद बदल भी जाय तो हम लोगों को इसकी परवाह न करनी चाहिए।

वीरेन्द्र० । इसका विचार कहा तक किया जायगा ! (तारासिंह की तरफ देख कर) तुम जाओ और दिग्विजयसिंह को ले आओ, मगर मेरे सामने हथकड़ी बेड़ी के साथ मत लाना ।

'जो हुक्म' कह कर तारासिंह दिग्विजयसिंह को लाने के लिये चले गये और थोड़ी ही देर में उन्हें अपने साथ लेकर हाजिर हुए, तब तक इधर उधर की बातें होती रहीं । दिग्विजयसिंह ने अदब के साथ राजा वीरेन्द्र-सिंह को सलाम किया और हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया ।

वीरेन्द्र० । कहिये, अब क्या इरादा है ?

दिग्विजय० । यही इरादा है कि जन्म भर आपके साथ रहूँ और ताबेदारी करूँ ।

वीरेन्द्र० । नीयत में किसी तरह का फर्क तो नहीं है ?

दिग्विजय० । आप ऐसे प्रतापी राजा के साथ खुटाई रखने वाला पूरा कम्बख्त है । वह पूरा बेवकूफ है जो किसी तरह पर आपसे जीतने की उम्मीद रक्खे । इसमें कोई शक नहीं कि आपके एक एक ऐयार दस दस राज्य गारत कर देने की सामर्थ रखते हैं । मुझे इस रोहतासगढ़ किले की मजबूती पर बड़ा भरोसा था, मगर अब निश्चय हो गया कि वह मेरी भूल थी । आप जिस राज्य को चाहें बिना लड़े फतह कर सकते हैं । मेरी तो अक्ल नहीं काम करती, कुछ समझ ही में नहीं आता कि क्या हुआ और आपके ऐयारों ने क्या तमाशा कर दिया । सैकड़ों वर्षों से जिस तहखाने का हाल एक भेद के तौर पर छिपा चला आता था बल्कि सच तो यह है कि जहा का ठीक ठीक हाल अभी तक मुझे भी मालूम न हुआ, उसी तहखाने पर बात का बात में आपके ऐयारों ने कब्जा कर लिया, यह करामात नहीं तो क्या है ? बेशक ईश्वर की आप पर कृपा है और यह सब सच्चे दिल से उपासना का प्रताप है । आपसे दुश्मनी रखना अपने हाथ से अपना सिर काटना है ।

दिग्विजयसिंह की बात सुन कर राजा वीरेन्द्रसिंह मुस्कुराये और

उनकी तरफ देखने लगे। दिग्विजयसिंह ने जिस ढंग से ऊपर लिखी बातें कहीं उनमें से सचाई की बू आती थी। बीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और दिग्विजयसिंह को अपने पास बैठा कर बोले :—

बीरेन्द्र०। सुनो दिग्विजयसिंह, हम तुम्हें छोड़ देते हैं और रोहतासगढ़ की गद्दी पर अपनी तरफ से तुम्हें बैठाते हैं, मगर इस शर्त पर कि तुम हमेशे अपने को हमारा मातहत समझो और खिराज की तौर पर कुछ मालगुजारी दिया करो।

दिग्वि०। मैं तो अपने को आपका ताबेदार समझ चुका अब क्या समझूँगा, बाकी रही रोहतासगढ की गद्दी, सो मुझे मंजूर नहीं। इसके लिये आप कोई दूसरा नायब मुकर्रर कीजिये और मुझे अपने साथ रहने का हुक्म दीजिये।

बीरेन्द्र०। तुमसे बढ़ कर और कोई नायब रोहतासगढ के लिए मुझे दिखाई नहीं देता।

दिग्वि०। (हाथ जोड़ कर) बस मुझ पर कृपा कीजिये, अब राज्य का जंजाल मैं नहीं उठा सकता।

आधे घण्टे तक यही हुज्जत रही। बीरेन्द्रसिंह अपने हाथ से रोहतासगढ़ की गद्दी पर दिग्विजयसिंह को बैठाया चाहते थे और दिग्विजयसिंह इन्कार करते थे, लेकिन आखिर लाचार होकर दिग्विजयसिंह को बीरेन्द्रसिंह का हुक्म मंजूर करना पड़ा, मगर साथ ही इसके उन्होंने बीरेन्द्रसिंह से इस बात का एकरार करा लिया कि महीने भर तक आपको मेरा मेहमान बनना पड़ेगा और इतने दिनों तक रोहतासगढ़ में रहना पड़ेगा।

बीरेन्द्रसिंह ने इस बात को खुशी से मंजूर किया क्योंकि रोहतासगढ़ के तहखाने का हाल उन्हें बहुत कुछ मालूम करना था। बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को विश्वास हो गया था कि वह तहखाना जरूर कोई तिलिस्म है।

राजा दिग्विजयसिंह ने हाथ जोड़ कर तेजसिंह की तरफ देखा और कहा, "कृपा कर मुझे समझा दीजिये कि आप और आपके मातहत

ऐयार लोगों ने रोहतासगढ़ में क्या किया, अभी तक मेरी अकिल हैरान है!"

तेजसिंह ने सब हाल खुलासे तौर पर कह सुनाया। दीवान रामानन्द का हाल सुन दिग्विजयसिंह खूब हँसे बल्कि उन्हें अपनी बेवकूफी पर भी हँसी आई और बोले, "आप लोगों से कोई बात दूर नहीं है।" इसके बाद दीवान रामानन्द भी उसी जगह बुलवाये गए और दिग्विजयसिंह के हवाले किये गए, और दिग्विजयसिंह के लड़के कुँअर कल्याणसिंह को लाने के लिये भी कई आदमी चुनारगढ़ रवाना किये गए।

इन सब कामों से छुट्टी पा कर लाली के बारे में बातचीत होने लगी। तेजसिंह ने दिग्विजयसिंह से पूछा कि लाली कौन है और आपके यहाँ कब से है? इसके जवाब में दिग्विजयसिंह ने कहा कि लाली को हम बखूबी नहीं जानते। महीने भर से ज्यादे न हुआ होगा कि चार पाँच दिन के आगे पीछे लाली और कुन्दन दो नौजवान औरतें मेरे यहाँ पहुँचीं। उनकी चाल और पोशाक से मुझे मालूम हुआ कि किसी इज्जतदार घराने की लड़की है। पूछने पर उन दोनों ने अपने को इज्जतदार घराने की लड़की जाहिर भी किया और कहा कि मैं अपनी मुसिबत के दो तीन महीने आपके यहाँ काटा चाहती हूँ। रहम खा कर मैंने उन दोनों को इज्जत के साथ अपने यहाँ रक्खा, बस इसके सिवाय और मैं कुछ नहीं जानता।

तेज०। बेशक इसमें कोई भेद है, वे दोनों साधारण औरतें नहीं हैं।

ज्योतिषी०। एक ताज्जुब की बात मैं सुनाता हूँ।

तेज०। वह क्या?

ज्योतिषी०। आपको याद होगा कि तहखाने का हाल कहते समय मैंने कहा था कि जब तहखाने में किशोरी और लाली को मैंने देखा तो दोनों ने नाम ले कर पुकारा जिससे उन दोनों को आश्चर्य हुआ।

तेज०। हाँ हाँ मुझे याद है, मैं यह पूछने ही वाला था कि लाली को आपने कैसे पहिचाना?

ज्योतिषी० । बस यही वह ताज्जुब की बात है जो अब मैं आपसे कहता हूं।

तेज० । कहिये, जल्द कहिये।

ज्योतिषी० । एक दफे रोहतासगढ़ के तहखाने में बैठे बैठे मेरी तबीयत घबराई तो मैं कोठड़ियों को खोल खोल कर देखने लगा। उस ताली के झब्बे में जो मेरे हाथ लगा था एक ताली सब से बड़ी है जो तहखाने की सब कोठड़ियों में लगती है मगर बाकी बहुत सी तालियों का पता मुझे अभी तक नहीं लगा कि कहां की हैं।

तेज० । खैर तब क्या हुआ ?

ज्योतिषी० । सब कोठड़ियों में अन्धेरा था, चिराग ले जा कर मैं कहां तक देखता, मगर एक कोठरी में दीवार के साथ चमकती हुई कोई चीज दिखाई दी। यद्यपि कोठड़ी में बहुत अन्धेरा था तो भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि वह कोई तस्वीर है। उस पर ऐसा मसाला लगा हुआ था कि अन्धेरे में भी वह तस्वीर साफ मालूम होती थी, आंख कान नाक बल्कि बाल तक साफ मालूम होते थे। तस्वीर के नीचे 'लाली' ऐसा लिखा हुआ था। मैं बड़ी देर तक ताज्जुब से उस तस्वीर को देखता रहा, आखिर कोठड़ी बन्द कर के अपने ठिकाने चला आया, उसके बाद जब किशोरी के साथ मैंने लाली को देखा तो साफ पहिचान लिया कि वह तस्वीर इसी की है। मैंने तो सोचा था कि लाली उसी जगह की रहने वाली है इसी लिए उसकी तस्वीर वहां पाई गई, मगर इस समय महाराज दिग्विजयसिंह की जुबानी उसका हाल सुन कर ताज्जुब होता है, लाली अगर वहां की रहने वाली नहीं तो उसकी तस्वीर वहां कैसे पहुंची ?

दिग्वि० । मैंने अभी तक वह तस्वीर नहीं देखी, ताज्जुब है !

वीरेन्द्र० । अभी क्या, जब मैं आपको साथ लेकर अच्छी तरह उस तहखाने की छानबीन करूंगा तो बहुत सी बातें ताज्जुब की दिखाई पड़ेंगी।

दिग्वि०। ईश्वर करे जल्द ऐसा मौका आवे, अब तो आपको बहुत जल्द रोहतासगढ चलना चाहिये।

वीरेन्द्र०। (तेजसिंह की तरफ देख कर) इन्द्रजीतसिंह के बारे मे क्या बन्दोबस्त हो रहा है?

तेज०। मैं बेफिक्र नहीं हूं, जासूस लोग चारो तरफ भेजे गये हैं? इस समय तक रोहतासगढ की कार्रवाई मे फंसा हुआ था, अब स्वयं उनकी खोज मे जाऊगा, कुछ कुछ पता लग भी गया है।

वीरेन्द्र०। हा! क्या पता लगा है?

तेज०। इसका हाल कल कहूगा, आज भर और सब्र कीजिये।

राजा वीरेन्द्रसिंह अपने दोनों लडकों को बहुत चाहते थे, इन्द्रजीतसिंह के गायब होने का रञ्ज उन्हें बहुत था, मगर वह अपने चित्त के भाव को भी खूब ही छिपाते थे और समय का ध्यान उन्हें बहुत रहता था। तेजसिंह का भरोसा उन्हें बहुत था और उन्हें मानते भी बहुत थे, जिस काम मे उन्हें तेजसिंह रोकते थे उसका नाम फिर वह जबान पर तब तक न लाते थे जब तक तेजसिंह स्वयम् उसका जिक्र न छेडते, यही सबब था कि इस समय वे तेजसिंह के सामने इन्द्रजीतसिंह के बारे मे और कुछ न बोले।

दूसरे दिन महाराज दिग्विजयसिंह सेना सहित तेजसिंह को रोहतासगढ किले मे ले गये। कुअर आनन्दसिंह के नाम का डंका बजाया गया। यह मौका ऐसा था कि खुशी के जलसे होते मगर कुअर इन्द्रजीतसिंह के खयाल से किसी तरह की खुशी न की गई।

राजा दिग्विजयसिंह के बर्ताव और खातिरदारी से राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके साथी लोग बहुत प्रसन्न हुए। दूसरे दिन दीवानखाने मे थोडे आदमियों की कमेटी इसलिए की गई कि अब क्या करना चाहिये। इस कमेटी मे केवल नीचे लिखे बहादुर और ऐयार लोग इकट्ठे थे—राजा वीरेन्द्रसिंह, कुंअर आनन्दसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, पडित बद्रीनाथ,

ज्योतिषीजी, राजा दिग्विजयसिंह और रामानन्द। इनके अतिरिक्त एक आदमी मुँह पर नकाब डाले मौजूद था जिसे तेजसिंह अपने साथ लाये थे और उसे अपनी जमानत पर कमेटी में शरीक किया था।

वीरेन्द्र०। (तेजसिंह की तरफ देख कर) इस नकाबपोश आदमी के सामने जिसे तुम अपने साथ लाये हो हम लोग भेद की बातें कर सकते हैं?

तेज०। हां हां, कोई हर्ज की बात नहीं है।

वीरेन्द्र०। अच्छा तो अब हम लोगों को एक तो किशोरी के पता लगाने का, दूसरे यहां के तहखाने में जो बहुत सी बातें जानने और विचारने लायक हैं उनके मालूम करने का, तीसरे इन्द्रजीतसिंह के खोजने का बन्दोबस्त सब से पहले करना चाहिये। (तेजसिंह की तरफ देख कर) तुमने कहा था कि इन्द्रजीतसिंह का कुछ हाल मालूम हो चुका है?

तेज०। जी हां, बेशक मैंने कहा था और उसका खुलासा हाल इस समय आपको मालूम हुआ चाहता है, मगर इसके पहले मैं दो चार बातें राजा साहब से (दिग्विजयसिंह की तरफ इशारा करके) पूछा चाहता हूं जो बहुत जरूरी हैं, इसके बाद अपने मामले में बातचीत करूंगा।

वीरेन्द्र०। कोई हर्ज नहीं।

दिग्वि०। हां हां पूछिये।

तेज०। आपके यहां शेरसिंह * नाम का कोई ऐयार था?

दिग्वि०। हां था, बेचारा बहुत ही नेक ईमानदार और मेहनती आदमी था और ऐयारी के फन में पूरा ओस्ताद था, रामानन्द और गोविन्दसिंह उसी के चेले हैं। उसके भाग जाने का मुझे बड़ा ही रंज है। आज के दो तीन दिन पहिले दूसरे तरह का रंज था मगर आज और तरह का अफसोस है।

---

* शेरसिंह, कमला का चाचा, जिसका हाल इस सन्तति के तीसरे हिस्से के तेरहवें बयान में लिखा गया है।

दिग्वि० । ईश्वर करे जल्द ऐसा मौका आवे, अब तो आपको बहुत जल्द रोहतासगढ चलना चाहिये ।

वीरेन्द्र० । (तेजसिंह की तरफ देख कर) इन्द्रजीतसिंह के बारे मे क्या बन्दोबस्त हो रहा है ?

तेज० । मैं बेफिक्र नहीं हूं, जासूस लोग चारो तरफ भेजे गये हैं ? इस समय तक रोहतासगढ की कार्रवाई में फंसा हुआ था, अब स्वयं उनकी खोज में जाऊगा, कुछ कुछ पता लग भी गया है ।

वीरेन्द्र० । हा ! क्या पता लगा है ?

तेज० । इसका हाल कल कहूगा, आज भर और सब्र कीजिये ।

राजा वीरेन्द्रसिंह अपने दोनों लडकों को बहुत चाहते थे, इन्द्रजीतसिंह के गायब होने का रञ्ज उन्हें बहुत था, मगर वह अपने चित्त के भाव को भी खूब ही छिपाते थे और समय का ध्यान उन्हें बहुत रहता था । तेजसिंह का भरोसा उन्हें बहुत था और उन्हें मानते भी बहुत थे, जिस काम मे उन्हे तेजसिंह रोकते थे उसका नाम फिर वह जबान पर तब तक न लाते थे जब तक तेजसिंह स्वयम् उसका जिक्र न छेडते, यही सबब था कि इस समय वे तेजसिंह के सामने इन्द्रजीतसिंह के बारे मे और कुछ न बोले ।

दूसरे दिन महाराज दिग्विजयसिंह सेना सहित तेजसिंह को रोहतासगढ किले मे ले गये । कुंअर आनन्दसिंह के नाम का डंका बजाया गया । यह मौका ऐसा था कि खुशी के जलसे होते मगर कुंअर इन्द्रजीतसिंह के खयाल से किसी तरह की खुशी न की गई ।

राजा दिग्विजयसिंह के बर्ताव और खातिरदारी से राजा वीरेन्द्रसिं और उनके साथी लोग बहुत प्रसन्न हुए । दूसरे दिन दीवानखाने थोड़े आदमियों की कमेटी इसलिए की गई कि अब क्या करना चाहिये इस कमेटी में केवल नीचे लिखे बहादुर और ऐयार लोग इकट्ठे थे— राजा वीरेन्द्रसिंह, कुंअर आनन्दसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, पण्डित बद्रीना

तेज० । अब आप क्या सोचते हैं ? उसका कोई कसूर था या नहीं ?

दिग्वि० । नहीं नहीं, वह बिल्कुल बेकसूर था, बल्कि मेरी ही भूल थी जिसके लिये आज मैं अफसोस करता हूं, ईश्वर करे उसका पता लग जाय तो मैं उससे अपना कसूर माफ कराऊँ ।

तेज० । यदि आप मुझे कुछ इनाम दें तो मैं शेरसिंह का पता लगा दूं ।

दिग्वि० । आप जो मांगेंगे मैं दूंगा और इसके अतिरिक्त आपका भारी अहसान मुझ पर होगा ।

तेज० । बस मैं यही इनाम चाहता हूं कि यदि शेरसिंह को ढूंढ़ कर ले आऊं तो उसे आप हमारे राजा बीरेन्द्रसिंह के हवाले कर दें । हम उसे अपना साथी बनाना चाहते हैं ।

दिग्वि० । मैं खुशी से इस बात को मन्जूर करता हूं वादा करने की क्या जरूरत है जब कि मैं स्वयम् राजा बीरेन्द्रसिंह का ताबेदार हूं ।

इसके बाद तेजसिंह ने उस नकाबपोश की तरफ देखा जो उनके पास बैठा हुआ था और जिसे वह अपने साथ इस कमेटी में लाये थे । नकाबपोश ने अपने मुंह पर से नकाब उतार कर फेंक दिया और यह कहता हुआ राजा दिग्विजयसिंह के पैरों पर गिर पड़ा कि 'आप मेरा कसूर माफ करें !' राजा दिग्विजयसिंह ने शेरसिंह को पहिचाना, बड़ी खुशी से उठाकर गले लगा लिया और कहा, "नहीं नहीं, तुम्हारा कोई कसूर नहीं बल्कि मेरा कसूर है जो मैं तुमसे क्षमा कराया चाहता हूं ।"

शेरसिंह तेजसिंह के पास आ बैठा । तेजसिंह ने कहा, "सुनो शेरसिंह, अब तुम हमारे हो चुके !"

शेर० । बेशक मैं आप का हो चुका, जब आपने महाराज से वचन ले लिया तो अब क्या उज्र हो सकता है !

राजा बीरेन्द्रसिंह ताज्जुब से ये बातें सुन रहे थे, अन्त में तेजसिंह की तरफ देख कर बोले, "तुम्हारी मुलाकात शेरसिंह से कैसे हुई ?"

तेज० । दो तरह के रञ्ज और अफसोस का मतलब मेरी समझ में नहीं आया, कृपा कर साफ साफ कहिये ।

दिग्वि० । पहले उसके भाग जाने का अफसोस क्रोध के साथ था मगर आज इस बात का अफसोस है कि जिन बातों को सोच कर वह भागा था वे बहुत ठीक थीं, उसकी तरफ से मेरा रञ्ज होना अनुचित था, यदि इस समय वह होता तो बडी खुशी से आपके काम में मदद करता ।

तेज० । उससे आप क्यो रञ्ज हुए थे और वह क्यों भाग गया था ?

दिग्वि० । इसका सबब यह था कि जब मैंने किशोरी को अपने कब्जे में कर लिया तो उसने मुझे बहुत कुछ समझाया और कहा कि आप ऐसा काम न कीजिए बल्कि किशोरी को राजा वीरेन्द्रसिंह के यहा भेज दीजिये । यह बात मैनें मन्जूर न की बल्कि उससे रञ्ज होकर मैंने इरादा कर लिया कि उसे कैद कर दूं । असल बात यह है कि मुझमें और रणधीरसिंह मे दोस्ती थी, शेरसिंह मेरे यहा यहा रहता था और उसका छोटा भाई गदाधरसिंह जिसकी लडकी कमला है, आप उसे जानते होंगे ?

तेज० । हा हा, हम सब कोई उसे अच्छी तरह जानते हैं ।

दिग्वि० । खैर, तो गदाधरसिंह रणधीरसिंह के यहा रहता था । गदाधरसिंह को मरे बहुत दिन हो गये, इसी बीच मे मुझसे और रणधीरसिंह से भी कुछ बिगड गई, इधर जब मैंने रणधीरसिंह की नतिनी किशोरी को अपने लडके के साथ ब्याहने का बन्दोबस्त किया तो शेरसिंह को बहुत बुरा मालूम हुआ । मेरी तबीयत भी शेरसिंह से फिर गई । मैने सोचा कि शेरसिंह की भतीजी कमला हमारे यहा से किशोरी को निकाल ले जाने का जरूर उद्योग करेगी और इस काम मे अपने चाचा शेरसिंह से मदद लेगी । यह बात मेरे दिल मे बैठ गई और मैने शेरसिंह को कैद करने का विचार किया, उसे मेरा इरादा मालूम हो गया और वह चुपचाप न मालूम कहा भाग गया ।

में इस बात का विचार होने लगा कि अब क्या करना चाहिए। घण्टे भर में यह निश्चय हुआ कि लाली से कुछ विशेष पूछने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह अपना हाल ठीक ठीक कभी न कहेगी, हां उसे हिफाजत में रखना चाहिए और तहखाने को अच्छी तरह देखना और वहां का हाल मालूम करना चाहिए।

ग्यारहवां बयान

अब तो कुन्दन का हाल जरूर ही लिखना पड़ा। पाठक महाशय भी उसका हाल जानने के लिए उत्कंठित हो रहे होंगे। हमने कुन्दन को रोहतासगढ़ महल के उसी बाग में छोड़ा है जिसमें किशोरी रहती थी। कुन्दन इस फिक्र में लगी रहती थी कि किशोरी किसी तरह लाली के कब्जे में न पड़ जाय।

जिस समय किशोरी को ले कर सेंध की राह लाली उस घर में उतर गई जिसमें से तहखाने का रास्ता था और यह हाल कुन्दन को मालूम हुआ तो वह बहुत घबड़ाई। महल भर में इस बात का गुल मचा दिया और उस सोच में पड़ी कि अब क्या करना चाहिए। हम पहिले लिख आये हैं कि किशोरी और लाली के जाने के बाद 'धरो पकड़ो' की आवाज लगाते हुए कई आदमी सेंध की राह उसी मकान में उतर गये जिसमें लाली और किशोरी गई थी।

उन्हीं लोगों में मिल कर कुन्दन भी एक छोटी सी गठरी कमर में बांधे उस मकान के अन्दर चली गई और यह हाल भगदड़ और गुलशोर में किसी को मालूम न हुआ। उस मकान के अन्दर भी बिल्कुल अन्धेरा था। लाली ने दूसरी कोठड़ी में जाकर दर्वाजा बन्द कर लिया इस लिये लाचार हो कर पीछा करने वालों को लौटना पड़ा और उन लोगों ने इस बात की इत्तला महाराज से की, मगर कुन्दन उस मकान से न लौटी बल्कि किसी कोने में छिप रही।

तेज०। शेरसिंह ने मुझसे स्वयम् मिल कर सब हाल कहा, असल तो यह है कि हम लोगो पर भी शेरसिंह ने भारी अहसान किया है।

वीरेन्द्र०। वह क्या ?

तेज०। कुँअर इन्द्रजीतसिंह का पता लगाया है और अपने कई आदमी उनकी हिफाजत के लिए तैनात कर चुके हैं। इस बात का भी निश्चय दिला दिया है कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह को किसी तरह की तकलीफ न होने पावेगी।

वीरेन्द्र०। (खुश हो कर और शेरसिंह की तरफ देख कर) हां! कहाँ पता लगा और वह किस हालत में है ?

शेर०। यह सब हाल जो कुछ मुझे मालूम था मै दीवान साहब (तेजसिंह) से कह चुका हूं वह आपसे कह देंगे, आप उसके जानने की जल्दी न करें। मे इस समय यहाँ जिस काम के लिए आया था मेरा वह काम हो चुका, अब मे यहा ठहरना मुनासिब नहीं समझता। आप लोग अपने मतलब की बातचीत करें और मुझे रुखसत करें क्योंकि मदद के लिए मैं बहुत जल्द कुँअर इन्द्रजीतसिंह के पास पहुंचा चाहता हूं। हा यदि आप कृपा कर के अपना एक ऐयार मेरे साथ कर दें तो उत्तम हो और काम भी शीघ्र हो जाय।

वीरेन्द्र०। (खुश हो कर) अच्छी बात है, आप जाइये और मेरे जिस ऐयार को चाहिये लेते जाइये।

शेर०। अगर आप मेरी मर्जी पर छोडते है तो म देवीसिंहजी को अपने साथ के लिए मागता हू।

तेज०। हा आप खुशी से उन्हें ले जायं। (देवीसिंह की तरफ देख कर) आप तैयारी कीजिए।

देवी०। मं हरदम तैयार ही रहता हू। (शेरसिंह से) चलिए अब इन लोगों का पीछा छोडिए।

देवीसिंह को साथ ले कर शेरसिंह रवाना हुए और इधर इन लोगों

इस तहखाने में किशोरी और कुँअर आनन्दसिंह का जो कुछ हाल हं ऊपर लिख आये है वह सब कुछ कुन्दन ने देखा था। आखिर में कुन्द नीचे उतर आई और उस पल्ले को जो जमीन में था उसी ताली से खोल कर तहखाने में उतरने बाद बत्ती बाल कर देखने लगी। छत की तरा निगाह करने से मालूम हुआ कि वह सिंहासन पर बैठी हुई भयानव मूर्ति जो कि भीतर की तरफ से बिल्कुल (सिंहासन सहित) पोली थी उसके सिर के ऊपर है।

कुन्दन फिर ऊपर आई और दीवार मे लगे हुए दूसरे दर्वा को खोल कर एक सुरङ्ग मे पहुँची। कई कदम जाने बाद एक छोटं खिडकी मिली। उसी ताली से कुन्दन ने उस खिडकी को भी खोला अब वह उस रास्ते में पहुँच गई थी जो दीवानखाने और तहखाने मे आने जाने के लिए था और जिस राह से महाराज आते थे। तहखाने से दीवानखाने में जाने तक जितने दर्वाजे थे सभों को कुंदन ने अपनी ताली मे बन्द कर दिया, ताले के अलावे उन दर्वाजो मे एक एक खटका औ भी था उसे भी कुन्दन ने चढ़ा दिया। इस काम से छुट्टी पाने बाद फि वहा पहुँची जहाँ से भयानक मूर्ति और आदमी सब दिखाई दे रहे थे कुन्दन ने अपनी आँखों से राजा दिग्विजयसिंह की घबडाहट देखी जो दर्वाजा बन्द हो जाने से उन्हें हुई थी।

मौका देख कर कुन्दन वहा से उतरी और उस तहखाने में जो उस भयानक मूर्ति के नीचे था पहुँची। थोडी देर तक कुछ बकने बाद कुन्दन ने वे ही शब्द कहे जो उस भयानक मूर्ति के मुह से निकले हुए राजा दिग्विजयसिंह या और लोगो ने सुने थे और जिनके मुताबिक किशोरी बारह नम्बर की कोठडी मे बन्द कर दी गई थी। असल मे वे शब्द कुन्दन ही के कहे हुए थे जो सब लोगो ने सुने थे।

कुन्दन वहा से निकल कर यह देखने के लिए कि राजा किशोरी को उस कोठडी मे बन्द करता है या नहीं, फिर उस छत पर पहुंची जहा से